प्ररोचना



डा. शंकरदेवझा

प्ररोचना

(मैथिली समालोचनात्मक निबन्धक संग्रह)

डा. शंकरदेवझा



मिथिला रिसर्च सोसाइटी
लहेरियासराय, दरभंगा

PRAROCHANA (A Collection of Literary Critical Essayes in Maithili)
By Dr. Shankerdeo Jha; Mithila Research Society, Darbhanga, 2015, -₹ 400/-

प्रकाशन वर्ष : 2015

प्रकाशक : मिथिला रिसर्च सोसाइटी
कबिलपुर, लहेरियासराय, दरभंगा-846001
ईमेल : mithila research@gmail.com
मोबाईल : 09430639249

पुस्तक प्राप्ति स्थान : डा. शंकरदेवझा
कबिलपुर, लहेरियासराय
दरभंगा- 846001
ईमेल : dr.shankerdeojha@gmail.com

मूल्य : ₹ 400/- (चारि सय टाका मात्र)

मुद्रक : प्रिंटवेल
टावर, दरभंगा

लेखकीय

शोध ओ समालोचना शास्त्रीय दृष्टिसँ भने दूटा भिन्न विषय मानल जाइत हो, मुदा व्यावहारिक स्तरपर देखल जाय तँ दुनूमे अन्योन्याश्रय सम्बन्ध अछि। दुनू एक-दोसरक पूरक अछि । शोध ओ समालोचना एक-दोसरक आश्रय ग्रहण कैये कऽ पूर्णताकेँ प्राप्त कऽ पबैत अछि । तेँ विशुद्ध शोध किंवा विशुद्ध समालोचना कदापि नहि भऽ सकैत अछि ।

शोध किंवा अनुसन्धानक परिभाषा विभिन्न विद्वान लोकनि द्वारा एवं संस्थादि द्वारा कयल गेल अछि । एहि विभिन्न परिभाषा सबमे कने-मने भिन्नता देखबामे अबैत अछि, मुदा अनुसन्धानक जे मूल परिभाषा अछि से प्रायः सर्वत्र एके रंगक अछि । अनुसन्धानमे मूलतः तीनटा वस्तु प्रमुख अछि–

(i) अनभिज्ञात तथ्यक उपस्थापन

(ii) ज्ञात तथ्यक संयोजन एवं

(iii) अनभिज्ञात एवं ज्ञात तथ्यक सम्यक् व्याख्या वा विवेचन ।

अनुसन्धानक जे तेसर वस्तु वा चरण विभिन्न प्रकारक तथ्यक व्याख्या करब अछि, सैह वस्तुतः समालोचना थिक । मात्र तथ्यक उपस्थान किंवा संयोजनसँ शोध कार्य पूर्ण नहि भऽ जाइत अछि । जावत धरि ओकर सम्यक व्याख्या नहि कयल जायत तावत धरि ओकर वैशिष्ट्य ओ उपयोगिताक निर्धारण नहि भऽ सकत। कहबाक तात्पर्य यैह जे शोधकेँ अन्ततः समालोचनेक द्वारा पूर्णता प्राप्त होइत छैक । तहिना जे गम्भीर समालोचना होइछ ताहिमे शोधक प्रविधिक आश्रयण लेबैये पड़ैत अछि । कोनहुँ विषयक व्याख्याक क्रममे ओहि विषयक इतिहासपर दृष्टिपात करब, आवश्यके होइत अछि । ताहि संगे कतिपय ज्ञात-अनभिज्ञात तथ्यक उल्लेखक संग जखन ओहि विषयक व्याख्या कयल जाइछ तँ ओ समालोचना

निश्चित रूपसँ मूल्यवान भऽ जाइत अछि । यैह कारण थिक जे शोध ओ समालोचना दुनू युग्मक शब्द जकाँ प्रचलिते नहि अछि अपितु व्यवहारहुमे ई सदिखन संगहि रहैत अछि ।

मैथिली शोध-समालोचनाक क्षेत्रमे हम आरम्भहिसँ गम्भीर रुचि रखैत रहलहुँ अछि । समय-समयपर स्वतःस्फूर्त भावसँ किंवा किनको आग्रह वा आदेशसँ शोध-समालोचनापरक निबन्ध सब लिखैत रहलहुँ अछि जे विभिन्न पत्र-पत्रिका ओ संग्रह ग्रन्थ सबमे प्रकाशित होइत रहल अछि । हमर बहुतो शुभेच्छु लोकनि हमरा बेर-बेर आग्रह करैत रहलाह अछि जे अपन शोध-समालोचनापरक लेखन सबकेँ ग्रन्थक रूप दियऽ । हुनकहि लोकनिक आग्रहपर पहिल बेर अपन आठ गोट निबन्धक संग्रह **प्ररोचना** नामसँ प्रकाशित करयबाक हेतु तत्पर भेलहुँ अछि ।

जेना पूर्वेमे कहल गेल अछि तेना हमर एहि पोथीक निबन्ध सबमे शोध ओ समालोचनाक मिश्रित रूपक प्रयोग भेल अछि । एहि पोथीमे संगृहीत आठो निबन्धमे शोध-समालोचनाक भिन्न-भिन्न स्वरूपक निदर्शन भेल अछि । हमरा विश्वास अछि जे मैथिलीक गम्भीर अध्येता, शोधप्रज्ञ ओ पाठक लोकनिकेँ हमर ई पोथी अवश्ये पसिन्न पड़तनि ।

1 अगस्त 2015
(श्रावण कृष्ण प्रतिपदा)

शंकरदेवझा
कबिलपुर, लहेरियासराय,
दरभंगा

आलेख क्रम

1. मैथिली कथाक विकास 07
2. मैथिली कथा-लेखनक आरम्भिक पाँच दशक 19
3. स्वातन्त्र्योत्तर मैथिली कथा ओ कथाकार मायानन्दमिश्र 41
4. मैथिलीक इतिहासमूलक उपन्यास 89
5. पत्रात्मक समीक्षाक दर्पणमे रामदेवझाक साहित्य 98
6. प्रतिज्ञा पाण्डवमे अभिनव दिशा-बोध 120
7. यात्री काव्यमे विरोधाभास 128
8. मधुपक साहित्य साधनाक विशद् परिचायिका 137

मैथिली कथाक विकास

मनोरंजनक हेतु कथा कहबाक ओ सुनबाक प्रवृत्ति मानव जीवनमे आदिये कालसँ रहल अछि । पूर्वमे कथाक तात्पर्य पौराणिक कथा सबसँ होइत छल, मुदा आधुनिक युगमे आबि कऽ कथा-लेखन समसामयिक समाजपर केन्द्रित भऽ गेल अछि । वर्त्तमान कथा-साहित्यक विषयवस्तु, मानव जीवनमे घटैत विभिन्न घटनादिक परिप्रेक्ष्यमे मानवक बाह्य क्रिया-कलापक संग-संग ओकर आन्तरिक द्वन्द्व, उहापोह, कुण्ठा पर्यन्त भऽ गेल अछि । मुदा तकर अर्थ ई नहि जे मानव जीवनक प्रत्येक घटना कथाक प्लॉट भऽ सकैत अछि । प्रत्युत् जाहि घटनामे किछु चमत्कार हो, जे अपन पाठक वर्गमे कौतूहल एवं संवेदना उत्पन्न करबाक क्षमता रखैत हो सैह घटना कथाक विषयवस्तुक रूपमे ग्रहण करबा योग्य होइत अछि ।

आधुनिक भारतीय भाषामे कथा (शॉर्ट स्टोरी) एवं उपन्यास (नोवेल) आदि सन साहित्यिक विधाक विकास पाश्चात्य साहित्यक प्रभावेँ पत्रकारिताक विकासक संग-संग भेल । बंगला, मराठी, हिन्दी आदि भाषा सबमे बहुत पूर्वहिमे पत्रकारिता आरम्भ भऽ गेल छल तेँ एहि भाषा सबमे बीसम शताब्दीसँ पूर्वहि शॉर्ट स्टोरीक नामान्तर कथा, कहानी किंवा गल्प एकटा सशक्त लोकप्रिय साहित्यिक विधाक रूपमे अपन परिचिति बना लेलक । मुदा जेँ की मैथिलीमे पत्रकारिता कने अबेरसँ प्रारम्भ भेल तेँ 1905 इ. सँ पूर्व मैथिलीमे कथा, कहबाक ओ सुनबाक वस्तु छल । जेना- मधुश्रावणी पाबनिक कथा, सपता-विपताक कथा, हरिसोँ व्रतक कथा इत्यादि । बंगला-मराठी आदि भाषा जकाँ मैथिलीमे सेहो समकालीन समाज ओ जनजीवनसँ कथा तत्त्व ग्रहण कऽ ओकरा लेखनमे उतारल जैतय ताहि दिस प्रवृत्ति उत्पन्न नहि भऽ सकल छल । ओना अपवादस्वरूप कवीश्वर चन्दाझा द्वारा विद्यापतिक **पुरुष परीक्षाक** मैथिली अनुवाद शाके 1810 (1888 इ.)मे प्रकाशित भऽ चुकल छल आ **भाखामे**

लिखल तथा प्रेससँ पोथीक रूपमे छपल इतिहासमूलक कथा केहन होइत छैक से धरि अवश्ये लोककेँ देखबामे आबि गेल छलैक ।

एतावता 1905 इ.मे मैथिलीमे सेहो पत्रकारिता प्रारम्भ भेल । मिथिलासँ बाहर जयपुर (राजस्थान)सँ **मैथिल-हित-साधन**क प्रकाशन आरम्भ भेल । एकरा एकटा ऐतिहासिक संयोग कहल जयबाक चाही जे **मैथिल-हित-साधन**क दोसर वर्ष अर्थात 1906 इ. (भाद्रसँ पौष शुक्ल द्वितीया, अंक 8 सँ 12)क संयुक्तांकमे आधुनिक प्रवृत्तिक कथा जलधरझाक **विलक्षण दाम्पत्य** प्रकाशित भेल । मैथिलीक एहि आद्यकथाकेँ ताकि कऽ विद्वत्वर्गक समक्ष अनबाक श्रेय डा. रामदेवझाकेँ छनि (मैथिलीक आद्यकथा प्रसंग, मंडन-निकेत, अंक-1, दिसम्बर 2005) । एहि प्रकारेँ मैथिलीमे नारी उत्पीड़नकेँ केन्द्र बनाय जलधरझा एकटा रोचक एवं कलात्मक कथाक लेखन कऽ मैथिलीमे कथा विधाकेँ जन्म तँ दऽ देलनि, मुदा हुनक एहि प्रयासक जेना अनुसरण होयबाक चाहैत छल से तत्काल नहि भेल । स्वयं जलधरझा सेहो कोनो दोसरो कथा लिखने होथि तकर प्रमाण नहि भेटैत अछि । 1917मे बालविवाहक कारणे व्याप्त बाल विधवा समस्यापर जनार्दनझा जनसीदन लिखित दोसर कथा **ताराक वैधेव्यक** संग मैथिलीमे कथाविधाक एकटा नव अध्याय आरम्भ भेल । शीघ्रहि मैथिली कथा त्वरित गतिएँ अपन बाल्य, कैशोर्य, तारुण्य एवं युवत्वक सीढ़ीकेँ टपैत आइ प्रौढ़ बनल भारतीय भाषाक कथा-लेखनक समकक्ष ठाढ़ अछि । मैथिली कथा अपन शताब्दी पूरा कऽकऽ दोसर शताब्दीमे प्रवेश कऽ चुकल अछि । अत: एकर एखन धरिक विकास क्रमकेँ निम्न प्रकारेँ बाँटि कऽ विश्लेषित कयल जा सकैछ–

1. आधार निर्माण काल– 1905-1917
2. आदर्शवादी-सुधारवादी काल– 1917-1935
3. परिचय निर्माण काल– 1935-1950
4. सन्धि काल– 1950-1960
5. प्रयोग काल– 1960-1984
6. निर्बन्ध काल– 1984सँ अद्यपर्यन्त

1. आधार निर्माण काल (1905-1917)- एहि कालमे मैथिली कथाक प्रवृत्ति मुख्य रूपसँ दू प्रकारक रहल । एकटा प्रवृत्ति रहल आख्यान-उपाख्यान मूलक । एकरा अन्तर्गत संस्कृतक प्रसिद्ध कथा सबकेँ मैथिलीमे अपना ढंगे लिखल जाय लागल । एहि प्रकारक सबसँ पहिल उपाख्यान 1906 इ.क **मिथिला मोद**क उद्‌गार 17-19मे हरिनारायणझा काव्यतीर्थक **सुदर्शनोपाख्यान** छनि । मोदक एही अंकसँ

म.म. परमेश्वरझाक **सीमन्तिनी आख्यायिका** सेहो छपब प्रारम्भ भेलनि । मोदमे एहि अवधिमे लगभग एक दर्जन उपाख्यान सब प्रकाशित भेल । 1910मे पौराणिक कथाक संग्रहक रूपमे लालदासक **पतिव्रताचार अर्थात स्त्रीधर्म शिक्षा** प्रकाशित भेलनि । एहि अवधिमे मैथिली कथाक जे दोसर प्रवृत्ति रहल ओ थिक समकालीन सामाजिक समस्यापर आधारित मौलिक कथाक लेखन । 1907-08मे जीवनाथमिश्र प्रसिद्ध पुलकितमिश्रक उपन्यासिका **मोहिनी-मोहन** प्रकाशित भेलनि । जर्नादनझा जनसीदनक दू गोट उपन्यास **सती सर्वस्व** (मिथिलामिहिर, 1912) एवं **निर्दयी सासु** (मिथिला मिहिर, 1914) सेहो प्रकाशित भेलनि । एहि सब रचनामे आधुनिक मैथिली कथाक उत्सकेँ ताकल जा सकैछ । एही अवधिमे यदुनाथझा यदुवर द्वारा हिन्दीक **अभ्युदय** पत्रिकासँ अनूदित **शंकरक विवाह** नामक गल्प **मिथिला मोद** (उद्गार 103, 1915 इ.)मे प्रकाशित भेलनि । ई सब किछु आरम्भिक रचना मैथिलीमे मौलिक कथा लेखनक पृष्ठभूमि तैयार कयलक ।

2. **आदर्शवादी-सुधारवादी काल (1917-1935)**- 1917मे मिथिला मिहिरक 30 जून ओ 7 जुलाइक क्रमशः दू गोट अंकमे धारावाही प्रकाशित जनार्दनझा जनसीदनक **ताराक वैधव्य** (मैथिलीक आद्य कथा, आलोचना, अंक-1, 1992 इ.) मैथिली कथाक प्रस्थान बिन्दु साबित भेल जे एहि विधाकेँ एकटा नवयुगमे प्रवेश करौलक । मैथिली कथा अपन सामाजिक दायित्वकेँ गम्भीरतासँ बुझलक तकर प्रत्यक्ष प्रमाण थिक **ताराक वैधव्य** । तत्कालीन मिथिलाक ब्राह्मण एवं अन्य सवर्ण जातिमे व्याप्त वृद्धविवाह, बालविवाह ओ बहुविवाह सन कुप्रथा एवं ताहिसँ उत्पन्न बालविधवा सन समस्या ओ समाजक अधोगतिकेँ देखार करैत एहि कथाक रचना भेल । नान्हिटा अबोधा ताराकेँ जबरदस्ती एकटा वृद्धक संग बियाहि देल जाइत छैक आ ओ पाँच बर्षक अभ्यन्तरमे विधवा भऽ जाइछ । अवश्ये एहि कथाक माध्यमे कथाकार तद्युगीन समस्याक प्रति समाजक ध्यान आकृष्ट करौलनि । एहि प्रकारेँ मैथिली कथा अपन एकटा नूतन परिचिति ओ दृष्टिक संग उद्भूत भेल । जनसीदनक सरणिपर चलि अनेकानेक कथाकार लोकनि समाजक एहि कुरीति सभक प्रति अपन विरोध भाव प्रदर्शित करैत कथाक रचना प्रारम्भ कयलनि । मुदा ई लोकनि पारम्परिक आदर्शक परिधियेमे वैवाहिक व्यवस्थामे सुधार अनबाक पक्षपाती छलाह । यद्यपि अपन कथामे ई लोकनि कोनो स्पष्ट दृष्टि नहि देने छथि आ ने समाधानक कोनो संकेते कयने छथि । तथापि सामाजिक कुरीतिक कारणे उत्पन्न नारीक कारुणिक स्थितिक चित्रण करबाक पाछाँ एकमात्र उद्देश्य यैह जे समाज एहि समस्यापर गम्भीरतापूर्वक सोचय ।

मैथिली कथाक एहि आदर्शवादी-सुधारवादी कालमे रचित कथा सबमे कालीकुमारदासक **भीषण अन्याय** (मिथिला मिहिर, 1923), कुमार गंगानन्दसिंहक **मनुष्यक मोल** (1924), श्यामानन्दझाक **रेवा** (मिथिलामित्र, 1931), कालीचरणझाक **नवरात्र** (मिथिला मिहिर, 1926), महानन्दमिश्रक **तीर्थयात्रा** (मिथिला मिहिर, 1927) आदि महत्त्वपूर्ण कथा अछि । 1925मे लहेरियासरायसँ प्रकाशित **श्रीमैथिली**मे सेहो कतोक उल्लेखनीय कथा सब प्रकाशित भेला यथा श्यामसुन्दरझा मधुपक **कन्या विक्रय**, अनुग्रहलालठाकुरक **स्वप्न**, श्रीमन्तलालदासक **प्रेम पिशाचिनी, अपन ओ आन, मायापुरी,** सूर्य्यनारायणदासक एक संस्कृत पाठशालाक दृश्य, चिरञ्जीवझाक **एक मैथिल नवयुवक,** कुलानन्ददास विद्यार्थीक **भीषण प्रतिज्ञा** आदि । 1929मे लहेरियासरायसँ प्रकाशित भेनिहार **मिथिला**मे हरिमोहनझा द्वारा अनमेल विवाह ओ अशिक्षा जन्य कुरीतिकेँ आधार बनाय लिखित **कन्यादानक** प्रकाशन प्रारम्भ भेल । कन्यादानमे पारम्परिक कथा लेखनक गम्भीरताकेँ त्यागि हास्य-व्यंग्यक शैलीकेँ अपनाओल गेल एवं सामाजिक विकृति एवं कुरीतिकेँ विस्तारसँ चित्रित कयल गेल । हरिमोहनझाक ई प्रयोग अवश्ये मैथिली कथाक एहि आदर्शवादी-सुधारवादी कालमे मैथिली कथा-लेखनमे व्याप्त अरोचक गाम्भीर्यकेँ तोड़बाक समधानल प्रयास छल । अन्यथा एहि कालक कथाकार लोकनिक मूल उद्देश्य रहलनि विशेष रूपसँ समाजमे व्याप्त वैवाहिक कुरीतिक चित्रण कऽकऽ लोककेँ समाज सुधारक दिशामे प्रेरित करब । कथाक शिल्प विकसित करब ओ पाठकक रुचि-रोचनक अनुरूप अपन कथामे कोनो मसाला देबा दिस हिनका लोकनिक ध्यान प्रायः नहिए जकाँ छलनि ।

3. **परिचय निर्माण काल (1935-1950)**– 1935 इ. सँ आचार्य सुरेन्द्रझा सुमनक सम्पादनमे **मिथिला मिहिर** नवीन रूपमे प्रकाशित होयब प्रारम्भ भेल । 1936मे काशीसँ **मिथिला मोद**क दोसर खेपक प्रकाशन सेहो प्रारम्भ भेल तँ दरभंगासँ **भारती** प्रकाशित होअऽ लागल । नवीन दृष्टिबोधसँ सम्पन्न उपर्युक्त पत्रिकाक सम्पादक लोकनि अपन-अपन पत्रक माध्यमसँ मैथिली कथा आन्दोलनकेँ एकटा नव युगमे प्रवेश करौलनि । मैथिली कथाक एहि परिचय निर्माण कालमे आधुनिक शिक्षा, विचार ओ दृष्टिसँ सम्पन्न एकटा कथाकारक समूह उभरि कऽ आयल जे लोकनि बंगला ओ अंग्रेजी साहित्यसँ प्रभावित छलाह । हिनका लोकनिक कथादृष्टि पूर्वक अपेक्षा बेसी स्फीत छलनि जाहि कारणे मैथिली कथामे वैचारिक एवं शिल्प दुहू स्तरपर एकटा पैघ परिवर्त्तन आयल । केवल वैवाहिके समस्याकेँ कथा-लेखनक आधार बनयबाक परिपाटीसँ कने हटि अन्यहु क्षेत्रमे कथा-सर्जनक हेतु बीजक अन्वेषण कयल जाय लागल । समकालीन परिस्थिति, विभिन्न स्तरपर समाजमे व्याप्त विभेद, सम्पूर्ण देशमे चलि रहल स्वतन्त्रता आन्दोलन आदिपर दृष्टिपात करैत एहि कालक कथाकार लोकनि

द्वारा पाश्चात्य ओ अन्यान्य भारतीय भाषाक कथा-लेखन प्रवृत्ति दिस सेहो नजरि खिराओल जाय लागल।

एहि परिचय निर्माण कालमे मैथिली-कथाधारा बहुमुखी भऽ उठल। श्यामसुन्दरझा मधुपक **प्रतिज्ञा पत्र** (भारती, अगस्त 1937), जयनारायणमल्लिकक **जीवनपथ** (भारती, दिसम्बर-जनवरी 1937), **काशीनाथझाक** सत्माय (भारती, 1937) भ्रमरक **दुगोला** (मिथिला मिहिर, 14 अगस्त 1947) आदि कथा राष्ट्रिय चेतनाक सन्देश दैत, पराधीनताक कारणे भेल देशक दुर्दशा दिस सभक ध्यान आकृष्ट करौलक।

देशमे व्याप्त सामाजिक विभेद एवं शोषणक चित्र झलकल काञ्चीनाथझा किरणक **धर्मरत्नाकर** (मिथिला मोद, 1941), सुरेन्द्रझा सुमनक **कलाक पुरस्कार** (मिथिला मिहिर, 2 जून 1939) मे। भुवनेश्वरसिंह भुवनक **शून्यमे** पहिल बेर समाजक मुख्य धारासँ दूर रहि रहल सवर्णेतर समाजक एकटा श्रमिकक जीवनयात्राकेँ चित्रित कयल गेल। 1940मे मैथिलीक प्रथम कथा संग्रह प्रबोधनारायणचौधरीक **बीछल फूल** प्रकाशित भेल जाहिमे कलात्मकताक तँ अभाव अछि अवश्य, मुदा प्रतीकात्मक रूपमे देश ओ समाजक तत्कालीन दु:स्थितिक दिस लोकक ध्यान आकृष्ट करबाक प्रयास कयल गेल अछि।

कन्यादानक लेखक हरिमोहनझा हास्य-व्यंग्यक धाराक संग कथा लेखनक क्षेत्रमे उतरलाह। मैथिल समाजक कूपमंडुकता ओ रूढ़िवादी चरित्रपर सोझे सोझ चोट करैत हिनक कथा सब एक दिस पाठककेँ हँसौलक तँ दोसर दिस परम्परामे आस्था रखनिहार वर्गकेँ तिलमिलेबो कयलक। 1945मे हिनक **प्रणम्य देवता** ओ 1949मे दोसर कथा संग्रह **रंगशाला** प्रकाशित भेलनि जे एकटा इतिहासे रचि देलक। मैथिली कथाक पठनीयता स्थापित कयनिहार हरिमोहनझा एहि अवधिमे ओ तकर बादहु सर्वाधिक चर्चित ओ प्रशंसित गल्पकारक आसनपर विराजमान रहलाह।

मैथिली कथाक जे चारिम धारा प्रवाहित भेल ओ छल रोमांटिसिज्मक। एहि धाराक कथाकार लोकनि बंगला गल्पक तरलता ओ भावुकतासँ अतिशय अनुप्राणित छलाह। ई लोकनि अपन कथामे जीवनक सौन्दर्य पक्षकेँ कलात्मक ढंगसँ प्रस्तुत कयलनि। उपेन्द्रनाथझा व्यासक **रुसल जमाय** (मिथिला मिहिर, 25 अगस्त 1945), सुरेन्द्रझा सुमनक **वृहस्पतिक शेष** (मिथिला मिहिर, 14 नवम्बर 1942), हरिनन्दन ठाकुर सरोजक **विमाता** (भारती, अगस्त 1937), शैलेन्द्रमोहनझाक **अबीरक चोरी** (मिथिला मिहिर, 29 मार्च 1947), योगानन्दझाक **आम खयबाक मुँह** (मैथिली नवीन साहित्य, 1945) नगेन्द्र कुमरक **ससरफानी** (1947) आदि सन कथाकेँ मैथिलीक आर्टपीस कहल जयबाक चाही जकर शास्वत मूल्य अछि।

एहि अवधिमे मैथिली कथाक पाँचम धारा बहल मनोविश्लेषणवादक । एकर अगुआ भेलाह उमानाथझा । पाश्चात्य साहित्य, विशेष कऽ अंग्रेजी गल्पक प्रवृत्तिसँ प्रभावित भऽ लिखल हिनक कथा सब यथा **माधवजी** (गल्पांजलि, 1948), आधा घंटा (मैथिली नवीन साहित्य, 1945), **ओहि दिनक यात्रा** (स्वदेश, मार्च-मइ 1948) आदिमे कथावस्तु जतेक महत्त्वपूर्ण नहि अछि ताहिसँ बेसी सशक्त अछि पात्रक अन्त:मनमे उठैत भाव जकर सूक्ष्म चित्रण करैत कथाकार पेयाजुक खोँइचा जकाँ एकक बाद दोसर तहकेँ क्रमशः उघारैत चल गेलाह अछि । वस्तुत: मैथिली कथाक शिल्पक क्षेत्रमे हिनक कथाक अपन गढ़नि कथा साहित्यकेँ एकटा नूतनता प्रदान कयलक ।

एहि अवधिक कथा लेखनक छठम धारा बहल करुणाक जकर संवाहक बनलाह मनमोहनझा । 1948मे प्रकाशित हिनक कथांक संग्रह **अश्रुकण**क प्रत्येक कथा करुण रसमे भीजल अछि, तथापि कथाक आधार भूमि ओ वातावरण यथार्थक सन्निकट अछि ।

एतावता परिचय निर्माण काल (1935-1950)मे मैथिली कथा उपर्युक्त छओ धारामे प्रवाहित होइत अपन एकटा परिचिति बनयबा लय अपस्याँत छल तँ दोसर दिस कथाकारक एकटा नव पीढ़ी उभरबाक तैयारी कऽ रहल छल ।

4. **सन्धिकाल (1950-1960)**– 1950 इ.मे देशमे गणतान्त्रिक शासन प्रणाली लागू भेल । स्वतन्त्रताक बाद गणतान्त्रिक व्यवस्थाक उछाही भारतक जीवन-जगतकेँ गम्भीर रूपसँ प्रभावित कयलक। देशमे आयल ई ऐतिहासिक परिवर्त्तन मैथिली भाषा ओ साहित्यमे नवीनताक स्वर फुकलक। स्वभावत: मैथिली कथाधारा एहिसँ अनुप्राणित भेल । 26 जनवरी 1950 सँ **वैदेही**क प्रकाशन आरम्भ भेल आ शीघ्रे ई पत्र मैथिली कथा-लेखनक सशक्त प्लेटफार्म बनि गेल । एकरा लागल **मिथिला मिहिर** ओ **पल्लव** सेहो अपन बाँहि पुरबैत रहल । एहि अवधिमे जँ स्वतन्त्रता प्राप्तिसँ पूर्वक स्थापित वयसाहु कथाकार लोकनि पूर्ववत् सर्जनरत रहलाह तँ दोसर दिस प्रौढ़त्व प्राप्त कऽ रहल मणिपद्म, चन्द्रनाथमिश्र अमर, गोविन्दझा, राधाकृष्ण बहेड़, रामकृष्णझा किसुन, शैलेन्द्रमोहनझा, सुधांशुशेखरचौधरी आदि कथा लेखनक क्षेत्रमे उतरऽ लगलाह । तेसर दिस नव-नव प्रतिभा सम्पन्न युवा ओ तरुण कथाकारक एकटा समूह आगाँमे आबि कऽ ठाढ़ भेल जे स्वातन्त्र्योत्तर मैथिली कथाकेँ एकटा नवयुगमे प्रवेश करयबाक पृष्ठभूमि तैयार कयलक । मैथिली कथा-लेखनक क्षेत्रमे एकहि संग एहि तीन पीढ़ीक सम्मिलनक कारणे स्वातन्त्र्योत्तर मैथिली कथा-लेखनक ओहि प्रथम दसक (1950-1960)केँ सन्धि कालक संज्ञासँ अभिहित करब अनुचित नहि होयत ।

स्वातन्त्र्योत्तर मैथिली कथा-लेखन किंवा सन्धि काल (1950-1960)मे जाहि कथाकारक नाम सबसँ पहिने लेल जयतनि से थिकाह मायानन्दमिश्र । 1950मे एहि युवा कथाकारक कथा संग्रह **भाङक लोटा** प्रकाशित भेलनि । हरिमोहनझाक सरणिपर चलि लिखल गेल भाङक लोटाकेँ भने विस्मृत करबाक प्रयास कयल गेल हो, मुदा ध्यान रखबाक थिक जे ओहि समयमे आङुरपर गनल किछुए कथाकारक कथाक संग्रह प्रकाशित भऽ सकल छलनि ताहिमेसँ एकटा मायानन्दमिश्र सेहो छलाह । ओना मायानन्दमिश्र अपन हास्य-व्यंग्यक प्रवृत्तिपर तत्काले विराम दैत गम्भीर भऽ गेलाह आ आधुनिक प्रवृत्तिक अपन कथा **रुपिया** (मिथिला मिहिर, 15 अगस्त 1953)क संग कथा-मंचपर प्रकट भेलाह । समाजक निम्न ओ मध्यम वर्गक उहापोह, ओकर जीवन संघर्ष आदिकेँ अपन कथाक विषयवस्तु बनाय मायानन्दमिश्र एकर बाद **सुरबा** (वैदेही, फरवरी 1954), **आगि मोम आ पाथर** (रचना संग्रह, 1956), **सेरायल इन्होर** (मिथिला दर्शन, मार्च 1960), **वृत्तक त्रिभुज** आदि कतोक कथा लिखलनि । अपन सुकुमार भावना ओ कथाक काव्यमय भाषाक कारणे ओहि समयमे चर्चित भेल मायानन्दमिश्रक कथाक दोसरो संग्रह 1960मे **आगि मोम आ पाथर** नामसँ प्रकाशित भेलनि ।

ललित, जड़ भरत ओ नागाबाबाक छद्म नामसँ 1950मे वैदेहीमे चन्द्रनाथमिश्र अमरक **गल्पक प्रपौत्रक** उत्तरमे **गल्पक प्रपितामह** लिखि मैथिलीमे प्रवेश कयलनि । मुदा हिनक पहिल कथा प्रकाशित भेलनि **समाजक सहयोग** (मिथिला मिहिर, 14 एवं 21 जून 1952)। तथापि ई चीन्हल गेलाह अपन कथा **रमजानी** (वैदेही, जून 1954)सँ । मार्क्सक अर्थवादसँ प्रभावित ओ मानवक मशीनीयुगमे प्रवेश करबाक व्यग्रताकेँ चित्रित करैत रमजानीक संवेदना ओ सन्देशकेँ मैथिलीमे गम्भीरतापूर्वक अकानल गेल । ओना ललित चर्चित भेलाह अपन कथा **मुक्ति** (वैदेही, अप्रैल 1955)सँ । एहि कथामे अपन कथा नायिका शेफालीकेँ कथाकार सेक्सक भूख मेटयबाक हेतु अपन रुग्ण पतिकेँ छोड़ि एकटा दरबान संगे उढ़रबा देलथिन । एहन 'हॉट स्टोरी' पर मैथिलीमे प्रतिक्रिया उठब स्वाभाविक छल । एही अवधिमे धीरेन्द्र अपन कथा **सभ्य लोक** (मिथिला मिहिर, 17 जनवरी 1953)क संग साहित्यमे प्रवेश कयलनि । रामदेवझा सेहो अपन कथा-यात्राक प्रारम्भ 1953मे **मुदा आब की ?** (मिथिला मिहिर, 17 जुलाइ 1953)सँ कयलनि । एहि कथामे ओहि समयमे प्राइवेट बैंकमे नोकरी करैत एकटा अल्प वेतनभोगीक अर्थसंकटसँ जुझैत त्रासद स्थितिक मार्मिक चित्रण भेल अछि । समाजक निम्न ओ मध्यम वर्गक जीवन-शैली ओ ओकर आशा-निराशाकेँ सूक्ष्मताक संग उरेहैत अपन अनेक कथा यथा **दू ठोप नोर** (मिथिला मिहिर, 15 अगस्त 1953), **माय भूख लागल** (निर्माण, 1954), **पहुना** (वैदेही अगस्त 1957), **नकली कनियाँ : नकली आदमी** (वैदेही, सितम्बर 1959) आदिक कारणेँ ई बेस चर्चित भेलाह, मुदा ई

प्रसिद्ध भेलाह अपन कथा **एक खीरा : तीन फाँक** (मिथिला दर्शन, सितम्बर 1960)सँ। बाहरसँ एकटा देखितो एहि कथाक नायिका सुरजी भीतरसँ तीन फाँक भेल अछि। अर्थक संकट ओ ओकर अपन रूप-लावण्य ओकरा तीनटा पुरुषक अंकशायिनी बनबाक लेल विवश कयने छैक। समकालीन समाजमे व्याप्त शोषणवादी दुष्प्रवृत्तिक अऽढ़मे मार्क्सक अर्थवाद, ओ फ्रायडक सेक्सवादक तानी-भरनी दऽ बूनल एहि कथापर काढ़ल गेल मनोविश्लेषणक कसीदा अवश्ये पाठकके चमत्कृत कयलक आ मैथिलीक किछु श्रेष्ठतम कथामे ई परिगणित भेल।

सोमदेवक कथा यात्रा प्रारम्भ भेलनि लघुकथा **वकील साहेब** (वैदेही, फरवरी 1954)सँ। राजकमलचौधरीक पहिल कथा **अपराजिता** हिन्दीसँ अनूदित भऽ वैदेहीक अक्टूबर 1954क अंकमे प्रकाशित भेलनि। तत्पश्चात हिनक **अन्धकार** (वैदेही, मइ 1955), **फुलपरासवाली** (वैदेही, अगस्त 1955), **किरतनियाँ** (वैदेही, जनवरी 1956), **हरिद्वारवास** (वैदेही, मइ 1957) आदि कतोक कथा प्रकाशित भेलनि। अपन एहि सब कथामे उद्दाम सेक्सक प्रदर्शन एवं नारीके पुरुषक भोग्या मात्र बना कऽ प्रस्तुत करबाक कारणे राजकमल चर्चित भेलाह अवश्य, मुदा ई जानल गेलाह **ललका पाग** (वैदेही, नवम्बर-दिसम्बर 1955)सँ। एहि कथाक नायिका तीरूक त्याग ओ आदर्श पाठकके बेस प्रभावित कयलक। **ललका पाग** सेहो मैथिलीक किछु उत्कृष्ट कथाक श्रेणीमे अपन स्थान बनौलक। एहि दशकमे कल्पनाशरणक छद्मनामसँ लिलि रे द्वारा लिखल गेल कथा **रंगीन परदा** (वैदेही, जून-जुलाइ 1956) सेहो चर्चाक विषय बनल। एकटा सामन्त परिवारमे सासु ओ जमायक अवैध सम्बन्धके देखार करैत एकटा मैथिलानी द्वारा लिखल गेल ई कथा अवश्ये चौंकाबऽबला साबित भेल। एही अवधिमे प्रभास कुमार चौधरी, बलराम, हंसराज, राजमोहनझा, योगिराज प्रभृति औरो किछु कथाकार लोकनिक उदय भेलनि।

स्वातन्त्र्योत्तर मैथिली कथाक एहि प्रथम दशकक युवा पीढ़ीक कथाकार लोकनि जँ अपन पूर्ववर्त्ती दुनू पीढ़ीक अनुरूप बंगला साहित्यक तरलता ओ बंकिम, शरत तथा रवीन्द्रक शिल्पसँ प्रभावित छलाह तँ दोसर दिस पूर्ववर्त्ती पीढ़ीसँ भिन्न पाश्चात्य साहित्यमे भऽ रहल प्रयोगक अनुरूप फ्रायड आ जुंगक सेक्सवाद आ मार्क्सक अर्थवाद दिस सेहो प्रेरित भऽ रहल छलाह। स्वभावतः मैथिली कथामे तावत धरि सेक्स सन वर्जित वस्तुके प्रवेश करयबाके लऽकऽ पूर्ववर्त्ती पीढ़ीक संग वैचारिक मतभेद उपस्थित भेल। सन्धिकालक एहि युवा पीढ़ीक कथाकार लोकनिक मान्यता छलनि जे विश्व कथा-साहित्यक संग मैथिली कथाके झटकारि कऽ लऽ चलबाक हेतु एहिमे मार्क्स ओ फ्रायडक सिद्धान्तक जोग देब आवश्यक। मैथिली कथाके

'स्वास्थ्य लाभ' करयबा लय उत्साहित एहि कथाकार लोकनिक तर्क छलनि जे फ्रायडसँ साहित्यक आभ्यन्तर आ मार्क्ससँ ओकर बाह्य स्वरूपमे निखार आनल जा सकैछ । पूर्ववर्त्ती पीढ़ीक कहब छलनि जे सेक्स जीवनक एकटा महत्त्वपूर्ण क्रिया अवश्य थिक आ एक सीमा धरि ई मनुष्यक क्रिया-कलापकेँ प्रभावितो करैत अछि । तथापि एहि सभक वर्णनमे अपन समाज, परम्परा ओ संस्कृतिकेँ ध्यानमे राखब आवश्यक । जँ पाश्चात्य प्रवृत्तिक अन्धानुकरण करैत कथाकारक लेखनी उच्छृंखल भऽ जाइनि तँ ओ साहित्य नहि भऽ समाजक लेल आहित्य साबित होयत ।

अन्ततः एहि वैचारिक मतभेदक बीच एकटा मध्यम मार्ग ताकल गेल जे मिथिलाक सांस्कृतिक मर्यादा जाहिसँ क्षरित नहि होअय ताहि सीमा धरि एहि पाश्चात्य सिद्धान्त सभक कथामे प्रयोगक स्वतन्त्रता कथाकारकेँ भेटनि । एतावता मैथिली कथाकेँ नव प्रयोग क्षेत्रमे लऽ जयबाक व्यग्रताक अनुभव करैत मायानन्द, ललित, धीरेन्द्र, रामदेव, सोमदेव प्रभृति कथाकार लोकनि मार्क्स आ फ्रायडक दर्शनकेँ अंशतः ग्रहण करैत एहि पाश्चात्य सिद्धान्तपर मैथिलीक संस्कार चढ़ौलनि । एहि दशकक युवा पीढ़ीक कथा लेखन एहि सिद्धान्तसँ छौँकेला उत्तर अवश्ये रुचिकर बनल । मुदा राजकमल फ्रायडक मैथिलीकरणसँ स्वयंकेँ फराके रखलनि आ फ्रायडोसँ कतोक डेग आगाँ बढ़ि अपन कथामे उद्दाम सेक्सक प्रदर्शन करैत रहलाह । अपना कथाकेँ रंगीन बनयबाक हेतु राजकमल अपन एकटा कल्पनाक संसार गढ़ैत रहलाह, वासनाक कीड़ाक रूपमे अपन पात्र सबकेँ चित्रित करैत रहलाह । वस्तुतः स्वातन्त्र्योत्तर मैथिली कथा अपन एहि प्रथम दशकमे प्राचीनता ओ नवीनताक विवादमे ओझरायल रहितो अपन एकटा सशक्त परिचिति स्थापित कऽ लेलक ।

5. **प्रयोग काल (1960-1984)**– 1960क सितम्बर माससँ पटनासँ नव साज-सज्जाक संग साप्ताहिक **मिथिला मिहिरक** प्रकाशन प्रारम्भ भेल ताहि संगे मैथिली कथा प्रयोग युगमे प्रवेश कयलक आ 1984मे एकर प्रकाशन बन्द होयबा धरि नाना प्रकारक प्रयोग चलैत रहल । एहि अवधिमे आबि लोककेँ स्वतन्त्रतासँ जेना मोहभंग होअऽ लगलैक । भ्रष्टाचार, बेरोजगारी ओ राजनीतिक अवसरवादिता बढ़लैक तँ तकर सबसँ बेसी चोट मध्यम वर्गहिपर पड़लैक । शोषित-पीड़ितक दमन-उत्पीड़न पूर्ववत चलिते रहलैक । ओ समय कथा लेखनक हेतु कथाकारकेँ अजस्र सामग्री उपलब्ध करा रहल छलनि । एहि प्रयोग कालमे पहिलुका सब पीढ़ीक अधिकांश कथाकर लोकनि सर्जनरत रहलाह तँ दोसर दिस राजमोहनझा, प्रभासकुमारचौधरी, धूमकेतु, गंगेश गुंजन, रमानन्द रेणु, गौरीमिश्र, शेफालिकावर्मा आदि कथाकार लोकनि सामने अयलाह । एहूमे किछु कथाकार मार्क्स-फ्रायडक मैथिलीकरणक पक्षधर भेलाह

तँ किछु गोटा मैथिली कथा-साहित्यहिकेँ मार्क्सीकरण-फ्रायडीकरण कऽ देबामे अपन उत्किरना बुझलनि । तथापि मानवीय संवेदनाक कथा जे स्वतःस्फूर्त एवं माटि-पानिक सोन्ह सुगन्धिसँ युक्त कथा होइछ, कोनो फ्रेम विशेषमे कसल कथा नहि, से पाठकके ँ रुचलैक आ से कथा ओ कथाकार लोकनि चर्चित भेलाह । प्रभासकुमारचौधरीक **बाबी** (मिथिला मिहिर, 1962) **ढेप** (मिथिला मिहिर, 1974), रामदेवझाक **मनुक सन्तान** (अभियान, 1963), राधाकृष्ण बहेड़क **ढकर-ढकर** (मिथिला मिहिर, 1964), मायानन्दमिश्रक **टूटैत कीलक जाँत** (मिथिला मिहिर, 1965), रमानन्द रेणुक **टूगरक जन्म** (मिथिला मिहिर, 1973), धूमकेतुक **अगुरवान** (मिथिला मिहिर, 1964), हंसराजक **छिद्र** (मिथिला मिहिर, 1964) आदि सन कतोक कथा अवश्ये अत्यधिक चर्चित भेल ।

एहू प्रयोग युगक अवसान काल (1984) धरि औरो कतेको कथाकार लोकनि जेना जीवकान्त, छत्रानन्द, मन्त्रेश्वरझा, बिनोदविहारी लाल, सुभाषचन्द्रयादव, मनमोहनझा आदिक पदार्पण भेलनि । एतावता स्वतन्त्रता प्राप्तिक पश्चात एहि सन्धिकाल (1950-1960) एवं प्रयोगकाल (1960-1984)क एहि दुइ अवधिमे मैथिली कथा नित्य नूतन मोड़ लैत रहल । अतिवादिताक किछु उदाहरणकेँ जँ छोड़ियो देल जाय तँ प्रयोगाश्रित रहितो एहि अवधिक कथा मिथिलाक जनजीवनक कथा थिक, जाहिमे मिथिलाक माटि-पानिक सुगन्धि ओ जीवनक यथार्थ चित्रित होइत रहल । तेँ एहि अवधिक कथाकेँ सामने राखि स्वतन्त्रताक बादक मिथिलाक समाजक स्वरूप ओ ओहिमे आयल परिवर्त्तनकेँ रेखांकित कयल जा सकैत अछि ।

6. **निर्बन्धकाल (1984सँ अद्यपर्यन्त)–** 1984मे मिथिला मिहिरकेँ बन्द होइते जेना मैथिली कथाक सार्वजनीन मंच समाप्त भऽ गेल । कथा प्रकाशनक एकटा नियमित माध्यम नहि रहबाक कारणे बहुतो कथाकारकेँ निष्क्रिय भऽ जाय पड़लनि तँ गोल-गुट विशेषक अलपजिवाह पत्रिकापर किछु कथाकार लोकनिके निर्भर होअऽ पड़लनि । 1984 धरि जहिना मैथिली कथाधारा कोनो ने कोनो पत्रिकाक अनुशासन ओ अभिभावकत्वमे आगाँ बढ़ैत रहल से 1984क बाद जेना ई धारा विशृंखलित भऽ उठल । तेँ एहि अवधिक कथा-धाराकेँ निर्बन्धकालक संज्ञासँ अभिहित करब अनुचित नहि होयत ।

1984क बादसँ एकटा केन्द्रिय पत्रिकाक अभाव रहितो अल्प प्रचारितो पत्रिकाक माध्यमसँ प्रचुर कथा प्रकाशमे अबैत रहल अछि । कथाकारक अनेक मंचक अस्तित्वमे अयबाक कारणे सब मंच द्वारा अपना-अपना दृष्टिसँ कथामे प्रयोग कयल जाइत रहल अछि । इलेक्ट्रोनिक क्रान्ति, बाजारवाद, वैश्वीकरण, लेस्बियन आदि सन

नवीनसँ नवीन विषयपर मैथिलीमे कथा लिखल जा रहल अछि । मुदा मैथिली कथा-लेखनक संग एकटा बड़ पैघ त्रासदपूर्ण स्थिति उत्पन्न भऽ गेल अछि । पहिने कथाकार लोकनि अंग्रेजी एवं अन्य पाश्चात्य भाषा तथा बंगला आदि सन भाषाक कथा-लेखनसँ प्रेरित भऽ ओकर वैशिष्ट्यकेँ ग्रहण करैत छलाह । आब एकर स्थान हिन्दी लेने जा रहल अछि जकर ने अपन कोनो भूगोल छैक आ ने सांस्कृतिक परम्परा । एहि छिन्नमूल भाषाक अनुकरण कयल जयबाक कारणे मैथिली कथा-लेखन अपन विषय-वस्तु ओ संस्कारसँ तँ दूर भेले अछि अपितु एकर भाषिक परिशुद्धतापर सेहो आघात भऽ रहल अछि । हिन्दीमे चलैत राजनीतिक 'वाद'क नकलमे मैथिलीमे सेहो आब तथाकथित स्त्री विमर्श, दलित विमर्शपरक कथा लिखल जाय लागल अछि । एतबे किएक आजुक बहुतो मैथिली कथाकार कुण्ठा ओ हीन भावनासँ ग्रस्त देखल जा रहल छथि । तेँ ने मिथिलाक माटिपर रहनिहार कथाकारकेँ विश्वक विभिन्न भागमे घटित घटनापर कथा लिखबाक सेहन्ता भऽ रहल छनि तँ प्रवासमे रहनिहार कथाकार मिथिलाक ठेंठ गामक कथा प्रस्तुत करबाक प्रयास करैत छथि । समाजमे आबि रहल परिवर्त्तनकेँ देखने बिना काल्पनिक शोषण-उत्पीड़न ओ वर्ग संघर्षपरक कथा लेखन, चारित्रिक पतनक महिमामंडन, एकटा राजनीतिक धारा विशेषक प्रति-प्रतिबद्धता आदिक कारणे मैथिली कथा अपन जमीनसँ कटि कऽ वायवीयता दिस बढ़ल जा रहल अछि । मैथिली कथा-लेखनकेँ अवनतिक पथपर चढ़यबामे समालोचक लोकनिक भूमिकाकेँ सेहो कम रहि कहल जा सकैछ । कोनो कथाक मूल्यांकन-विश्लेषण करबाक स्थानपर कथाकारक कीर्त्तन बेसी कयल जा रहल अछि । गोलबन्दीक कारणे जँ किछु नीको कथा लिखाइत अछि तँ से समालोचनाक अभावमे दबले रहि जाइत अछि । मैथिली कथा-लेखनक क्षेत्रमे आयल एहि अराजकताकेँ समाप्त करबाक हेतु प्रभासकुमारचौधरी **दीप जरय सगर** राति सन मंचक स्थापना कयलनि । मुदा इहो मंच हुनक मृत्युक बाद दिशाहीन भऽ गेल । किछु स्वयम्भू समालोचक आ गुटबाज लोकनिक एहि मंचपर कब्जा अछि, जनिका लोकनिकेँ मैथिली कथा-लेखनक दशा ओ दिशाक चिन्ता नहि अपितु अपन आ अपन गुटक चिन्ता सर्वोपरि छनि ।

1984क बादसँ कथाक कतेको संग्रह सब प्रकाशित होइत रहल अछि । कतोक कथाकार साहित्य अकादेमीसँ पुरस्कृतो भेलाह अछि । विभिन्न पत्र-पत्रिकामे अशोक, केदार कानन, नीताझा, ज्योत्स्ना चन्द्रम्, शिवशंकर श्रीनिवास, विनोदबिहारी लाल, देवशंकर नवीन, धीरेन्द्रनाथमिश्र, तारानन्द वियोगी, विभूति आनन्द, प्रदीपबिहारी, चन्द्रेश, नीरजा रेणु, अमरनाथ, विभारानी, आशामिश्र प्रभृति अनेक कथाकार लोकनिक कथा देखबामे अबैत रहैत अछि । मुदा हिनका लोकनिक कोनोटा कथा **कन्याक जीवन**, **रूसल जमाय**, **आम खयबाक मुँह**, **रमजानी**, **ललका पाग**, **एक खीरा : तीन**

फाँक, अगुरवान आदि जकाँ स्मरणीय भेल होइनि से एखन धरि दृष्टिपथपर नहि आयल अछि । हिनका लोकनिसँ बेसी जँ एहू निर्बन्ध कालमे पुरान पीढ़ीक कोनो कथाकार लोकनिक कथा कोनहुँ पत्रिकामे प्रकाशित होइत अछि तँ ओ बेसी प्रभावी, पठनीय ओ स्मरणीय रहैत अछि । जँ सत्य पूछल जाय तँ मैथिली कथाक प्रतिष्ठा एखनहुँ पुराने पीढ़ीक कथाकार लोकनिक कारणे बाँचल अछि । आजुक पीढ़ीक अधिकांश कथाकार लोकनिक स्वेच्छाचारिताक कारणे मैथिली कथाक गरिमा, ओकर कथ्य, शिल्प, प्रस्तुति-विधान ओ भाषा-प्रयोग आदिक स्तरपर घटल अछि । आइ आवश्यकता अछि जे प्रयोगक बियाबानमे हेरायल मैथिली कथा-धाराकेँ समेटि कऽ ओकरा अनुशासनक पटरीपर पुनः चढ़ाओल जाय । कथाकारक बीच संवाद स्थापित करबाक हेतु एकटा सार्वजनीन मंच बनय । समालोचनाक नामपर व्यक्ति कीर्त्तनक परिपाटीकेँ हतोत्साहित कयल जाय । तखने मैथिली कथाक गरिमाकेँ फेरसँ स्थापित कयल जा सकैछ ।

●

मैथिली कथा-लेखनक आरम्भिक पाँच दशक

ई सम्पूर्ण सृष्टिए घटनासँ भरल अछि। क्षण-प्रतिक्षण एहिमे कोनो ने कोनो घटना घटिते रहैत अछि। सृष्टिक जीवन्तता ओ गतिशीलताक प्रतीक थिक ओकर घटनाशील होयब। ई घटना दृश्यमान् धरतीसँ लऽकऽ अदृश्यमान् अन्तरिक्ष एवं पाताल पर्यन्तमे घटित होइत रहैत अछि। मनुष्यकेँ चेतन एवं अवचेतन दुनू स्थितिमे कोनो ने कोनो यथार्थ वा काल्पनिक-स्वप्निल घटनासँ साक्षात्कार होइते रहैत छैक। ब्रह्माण्डमे निरन्तर घटि रहल घटनाक एहि अनन्त श्रृंखलामेसँ ओहने घटना कोनो कथाक विषय बनबाक योग्यता रखैत अछि जाहिमे कोनो ने कोनो चमत्कारक तत्त्व अवश्य होइक। से चमत्कार तेहन जे मनुष्यक कल्पना, ओकर धारणा, ओकर आशा एवं ओकर अपेक्षाक सर्वथा विपरीत हो। एहन असामान्य, अकल्पनीय चामत्कारिक घटना जे मानव मनेकेँ उद्वेलित कऽ दैत हो, ओकरामे आश्चर्य, विस्मय, मात्सर्य, क्रोध, क्षोभ, करुणा, प्रेम, घृणा, वात्सल्य, ममत्व, भय आदि सन कोनो एक वा एकाधिक भाव जगा दैत हो, ओ घटना चंचल ओ निरपेक्ष मानव मनकेँ चिन्तनशील बना दैत हो आ अन्ततः ओकरा ओहि घटनाकेँ कथा-रूपमे प्रस्तुत करबाक हेतु विवश कऽ दैत हो। वस्तुतः कोनो कथाक हीड़ तत्त्व वैह घटना होइत अछि जे संवेदनशील मानव मनमे महासागर जकाँ तरंग उत्पन्न कऽ दैत अछि। एहन चामत्कारिक घटनाक गहन अनुभूतियो ओहने व्यक्तिकेँ भऽ पबैत छैक जकर छठम ज्ञानेन्द्रिय निरन्तर सक्रिय बनल रहैत छैक। एहने वैशिष्ट्यसँ युक्त कोनो व्यक्ति ब्रह्माक सहोदर, साहित्यकार बनबाक योग्यता रखैत छथि। छठम ज्ञानेन्द्रियसँ युक्त एहने साहित्य-स्रष्टा ओहि विशिष्ट घटनाकेँ अपन कथाक चरमोत्कर्ष बिन्दु बना ओकरा अनेकानेक काल्पनिक वा यथार्थ घटनाक संग तेना संयोजित करैत छथि जेना कोनो जोलहा अपन करघापर तानी-भरनीक संग कपड़ा बुनैत अछि। वस्तुतः कथा-लेखन एकटा चामत्कारिक घटनाक चतुर्दिक अनेकानेक काल्पनिक किंवा यथार्थ घटनाक

युक्तिसंगत, विवेकसम्मत एवं तर्कपूर्ण संयोजन थिक । एहने कथा अपन पाठकके लेखकक अनुभूतिक स्तरपर वा ताहूसँ ऊपर लऽ जयबाक क्षमता रखैत अछि ओ तकर बाद ओ कथा सफले नहि कालजयी साहित्यक कोटिमे आबि जाइत अछि ।

कोनहुँ भाषा सदृश मैथिलीमे सेहो कथा-साहित्यक सर्जनक यैह प्रक्रिया रहल अछि । कहियो मैथिलीक ई कथा-सम्पदा मौखिक परम्परामे छल । अपन परिवेशसँ कथातत्त्व ग्रहण कऽ कतोक अज्ञातनामा कथावाचक अपन कण्ठमे कथाक तानी-भरनी बूनि ओकरा समाजक समक्ष प्रस्तुत करैत रहलाह । एक कण्ठसँ दोसर कण्ठमे पसरैत मैथिलीक वाचिक परम्पराक ई कथा सब कतोक पीढ़ीक अपन यात्राके पूर्ण करैत रहल ।

उनैसम शताब्दीक उत्तरार्द्धमे आबि कऽ सम्पूर्ण भारतमे जे एकटा पुनर्जागरणक लहरि पसरल, तकर प्रभाव भारतीय साहित्यपर सेहो गम्भीर रूपसँ पड़ल । साहित्यके मध्यकालीन विषयाधारित गीत ओ प्रबन्धकाव्यक परिधिसँ निकालि ओहिमे समकालीन घटना-परिघटना एवं समकालीन सामाजिक स्वरके प्रश्रय देल जाय लागल । साहित्यमे पद्यक अपेक्षा गद्यके विशेष प्रश्रय दैत ओकरा देशभाषामे प्रस्तुत करबाक प्रवृत्ति कश्मीरसँ तमिलनाडु धरि एवं गुजरातसँ असम धरि एकटा आन्दोलनक रूप लऽ लेलक । साहित्यमे आयल एहि पुनर्जागरणसँ मिथिला सेहो अप्रवाहित नहि रहल । कवीश्वर चन्दाझा, म.म.प. परमेश्वरझा, कविवर जीवनझा प्रभृति महानुभाव लोकनिक प्रयाससँ मैथिली साहित्यमे सेहो पुनर्जागरण आयल । उपन्यास, नाटक, इतिहास, अनुवाद कार्य, पत्रकारिता आदिक माध्यमे मैथिलीमे गद्य-लेखनक नवीन युगक प्रारम्भ भेल । यैह नवीन गद्ययुग मैथिलीमे समकालीन समाजक अनेकानेक ज्वलन्त विषय, घटना आदिपर आधारित कथा-लेखनक नवीन प्रवृत्तिके जन्म देलक । एखन धरिक अनुसन्धानमे आधुनिक विषयाधारित मैथिलीक प्रथम प्रकाशित कथा जलधरझाक **विलक्षण दाम्पत्य** छनि, जकर प्रकाशन 1906 मे जयपुरसँ प्रकाशित भेनिहार मैथिली मासिक पत्रिका **मैथिल-हित-साधन**मे भेल छल । तत्पश्चात मिथिलामोद, मिथिला मिहिर, श्रीमैथिली, मिथिला, भारती प्रभृति अनेकानेक पत्र-पत्रिकाक कोरमे खेलाइत-पोसाइत मैथिली कथा स्वतन्त्रता प्राप्तिसँ पूर्व धरि बाल्य, कैशोर्य, तारुण्यक सीढ़ीके टपैत युवावस्थामे पहुँचि गेल । स्वतन्त्रताक बाद मैथिली कथा-लेखन वैदेही, पल्लव, मिथिला दर्शन आ तकर बाद पटनासँ प्रकाशित भेनिहार मिथिला मिहिरक अतिरिक्त अन्यान्य पत्र-पत्रिका सभक संग क्रमशः प्रौढ़त्व दिस बढ़ैत चल गेल अछि ।

मैथिली कथा-लेखनक संग सबसँ पैघ विडम्बना ई रहल अछि जे

स्वतन्त्रता प्राप्तिसँ पूर्वक मैथिली कथा मुख्यतः पत्र-पत्रिकाहिक माध्यमे प्रकाशमे अबैत रहल। कथा सबकेँ पुस्तकाकार प्रकाशित करबाक प्रवृत्ति ओहि समयमे विकसित नहि भऽ सकल, तकर पाछू चाहे जे कारण रहल होइक । तहिना मैथिली कथाक विवेचन-विश्लेषणक प्रवृत्ति सेहो तावत धरि विकसित नहि भऽ सकल छल। डा. जयकान्तमिश्र 1950 इ.मे प्रकाशित अपन **ए हिस्ट्री ऑफ मैथिली लिटरेचर, वो.-2**मे मैथिली कथाक प्रसंग ओहि अवधि धरिक प्रकाशित पत्र-पत्रिकाक आधारपर जे किछु सूचना देने छथि तकरहि उनटी-पुनटी कऽकऽ हुनक परवर्त्ती इतिहासकार लोकनि मैथिली साहित्यक इतिहास लेखक बनबाक अपन सेहन्ता पूरा करैत रहलाह अछि। स्वातन्त्र्योत्तर मैथिली कथा साहित्यक ओहि भव्य भवनक पाछाँक कारणक अन्वेषण करबाक दिशामे एखनहुँ धरि कोनो गम्भीर अनुसन्धाता अग्रसर होइत नहि देखबामे अयलाह अछि । आधुनिक मैथिली कथाक भव्य प्रासादक नींव कतेक गहीँर ओ कतेक मजबूत अछि से विषय एखनहुँ मैथिली शोध-समालोचनाक क्षेत्रमे अपन स्थान नहि बना सकल अछि । मैथिली कथा साहित्यक जे किछु गवेषणा-समालोचना भेल अछि से सब मुख्यतः स्वातन्त्र्योत्तर कथालेखनहिपर केन्द्रित अछि । मैथिलीमे आधुनिक प्रवृत्तिक लेखनक जन्म ओ तकर विकासक जे स्वतन्त्रता प्राप्तिसँ पूर्वक इतिहास रहल अछि तकर सम्यक ज्ञान नहि रहलाक कारणे एकर परवर्त्ती प्रवृत्तिक यथातथ्य विश्लेषण आइ धरि नहि भऽ सकल अछि, प्रत्युत पत्र-पत्रिकाक फाइलमे दबल पड़ल एहि आरम्भिक कालक मैथिली कथाक बिना अध्ययन-मनन कयने गवेषक-समालोचक लोकनि एहि निष्कर्षपर पहुँचि गेल छथि जे मैथिली कथा-लेखनमे जे किछु नवीन प्रयोग भेल अछि, जे कोनो नवीन विषय, नवीन विचारधारा वा नव्य शिल्पक प्रवेश भेल अछि तकरा अनबाक समस्त श्रेय किछु आङुरपर गनल स्वातन्त्र्योत्तर कालीन कथाकारहि लोकनिकेँ छनि । वस्तुतः एहन निष्कर्ष मैथिली कथा-लेखनक आरम्भिक आधा शताब्दीक अवदानकेँ निरस्ते नहि करैत अछि अपितु एहिसँ एहन धारणा बनैत अछि जे मैथिलीमे वास्तविक रूपसँ कथा-लेखनक आरम्भ स्वतन्त्रताक बादे सम्भव भऽ सकल अछि । एहिसँ पूर्व जँ कथा-लेखन होइतो छल तँ से अगम्भीर, सत्वहीन एवं विधि पुरौअलि मात्र छल ।

मैथिली कथा साहित्यक इतिहासक-लेखन ओ समालोचन-विश्लेषणमे उत्पन्न भेल एहि प्रकारक भ्रान्तिक कारण छथि ओ तथाकथित आधिकारिक विद्वान लोकनि जे टेबुल-कुर्सी लगा कऽ अपन सुविधाक हिसाबसँ मैथिली कथाक टिपनि गढ़ैत रहलाह अछि आ ताहिमे ओतबे सामग्रीक उपयोग करैत रहलाह अछि जतेक सामग्री हुनक अपन रैकमे सैंतल राखल रहलनि अछि वा जतेक गोटासँ हुनका प्रगाढ़

आपकता रहलनि अछि । मैथिली कथा साहित्यक आद्यन्त एवं वास्तविक इतिहास तखने लिखल जा सकैत अछि जखन स्वतन्त्रता प्राप्तिसँ पूर्वक मैथिली पत्र-पत्रिकाकेँ ताकि ओहिमेसँ कथा सबकेँ निकालल जायत । मैथिली कथाक आरम्भिक अर्द्धशताब्दीक अवदानक जँ गम्भीरतापूर्वक विश्लेषण कयल जायत तँ इतिहास-लेखनमे ठाढ़ कयल गेल अनेकानेक भ्रान्ति सभक निराकरण निश्चित रूपसँ भऽ सकत । कथा-लेखनमे आइ जे अनेक प्रकारक विमर्श, नव्य चिन्ताधारा, नवीन क्षेत्रमे जा कऽ कथा तत्त्वक अन्वेषण, सामाजिक दायित्वक निर्वहन आदिक जे गर्वपूर्वक उल्लेख करैत कहल जा रहल अछि जे हमरा लोकनि भारतीय कथा-लेखनक संग डेगसँ डेग मिला कऽ चलि रहल छी आ मैथिलीमे एहि नवीन प्रवृत्तिकेँ अनबाक श्रेय स्वातन्त्र्योत्तर युगक एकटा खास मार्काक कथाकारहि लोकनिकेँ छनि, से अवधारणा मिथ्या प्रमाणित होइत अछि तखन, जखन स्वतन्त्रता प्राप्तिसँ पूर्वक कथाकार लोकनिक कथा ओ हुनक कथाक वस्तु-विन्यासकेँ देखैत छी । अपितु कतोक बिन्दुपर स्वतन्त्रताप्राप्तिसँ पूर्वक कथाकार लोकनि अपन कथामे अपना युगसँ बहुतो आगू देखल जाइत छथि । वर्त्तमान समयमे एहन बहुतो रासे समस्या सब जाहि गम्भीरताक संग भारतमे एवं विश्वमे आबि कऽ ठाढ़ भेल अछि जे साहित्य-लेखनक विषय बनि रहल अछि ताहिपर मैथिलीक कथाकार लोकनि बहुत पूर्वहि अपन कलम चला चुकल छथि से प्रमाण रूपमे उपलब्ध अछि ।

एहि आलेखक उद्देश्य आरम्भसँ लऽ कऽ 1950 इ. धरिक मैथिली कथा-लेखनक मूल्यांकन प्रस्तुत करब अछि । यद्यपि हरिमोहनझा, उपेन्द्रनाथझा व्यास, मनमोहनझा, उमानाथझा, योगानन्दझा प्रभृति प्रसिद्ध कथाकार लोकनिक उदय एही आलोच्य अवधिमे भेल छनि । मुदा ई कथाकार लोकनि अपन निरन्तर लेखन एवं कथा-संग्रहक प्रकाशनक कारणे पाठकीय एवं समालोचकीय दुनू प्रकारक सुख प्राप्त कयलनि । मैथिली कथा-लेखनक आरम्भिक पाँच दशकक इतिहासक ई लोकनि प्रखर स्तम्भ थिकाह । मुदा हिनका लोकनिसँ भिन्न एहि अवधिमे असंख्य ओहन कथाकार लोकनि भेलाह जनिका लोकनिक कथा सब पत्र-पत्रिकामे प्रकाशित भऽ कऽ रहि गेलनि । हुनका लोकनिक कथाक कथ्य, शिल्प ओ सन्देशसँ आजुक पाठक एवं समालोचक दुहू अनभिज्ञ छथि । वास्तवमे किछु आङुरपर गनल कथाकारहि लोकनिक आधारपर आलोच्य अवधिक कथा-लेखनक मूल्यांकन कयल जाइत रहल अछि जाहिसँ एहि अवधिक वास्तविक इतिहास सामने नहि आबि पाबि रहल अछि । अतः प्रसिद्ध कथाकार लोकनिसँ भिन्न एहि अवधिक ओहि अज्ञात-अप्रसिद्ध कथाकार लोकनिक कथा सबपर मुख्य रूपसँ ध्यान केन्द्रित कयल जा रहल अछि जे निस्सन्देह मैथिली कथा साहित्य अमूल्य निधि थिक एवं अपना समयमे ई अपन पाठक वर्गकेँ अतिशय प्रभावित कयने होयत ।

इतिहासमे प्रत्येक कालखण्डक अपन-अपन विशिष्ट सामाजिक स्वरूप रहल अछि । मिथिलाक इतिहासमे स्वतन्त्रता प्राप्तिसँ पूर्वक कालखण्डमे वैवाहिक समस्या अपन बीभत्सतम रूपमे व्याप्त छल । बहुविवाह, बालविवाह, अनमेलविवाह, कन्याविक्रय, वरविक्रय आदि सन वैवाहिक कुप्रथादि सबसँ मिथिला आक्रान्त छल । जनार्दनझा जनसीदनक **ताराक वैधव्य** (मिथिला मिहिर, 1917) मिथिलाक वैवाहिक कुरीतिक जाँतमे पिसाइत नारी समाजक हृदयविदारक चित्र थिक । कन्या-विक्रयकेँ व्यवसाय बनौनिहार मैथिल समाजक पुरुष वर्ग अबोधा ताराकेँ एकटा वयसाहु दुत्ती पुरुषक संग बियाहि दैत छैक । ताराक माय मधुरमणि एवं खबासिनी सकलीमाय एकर विरोधमे स्वर उठबैत अछि अवश्य, मुदा ओकरा सभक किछु नहि चलैत छैक । बारह वर्षक अवस्थामे तारा विधवा भऽ जाइत अछि । एहि कथामे केवल सामाजिक कुरीतिये नहि प्रत्युत ओकर विरोधमे उठि रहल स्वरकेँ सेहो ओही संवेगक संग चित्रित कयल गेल अछि ।

मैथिल ब्राह्मणक तथाकथित कुलीन वर्गमे जे बेटी बेचबाक परम्परा छल तकर सटीक चित्रण श्यामसुन्दरझा मधुपक कथा **कन्याविक्रय** (श्रीमैथिली, 1925) मे भेल अछि । हरिनाथ मिथिलाक एहने कुलीन ब्राह्मणक प्रतीक छथि जनिका लोकनिक व्यवसाये बेटी बेचि कऽ टाका अर्जित करब छलनि । तेहने निष्ठुर हिनक पत्नी मोहिनी छथिन जनिका एकटा दूर देशक अज्ञात कुलशीलक वयसाहु पुरुषक हाथेँ अपन पुत्री मालतीकेँ बेचि देबामे कनेको संकोच वा दरेग नहि होइत छनि । एहि कथामे कुलीन ब्राह्मण मध्य कन्याविक्रय सन कुत्सित परम्पराकेँ एहि रूपेँ व्यक्त कयल गेल अछि– **हमरा ब्राह्मणकेँ तँ ईश्वर बेटिये एक अपूर्व सम्पत्ति देने छथि, जकरासँ कतेको व्यक्ति ऋणोत्तीर्ण भऽ गेल अछि । ऋणोत्तीर्णक कोन कथा जे कन्यादान कयने कतेको सम्प्रति टुकटुकाय गेल अछि । कुमारि कन्या तँ हमरा गरीबक घरमे लक्ष्मीस्वरूपा थीकि** । यद्यपि एहि कथामे समाजक यथास्थितिवादी स्वरूपकेँ उपस्थित कयल गेल अछि तथापि एही संगे विवाहक नामपर अपना संग कयल जा रहल एहि अन्यायक प्रति मालतीक हृदयमे उठि रहल मौन विरोधक स्वरकेँ कथाकार अवश्ये देखा देलनि अछि ।

पुनर्जागरणक कारणे मिथिलाक सम्भ्रान्त वर्गमे अंग्रेजी शिक्षाक प्रति रुझान उत्पन्न अवश्य भेल । मुदा ई शिक्षा समाजमे एकटा नवे कुलीन वर्गकेँ जन्म देबऽ लागल । जेना पारम्परिक कुलीन ब्राह्मणक लोकनि अपनासँ निम्न कुलक ब्राह्मणक हाथेँ बिकाय बिकौआ जमाय बनैत छलाह ताही प्रवृत्तिकेँ दोहराओल जाय लागल छल अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त परिवारमे । अंग्रेजी पढ़ल बालकक विवाहमे कन्यागतसँ प्रचुर टाका गनयबाक प्रथा चलि पड़ल छल । यदुनाथझा यदुवरक कथा

शंकरक विवाह (श्रीमैथिली, 1926)मे एहने एकटा शिक्षित स्वाभिमानी युवक शंकरकेँ जखन ओकर पिता काटर लऽकऽ विवाह करबैत छथिन तखन ओ अत्यन्त बुद्धिमत्ता ओ तार्किकताक संग पिताक एहि कृत्यक तेना प्रतिकार करैत अछि जे अन्ततः ओकर पिताकेँ काटरक टाका कन्यागतकेँ घुमबऽ पड़ि जाइत छनि। ई कथा मिथिलाक शिक्षित युवावर्गमे उठि रहल परिवर्त्तनक लहरि दिस संकेत करैत अछि। नगेन्द्रकुमारक **नवीन युवक** (मिथिला मोद, 1937) मे सेहो मिथिलाक शिक्षित युवा वर्गमे आबि रहल नवीन जागरणक कारणे दहेजक विरोध, पीढ़ीक बीचक संघर्षकेँ चित्रित कयल गेल अछि। हरिनन्दनठाकुर सरोजक कथा **आदर्श** (मिथिला मोद, 1937) सेहो एही धाराक कथा थिक।

अनमेल विवाहक दारुण दुष्परिणामक चित्रण कुमार गंगानन्दसिंहक कथा **विवाह** (1935)मे भेल अछि। बालविवाहक घोर विरोधी कृष्णकान्तकेँ अपन माय ओ समाजक दबावक कारणेँ अल्पवयस्का रमासँ विवाह करऽ पड़ैत छैक। मातृत्व धारण करबाक क्षमतासँ रहित अपरिपक्व रमा विवाहक बाद पहिने तँ मृत सन्तानकेँ जन्म दैत अछि आ तकर बाद एहि झमारसँ ओ स्वयं अकाल मृत्युकेँ प्राप्त होइत अछि। एहि घटनाक लेल स्वयंकेँ दोषी मानैत कृष्णकान्त प्रायश्चित्तमे आत्महत्या कऽ लैत अछि। एहि कथामे अनमेल विवाहक दुष्परिणाम तँ देखाओल गेल अछि एवं रमाक प्रति पाठकक मोनमे संवेदना तँ जगैत छैक, मुदा आत्महत्या कयलाक बादो कृष्णकान्तक प्रति पाठकक मोनमे संवेदना जगबाक कोन कथा प्रत्युत घृणे उत्पन्न होइत छैक। एतेक सज्ञान ओ परिपक्व रहितो एक तँ कृष्णकान्त रमा सन अबोधा कन्यासँ विवाह करैत अछि आ तकर बादो जीवनक सभ बात बुझितो अपनापर नियन्त्रण नहि राखि पबैत अछि जाहि कारणेँ रमा गर्भवती भऽ जाइत छैक।

साहित्यमे वर्त्तमान समयमे जाहि नारी-विमर्शक एतेक हल्ला अछि तकर विविध रूप स्वतन्त्रता प्राप्तिसँ पूर्वक अनेक कथा सबमे देखबामे अबैत अछि। पूर्वमे वैवाहिक कुरीतिसँ सम्बद्ध किछु कथाक जे उल्लेख भेल अछि तकर केन्द्रमे अन्ततः नारिये अबैत छलि। वैवाहिक कुरीतिक घातक प्रहार अन्ततः नारियेपर पड़ैत छलैक। स्त्री प्रताड़नाक एहि अन्तहीन परम्पराक लेल एकमात्र पुरुषे दोषी नहि होइत छल प्रत्युत महिलाक दोष सेहो ककरोसँ कम नहि रहैत छलैक। **ताराक वैधव्य**मे माय मधुरमणि एवं खबासिनी सकलीमाय अपन सक भरि बालविवाहक विरोध करैत अछि, मुदा श्यामसुन्दरझा मधुपक **कन्याविक्रय**मे मालतीक माय मोहिनी एवं कुमार गंगानन्दसिंहक **विवाह** कथामे कृष्णकान्तक मायक कर्कशा रूप देखबामे अबैत अछि।

मिथिलामे स्त्रीशिक्षाक घोर अभाव, पारिवारिक कलह आदिक कारणे नारीक केहन दुर्गतिपूर्ण स्थिति छलैक तकर चित्र एहि अवधिक अनेक कथामे उभरल अछि। लक्ष्मीपतिसिंहक **विषपान** (प्रवेशिका मैथिली साहित्य, 1939) मे सासुक प्रताड़नासँ आजिज भऽ अन्ततः निर्मलाकेँ विषपान करऽ पड़ैत छैक, तँ हिनक **वसन्तोत्सवक बलिवेदीपर** (भारती 1938) शीला जँ बलिवेदीपर चढ़ि जाइत अछि तँ तकर पहिल कारण रहैत छैक ओकर पति जे ओकर परित्याग कऽ देने रहैत छैक; दोसर ओकर देओर चन्द्रदेव जे ओकरा प्रति कामुक दृष्टि रखैत छैक; तेसर ओकर सासु जे अपन घृणित चरित्रवला बेटाक खुलि कऽ समर्थन करैत छैक। जलधरझाक **विलक्षण दाम्पत्य** (मैथिल-हित-साधन, 1906)क नायिका सेहो अपन लोभी ओ निष्ठुर पतिक छल-छद्मक शिकार भऽ प्रताड़ित होइत अछि। शंकरलालदासक मुग्धक **पुनर्मिलन** (भारती 1937)क वृन्दा पतिक उपेक्षाक कारणेँ अपन देओरक प्रति अनुरक्त होइत बहुत आगाँ बढ़ि ओकर सम्पर्कसँ कल्याणक योग्यता धरि प्राप्त कऽ लैत अछि। एकर सजाय ओकरा पुनः भेटैत छैक। वृन्दाक पति ओकरा सिमरिया मेलामे छलपूर्वक लऽ जा कऽ छोड़ि दैत छैक जतऽ अनाथा वृन्दाकेँ वेश्यावृत्ति अपनाबऽ पड़ैत छैक, मुदा तकर बाद संयोगवश ओकरा अपन ओहि पूर्व प्रेमीसँ पुनः भेट होइत छैक। ओ प्रेमी ओकरा सहज भावसँ अपना लैत छैक। जीवनक मँझधारमे डूबि रहल वृन्दाक नाओकेँ माँझीक सहारा भेटि जाइत छैक। लीलादेवीक **विषम परिणाम** (मिथिला मोद, 1938)मे अनमेलविवाहक मारलि असहाया विधवा कान्ता बनारसमे कृष्णाबाइ बनि वेश्यावृत्तिमे लागि जाइत अछि। जयनारायणमल्लिकक **अछूत कन्या** (मिथिला ज्योति, 1948)क सुगिया चमाइनि समाजक सवर्ण लोकनिसँ अपन शरीरक रक्षाक करबाक हेतु क्रिस्तान बनि जाइत अछि। मुदा धर्म बदललाक बादो ओ अपन शीलक रक्षा नहि कऽ पबैत अछि, प्रत्युत ओहि नव धर्ममे औरो बेसी ओकर शरीरकेँ नोंचल-गीजल जाइत छैक। समाजमे व्याप्त एही नरराक्षस सभक भयसँ काञ्चीनाथझा किरणक रूपसी **करुणा** (भारती, 1937) विधवा भेलाक बाद तेजाब ढारि स्वयंकेँ विद्रूप बना लैत अछि। स्वातन्त्र्योत्तर मैथिली कथा-लेखनक पुरोधाक रूपमे प्रचारित ललितक चर्चित कथा **हम वेश्या किएक भेलहुँ ?** (वैदेही 1951)क कथावस्तु सेहो एहने सन अछि। लीलादेवीक **विषम परिणाम** (1938)क कान्ता जकाँ ललितक कथाक बालविधवा नायिका बौअनिकेँ सेहो विवश भऽ कऽ काशीमे वेश्यावृत्तिमे जाय पड़ैत छैक। एहि दृष्टिसँ ललितक एहि कथामे नव्यता नहि प्रत्युत पुनरुक्ति अछि।

वस्तुतः अपन घरसँ लऽकऽ बाहर धरि सर्वत्र नारी वर्ग असुरक्षित छलि। मिथिलाक धर्मप्राण नारी लोकनि ग्रहण, पूर्णिमा आदिक अवसरपर पुण्यलाभक हेतु

गंगा, कमला आदि सन पवित्र नदीमे स्नान करऽ जाइत छलीह आ ताहि क्रममे बाट-घाटसँ लऽकऽ मेला-ठेला धरि रेलकर्मी एवं पुलिस आदिसँ लऽकऽ गुण्डा-अवारा पर्यन्तक दुर्व्यवहार-कदाचारक शिकार भेल करैत छलीह । बीसम शताब्दीक आरम्भिक दशक सबमे महिला लोकनिकेँ एहन सार्वजनिक मेलामे जयबाक विरुद्ध मिथिलामे स्वर उठल छल । आजुक नारी-स्वतन्त्रता दृष्टिएँ भने एहि प्रकारक प्रतिबन्धक प्रयासकेँ अत्याचारक संज्ञा देल जायत, मुदा अपना समयमे समाज सुधारहिक दृष्टिसँ ई प्रयास भेल छल । भीड़ एवं मेला-ठेलामे स्त्रीगण लोकनि कोना असुरक्षित रहैत छलीह तकर चित्रण प्रगतिवादी कहौनिहार काञ्चीनाथझा किरणक उपन्यासिका **चन्द्रग्रहण** (1932) मे सेहो भेल अछि । अपना समयमे एहि विषयकेँ लऽकऽ सामाजिक जागरुकता उत्पन्न करबाक दृष्टिसँ अनेक कथाकार लोकनि द्वारा कथाक रचना कयल गेल छल । श्रीमन्तलालदासक **अपन ओ आन** (श्रीमैथिली, 1929)क दिवानजी गाम भरिक महिलापर सार्वजनिक मेलामे जयबापर प्रतिबन्ध लगा देने रहथि । हरिनन्दनठाकुर सरोजक **गंगास्नान** (मिथिला मिहिर, 1931)मे सेहो सिमरिया स्नान हेतु चलल तीर्थयात्री लोकनिक दुर्गंजन ओ अपमानक यथार्थ चित्रण भेल अछि ।

वस्तुतः स्वतन्त्रताक प्राप्तिसँ पूर्वक मैथिली कथामे नारीक विविध चित्र उपस्थित भेल अछि । दुष्टा सासु, क्रूर सत्माय, दोचारनि ननदि, सहनशीला पुतोहु आदि सन किछु नारी चरित्र तँ सर्वथा रूढ़ देखबामे अबैत अछि । एहिसँ भिन्न शारदानन्दठाकुर विनयक **तारा** (मिथिला मित्र, 1932)मे एकटा नारीक संघर्षकेँ रूपायित कयल गेल अछि । नन्दकिशोरलालक **यैह हमर दुर्गा** (मिथिला मिहिर, 1937)क चरित्र पात्री चम्पादाइक स्वरूप ऊपरसँ जेहने कठोर अछि भीतरसँ ओकर हृदय तेहने कोमल छैक । एकटा अज्ञात कुलशीला, मातृहीना नवजात कन्याक प्रति अकस्मात ओकर हृदयमे उमड़ल अजस्र मातृत्वक भाव ओकरा कर्कशासँ वात्सल्यमयी देवीक रूपमे ठाढ़ कऽ दैत छैक । पूर्वमे कथा बनबाक हेतु घटनामे चमत्कार होयबाक जे गप्प कहल जा चुकल अछि, से चमत्कार अपन पूर्ण रूपमे एहि कथामे उपस्थित भेल देखबामे अबैत अछि, प्रत्युत ई कथा अपना समयसँ बहुत आगूक कथा थिक । वर्त्तमानमे जाहि लैंगिक असन्तुलनकेँ लऽकऽ सम्पूर्ण देश चिन्तित भऽ उठल अछि आ सरकारकेँ **कन्या बचाउ : कन्या पढ़ाउ** सन योजना प्रारम्भ करऽ पड़ि रहलैक अछि, ई सन्देश मैथिली कथा-लेखन द्वारा स्वतन्त्रतासँ पूर्वहि **यैह हमर दुर्गा** सन कथाक माध्यमसँ बिलहल जा चुकल अछि । वस्तुतः ओहि कालक कथामे एक दिस जँ नारीक प्रताड़नाक यथार्थवादी चित्र अछि तँ दोसर दिस नारीक शक्तिमयी रूपक अर्चन-प्रतिष्ठापन सेहो भेल अछि ।

स्वातन्त्र्योत्तर मैथिली कथामे जाहि नारी शक्ति, नारी स्वतन्त्रता एवं नारी मुक्तिकेँ अभिनव विषय बूझल गेल अछि से वस्तुतः एकटा भ्रम थिक । स्वतन्त्रता प्राप्तिसँ पूर्वक अनेक कथामे ई सब विषय बिना कोनो झण्डा-पताका लगौने अत्यन्त सहजभावसँ चित्रित-वर्णित भेल अछि । श्यामसुन्दरझा मधुपक **प्रतिज्ञापत्र** (भारती, 1937)क रमा भने अपन क्रूर सासुक प्रतिकार नहि कऽ सकलि, मुदा जखन ओकरा अपन सुषुप्त शक्तिक भान होइत छैक तँ ओ लाज एवं संकोचक बन्हन तोड़ि घरसँ बहराय अंग्रेजी शासक विरोधमे सड़कपर उतरैत अछि आ पुलिसक लाठीसँ आहत होइत प्राणोत्सर्ग पर्यन्त कऽ बैसैत अछि । जयनारायणमल्लिक कथा **जीवनपथ** (भारती, 1938)मे नारी स्वतन्त्रताक सकारात्मक एवं तकर दुरुपयोग वा अतिरेकक कारणेँ एहि स्वतन्त्रताक ध्वंसात्मक एहि दुनू रूपक चित्रण भेल अछि । बनारसक थियोसोफिकल स्कूलमे पढ़ैत चन्द्रा, नाटकक मंचपर उन्मुक्त भावेँ अभिनय करैत चन्द्रा, अपन विजातीय पुरुष मित्रक संग निःसंकोच भावसँ सिनेमा देखैत, गंगामे जलविहार करैत चन्द्रा, स्वतन्त्रता संग्रामी पति लक्ष्मीनाथक त्याग मार्गकेँ छोड़ि अपन प्रेमी चन्द्रनाथक भोग मार्गपर चलैत चन्द्रा, आजुक भाषामे जकरा लिव-इन-रिलेशन कहल जाइत छैक ताहि मार्गक अनुसरण करैत विगत शताब्दीक चारिम दशकमे अपन पुरुष मित्र चन्द्रनाथक संग उन्मुक्त भावसँ रहैत मैथिली कथाक नायिका चन्द्रा । मैथिली कथामे तथाकथित नारी मुक्तिक जतेक चरण भऽ सकैत अछि ततऽ धरि पहुँचलि देखलि जाइत अछि जीवनपथक चन्द्रा । ललित, लिलि रे अथवा राजकमलक कथामे नारी स्वतन्त्रताकेँ जे अर्थ देल गेल अछि ताहिसँ बहुत आगू अछि, जयनारायणमल्लिक **जीवनपथ** । एही काटक कथा अछि ललितक **मुक्ति** (वैदेही 1955) जकर नायिका शेफाली अपन दैहिक भोग हेतु एकटा दरबान संगे उढ़रि जाइत अछि। कतोक समालोचक लोकनि एकरा नारी स्वतन्त्रताक परिप्रेक्ष्यमे एकटा युगान्तरकारी परिवर्त्तनक रूपमे रेखांकित करैत अघाइत नहि छथि । कदाचित् ई समालोचक लोकनि शेफालीसँ सतरह वर्ष पूर्वक **जीवनपथ** (1938)क नायिका चन्द्राकेँ देखने रहितथि तँ बूझि सकितथि जे शेफालीक तुलनामे कतेक बेसी बोल्ड छलि विवाहिता चन्द्रा । ओ शेफाली जकाँ पड़ाइत नहि अछि प्रत्युत विवाह सन संस्थाकेँ सोझाँ-सोझी चुनौती दैत समाजक समक्ष अपन प्रेमीक संग रहैत अछि । एहि दृष्टिएँ देखल जाय तँ ललितक **मुक्ति**मे कोनो नवीनता नहि छनि । **जीवनपथ**हिक ओ कार्बनकॉपी थिक प्रत्युत एकरा तुलनामे मुक्तिक ताप बड़ मन्द ओ हिनुआन अछि । किएक तँ एतेक समय बितलाक बादो ललित, स्वतन्त्र भारतक अपन कथानायिकामे ओ साहस नहि भरि सकलाह जाहि साहसक प्रदर्शन जयनारायणमल्लिक परतन्त्र भारतक अपन कथानायिकासँ करबा चुकल रहथि । मुदा एहन स्वतन्त्रता

कतेक घातक होइत अछि तकरो चित्रण **जीवनपथमे** भेल अछि जखन चन्द्रा ठकाइत अछि । जे प्रेमी ओकरा अंकशायिनी बना कऽ रखैत छैक से ओकरा पत्नीक स्थान नहि दैत छैक । पुरुष मित्रक द्वारा कयल गेल एहि विश्वासघातक बाद चन्द्राक मोहभंग होइत छैक आ तकर बाद ओ प्राणोत्सर्ग कऽ कऽ प्रायश्चित्त करैत अछि । वस्तुतः जीवनपथमे अनियन्त्रित नारी स्वतन्त्रताक दुखद परिणाम देखबैत ई सन्देश देल गेल अछि जे नारी मुक्तिक अर्थ उन्मुक्त भोग मात्र नहि थिक । एहू दृष्टिएँ ललितक **मुक्तिमे** एकटा पैघ क्षुण्णता दृष्टिगोचर होइत अछि। एकटा दरबानक संग शेफालीकेँ उढ़रबा कऽ ललितकेँ भने अपन समयमे भेल होइनि जे ओ बड़ पैघ क्रान्तिकारी छथि, मुदा एकर औरो की की परिणाम भऽ सकैत छैक, कने ताहू दिस तँ दृष्टिपात करितथि कथाकार ? एहि बातक कोन गारंटी छल जे ओ चौबे दरबान शेफालीक शरीरक भरि पोख भोग कयलाक बाद ओकरा कोनो वेश्यामंडीमे नहि बेचि देने होइक ? तेहना स्थितिमे शेफालीक हेतु ई मुक्ति भेल वा जीवन पर्यन्तक हेतु यातनामय कालकोठरीक सजाय ? वस्तुतः एहि कथामे नारीक प्रति पुरुष मनक कुत्सा उजागर भेल अछि । एक प्रकारेँ देखल जाय तँ मुक्ति कथा द्वारा ललित मैथिल नारीकेँ पशुतुल्य प्रमाणित करैत ओकर घोर अपमान कयलनि अछि । मात्र अपन कथाकेँ 'गर्म' बनयबाक हेतु नारीक विद्रूप चित्र ठाढ़ करबाक एहि प्रकारक प्रवृत्तिक कदापि समर्थन नहि कयल जा सकैत अछि ।

स्वतन्त्रता प्राप्तिसँ पूर्वक मैथिली कथा-लेखन अपन समयक प्रकृति ओ परिवेशक प्रति पूर्ण सन्नद्ध छल जे कतहु संकेत रूपमे तँ कतहु विस्तार रूपमे चित्रित भेल देखबामे अबैत अछि । ओहि कालखण्डक एकमात्र राष्ट्रिय संकल्प अंग्रेजी पराधीनतासँ मुक्ति प्राप्त करब छल । काशीनाथझाक **सत्माय** (भारती, 1937), श्यामसुन्दरझा मधुपक **प्रतिज्ञापत्र** (भारती, 1937), जयनारायणमल्लिकक **देहाती जीवन** (भारती, 1937) एवं **जीवनपथ** (भारती, 1938), प्रबोधनारायणचौधरीक **किशोरी सेवासदन** (बीछल फूल, 1940) एवं श्यामानन्दझाक **अकिंचन** (मिथिला मित्र, 1930)मे कतहु प्रतीकात्मक रूपमे तँ कतहु यथार्थ रूपमे राष्ट्रवादक भावना उमड़ैत देखबामे अबैत अछि । भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलनक ओहि कालखण्डमे भारतीय जनमानसकेँ वामपंथी राजनीतिक चेतना सेहो प्रभावित करऽ लागल छलैक । स्वतन्त्रताक उद्देश्य मात्र अंग्रेजसँ मुक्तिये प्राप्त करब धरि सीमित नहि रहि गेल छल प्रत्युत ई संघर्ष समाजक ओहि वर्गक विरुद्ध सेहो छल जे कृषक ओ श्रमिक आदिक शोषण करैत छल । जयनारायण मल्लिकक **देहाती जीवनमे** एक दिस जँ सामंती अत्याचार ओ विलासिताक प्रतीक कुमरसाहेब छथि तँ दोसर दिस हुनक पत्नी पद्मावती सेहो छथि जनिक हृदयमे गोइठाक आगि जकाँ क्रान्ति सुनगि

रहलनि अछि। एक दिस दीन जनक हाहाकार तँ दोसर दिस ड्योढ़ी-दरबारमे प्रवाहित भऽ रहल आनन्दक धारा प्रवाहित होइत देखि क्षुब्ध पद्मावती मनहि मन सोचैत छथि– **एहि आनन्दक अन्तर्गत कतेक दीन-दुखियाक आर्त्तनाद, कतेक गरीबक करुण क्रन्दन अन्तर्हित अछि। एक-दू व्यक्तिक भोग-लिप्साक हेतु कतेक अनाथ-अनाथिनी विषम व्यथाक फलस्वरूप बहुमूल्य अश्रुक मूल्य देने हैत। एखनहुँ एहि आनन्दक अन्तस्तलमे दरिद्र प्रजाक अन्तर्ज्वाल तीव्र वेगसँ प्रज्ज्वलित भऽ रहल अछि, ई विषमता कथमपि ईश्वरीय न्याय नहि थीक, तेँ एक दिन साम्यवादक मन्त्रसँ एहि पैशाचिक नरलीला मानवीय अत्याचारक अन्त अवश्य हैत।** एहिना मधुपकर **प्रतिज्ञापत्रक** गणेश सेहो साम्यवादी-वामपंथी विचारधारासँ प्रभावित भऽ किसान आन्दोलनमे कूदि पड़ैत अछि।

मिथिलाक बुद्धजीवी वर्गपर पड़ि रहल रूसक एहि कम्युनिज्मक प्रभावक संकेत रमानाथझा (कोइलख)क कथा **एकन्नी** (मिथिला मोद, 1938) सेहो दैत अछि। एकटा सामान्य व्यक्तिक बुद्धिमे धनक असमान वितरण सन समस्याक अहिंसक निदानक उपाय अत्यन्त रोचक अछि। मुदा ताहि संगे एहि कथामे एकटा बड़ पैघ भविष्यदर्शी व्यंग्य सेहो निहित अछि। भारतमे साम्यवादक भविष्य कोन रूपक होयत तकर स्पष्ट चित्र एहि कथामे देखबामे अबैत अछि जे कोना समाजक बुधियार सम्पत्तिशाली वर्ग दूरदर्शितासँ काज लैत साम्यवादी विचारधारा ओ साम्यवादी आन्दोलन दिस प्रवृत्ते नहि भेल प्रत्युत अत्यन्त योजनाबद्ध ढंगसँ एहू आन्दोलनपर कब्जा जमा लेलक आ एकर सदुपयोग अपन पैतृक सम्पत्तिक रक्षाक संग-संग ओकरा निरन्तर अभिवृद्धिक करैत रहल। समाजक जाहि शोषित वर्गक उत्थान हेतु मार्क्स द्वारा एतेक पैघ क्रान्तिकारी चिन्तन कयल गेल संगहि तकरा जमीनपर साकार करबाक हेतु एतेक विस्तृत कार्ययोजना तैयार कयल गेल, ताहि आन्दोलनक लहलही भारतमे आबि कऽ घोसरि गेलैक जखन एहि ठामक चतुर-चलाक समृद्ध वर्ग एकरा तुरत लपकि लेलक। आइयो भारतमे ई सुविधाभोगी साम्यवादी लोकनि पंचायत स्तरसँ लऽकऽ राष्ट्रिय स्तर धरि पिलुआ जकाँ खदखद करैत देखबामे अबैत अछि जे सब प्रकारक सरकारी-गैरसरकारी लाभ ओ सुविधाकेँ हँसोथि लेबामे माहिर अछि। अपन बाल-बच्चा उत्तम शिक्षा ग्रहण कऽ उच्च-उच्च पदपर बैसउन आ गरीबक बच्चा हुनक झण्डा उघैत रहउन। सरकार ककरो हो दक्षिणपंथी वा वामपंथीक, समाजवादी वा मध्यममार्गीक ई सुविधाभोगी बुद्धिजीवी वर्गमे परिगणित लोक सब सभक संगे सटि कऽ लाभ उठबैत रहल अछि।

स्वतन्त्रता प्राप्तिसँ पूर्वक भारतमे सामाजिक विषमता विभिन्न स्तरपर व्याप्त छल। ई विषमता जातिगत एवं अर्थगत दुहू स्तरपर छल। जातिगतो विषमता विभिन्न

स्तरपर व्याप्त छल । हिन्दू समाज ऊपरसँ सवर्ण, अवर्ण एवं अछोप एहि तीन वर्गमे विभक्त अवश्य छल । मुदा एहि तीनू वर्णक भीतरहुमे अपनामे छोप-अछोपक घनघोर विचार छल । मिथिलाक तथाकथित कुलीन ब्राह्मण लोकनि द्वारा जयवार एवं निम्न कुलक ब्राह्मणक छुइल अन्न ग्रहण करबाक कोन कथा हुनका लोकनिक छुइल जलसँ लघुशंका पर्यन्त नहि करबाक उद्घोष अहंकारकपूर्वक कयल जाइत छल । वस्तुतः ओहि युगक मैथिली कथा सबमे सामाजिक विषमताक मार्मिक चित्र सभ भरल अछि । जयनारायणमल्लिकक **अछूत कन्याक** सुगिया चमाइनिकेँ गामक सार्वजनिक इनार-पोखरिसँ पानि भरबाक मनाही रहैत छैक, किएक तँ ओकर स्पर्श मात्रसँ धर्मभ्रष्ट भऽ जयबाक खतरा छल । मुदा सुगियाक सान्निध्यसँ अपन देहक भूख मेटयबाक हेतु केहन-केहन चानन-ठोपबला बाबू-भैया लोकनि व्याकुल रहैत छथि । अन्ततः सुगिया एहि स्थितिसँ आजिज भऽ अपन शीलक रक्षा हेतु क्रिस्तान बनि जाइत अछि । ई कथा वस्तुतः समाजक ओहि समस्या दिस ध्यान आकृष्ट करबैत अछि जे अतीत कालमे अस्पृश्यता रूपी यातनासँ त्राण दिअयबाक हेतु कोना मिशनरी सभक द्वारा भारी संख्यामे दलित हिन्दू सबकेँ धर्मान्तरण करा कऽ इसाइ बनाओल गेल छल, ओकरहि सबकेँ पुनः अपना पूर्वजक धर्ममे अनबाक हेतु रहि-रहि कऽ **घरवापसी** सन अभियान चलाओल जयबाक चर्चा वर्त्तमान समयमे सुनबामे आबि रहल अछि ।

यद्यपि **अछूत कन्यामे** समाजक यथार्थ चित्र उपस्थित कयल गेल अछि अवश्य, तथापि ई यथार्थ एकपक्षीय अछि । कथामे अछूतकेँ प्रताड़ित करबाक सम्पूर्ण दोष जेना ब्राह्मण मात्रपर मढ़ि देल गेल अछि ताहिसँ प्रतीत होइत अछि जे कथाकार अतिशय प्रगतिवादी बनबाक उत्साहमे एहन कऽ बैसलाह । हिन्दीक प्रेमचन्दक साहित्यमे जँ सर्वत्र ब्राह्मणक प्रति एकटा दुर्भावना प्रदर्शित करैत ओकरा खलनायक रूपमे ठाढ़ कयल गेल अछि तँ से अनेरे नहि अपितु योजनाबद्ध अछि । वास्तवमे आरम्भिके कालसँ साहित्यमे प्रगतिशील कहयबाक प्रथम शर्त्त रहल अछि ब्राह्मण विरोध । समाजक प्रत्येक समस्याक लेल ब्राह्मण मात्रकेँ दोषी प्रमाणित करबाक कारणहि तँ प्रेमचन्द प्रगतिशील होयबाक तगमा पौने छलाह ! तहिना मल्लिकजी सेहो अपन कथामे तकरे अनुकरण करैत देखल जाइत छथि । अन्यथा अछूतक प्रति ब्राह्मणे नहि प्रत्युत सवर्ण सहित समस्त सवर्णेतर मध्यमवर्गीय जातिक व्यवहार एके रंगक भेल करैत छल आ यैह सामाजिक यथार्थो छल । प्रत्युत अस्पृश्य मानल जायवला जाति सबहक बीचमे अपनहुमे छोप-अछोप, ऊँच-नीच आदिक घनघोर विचार रहल अछि आ से वर्त्तमानहुँ कालमे अछिहे । तेहनामे अस्पृश्यता सन सामाजिक समस्याक लेल ब्राह्मण मात्रपर सम्पूर्ण दोष मढ़ल जायब सत्यक अपलाप एवं संगठित अपप्रचार थिक ।

समाजमे अर्थगत विषमतासँ उत्पन्न सामंती अत्याचारक चित्रण जयनारायण मल्लिकहिक एकटा अन्य कथा **देहाती जीवन** (भारती, 1937)मे भेलनि अछि जाहिमे कुमरसाहेबक दमनक शिकार हुनक स्वजातीय किन्तु निर्धन व्यक्ति महादेवसिंह होइत अछि। सुरेन्द्रझा सुमनक कथा **कलाक पुरस्कार** (मिथिला मिहिर, 1939)मे सेहो एही अर्थगत विषमताकेँ अत्यन्त मार्मिकताक संग रेखांकित कयल गेल अछि। निर्धन बालक जानकीक दोष एतबे छलैक जे ओकरामे संगीतक प्रति जन्मजात नैसर्गिक प्रेम छलैक। संगीत-साधनाक प्रति अपन गहन अनुरागकेँ ओ दबा कऽ नहि राखि सकल आ आनन्दबाबूक ओहिठाम सितारक तारपर अपन आङुर फेरबा सन अपराध कऽ बैसल। संगीत सन कलाक प्रति रुचि रखबाक एकमात्र अधिकार तँ समाजक आनन्दबाबू सन समृद्ध लोकक परिवारहिक सदस्य लोकनिकेँ छलनि! दरिद्रक सन्तान जानकी एहि अधिकार क्षेत्रमे हुलकी दऽकऽ बड़ पैघ दुस्साहस कयलक तँ तकर परिणामस्वरूप ओकरा बेंतक असहनीय मारि पड़लैक आ ओ बालक अपन भग्न मनोरथक संग एहि संसारसँ विदा भऽ जाइत अछि।

स्वातन्त्र्योत्तर कालमे जकरा वर्ग संघर्षक कथा अथवा प्रगतिवादी कथाक संज्ञा देल गेल तकर बीजोरोपण सहज भावसँ एही आलोच्य कालमे होइत देखल जाइत अछि। वर्त्तमान कथा-लेखनमे जकरा दलित-विमर्शक संज्ञा देल गेल अछि तकर प्रयोग एहि आलोच्य कालमे भुवनेश्वरसिंह भुवनक कथा **शून्य**मे देखल जाइत अछि। प्रबोधनारायणचौधरीक कथा **सतीक शक्ति** (मिथिला मोद, 1938) यद्यपि लोककथात्मक शैलीक कथा अछि, मुदा एकर सन्देश सर्वथा समसामयिक एवं स्पष्ट अछि। मनुष्यता ओ सच्चरित्रता केवल नामी-गामी, धनी-कुलीने लोकनिक बपौती नहि थिकनि। मुसहर सन दलित समुदायक भरोसीक सद्आचरण, ओकरा समक्ष सबकेँ अपन मूड़ी गोतबाक हेतु विवश कऽ दैत छैक। समाजक एकटा उपेक्षित समुदायक व्यक्तिक उदात्त चरित्रकेँ प्रस्तुत कयनिहार एहि कथामे भावी दलित-विमर्शक संकेत देखल जाइत अछि। वस्तुतः ई कथा सब एहू तथ्य दिस संकेत करैत अछि जे स्वतन्त्रता प्राप्तिसँ पूर्वक मैथिली कथा-लेखन वर्णवादी-वर्गवादी प्रवृत्तिसँ आगाँ बढ़ि समाजवादी क्षेत्रमे अपन भविष्यक अन्वेषण करऽ लागल छल।

पर्यावरण-प्रदूषण, परिस्थितिकीय-असन्तुलन, विज्ञानक प्रगतिक कारणे निरन्तर ध्वंस दिस बढ़ि रहल सृष्टि आदि सन विषयपर वर्त्तमान समयमे विश्वव्यापी विमर्श भऽ रहल अछि। स्वभावतः एहि प्रकारक ज्वलन्त विषयपर सेहो मैथिलीमे वर्त्तमानमे कथा लिखा रहल अछि। मुदा एकरा आश्चर्ये कहल जायत जे जाहि गंगाक प्रदूषण सन समस्यापर वर्त्तमानमे सम्पूर्ण देशमे जेना घनघोर चिन्तन-मनन

चलि रहल अछि, एहि लेल अनेक योजना प्रारम्भ कयल जा रहल अछि ताहि दिस विगत शताब्दीक पूर्वार्द्धमे मैथिलीक कथाकार लोकनिक ध्यान आकृष्ट भऽ चुकल छलनि। गंगाक दुर्दशा कोन रूपक भऽ चुकल छल तकर अनुमान शंकरलालदास मुग्धक कथा **पुनर्मिलन** (भारती, 1937)क सिमरियाघाटक एहि वर्णनांशसँ लगाओल जा सकैत अछि– **पतित पावनी गंगाजीक नाम तँ पवित्रतोकेँ पवित्र कयनिहार अछि। किन्तु एहि ठामक जे दृश्य देखल से कुम्भीपाकहुकेँ तुच्छ कयनिहार अपर कुम्भीपाक बनि गेल छल। गंगाजलक कणा मात्रसँ पापक प्राण सुखाय लगैछ, ताही पवित्र सुरसरिकेँ लोक बमपुलिस बनौने छल। धारक जल पवित्र नहि रहि, घाटपर घोर मट्ठा भऽ रहल छल। स्नान करबाक कोन कथा स्पर्शो करबामे नितान्त घृणा होइत छल। तथापि लाखक लाख लोक ओहि रौरवमे डूब दऽ अपन जन्म जन्मान्तरक पाप धोइत छल। जखन गाड़ी सकरी मिल लग आयल छल तँ ओकर दुर्गन्धसँ सभक नाक फाटऽ लागल छलैक। एखन ताहिसँ कतहु बेसी दुर्गन्धक बीच लोक सब बासा देने छल, स्नान-ध्यान कऽ रहल छल, भोजनादिमे प्रवृत्त छल। पुण्यक ई आडम्बर देखि दहलि गेलहुँ। प्रण कयलहुँ जे फेर कहियो मेलाक अवसरपर गंगास्नान नहि आयब।**

ई मात्र एकटा कथाकारक निजी अनुभव नहि थिकनि अपितु मैथिली कथालेखनक ई राष्ट्रिय दायित्वक उद्घोष थिक जाहिमे गंगा सन पुण्यतोया नदीक प्रदूषणपर चिन्ता एवं क्षोभ व्यक्त करैत सभक ध्यान एहि दिश आकृष्ट कयल गेल अछि।

मानवीय लोलुपताक कारणेँ प्रकृतिमे जे एकटा पारिस्थितिकीय असन्तुलन उत्पन्न भऽ गेल अछि तकर गम्भीर कुप्रभाव धरतीक स्वरूप, ऋतुचक्र, जैविकचक्र आदिपर पड़ि रहल अछि। एहि भावी समस्याक आभास आलोच्य युगक मैथिली कथाकार लोकनिकेँ लागि चुकल छलनि। प्रबोधनारायणचौधरीक कथा **आदर्श पंच मौजेबाबू** (बीछल फूल, 1940)क शिल्प तँ परम्परागत लोककथात्मक अवश्य अछि, मुदा कथाक वस्तु-विन्यास ओ चिन्ताधारा अत्यन्त नवीन, मौलिक एवं समीचीन अछि। कथामे गोचरभूमिक रूपमे सर्वदासँ रहैत आयल सार्वजनिक हरित क्षेत्रक भऽ रहल अतिक्रमणसँ पशु आहारपर उत्पन्न होइत संकट, एहि कारणे पशुधनमे निरन्तर भऽ रहल कमी, चरीक अभावमे पशु द्वारा लोकक जजाति चरि लेल जयबाक घटना एवं एहि लऽकऽ समाजमे उत्पन्न होइत तनावकेँ अत्यन्त युक्तिपूर्ण ढंगसँ कथामे प्रस्तुत कयल गेल अछि। कथाकार एहि कथामे समस्ये नहि ओकर समाधानो देखौलनि अछि।

जनिका स्वतन्त्रतासँ पूर्व अवधिक कथा नहि पढ़ल-देखल छनि से ललितक कथा **रमजानी** (1954) पढ़ि फटाक् दऽ एहि निष्कर्षपर पहुँचि जाइत छथि जे विज्ञानक विकासक कारणे उत्पन्न मशीन युगमे प्रवेश करबाक संकेत सर्वप्रथम एही

कथासँ भेटैत अछि । जँ एहन समालोचक लोकनि प्रबोधनारायणचौधरीक लोककथात्मक शैलीमे लिखित कथा **आदर्श राजा** (बीछल फूल, 1940)केँ पढ़ने रहितथि तँ बुझितथि जे कोना विज्ञान विकासक द्वार खोलैत अछि अवश्य, मुदा एक सीमाक बाद ओ विकास अत्यन्त बुद्धिमत्ताक संग विनाशक रूप धारण कऽ लैत अछि ताहि गम्भीर तथ्यकेँ एहि कथामे कोना उपस्थापित कयल गेल अछि । अन्धाधुन्ध अनियोजित विकाससँ प्रकृति आ पर्यावरण दुनू प्रभवित भेल अछि आ तकर परिणामस्वरूप प्राकृतिक आपदा कोना विध्वंसक रूप धारण कऽकऽ उपस्थित होइत रहैत अछि आ तेहना स्थितिमे विज्ञान कोना मनुष्यक लेल वरदानसँ अभिशाप बनि जाइत छैक ताहि विषयकेँ अत्यन्त सोझ ओ उपदेशात्मक ढंगसँ एहि कथामे वर्णित कयल गेल अछि। एहि तुलनामे ललितक **रमजानी**क चिन्तना बहुत पछुआयल छनि। **आदर्श राजा** अपन समयसँ आगूक कथा कहैत अछि।

घुसखोरी, दलाली, कमीशनखोरी आदि सन भ्रष्टाचरणक द्वारा अवैध ढंगसँ धन संचयनक प्रवृत्ति वर्त्तमानमे भयंकरतम व्याधिक रूप ग्रहण कऽ लेने अछि । घोटाला-घुसखोरीक संस्कृति देशक राजनीतिकेँ हिला कऽ राखि देने अछि । भ्रष्टाचारक ई ज्वलन्त समस्या वर्त्तमान साहित्य-लेखनमे प्रमुखताक संग मुखरित भऽ रहल अछि । मुदा मैथिली कथा-लेखनमे ई विषय बहुत पूर्वहि अत्यन्त रोचकता एवं वैचारिकताक संग आबि चुकल अछि । एहि प्रवृत्तिक कथा थिक काशीनाथझाक **नरक-नन्दन रेलवे कम्पनी** (भारती, 1937) । ओहि अंग्रेजी शासन कालमे देशमे घुसखोरी ओ भ्रष्टाचार कोन स्थितिमे पहुँचि गेल छल तकर सटीक चित्रण एहि कथामे भेल अछि। व्यंग्यात्मक शैलीमे लिखित एहि कथामे जेना भ्रष्टाचारक संस्कृतिपर समधानि कऽ प्रहार कयल गेल अछि से अपना समयमे कोनो कथाकार द्वारा बड़ पैघ साहस देखायब छल । कथाकार प्रतीकक माध्यमसँ घुसखोरी संस्कृतिक चित्रे मात्र नहि उरेहने छथि अपितु एहि प्रवृत्तिक जन्म एवं विकासक पाछाँ जे प्रेरक तत्त्व सब रहल अछि एवं राजकीय व्यवस्था दिससँ कोना एहि कुप्रथाकेँ संरक्षण-प्रोत्साहन देल जाइत रहलैक अछि तकरो नीक जकाँ देखार कयने छथि । भ्रष्टाचरणकेँ बढ़ावा तखने भेटैत छैक जखन ओकरा सत्ताक दिससँ प्रत्यक्ष वा अप्रत्यक्ष स्वीकृति प्राप्त रहैत छैक, तकर बाद एकरे सदाचरण वा युग व्यवहार बूझि जनता सेहो ओकर अनुकरण करब प्रारम्भ कऽ दैत अछि । एहि कथामे राजकीय कर्मी सभक द्वारा भ्रष्टाचारक दिस प्रवृत्त होयबाक पाछाँ एकटा प्रमुख कारण देखाओल गेल अछि ओकर अल्प वेतनभोगी होयब। जँ सरकार अपन कर्मचारीकेँ न्यूनतम प्रयोजनक पूर्त्ति कऽ सकबाक योग्य पारिश्रमिक नहि देत तँ स्वभावत: ओ अनैतिक कार्य द्वारा एकर पूर्त्तिक प्रयास करत। तेँ ने युधिष्ठिर, ईसा

ओ बुद्ध सन सत्यनिष्ठ-सदाचारी राजकर्मी लोकनि अभावक स्थितिमे जनता दिससँ देल जायवला उपहारादिकेँ क्रमशः स्वीकार करैत कुपात्र सबकेँ स्वर्गमे प्रवेश करबाक अनुमति देबऽ लगैत छथि । अंग्रेजी शासन कालमे सरकारी ऑफिस सबमे घुसबाक अर्थात् प्रवेश करबाक बदलामे गेटपर ठाढ़ अर्दली सभक द्वारा जे जनतासँ अवैध शुल्क लेल जाइत छल सैह प्रथा, घूस, नामसँ प्रसिद्ध भेल । कालान्तरमे ई प्रवृत्ति सम्पूर्ण देशक शासन-प्रशासनमे ऊपरसँ नीचाँ धरि व्याप्त भऽ गेल । वर्त्तमानमे सम्पूर्ण देशमे ऊपरसँ नीचाँ धरि गह-गहमे ई भयंकर रोग पैसल अछि । मैथिली कथा-लेखन एहि विषयकेँ तहिये अपन वस्तुक रूपमे ग्रहण कयलक जहिया ई अपन आरम्भिके चरणमे छल । तीक्ष्ण व्यंग्यात्मक एवं प्रतीकात्मक शैलीमे भ्रष्टाचारपर लिखित एहि कथाक जोड़ एखनहुँ धरि मैथिलीमे देखबामे नहि आयल अछि । ई कथा अपन पाठकक मनोरंजनमे नहि करैत अछि अपितु पर्याप्त वैचारिक खोराकी दऽ ओकरा एहि समस्याक प्रति चिन्तनशील सेहो बनबैत अछि ।

बेरोजगारी अपना देशक एक गोट गम्भीर समस्या रहल अछि । ताहूमे शिक्षित बेरोजगारक समस्याक सम्बन्धमे तँ किछु कहले नहि जाय ! अंग्रेज द्वारा भारतमे जाहि शिक्षा-नीतिक प्रचलन कयल गेल ओ भारतीय परम्पराक सर्वथा विरुद्ध छल । ई शिक्षा-नीति भारतमे जाहि बेरोजगारीक समस्याकेँ जन्म देलक तकर निदान एखनहुँ धरि सम्भव नहि भऽ सकल अछि । आलोच्य युगक कथाकार लोकनिक दृष्टिपथपर बेरोजगारी सन गम्भीर विषय सेहो प्रमुखताक संग रहलनि । हरिनन्दनठाकुर सरोजक **पागल** (मिथिला मोद, 1936)क शिक्षित कथानायक रमानाथ बेरोजगारीक यातनासँ अन्ततः बताह भऽकऽ सड़कपर बौआय लगैत अछि । सुरेन्द्रझा सुमनक **विपरीत घटना** (मिथिला मिहिर, 1937)क गोल्ड मेडल प्राप्त ओ ग्रेजुएट युवक बेरोजगारीसँ उत्पन्न घोर निराशाक ओहि स्थितिमे आत्महत्या कऽ लैत अछि । प्रबोधनारायणचौधरी अपन प्रतीकात्मक कथा **सफल सजाय** (बीछल फूल, 1940)मे एही आधुनिक शिक्षा-नीतिपर व्यंग्यात्मक प्रहार कयने छथि ।

बहुतो समालोचक लोकनिक धारणा छनि जे कथा-लेखनमे मनुष्यक आभ्यन्तरिक स्थितिक चित्रणक जे प्रवृत्ति विकसित भेल से पाश्चात्य साहित्यकर प्रभावेँ । अवश्ये एहि धारणाक पाछाँक कारण थिकाह ओ कथाकार लोकनि जे अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त कयने छलाह । अंग्रेजी वा पाश्चात्य साहित्य पढ़ल जे कथाकार लोकनि मनोविश्लेषणवादी पद्धतिक कथा मैथिलीमे लिखलनि तकर पाछाँ सम्भव थिक जे वैह पाश्चात्य प्रभाव रहल होइनि । मुदा एहि पाश्चात्य प्रभावसँ पूर्वहि, स्वतन्त्रता प्राप्तिसँ पूर्वक मैथिली कथा-लेखनक ओहि कालखण्डमे अनेकशः

उत्कृष्ट मनोविश्लेषणात्मक कथा सब देखबामे अबैत अछि । जाहि कथाकार लोकनि द्वारा एहि कोटिक प्रयोगात्मक कथाक लेखन कयल गेल अछि तनिका लोकनिकेँ तावत धरि अंग्रेजी एवं पाश्चात्य साहित्यसँ दूर-दूर धरि कोनो सम्पर्क नहि भेल छलनि । कुलानन्ददास विद्यार्थीक **भीषण प्रतिज्ञा** (श्रीमैथिली, 1925) एहने एकटा मनोविश्लेषणात्मक कथा अछि जाहिमे मनुष्यक चेतन एवं अवचेतन स्थितिक बीचक अन्तरकेँ अत्यन्त वैज्ञानिकताक संग प्रदर्शित कयल गेल अछि । अवचेतन मन निःस्वार्थ प्रेमक संकल्प करैत अछि, मुदा जखने मनुष्य अवचेतनसँ चेतनक स्थितिमे अबैत अछि, ओ अपन ओहि संकल्पसँ होअऽवला लाभ-हानिक हिसाब करऽ लगैत अछि । मनोविश्लेषणवादी धाराक सफलतम प्रयोग श्रीमन्तलालदासक कथा **मायापुरी** (श्रीमैथिली, 1926)मे सेहो देखबामे अबैत अछि । मनुष्यक संग यदाकदा एहन स्थिति उत्पन्न होइत रहैत छैक जाहिमे ओ कल्पनाक ओहि रमणीय संसारमे विचरण करऽ लगैत अछि जकरा यथार्थसँ कतहु कनेको तालमेल नहि रहैत छैक । मुदा कल्पनाक मायापुरी जेहने आनन्दप्रद होइछ यथार्थक संसार ततबे कष्टप्रद । अवचेतन स्थितिमे यूटोपियामे विचरण करैत मानवक स्थितिक सटीक निरूपण एहि कथामे भेल अछि ।

बेसी काल सुनबामे अबैत अछि जे मैथिलीमे विशुद्ध प्रेमकथाक अभाव अछि । वस्तुतः प्रेम हृदयक ओ भाव थिक जकरा कोनो एकटा निश्चित परिभाषामे बान्हल नहि जा सकैत अछि । देहक सौन्दर्य वा ओकर मांसल संरचनाक प्रति ध्यानाकर्षण प्रेम नहि थिक । ई वासना थिक जकर चरमोत्कर्ष वा अन्तिम उद्देश्य भोग होइत अछि । विशुद्ध प्रेममे सात्विक त्यागक भावना रहैत छैक । स्वतन्त्रता प्राप्तिसँ पूर्व लिखित अनेकशः कथामे एहने विशुद्ध प्रेम देखबामे अबैत अछि । शंकरलालदास मुग्धक कथा **पुनर्मिलन** (भारती, 1937)क नायक विपिन जाहि वृन्दासँ प्रेम करैत अछि तकर विवाह दोसरसँ भऽ जाइत छैक । विपिन एहि आघातसँ मर्माहत भऽ उठैत अछि आ तेहना स्थितिमे ओकर हृदयमे वृन्दाक जे मूर्त्ति स्थापित भेल रहैत छैक ताहि स्थानपर ककरो दोसरकेँ बैसायब ओकरा स्वीकार्य नहि होइत छैक । तेँ मायक लाखो प्रयत्नक बादो विपिन विवाहक हेतु तैयार नहि होइत अछि । एकटा दीर्घ अवधिक बाद विपिनकेँ संयोगवश वृन्दासँ भेट होइत छैक । एहि क्रममे विपिनकेँ ज्ञात होइत छैक जे जीवनक झंझावात्सँ झमारलि ओकर वृन्दा आब ककरो सती-साध्वी पत्नी नहि प्रत्युत एकटा बाजारू वेश्या भऽ कऽ रहि गेल छैक । तथापि विपिन वृन्दासँ घृणा नहि करैत अछि अपितु वृन्दाक हेतु चिरकालसँ ओकर हृदयमे संचित जे प्रेम रहैत छैक से उमड़ि पड़ैत छैक आ ओ पुनः वृन्दाकेँ ओही भावसँ ग्रहण कऽ लैत अछि जेना ओकरा कोनो हेरायल मूल्यवान मणि भेटि गेल होइक ।

विपिन एहि कारणे समाज द्वारा बारि देल जाइत अछि तथापि ओ एकर परवाहि नहि करैत अछि । किएक तँ वृन्दासँ ओ आत्मिक प्रेम करैत छल ।

एहने विशुद्ध दोसर प्रेमकथा थिक सुरेन्द्रझा सुमनक **प्रेम** । 1948 मे सर्वप्रथम हस्तलिखित पत्रिका **हितैषी**मे आ तदुपरि 1953 मे मिथिला मिहिरमे पुनर्प्रकाशित **प्रेम** शीर्षक कथाक नायिका निर्मला आ नायक निर्मलेन्दु दुनूकेँ गंगाक कष्टहरणी घाटपर भेट होइत छैक । दुनूक हृदयमे एक-दोसराक प्रति प्रेम उत्पन्न होइत छैक, मुदा ई प्रेम विवाहमे परिणत नहि भऽ सकैत छल । किएक तँ निर्मला बालविधवा छलि । निर्मलाक प्रति अपन निष्कलुष प्रेमकेँ अक्षुण्ण रखबाक हेतु पुलिस अधिकारी निर्मलेन्दु सेहो आजीवन अविवाहित रहबाक प्रतिज्ञा लऽ लैत अछि। पश्चात निर्मला अपन एहि पवित्र प्रेमक प्रतीक स्वरूप समाज सेवाक उद्देश्यसँ अपन पिताक समस्त सम्पत्तिकेँ ट्रस्ट कऽ दैत अछि । जकर नाम राखल जाइत छैक- निर्मल मन्दिर ट्रस्ट फंड । एकर ट्रस्टीक दायित्व देल जाइत दैक निर्मलाक आत्मिक प्रेमी पुलिस अधिकारी निर्मलेन्दुमिश्रकेँ ।

शंकरलालदास मुग्धक कथा **पुनर्मिलन**मे एकटा आदर्श स्थिति अछि एवं सुरेन्द्रझा सुमनक **प्रेम**मे एकटा भावुकता अछि, मुदा थिक धरि दुनू खाँटी प्रेमकथा, जाहिमे भोग-वासनाक गन्ध नहि अछि, नायक-नायिकाक प्रेम गंगाजल सन पवित्र अछि ।

स्वतन्त्रता प्राप्तिसँ पूर्वक मैथिली कथा-लेखनमे कथाक विषय एवं शिल्पक अवगाहन करबाक हेतु स्थालीपुलाक न्यायक दृष्टिएँ अथवा सैम्पल सर्वे किंवा एकर नमूना सर्वेक्षण कयला उत्तर जे परिणाम भेटैत अछि ताहिमे पर्याप्त विविधता दृष्टिगोचर होइत अछि । स्वातन्त्र्योत्तर कथा-लेखन जेना क्रमशः अपन विविधताकेँ त्यागि मात्र पेट एवं देहक भूख धरि आबि कऽ सीमित भऽ गेल अछि । कथा-लेखन आब प्रचार सामग्री बनि कऽ रहि गेल अछि । कथा-लेखनक क्षेत्र अत्यन्त सीमित जकाँ भऽ गेल अछि । ई स्थिति 1950 क बादसँ उत्पन्न भेल अछि जखन मार्क्स आ फ्रायडक खोल ओढ़ि प्रगतिवादी बनबाक नाटक कयनिहार भोथ बुद्धिवला किछु सामंती-कुलीनतावादी लोकनि द्वारा मैथिली कथा-लेखनकेँ ओकर यथार्थ बहुरंगी संसारसँ फराक कऽ ओहिपर एकटा कृत्रिम रंग चढ़ाय ओकरा एकटा दमघोंटू काल-कोठरीमे ठूसि देबाक अभियान प्रारम्भ कयल गेल । गोयविल्सवादी प्रचार पद्धतिमे माहिर एहि कोटिक तत्त्व लोकनि मैथिली कथाक उत्थानक स्थानपर अपन-अपन उत्थानमे लागि गेलाह । अपना नामक प्रायोजित ढोल पिटबा-पिटबा कऽ ई लोकनि स्वयंकेँ मैथिली कथा-लेखनक भगीरथ कहबऽ लगलाह । एहि धाराक तथाकथित सामालोचकहु लोकनि अपन-अपन समस्त समालोचकीय शक्ति

मैथिली कथा-लेखनक गौरवपूर्ण इतिहासक उद्घाटनक स्थानपर एकटा फर्जी त्रिपुण्डक स्थापनमे लगौने रहलाह अछि आ लगौने छथि । एतबे नहि योजनाबद्ध ढंगसँ एही वादग्रस्त वायवीय-संकल्पना युक्त कथा-लेखनकेँ मैथिली कथा-लेखनक मानक किंवा आदर्शक रूपमे प्रचारित कयल गेल जकर दुष्परिणाम यैह भेल अछि जे मैथिली कथा-लेखनमे कृत्रिमताक मात्रा क्रमशः बढ़िते चलल जा रहल अछि । सामाजिक परिवर्त्तनक यथार्थ दिससँ आँखि मुनने शुतुरमुर्ग जकाँ मार्क्सक सुविधाभोगी अनुयायी लोकनि एखनहुँ यूटोपियामे जीवैत भूख आ वर्ग संघर्षपर कृत्रिम कथा लिखि रहलाह अछि । ओ लोकनि ई बुझबाक लेल तैयारे नहि छथि जे युग कतऽसँ कतऽ चल गेल । स्वतन्त्रताक बाद भारत जाहि वोटक राजनीतिकेर आत्मघाती बाटपर चलि पड़ल आ देशमे खैरातखोरी-मुफ्तखोरीक संस्कृति क्रमशः विकसित होइत गेल अछि ताहिमे आब भूख नामक कोनो समस्या नहिये जकाँ रहि गेल अछि । एकर स्थान आब लऽ लेलक अछि खै-मोटैनीक समस्या। बिना श्रम कयने बैसारी ठाम सरकारी भोजन कयनिहार समाजक एकटा विशाल समुदाय प्रत्येक स्तरपर विभिन्न प्रकारक समस्याकेँ उत्पन्न करैत रहबाक फैक्ट्री बनि गेल अछि । दिशाहीन आत्मघाती जातीय जागरण समाजक तानी-भरनीकेँ चिर्री-चोत कयने जा रहल अछि। तथापि सुविधाभोगी मार्क्सवादी लोकनि भूख सन अप्रासंगिक ओ कालबाह्य विषयपर मार्मिक कथा लिखैत ओहने हास्य किंवा दयाक पात्र बनल देखबामे अबैत छथि जेना कोनो बनरनी अपन मृत शिशुकेँ कोरमे दबौने एक डाढ़ि परसँ दोसर डाढ़िपर ई बूझि छड़पैत रहैत अछि जे ओकर बच्चा जीविते छैक।

एहिना कथा-लेखनमे तथाकथित त्रिपुण्डीय परम्परामे फ्रायडक नामपर गर्हित सेक्सक चहटगर मसल्ला परसल जा रहल अछि । ताहि कारणे मैथिली कथा-लेखनक स्वर ओ ओकर छविपर प्रश्नचिह्न ठाढ़ होअऽ लागल अछि । विवेकहिक कारणे मनुष्य वास्तवमे मनुष्य कहयबाक अधिकारी होइत अछि । एहि मनुजत्वसँ देवत्व दिस बढ़ब भारतीय परम्पराक सबसँ पैघ उद्देश्य रहल अछि । मुदा देहक भूखकेँ सर्वोपरि माननिहार फ्रायडवादी कथाकार लोकनि मनुक्खकेँ मनुष्यत्वसँ पुनः ओहि पशुत्व दिस लऽ जयबापर वृत्त देखबामे आबि रहलाह अछि जतऽ मानव सभ्य होयबासँ पूर्वक स्थिति छल होयत । वस्तुतः स्वातन्त्र्योत्तर मैथिली कथा-लेखन जेना एकटा धुरीमे बन्हा कऽ रहि गेल अछि । एहिमे परम्परासँ प्राप्त विविधताक रंग जे होयबाक चाहैत छल, कथा-लेखनमे जे एकटा सहजता ओ उन्मुक्तता होयबाक चाहैत छल से जेना ठमकि गेल अछि। मैथिली कथा-लेखन जेना एकटा जालमे ओझरा कऽ रहि गेल अछि ।

स्वातन्त्र्योत्तर किंवा वर्त्तमान मैथिली कथा-लेखनक तुलनामे स्वतन्त्रता प्राप्तिसँ पूर्वक कथा-लेखमे पर्याप्त विविधता देखबामे अबैत अछि । ताहू विविधतामे सर्वत्र एकटा सहजता ओ प्रतीतिपरकता अछि । कतहु कोनो वाद किंवा झण्डा-पताकाक दरस-परस नहि, कोनो रोक-छेक नहि । जलक अविरल-निर्मल स्रोत सन प्रवहमान कथा धारा । कथाकार बिना कोनो मानसिक दबावक, बिना कोनो फॉर्मूलाक आश्रय लेने, जाहि रूपक कथाक रचना कयने छथि ताहिमे समकालीन समाजक चित्र ओ चिन्ताधारा अपन ओही रूपमे उभरल अछि जाहि स्वरूपमे ओ जतेक परिमाणमे ओ अपना समयमे अपन भूमि ओ परिवेशमे वर्त्तमान छल । कोनो कथाकार अपन कथामे अपन निजी लिप्सा ओ प्रतिबद्धताकेँ बलजोरी ठूसि साहित्यक धाराकेँ गन्दा करबाक प्रयास नहि कयलनि अछि । जेना वर्त्तमान समयक कथा-लेखनमे राजनीतिक प्रतिबद्धतासँ ग्रस्त कथाकार लोकनिक एकटा समूह द्वारा कयल जा रहल अछि आ अपन गुटबाजी एवं प्रचारक बलपर एहने फेंटमालकेँ मैथिलीक मुख्यधाराक कथा प्रमाणित करबा लय व्यग्र देखल जा रहल अछि । एहि वायवीय धारासँ भिन्न मुक्त भावेँ मिथिलाक वास्तविक माटि-पानि ओ रुचि-प्रकृतिक कथा लिखनिहारकेँ कतिअयबाक, ओकरा हतोत्साहित करबाक, ओकरा उत्पीड़ित-अवहेलित करबाक कुत्सित प्रयास चलि रहल अछि। एहिसँ मैथिली कथा-लेखनक सहजता ओ विविधतापर गम्भीर आघात पड़ल अछि । मैथिली कथा-लेखनक जाहि एकभग्गू कृत्रिम स्वरूपकेँ मुख्यधाराक रूपमे प्रस्तुत कयल जा रहल अछि से अत्यन्त निराशाजनक अछि । एकर तुलनामे स्वतन्त्रता प्राप्तिसँ पूर्वक कथा-लेखन अपन सहजता ओ विविधताक कारणे अपन पाठक वर्गकेँ आकृष्ट करबाक पूरा क्षमता रखैत अछि ।

विगत शताबदीक पूर्वार्द्धक मैथिली कथा-लेखनमे प्रतीकात्मक शैलीक प्रयोग अत्यन्त मनोयोगपूर्वक कथाकार लोकनि कयलनि अछि । काशीनाथझाक **सत्माय एवं नरक-नन्दन रेलवे कम्पनी** प्रतीक वा छायामे ओहि सब विषयक नग्न चित्र उपस्थित कऽ देने अछि जे अभिव्यक्तिक स्वतन्त्रतापर अघोषित प्रतिबन्धक ओहि औपनिवेशिक कालमे प्रस्तुत कऽ सकब दुस्साहक विषय छल । एकरा कथा-लेखन कलाक उत्कृष्ट नमूना कहब सर्वथा उचित होयत । देश ओ समाजक तत्कालीन ज्वलन्त विषयकेँ कथाकार जाहि रोचकताक संग प्रस्तुत कयलनि अछि से पाठककेँ तत्काल बान्हि लैत अछि एवं मनोरंजनक संग भरपूर बौद्धिक खोराकी दैत ओकरा चिन्तनशील सेहो बनबैत अछि ।

1940मे प्रकाशित एवं मैथिलीक प्रथम कथा संग्रह होयबाक गौरव

प्रबोधनारायणचौधरीक जाहि कथा-संग्रह **बीछल फूलकेँ** प्राप्त छैक, ताहिमे लोककथात्मकता एवं प्रतीकात्मकताक अद्‌भुत समन्वय देखबामे अबैत अछि। पारम्परिक शिल्पमे सर्वथा नव्य चेतना लेने एहि संग्रहक पाँच गोट कथामे अपन समसामयिक परिदृश्यक संग वैश्विक चिन्ताकेँ अत्यन्त सुरुचिपूर्ण ढंगसँ सहजताक संग गुम्फित कऽ देल गेल अछि। बहुतो समालोचक बीछल फूलक कथामे सुगढ़ता नहि होयबाक आरोप लगा सकैत छथि, मुदा अपन पाठक वर्गकेँ बिना कोनो मानसिक तनाव देने, कथाकार पारम्परिक शिल्पमे देश ओ दुनियाँक ओहि यावन्तो गम्भीर प्रश्न सबसँ ओकरा अवगत करा देलनि अछि से वास्तवमे चामत्कारिक अछि। संग्रहक कथाक जे वैचारिक पक्ष अछि से अपना समयसँ बहुत आगूक अछि। सामाजिक, राजनीतिक, वैज्ञानिक, शैक्षणिक, प्राकृतिक, पर्यावरणिक, पारिस्थितिकी आदि विभिन्न क्षेत्रमे जे समस्या सब वर्त्तमानमे भयावह रूप धारण कऽ लेलक अछि, ताहि दिस समाजकेँ सहचेत करबाक प्रयास बहुत पूर्वहि मैथिली कथा-लेखन कऽ चुकल अछि।

एक दिस जँ आलोच्य अवधिक कथा-लेखनमे सहज लोककथात्मक शैलीक प्रयोग भेल अछि तँ अनेको एहन कथा सब देखबामे अबैत अछि जाहिमे अत्यन्त गूढ़ात्मक शैलीक प्रयोग भेल अछि। श्यामानन्दझाक **अकिंचन** (मिथिला मित्र 1930) एहने गूढ़ात्मक शैलीक कथा अछि जकरा पढ़ला उत्तर प्रतीत होइछ जेना न्याय-दर्शनक कोनो सूत्रक प्रतिपादन कयल जा रहल हो, मुदा सम्पूर्ण कथा पढ़ि लेलाक उत्तर अन्तमे जा कऽ आभास भऽ पबैत अछि जे एकर कथावस्तुक सम्बन्ध समकालीन स्वतन्त्रता आन्दोलनसँ छैक।

एहिना कथा-लेखनमे व्यंग्यात्मक, विवरणात्मक, आत्मकथात्मक, पत्रात्मक, मनोविश्लेषणात्मक, कथोपकथनात्मक आदि विविध शैलीक प्रयोग देखबामे अबैत अछि। कथावस्तुक चयन सेहो विविध क्षेत्रमे कयल जाइत देखबामे अबैत अछि। समकालीन समाजहिसँ नहि अपितु अतीत कालीन घटना ओ एतिहासिक पात्राधारित कथाक लेखनक परम्परा सेहो एहि अवधिमे देखबामे अबैत अछि। यथा नलिनीमोहन सान्यालक **मीरा** (भारती, 1937), सुरेन्द्रझा सुमनक **अनुकरण** (मिथिला मिहिर, 1938) एवं अलख निरंजनक **इहो बीति जायत** (मिथिला मोद, 1938) इतिहासमूलक कथा अछि।

वस्तुतः विगत शताब्दीक पूर्वार्द्धक मैथिली कथा-लेखनमे विविधताक ततबा रंग अछि जे मैथिली कथा-साहित्यक एकटा भरल-पुरल संसार बसि गेल अछि। वर्त्तमान वा स्वातन्त्र्योत्तर कथा-लेखनमे जाहि विषय ओ शिल्प-शैलीकेँ अधुनातन

किंवा नवीन प्रयोग कहल जा रहल अछि से समस्त वस्तु आलोच्य कालक कथा-लेखनमे कतहु बिन्दु रूपमे तँ कतहु विस्तार रूपमे देखबामे अबैत अछि । लगभग पाँच दशकक अपन यात्रामे मैथिली कथा-साहित्य बीजसँ झमटगर वटवृक्ष बनबा धरिक यात्रा पूर्ण कऽ लेलक । ताहि तुलनामे स्वातन्त्र्योत्तर मैथिली कथा-लेखनक परिमाणमे भने जे वृद्धि भेल होअय, ओकर विविधताक परिधि क्रमशः सिकुड़ैत चल गेल अछि । एकटा वाद विशेषक प्रचार-प्रसारक हेतु काल्पनिक ढंगसँ कथा लिखनिहार किछु बगुलाभगत लोकनिक विषाक्त कथारूपी चट्टकसँ मैथिली कथा-साहित्यक सघन-झमटगर वटवृक्षक हरीतिमा प्रभावित भेल अछि । मैथिली कथाक वटवृक्ष व्याधिग्रस्त भऽ गेल अछि ।

मैथिली कथाक समालोचनाक स्थिति सेहो तेहने एकांगी ओ रोगाह प्रवृत्तिक भऽकऽ रहि गेल अछि । कथाक वटवृक्षपर उपरे-उपरे आबि कऽ बैसल तथाकथित किछु कथाकार लोकनिक उत्सर्जनहिकेँ मैथिली कथा-लेखनक सत्त्वक रूपमे प्रचारित कयल जा रहल अछि । ई समालोचक लोकनि ई देखबाक प्रयत्न नहि करैत छथि जे एहि कथा रूपी वटवृक्षक सीर कतऽ धरि जा कऽ जमीनमे गड़ल छैक । वास्तवमे स्वस्थ जड़िक मूल्यांकन कयने बिना रोगाह छीपक महिमा-मण्डन कऽ अपन निष्कर्ष प्रतिपादित कयनिहार तथाकथित गुटबाज समालोचक लोकनि ने साहित्येक उपकार कऽ रहलाह अछि, ने मैथिली कथा-लेखनेक । हुनका लोकनिक एहि उत्थर अवधारणाक कारणे मैथिलीक नवीन पीढ़ी सेहो दिग्भ्रान्त भऽ रहल अछि । तेँ आइ आवश्यकता अछि जे मैथिली कथा साहित्यक सम्पूर्ण मूल्यांकन हेतु आजुक पीढ़ीकेँ मैथिलीक ओहि कथा-निधिसँ परिचित कराओल जाय जे एखनहुँ सभक दृष्टिसँ अऽढ़ भेल पत्र-पत्रिकाक फाइलमे दबल पड़ल अछि । मैथिली कथा-प्रासादक नींवक एहि ईंट सभकेँ सूचीबद्धे कऽ देब पर्याप्त नहि अछि, ओकरा सभक अन्वेषण कऽकऽ ओकरा खण्डशः पुस्तकाकार प्रकाशित करयबाक प्रयोजन सेहो अछि । समय जेना-जेना बीतल जा रहल अछि तेना-तेना मैथिली पत्र-पत्रिका सभक पुरान फाइल सभ अलभ्य भेल जा रहल अछि । उचित तँ छल जे एहि दिशामे मैथिलीक संस्था सभ प्रवृत्त होइतय एवं मैथिलीक एहि छीजि रहल कथा-निधिकेँ सुरक्षित करबाक हेतु एकर अन्वेषण, संकलन ओ खण्डशः प्रकाशनक व्यवस्था करितय ।



स्वातन्त्र्योत्तर मैथिली कथा ओ कथाकार मायानन्दमिश्र

पूर्व कथा

भारतीय भाषामे कथा ओ उपन्यास सन आधुनिक साहित्यिक विधाक जन्म ओ विकास पाश्चात्य साहित्यक प्रभाव ओ पत्रकारिताक जन्म एवं ओकर विकासक संग-संग भेल अछि। बंगला, मराठी, हिन्दी, आदि भाषामे बहुत पूर्वहि पत्रकारिता आरम्भ भेल, मुदा मैथिली भाषामे बड़ अबेरसँ। तेँ एहि भाषामे कथा सन साहित्यिक विधाक जन्म सेहो तखने भऽ सकल। जँ कवीश्वर चन्दाझा कृत **पुरुष परीक्षाक** मैथिली अनुवादकेँ अपवाद मानल जाय तँ 1905 इ.मे मैथिली पत्रकारिताकेँ जन्म लेबासँ पूर्व धरि एहि भाषामे कथा कहबाक ओ सुनबाक वस्तु छल लिखबाक नहि।

मैथिलीमे कथा-लेखनक प्रारम्भ पौराणिक आख्यान-उपाख्यानसँ भेल। एहि प्रकारक सबसँ पहिल उपाख्यान हरिनारायणझा काव्यतीर्थक **सुदर्शनोपाख्यान** अछि, जे काशीसँ प्रकाशित भेनिहार **मिथिलामोद** (उद्गार, 17-19 मार्ग-माघ पूर्णिमा, सन 1314 साल, शाके, 1828)मे 1906 इ. सँ धारावाही छपब आरम्भ भेल छल। मोदक एही अंकसँ म.म. परमेश्वरझाक **सीमन्तिनी आख्यायिका** सेहो छपब आरम्भ भेल। एतावता एहि परम्परामे कतेको आख्यान-उपाख्यान ओ आख्यायिका ओहि समयक पत्र-पत्रिकामे प्रकाशित होइत रहल।

मैथिली कथाकेँ समाज ओ जनजीवनसँ जोड़ि ओकरा एकटा नूतन आयाम देबाक सबसँ पहिल श्रेय जनार्दनझा 'जनसीदन'केँ देल जाइत रहलनि जनिक कथा **ताराक-वैधव्य** 1917 मे **मिथिला मिहिर**, दरभंगाक 30 जून एवं 7 जुलाइक दुइ अंकमे क्रमशः प्रकाशित भेल छलनि। तत्कालीन समाजमे प्रचलित बालविवाह, वृद्ध विवाह एवं बालविधवाजन्य समस्याकेँ अपन कथाक विषयवस्तु बना लिखल गेल

एहि कथाकेँ समालोचक डा. रामदेवझा मैथिलीक प्रथम मौलिक कथा सिद्ध कयलनि । (मैथिलीक आद्यकथा, आलोचना, फरवरी 1992) । मुदा अपन नवीन अनुसन्धानक पश्चात डा. झा पुनः नव स्थापना देलनि अछि जे जयपुरसँ प्रकाशित भेनिहार मैथिलीक पहिल पत्र **मैथिल-हित-साधन**मे 1906 इ.मे प्रकाशित जलधरझाक **विलक्षण दाम्पत्य** मैथिलीक प्रथम कथा थिक (मैथिलीक आद्यकथा प्रसंग, मंडन-निकेत, दिसम्बर, 2005) । एतावता एही संगे मैथिलीमे सामाजिक ओ लौकिक कथा-लेखनक प्रवृत्ति जोड़ पकड़लक । स्वतन्त्रता प्राप्ति धरि कुमार गंगानन्दसिंह, कालीकुमारदास, हरिनन्दनठाकुर 'सरोज', भुवनेश्वरसिंह 'भुवन', जयनारायणमल्लिक, श्यामसुन्दरझा 'मधुप', सुरेन्द्रझा 'सुमन', हरिमोहनझा, उपेन्द्रनाथझा, 'व्यास', मनमोहनझा, योगानन्दझा, उमानाथझा आदि-आदि कतेको कथाकार अवतीर्ण होइत रहलाह । स्वतन्त्रताप्राप्तिसँ पूर्वक एहि कथाकार लोकनिमेसँ अधिकांश बंगला साहित्यसँ बेसी प्रभावित छलाह तेँ हिनका लोकनिक कथामे एकटा आदर्श, करुणा, तरलता ओ भावुकता परिलक्षित होइत अछि । सामाजिक संकोचक कारणे एहि अवधिक मैथिली कथा अछिञ्जलसँ धोल पूर्णतः निरामिष रूपमे पाठकक समक्ष परसल जाइत रहल । एहि समयक कथाकार लोकनि बिना कोनो तरद्दुत मोल लेने शॉर्टकट तरीकाक प्रयोग करैत अपन कथाक रचना कयलनि । हिनका लोकनिक कथाक पात्र ओ परिवेश किछु अपवाद छोड़ि सवर्णहि वर्ग धरि सीमित रहलनि । एतावता स्वतन्त्रता प्राप्तिसँ पूर्वक मैथिली कथा अपन एकटा परिचित गढ़ि पयबामे समर्थ भेल । मैथिली कथाक स्वरूप निर्माणक एहि अवधिमे रचित बहुतो कथा चर्चित भेल एवं वृहत्तर पाठक समुदाय द्वारा सराहलो गेल । एहि कालमे सबसँ बेसी चर्चित भेलाह व्यंग्यसम्राट हरिमोहनझा । अपन चोटगर हास्य ओ मारुख व्यंग्यसँ मैथिल जातिक कुसंस्कार अन्धविश्वास, अवढंगपन आदिपर चोट करैत हरिमोहनझा कथाकेँ वास्तविक रूपसँ पाठकीय सुख भेटलैक । वस्तुतः हरिमोहनझा स्वतन्त्रता प्राप्तिसँ पहिलुक समस्त मैथिली कथाकारपर बीस नहि एकैसे साबित भेलाह । हुनक प्रभाव एतेक व्यापक सिद्ध भेलनि जे मानि लेल गेल जे मैथिली कथाक मुख्य स्वर हास्य-व्यंग्ये छैक। एहिनामे विगत शताब्दीक आधा समय बीति गेल ।

मध्य कथा

1950 इ.क नवल गणतन्त्रसँ अनुप्राणित जनमानसमे नवीन चेतनाक संचार भेलैक । 1950 सँ दरभंगासँ **वैदेहीक** प्रकाशन आरम्भ भेल । एही संग स्वातन्त्र्योत्तर मैथिली कथाक प्रथम उत्थान (1950-1960)क उद्योग प्रारम्भ भेल । नवदृष्टि ओ प्रतिभासँ सम्पन्न नवतूर कथाकारक एकटा समूह उभरल जे मैथिली कथाकेँ विश्व

साहित्यक समकक्ष आनि देबाक हेतु कन-कन कऽ रहल छल । हिनका लोकनिक मानसपटलपर एकदिस जँ बंकिम, शरद, रवीन्द्रनाथक प्रभाव व्याप्त छलनि तँ दोसर दिस गोर्की, मोपांसा, डी.एच. लारेंस, ज्याँ-पाल-सात्र, अर्नेस्ट हेमिंग्वे, स्टेनबेक, अलवर्टो, मोरविया सेहो । संगहि फ्रायड, युंग, एडलरक सेक्सवाद तँ मार्क्सक वर्गसंघर्ष ओ अर्थवादी चिन्तनसँ सेहो अनुप्राणित छलाह । एहि कथाकार लोकनिमे एक दोसरसँ आगाँ बढ़ि जयबाक प्रतिस्पर्द्धा सेहो ततबे छलनि । स्वातन्त्र्योत्तर मैथिली कथाक प्रथम उत्थान (1950-1960)क केन्द्र दरभंगा बनल आ कथा आन्दोलनकेँ साकार करबामे **वैदेहीक** अतिरिक्त **मिथिला मिहिर** (दरभंगा), **निर्माण**, **मिथिला-दर्शन**, **पल्लव**, **इजोत** आदि पत्र-पत्रिकाक उल्लेखनीय योगदान रहल ।

मैथिली कथाक प्रथम उत्थान (1950-1960) भूमि दरभंगा ओ मायानन्दमिश्र

मैथिली भाषा ओ साहित्यक एही परिप्रेक्ष्यमे साहित्यशिल्पी मायानन्दमिश्रक आगमन भेलनि दरभंगाक सी.एम. कॉलेजक छात्रक रूपमे । साहित्यकार रामकृष्णझा 'किसुन'क भागिन मायानन्दकेँ दरभंगामे चन्द्रनाथमिश्र 'अमर'क स्नेह-सान्निध्य ओ अभिभावकत्व प्राप्त भेलनि । स्वभावसँ कवि, मायानन्द ओहि समयमे हरिमोहनझासँ बेस अनुप्राणित छलाह तेँ गद्य-लेखनमे हुनके शैलीक अनुकरण करैत अपन पाँच गोट हास्य-व्यंग्यपरक कथाक संग्रह **भाङक लोटाक** संग 1951 इ. मे मैथिलीमे पदार्पण कयलनि । वैदेही समिति, दरभंगा द्वारा प्रकाशित ई कथा-संग्रह अवश्ये तत्कालीन साहित्यिक लोकनिक ध्यान आकृष्ट कयलक, मुदा आकर्षित नहि कयलक । से एहि दुआरे जेना पटनाक पिण्टूक रसगुल्ला भरि पेट खयनिहारकेँ पश्चात् गूड़ खयबाक आग्रह कयल जाय, तेहने सन ! हरिमोहनझाक कथाक आगाँ **भाङक लोटा** बड़ कमजोर ओ छुछुन्न सिद्ध भेल । एहि संग्रहकेँ लेखकक प्रथम प्रकाशित पोथी होयबाक गौरव तँ प्राप्त भेलैक, मुदा ताहिसँ लेखककेँ स्वयं कोनो तेहन प्रतिष्ठा भेटलनि किंवा कथाकारक रूपमे हुनक परिचय बनलनि से बात नहि । हँ, कविक रूपमे ई अवश्ये ओहि समयमे अपना एकटा परिचिति बनौलनि । हिनक सुमधुर कण्ठसँ विभिन्न मंचपर **नभ आङनमे पवनक रथ चढ़ि कारी-कारी बादरि आयल** सन कतेको स्वरचित भावप्रवण गीतक प्रस्तुति लोककेँ नीक लगैक ।

समाज ओ पाठक वर्गसँ **भाङक लोटाकेँ** समुचित रेस्पॉन्स नहि भेटलापर मायानन्दमिश्र स्वयंकेँ हरिमोहनझाक छायासँ मुक्त करबाक प्रयास आरम्भ कयलनि । तावत धरि कथाकार ललितेशमिश्र प्रसिद्ध ललित द्वारा वैदेहीक माध्यमे आधुनिक प्रवृत्तिक कथाक बीजारोपण कयल जा चुकल छल । एही क्रममे मायानन्दमिश्रक एक गोट सामाजिक प्रवृत्तिक कथा **रुपिया** (मिथिला मिहिर, दरभंगा, 15 अगस्त 1953)

प्रकाशित भेलनि। एहि कथामे कोनो तेहन चमत्कार नहि छल तथापि एहिसँ हिनक नवीन कथा-दृष्टि अवश्ये परिलक्षित भेलनि। जनवरी 1954 सँ चन्द्रनाथमिश्र 'अमर'क प्रधान सम्पादनमे नव तेवरक संग **वैदेही**क प्रकाशन आरम्भ भेल। एकर फरवरी 1954 क अंकमे मायानन्दमिश्रक दोसर आधुनिक प्रवृत्तिक कथा **सुरबा** प्रकाशित भेलनि। इहो रुपियाक सहोदरे छल। अपन एहि दुनू कथापर कोनो प्रशंसा वा प्रतिक्रियाक स्वर नहि उभरैत देखि पुनः एक बेर मायानन्दमिश्र हरिमोहनझाक सरणिपर चलि गेलाह आ **जखन हम स्वर्ग गेलहुँ** नामसँ एकटा व्यंग्य कथा लिखलनि जे वैदेहीक मइ 1954 क अंकमे प्रकाशित भेलनि। एहि प्रतीक कथाक माध्यमसँ कथाकार स्वातन्त्र्योत्तर भारतमे उपजल भ्रष्टाचार, घूस, पैरवी, अंग्रेजी भाषाक बढ़ैत महत्व आदि सब विषयपर कसगर चोट कयलनि। हरिमोहनझाक शैली, छवि-छटा ओ शब्दावली पर्यन्तसँ आक्रान्त रहितो ई कथा कथाकार द्वारा एकटा नव कथा-क्षेत्रमे प्रवेश करबाक संकेत उपस्थित कयलक।

दरभंगहिसँ अमरजीक सम्पादनमे प्रकाशित भेनिहार हिन्दी-मैथिली मासिक पत्र **निर्माण**क अगस्त 1954क अंकमे मायानन्दमिश्रक एकटा कथा **स्त्रीक बात** प्रकाशित भेलनि। एकरो कथावस्तु कोनो विशेष नहि छल, मुदा कथामे हिनका द्वारा मनोवैज्ञानिक पुट देबाक प्रयास प्रथमे प्रथम परिलक्षित भेल। अपन पत्नीक संग भेल तिक्त विवादक स्मरणसँ विखिन्न एकटा श्रमिक हरखू अपन अबोध बेटा लखनापर अपन सबटा पित्त उतारैत ओकरा चाटे-चाट मारि बैसैछ। एही 1954क सितम्बरमे मासिक **मिथिला-दर्शन**मे हिनक **धरती आकाश** कथा प्रकाशित भेलनि जकरा कथासँ बेसी **गद्य-काव्य** कहब बेसी उपयुक्त होयत। पूसक बरिसैत राति धनिकक हेतु कतेक सुखद! कतेक रमणीय होइछ। मुदा ताहि तुलनामे गरीबक हेतु कतेक कष्टप्रद, केहन पहाड़ सन होइछ ई राति! यैक थिकनि हिनक एहि कथाक मुख्य वर्ण्य विषय। तथापि एहि रचनामे कथाकारक चिन्तनक दिशा एहिसँ पूर्वक अपन कथाक तुलनामे कने बेसी फरिच्छ सन प्रतीत भेल अछि। ओहि आलोच्य दशकमे एकर बाद मायानन्दमिश्रक अधिकांश अग्रिम कथा मिथिला-दर्शनहिमे प्रकाशित होइत रहलनि।

नव क्षितिजक अन्वेषण करैत मैथिली कथा

एमहर स्वातन्त्र्योत्तर मैथिली कथाक प्रथम उत्थानक राजधानी दरभंगामे कथा नित्यप्रति नवीन मोड़ लेबऽ लागल। 'नागाबाबा' ओ 'जड़भरत'क छद्म नामसँ किछु लघु गल्प लिखि चुकल कथाकार ललित वैदेहीमे प्रकाशित अपन **कुलटा** शीर्षक कथाकेँ लऽ कऽ चर्चामे अयलाह आ तकर बाद **डुमरिक फूल** (वैदेही, मार्च 1954), **रमजानी** (वैदेही, जून 1954), **ओवरलोड** (वैदेही, अगस्त 1954), **उड़ान**

(वैदेही, फरवरी 1955) आदि मार्क्स आ फ्रायडक चिन्ताधारासँ छौँकल हिनक कथा चर्चाक विषय बनलनि । मुदा हिनक परिचिति स्थापित भेलनि **रमजानीसँ**। हिनक **मुक्ति** (वैदेही, अप्रैल 1955) कथा विवादक वस्तु बनलनि से एहि दुआरे जे कथाकार अपन कथानायिका शेफालीकेँ मात्र वासना तृप्ति हेतु अपन समृद्ध किन्तु रुग्ण पति बीसोबाबूकेँ छोड़ि एकटा दरबानक संगे उढ़रबा देलथिन । स्पष्टतः तत्कालीन मैथिल समाजमे एहि **उढ़ारकथाकेँ** लऽ कऽ बहुतो स्वर उभरल । कथाकार रामदेवझाक कथा यात्रा सेहो एहि दशकक पूर्वार्द्धमे प्रारम्भ भेलनि । मिथिला मिहिर (दरभंगा)क 17 जुलाइ 1953क अंकमे हिनक आधुनिक प्रवृत्तिक प्रथम कथा **मुदा आब की ?** एवं 15 अगस्त 1953 क अंकमे **दू ठोप नोर** प्रकाशित भेलनि । समाजक उपेक्षित एवं शोषित जनसमुदायक पीड़ाकेँ मुखरित करैत हिनक एकक बाद दोसर कथा क्रमशः **माय भूख लागल** (निर्माण, 4 सितम्बर 1954), **तरुआरि आ लेखनी** (वैदेही, सितम्बर 1954), **विजित हिमालय** (मिथिला दर्शन, सितम्बर 1954), **पहुना** (वैदेही, अगस्त 1957), **नकली कनियाँ : नकली आदमी** (वैदेही, सितम्बर 1959) आदि प्रकाशित होइत रहलनि । मुदा ई प्रसिद्ध भेलाह अपन कथा **एक खीरा : तीन फाँक** (मिथिला दर्शन, सितम्बर 1960) सँ । प्रतीक रूपमे सेक्स भावक निदर्शन ओ नारी-पुरुष मनोविज्ञानक जेहन सूक्ष्म चित्रण एहि कथामे भेल अछि ताहि रूपक दोसर कथा एहि दशकमे आ तकर पश्चातो दृष्टिगोचर नहि होइछ। मैथिली कथाक क्षेत्रमे सोमदेव अपन लघुकथा **वकील साहेब** (वैदेही, फरवरी 1954)क संग प्रवेश कयलनि आ **साओन-भादव** (वैदेही, अक्टूबर 1955), **रेशमक राखी** (वैदेही, कथा विशेषांक 1955), **अंगा** (वैदेही, मइ 1958) आदि हिनक कतिपय कथा प्रकाशित भेलनि । एही अवधिमे कथाकार ललित मैथिलीकेँ एकगोट नवीन प्रतिभा राजकमलसँ परिचित करौलनि । हिनक हिन्दीमे लिखित कथा **अपराजिता** ओ **फुलपरासवालीकेँ** ललित मैथिलीमे स्वयं अनूदित कयलनि जे क्रमशः वैदेहीक अक्टूबर 1954 एवं अगस्त 1955 क अंकमे प्रकाशित भेलनि। मुदा राजकमल चीन्हल गेलाह अपन कथा **ललका पाग** (वैदेही, कथा विशेषांक 1955) सँ आ विवादित भेलाह अपन अन्यान्य सेक्सवादी कथा सबसँ । एहि अवधिमे महिला कथाकारमे कल्पनाशरण चर्चित भेलीह अपन **रंगीन परदा** (वैदेही, जून-जुलाइ 1956)सँ। मैथिलानी भऽ कऽ सासु ओ जमायक अवैध सेक्स-सम्बन्धक कथा लिखनिहारि कल्पनाशरण वस्तुतः ललित ओ राजकमलक फ्रायडीय आस्थाक कड़ी सिद्ध भेलीह । एतावता एहि अवधिमे धीरेन्द्र, हंसराज, उग्रानन्द सन कतिपय प्रतिभावान कथाकार लोकनि अवतीर्ण भेलाह । दोसर दिस ब्रजकिशोरवर्मा मणिपद्म, सुधांशुशेखरचौधरी, शैलेन्द्रमोहनझा, उपेन्द्रनाथझा व्यास

आदि पुरान पीढ़ीक कथाकार लोकनि अपन नव भाव बोधक कथाक संग उपस्थित होअऽ लगलाह । तथापि हरिमोहनझाक कथाक सम्मोहनसँ मैथिलीक पाठक लोकनि अभिभूत भेले रहलाह ।

तत्कालीन मैथिली-साहित्यक अन्तःकथा

स्वातन्त्र्योत्तर कालक ओहि प्रथम दशकमे कथाक क्षेत्रमे हरिमोहनझाक जादू चलैत छलनि तँ कविताक क्षेत्रमे चन्द्रनाथमिश्र 'अमर' आ मायानन्दमिश्र बेस चर्चित छलाह । ओहि समयक अधिकांश मैथिली लेखक अंशकालिके छलाह । केवल दुइए गोटा यात्री आ राजकमल पूर्णकालिक, पारिवारिक दायित्वसँ रहित लेखक रहथि । यात्री मैथिलीसँ हिन्दीमे गेल छलाह तँ राजकमल हिन्दीसँ मैथिलीमे आयल रहथि । हिन्दी क्षेत्रक साहित्यिक राजनीतिक तिकड़मसँ दुनू गोटा नीक जकाँ परिचित भऽ गेल छलाह । राजकमलकेँ मैथिलीमे रस आबऽ लगलनि, मुदा ललितक **केयर ऑफ**क छाप आ हरिमोहनबाबूक जादूक कारणे हुनका उभरबाक अवसरे नहि भेटि रहल छलनि । अतः एहि दुनूटा अवरोधकेँ अपन बाटसँ हटा स्वयंकेँ चर्चित बनयबाक हेतु ओ अपन हिन्दी संसारक अनुभवक खुलि कऽ प्रयोग प्रारम्भ कयलनि । एही संग मैथिलीमे साहित्यिक प्रोपेगेण्डाक अन्तर्गत प्रायोजित पत्र-लेखन, प्रायोजित समालोचना, अपन प्रतिस्पर्द्धी साहित्यकार लोकनिपर अनेरे प्रहार करबा सन अनेकानेक साहित्यिक दुष्प्रवृत्ति सब जोर पकड़लक ।

ललितक **मुक्ति** (वैदेही, अप्रैल1955) कथाक प्रसंग वैदेहीक जून 1955क अंकमे एकटा छद्म पाठक बुद्धिमतीदेवी, जमेशदपुरक नामसँ राजकमलक एकटा पत्र प्रकाशित भेलनि- **श्रीललितक गल्प बेस चहटगर ओ कटगर होइछ । गत अप्रैलक अंक महक हुनक 'मुक्ति' नामक गल्प बड़े उत्सुकतासँ पढ़लहुँ । नीके लागल । मुदा जाहि दृष्टिकोण लऽ कऽ हुनक मुक्ति उपस्थित भेल अछि से भारत किंवा मिथिलाक हेतु केहन आदर्श से सोचनीय ! फ्राइडक सिद्धान्तकेँ प्रतिपादित करबामे जतेक स्याही खर्च कैल जाय से भारतीयताक हेतु कलंके सिद्ध हैत । कि रुग्ण पतिक पत्नी कोनो बलिष्ठक संग उढ़रिये कै संतोष करै सैह हमरा लोकनिक आदर्श होयबाक चाही ?**

एहिना **वैदेही**क जुलाइ 1955क अंकमे **पाठकक पृष्ठ**पर श्रीमती शशि राजकमल, गयाक छद्मनामसँ राजकमलक एकटा एहने पत्र प्रकाशित भेलनि जे हुनक साहित्यिक राजनीतिकेँ आरो बेसी स्पष्ट करैत अछि- **सनेस (गोविन्दझा) बड़ दीव लागल । सनेसे जकाँ मधुर, नीक, सुन्नर, ओ जेना कोनो इसकुलिया छात्र लिखने होथि । ललितजीक दढ़ियल बाबा सेहो नीक । किन्तु कथासूत्र माँजल जनउ**

सन पुष्ट आ पवित्र नहि, टूटल ताग सन खिन्न ओ छिन्न । रमजानी, ओवरलोड, डुमरिक फूल आ कलकतिया पेटीक श्रीललित की भाँग पीबि भसिआएल जाइत छइथ.... ।''

एतऽसँ प्रारम्भ भेल ललितपर राजकमलक प्रत्यक्ष प्रहार । आब हुनक अग्रिम अभियान छलनि यात्रीसँ निकटता बढ़ायब आ हरिमोहनझासँ दू-दू हाथ करब । हुनक एहि योजनाक आभास दैत अछि वैदेहीक 1955क कथा-विशेषांकपर हुनका द्वारा देल गेल प्रतिक्रिया । द्रष्टव्य थिक वैदेहीक जनवरी 1956क अंकमे **फूलराज पटनाक** नामसँ प्रकाशित राजकमलक ई पत्र- **यात्रीजीक कोनो रचना (किछु आशीर्वादोटा) नहि देखि बड्ड कष्ट भेल । जँ वएह मैथिलीसँ उपेक्षा देखाबऽ लगता तऽ मैथिलीक हेतु प्राणक आहुति के देत ! ....हरिमोहनबाबू 'गप्प साहित्य'क सृष्टिकर्ता छथि से हमरा बड़ पसिन्न भेल । आ मुखपृष्ठपर जे हुनकर युवावस्थाक चित्र देल से आर नीक कएलहुँ। नहि तऽ जँ लोक बुझि जाइत जे कुचबिहारसँ कटिहारक प्राणायाम करइवला महालेखक महावृद्ध छथि...तऽ अनर्थे !**

एहि आलोच्य दशकमे साहित्यिक गोलकेँ विस्तारित करबाक हेतु प्रत्युत्तर-कथा लेखनक परिपाटी सेहो प्रारम्भ भेल । कल्पनाशरणक **रंगीनपरदाक** प्रत्युत्तर किंवा अग्रिम भागक रूपमे राजकमल **हरिद्वारवास** (वैदेही, मइ 1957) लिखलनि । जेना ललितक मुक्तिक उत्तरमे हुनक **फुलपरासवाली** प्रकाशित भेल छलनि ।

एहि अवधिमे साहित्यिक राजनीति कयनिहार तथाकथित किछु कथाकार लोकनिकेँ ओतबोसँ संतोष नहि भेलनि तँ छद्मनामसँ कथाक समालोचना सेहो करऽ लगलाह । **पल्लवक** फरवरी 1958 क अंकमे श्रीअनामिकाचौधरीक छद्म नामसँ राजकमलक एक गोट आलेख **कथा-साहित्यक साम्प्रतिक समस्या** प्रकाशित भेलनि । एहि आलेखमे ललितक प्रति व्यक्त कयल गेल विचार अवश्ये ओहि समयक साहित्यिक राजनीतिक वास्तविक स्थितिक परिज्ञान करा दैत अछि । जे ललित आङुर धरा कऽ राजकमलकेँ मैथिलीक आङनमे अनने छलथिन, तनिका दरभंगासँ बाहर जाइते देरी साहित्यमे कालबाह्य सिद्ध करैत हुनका संग हुनक समस्त साहित्यहिकेँ खारिज कऽ देबाक चक्रचालिक आभास एहि आलेखसँ भेटि जाइत अछि- **...ललितक जयगनेश, कलकतिआ पेटी, जानवर, उड़ान, मुक्ति आदि कथा बड्ड यथार्थ, बड्ड प्रगतिशील । मुदा छप्पन-सतावनक कथाकार ललित जेना पाण्डुग्रस्त प्रतिमाक पोषक भऽ गेल छइथ । एहि दू बर्खमे प्रकाशित हिनकर कथादि कापालिक, प्रतिनिधि, आरती, बड्ड अर्थहीन प्रयोग, बड्ड साधारण कथा । लगइए जेना एहि प्रतिभा सम्पन्न कथाकारक रचना-शक्तिमे जोँक लागि गेल हो, लेखनीमे बीझ पड़ि गेल हो । स्मरणीय अइछ जे ललितजी बंगला साहित्यसँ भाषा, शैली,**

भावुकता आ कथा-प्रवाह पँइच लेने छलाह शरच्चन्द्रसँ आ शरच्चन्द्रक युग बड्ड पहिनइँ समाप्त भऽ गेल अइछ। आब साहित्यकेँ शरच्चन्द्र नइँ अर्नेस्त हेमिंग्वे, आ जाँन स्तेनबैक'क आवश्यकता छइ। त' की ई विश्वास मानि लेल जाए जे भावुकतावादी यथार्थक युग समाप्तिक संगे ललितजीक युग सेहो समाप्त भऽ गेल ?

ई तँ भेलनि राजकमलक अपन प्रतिद्वन्द्वीपर प्रहारात्मक टिप्पणी आ एकरा संगहि अपन मूल्यांकन अपनेसँ करैत हिनक आत्म प्रचारात्मक टिप्पणी सेहो ततबे पठनीय आ मननीय अछि- **श्रीराजकमलक चर्चा सेहो आवश्यक बूझि पड़इए। ई कथाकार बड्ड भयानक रूपेँ साहित्य-रचना कऽ रहल छइथ। 'ललका पाग'क नितान्त भावुक आदर्शवाद, 'किरणमयी'क नितान्त अप्रगतिशील यथार्थवाद, बाबूसाहेबक टीक'क, महान वीभत्सवाद आ' 'किरतनिञाँ चन्नरदास'क भयानक अस्तित्ववाद हिनकर साहित्यिक सिद्धहस्तता आ संगहि सिद्धान्तहीनता सिद्ध करइए। बंगाली गल्प लेखक 'वनफूल' जकाँ इहो महाशय विभिन्न शैली, विभिन्न टेकनिक, विभिन्न आस्थामे गल्प रचना कए रहल छइथ।**

यात्रीसँ अपन निकटता बढ़यबाक राजकमलक पूर्वयोजनाकेँ सफलीभूत होयब प्रमाणित करैत अछि हिनक एहि आलेखक ई अंश- **एमहर 'मिथिला दर्शन' विशेषांक (अक्तूबर 1957)मे यात्रीजीक कथा 'रूपान्तर' प्रकाशित भेल अछि। एही अंकमे श्रीराजकमलक 'सहस्र मेनका' सेहो छपल अछि। ई दुनू कथा, कथा साहित्यक नब दिशा दिस संकेत करइए। यात्रीजी तँ आधुनिक नवोदित साहित्यकार सभक सभदिन प्रेरणास्रोते रहलाह अछि।**

एतावता राजकमल अपन एहि आलेखमे फ्रायडक सेक्सवादक खुलि कऽ कथामे प्रयोग करबाक पैरवी करैत, कथाक प्लॉट, लेखन-शैली आदिकेँ सेहो तथाकथित परम्पराक बन्धनसँ मुक्त करबापर बल दैत कहैत छथि- **जँ एखनहु साहित्यकार लोकनि विशुद्ध भाषा शैली, विशुद्ध आदर्शवाद, विशुद्ध वैष्णवी साहित्य'क फेरमे पड़ल रहताह तँ साहित्यक भविष्य अन्हारे-अन्हार रहत।**

राजकमलक एहि आलेखक प्रतयुत्तरस्वरूप **पल्लव** क अग्रिम मार्च 1958क अंकमे **सपूत** नामसँ रामदेवझाक एक गोट निबन्ध **कहानीक चौबट्टीपर** प्रकाशित भेलनि जाहिमे आधुनिक मूलक नवजात मैथिली कथाकेँ फ्रायडक सेक्सवाद एवं मार्क्सक अर्थवादमे ओझरा देबाक चक्रचालिकेँ देखार करैत नवोदित मैथिली कथाकारकेँ एहि खतराक प्रति सचेत कयल गेल।

एक दिस जँ राजकमल मैथिली कथाक शीर्षपर आसीन होयबा लय बेकल छलाह तँ दोसर दिस यात्री सेहो ततबे व्यग्र। मुदा एकहि पथक एहि दुनू पथिकक मार्गमे अवरोधक बनि कऽ ठाढ़ छलथिन- हरिमोहनझा, चन्द्रनाथमिश्र 'अमर',

ललित ओ नवोदित प्रतिभा मायानन्दमिश्र । अमरजीक हास्य-व्यंग्य ओ मायानन्दमिश्रक सुकोमल भावक काव्य तत्कालीन मैथिली कवि सम्मेलनक जेना मुख्य आकर्षण भऽ गेल छल । एहि दुनू गोटाक लोकप्रियतासँ ई लोकनि ततेक ने घबरा गेलाह जे 'नवोदित साहित्यकारक प्रेरणास्रोत यात्रीजी', अमरजी ओ मायानन्दकेँ लक्ष्य बनाय कुचेष्टा भावक एक गोट हिन्दी कथा **आसमान में चन्दा तैरे** लिखलनि । पश्चात एकरा हिन्दीसँ अपन लेखशैलीमे मैथिलीमे अनूदित कऽकऽ राजकमल 'मिथिला-दर्शन'क मइ 1958क अंकमे **गगनमे हेलए चान** शीर्षकसँ प्रकाशित करा देलथिन । एहि कथाक प्रथम उद्देश्य छल अमरजीक चरित्र हनन करब एवं दोसर जे मायानन्दमिश्र साहित्य लेखनसँ विमुख होथु । ओमहर हरिमोहनझा सेहो ततबे सर्जनरत छलाह । हुनक अधिकांश कथा, गल्प ओ कविता 'मिथिला-दर्शन'मे छपैत छलनि । हरिमोहनझा लिखब छोड़थु, 'मिथिला-दर्शन'सँ हुनकर सम्बन्ध खराब होउ । एहि समस्त विषयकेँ ध्यानमे रखैत साहित्यिक आक्रमणक अगिला लक्ष्य बनाओल गेलाह हरिमोहनझा, हुनकापर गर्हित चोट करैत राजकमलक एकगोट कथा **हाथीक दाँत** दर्शनक फरवरी 1960क अंकमे प्रकाशित भेलनि । हरिमोहनबाबू मिथिला-दर्शनपर तमसा गेलाह । रचना पठायब बन्द कऽ देलथिन । साहित्यिक-राजनीति कयनिहार लोकनि अपन उद्देश्यमे सफल रहलाह । एमहर एहि कुत्सित चक्रचालिसँ अनभिज्ञ मिथिला-दर्शनक सम्पादक दम्पती प्रो. प्रबोधनारायणसिंह ओ प्रो. अणिमासिंहकेँ जखन अपन पत्रिकाक दुरुपयोगक भान भेलनि तँ अप्रैल 1960क अंकमे ओ लोकनि एहि हेतु क्षमायाचना पर्यन्त कयलनि ।

एतावता स्वातन्त्र्योत्तर मैथिली साहित्य ओ कथा-लेखन एकटा नूतन स्वरूप ग्रहण करबासँ पहिने साहित्यक स्वार्थवादी राजनीति ओ दुरभिसन्धिक शिकार भऽ गेल । नवोदित मैथिली कथा-लेखन फ्रायडक सेक्सवाद, मार्क्सक अर्थवाद ओ मनोविज्ञानवादक बीच ओझरा कऽ रहि गेल, जकर किछु झलकी मात्र पूर्वमे देखाओल गेल अछि । मायानन्दमिश्रक कथाक प्रसंग क्रममे एहि सब विषयक चर्चा एहि कारणे भेल अछि जे तत्कालीन साहित्यिक आक्रमणक शिकार हिनको बनाओल गेल छलनि, जाहिसँ ई लेखन कर्मसँ सदा-सर्वदाक हेतु मुँह फेरि लेथि । स्वातन्त्र्योत्तर मैथिली साहित्यक ई अवधि अवश्ये मायानन्दमिश्रक रचनाधर्मिताक हेतु एकटा सशक्त चुनौती छलनि । मुदा आत्मबलक धनी मायानन्दमिश्र एहि आघातसँ टुटलाह नहि । हिनक अन्तरक रचनाकार अकाल कवलित नहि भेलनि । अन्यान्य साहित्यकार-कथाकार जकाँ मायानन्दमिश्र सेहो एहू दूषित वातावरणमे सर्जनशील रहलाह । कथा ओ कविताक क्षेत्रमे हिनक लेखनी धुरझार चलिते रहलनि ।

मायानन्दमिश्रक कथा लेखनक दोसर प्रयोग–आगि मोम आ' पाथर

1960 इ.मे हिनक आठ गोट कथाक एकटा संग्रह **आगि मोम आ' पाथर** 'मैथिली आर्ट प्रेस' कलकत्तासँ प्रकाशित भेलनि । सन्तानबे पृष्ठक एहि कथा-संग्रहक भूमिका श्रीरामदेवझाक लिखल छनि । मिथिला-दर्शनमे प्रकाशित कथाकेँ री-प्रिण्ट कराय पुस्तकाकार प्रकाशित करयबाक योजनाक अन्तर्गत प्रकाशित ई पुस्तक जेना अशुद्धि आ असुन्दरताक समस्त मानदण्डकेँ तोड़ि देने अछि । पोथीक आवरण ओना अवश्ये आकर्षक छैक । मुदा भीतरमे कथा लेखकक नाम पर्यन्त अशुद्ध रूपमे 'श्री मयानन्द मिश्र' छपल छनि ।

एहि संग्रहक प्रथम कथा अछि **सेराएल इन्होर** (मि.द., मार्च 1960) एहि कथामे अपन दबंग द्वितीया पत्नीक आतंकसँ सहमल आ प्रथमा परित्यक्ता पत्नीक प्रति अपराध बोधसँ ग्रस्त एकटा डाक्टर पतिक मोनक अन्तर्द्वन्द्वकेँ उरेहल गेल अछि। तथापि पाठकक मोनमे एहि लाचार डाक्टरक प्रति सहानुभूति उत्पन्न होइत छैक तँ ओकर दोसर पत्नी सन्ध्याक प्रति घृणा । मुदा ई कथा तखन मोड़ लैत अछि जखन सन्ध्याकेँ देवघरमे कर्पूरसँ भेट होइत छैक आ ओ अपन सौतिनकेँ अपना सभक संगे पटनामे रहबाक आग्रह करैत छैक । नारीक पीड़ाकेँ बेसी गम्भीरतासँ नारिये बूझि सकैत अछि- एहि तथ्यकेँ प्रमाणित करैत कथाकार खलनायिका सन प्रतीत होइत सन्ध्याकेँ नायिका बना ओकरा उत्कर्षपर पहुँचा एकटा आदर्श स्थिति उत्पन्न कयलनि अछि ।

संग्रहक सूचीमे दोसर कथाक नाम अछि **आगि, मोम आ, पाथर** जे एहि कथा-संग्रहक नामो थिक । मुदा पोथीक अठारहम पृष्ठमे कथाक शीर्षक अछि **मोम आगि आ, पाथर** । वस्तुतः ई कथा एहिसँ पूर्व वैदेही समिति, दरभंगाक रचना-संग्रह (प्रथम भाग) 1956 मे प्रकाशित भऽ चुकल छल आ दोसर बेर मिथिला-दर्शनक अप्रैल 1960 क अंकमे प्रकाशित भेल । ओना **मैथिली कथाकोश**क निर्माता **आगि मोम आ' पाथर एवं मोम आगि आ' पाथर** दूनूकेँ दू गोट कथा मानने छथि जे हुनक भ्रान्ति थिकनि । वस्तुतः **आगि मोम आ' पाथर** एहि संग्रहक नाम थिक, अस्तु । एहि कथामे एकटा दलित वर्गक चौकीदार रामरूपक समक्ष उपस्थित ओहि असमंजसक स्थितिक चित्रण भेल अछि जखन ओकरा अपन चौकीदारी कर्त्तव्य ओ सन्तानक प्रति वात्सल्य एहि दुनूमेसँ कोनो एकटाकेँ चुनबाक चुनौती रहैत छैक । एहन स्थितिमे रामरूप अपन कर्त्तव्यकेँ प्राथमिकता दैत अछि । प्राणसँ बढ़ि कऽ पियरगर अपन भातिज गेनबाकेँ चोरिक आरोपमे रस्सासँ बान्हि ओ विदा होइछ । तथापि ओकर सौंसे छाती पाथरक नहि बनि जाइत छैक, अवश्ये ओकर आधा छाती वात्सल्यक

गरमीसँ मोम जकाँ पघिलैत रहैत छैक। यैह पाथर ओ मोमकेँ प्रतीक बनाय रामरूपक दू विरोधाभासी स्थिति आ ताहिसँ उत्पन्न अन्तर्द्वन्द्वक भावुक चित्रण एहि कथामे भेल अछि। मायानन्दमिश्रक ई कथा अवश्ये हुनक नूतन कथा-दृष्टिक आभास देलक। समाजक एकटा उपेक्षित वर्गकेँ अपन कथाक विषयवस्तु बनाय कथाकार तत्कालीन कथा-प्रवृत्तिसँ फराक एकटा नव दिशाक अन्वेषण करैत देखल गेलाह। संगहि सन्देश इहो जे कर्त्तव्य, आदर्श, भावुकता, संवेदना, वात्सल्य आदि सन भावुक उद्रेक एकमात्र सवर्ण ओ समृद्धहि लोकनिक चारित्रिक विशेषता नहि थिकनि। ई मानव मात्रक विशेषता थिक। चाहे ओ समाजक मुँहपुरुख बाबू-बबुआन लोकनि होथि वा रामरूप सन दलित वर्गक चौकीदार। रचनाकारकेँ कने ओकरो हृदयमे हुलकी दऽ कऽ ओकर मनोभावकेँ टोबि कऽ देखबाक चाहियनि।

संग्रहक **मिझाइत दीप** शीर्षक कथामे एकटा वृद्ध दम्पती द्वारा अपन बीतल अतीतक तृप्त-अतृप्त रोमांसक पझायल आगिकेँ खोरि-खोरि कऽ जगयबाक चित्र उपस्थित भेल अछि। कथामे **फ्लैस बैक** टेकनिकक प्रयोग भेल अछि। **कालरेत**मे मध्यम वर्गक एकटा अभावग्रस्त नवदम्पती सुधीर आ राधाक जीवन-संघर्ष ओ अभावसँ उपजल मनोमालिन्यक चित्रण भेल अछि, मुदा अन्ततः पतिक प्रेमसँ बढ़ि कऽ और कोनो दोसर सौख-सेहन्ताक कामना नहि रहि जाइत छैक राधाकेँ। यैह थिक एहि कथाक मूल भाव। अर्थ-संकट रहितो स्नेहक शक्तिक बलेँ कालरेतपर एहि दम्पतीक जीवन गाड़ी ससरल चल जाइत छैक। **कारी इजोत** कथामे एकटा सक्कत पाथर हृदयवला तगेदादार भोगीक हृदयमे मनुष्यताक जन्म होइत देखाओल गेल अछि। गणपति मास्टरक अजग्गि बेटीक विवाहक विफलता ओकरा झकझोरि दैत छैक। अपन सौख-मनोरथ सबकेँ एके बेर लतियबैत भोगी बनि जाइत अछि एकलव्य। गणपति मास्टरकेँ जाहि प्रकारेँ ओ गुरु दक्षिणा चुकबैत अछि से अवश्ये ओकरामे देवत्वक आभास दिअबैत अछि। कथाक आरम्भमे घृणाक पात्र बनल भोगी, कथाक अन्तमे आबि कऽ पाठकक अपार स्नेह आ संवेदना प्राप्त कऽ लैत अछि।

वृत्तक त्रिभुजमे एकटा मातृहीना किशोर सुरेनक हृदयमे अपन समवयस्का भाउज अलोधनिक प्रति उपजल प्रेम ओ ताहि लऽ कऽ ओकर जेठ भाय उपेन्द्रक मोनमे उठैत शंकाक ज्वारि आ एहि लऽ कऽ एहि तीनू प्राणीक मोनमे उत्पन्न अन्तर्द्वन्द्वक अपूर्व चित्र उपस्थित भेल अछि। कैशोर्यसँ युवत्व दिस बढ़ैत तथापि स्त्री-पुरुषक रति सम्बन्धसँ सर्वथा अनभिज्ञ सुरेन अपन जीवनमे प्रथमे-प्रथम नारी स्नेह-सुख पाबि गद्‌गद् रहैत अछि। भाउज अलोधनिक हृदयमे अपन देओरक

निश्छल स्नेहक कारणे वात्सल्यक भाव उमड़ैत रहैत छैक । मुदा परिपक्व जेठ भाय उपेन्द्रकेँ अपन स्त्री ओ छोट भायक प्रति सदिखन शंका बनल रहैत छैक आ अन्तमे ओ सुरेनकेँ होस्टल पठयबाक निर्णय लैत अछि एहिसँ सुरेन विचलित भऽ उठैत अछि । एहि कथाक कथावस्तु ओ घटनाक्रम दुनूकेँ कमजोर ओ नाटकीय रहितो एहिमे जाहि प्रकारेँ किशोरसँ युवत्व दिस बढ़ैत पुरुषक मनोविज्ञानक चित्रण कयल गेल अछि से अवश्ये मैथिली कथाकेँ एहि दशकमे युवत्व दिस बढ़बाक सूचक बनल । एकटा वृत्तक मध्य रहैत तीन गोट प्राणी सुरेन, उपेन्द्र आ अलोधनि, तीनू तीन मनःस्थितिमे जीबि रहल अछि, तीनूक तीन रंगक दृष्टिकोण छैक । यैह तँ भेल वृत्तक त्रिभुज ।

आलोच्य संग्रहक अग्रिम कथा अछि **रुपिया** । रुपिया समाजक ओहि उपेक्षित श्रमिक वर्गक प्रतीक अछि जकर स्वप्नक भंग होयब ओकर नियति छैक । भावुकताक रंगमे रंगल एहि कथामे कोनो चमत्कार नहि । मुदा यथार्थक एकटा मार्मिक चित्र अवश्ये उपस्थित भेल अछि । संग्रहक अन्तिम कथा **सुरबा** वस्तुतः एकटा शब्द-चित्र थिक । सुरबा नामक अपन एक गोट बालसंगीकेँ एक दिन ट्रेनमे आन्हर भिखारी बनल भीख मङैत देखि कथानायकक हृदय द्रवित भऽ उठैत छैक आ बाल्यकालक स्मृति ओकर मानस पटलपर साकार भऽ जाइत छैक ।

विरुद् जोड़बाक प्रयोजन ?

एतावता स्वातन्त्र्योत्तर मैथिली कथाक एहि प्रथम उत्थान कालमे कथाकार मायानन्दमिश्र अपन कथा संग्रह **आगि मोम आ' पाथर** लऽ कऽ उपस्थित भेलाह आ अपन संग्रहक संग एकटा विरुद् जोड़ि लेलनि सेहो **प्रगतिशील आ मनोवैज्ञानिक कथा संग्रह** । अवश्ये ई विरुद् कौतूहल उत्पन्न करैत अछि । एहि कौतूहलक समाधान हेतु पुनः समसामयिक साहित्यिक प्रवृत्ति आ मायानन्दमिश्रक परिवेशपर एक दृष्टि देब आवश्यक प्रतीत होइत अछि । ओहि समयमे विशुद्धतावादी साहित्यक युग चल गेल छलैक । मार्क्स ओ फ्रायडक विचारधाराक समावेश कऽ ललित अपन **रमजानी, मुक्ति** आदि कथा लऽ कऽ प्रचार पाबि चुकल छलाह । दोसर दिस फ्रायड आ युंगक अवतार राजकमल कामुकतासँ परिपूर्ण गर्म-कथा लिखि पर्याप्त प्रचार पाबि रहल छलाह संगहि यात्रीक संग साहित्यिक गठजोड़ बना कऽ एकक बाद दोसर शतरंजी चालि सेहो चलि रहल छलाह । एहन कठिन समयमे मायानन्दमिश्र प्रभृति साहित्यकार लोकनिक हेतु अपन परिचिति बनायब कठिन भऽ रहल छलनि । एक दिस पारिवारिक संस्कार, मर्यादा ओ वर्जना छलनि तँ अभिभावक लोकनिक नजरि सेहो । दोसर दिस ललित ओ राजकमल जकाँ प्रचार पयबाक भूख सेहो हुनका

व्यग्र कऽ रहल छलनि। विशुद्धतावादी बनि कऽ रहि नहि सकैत छलाह आ उन्मुक्त भऽ कऽ राजकमलीय धारामे बहियो नहि सकैत छलाह । अतएव एहि दुनू अतिरेकवादी धारासँ फराक अपन कथा-लेखनमे एकटा तेसर मनोविश्लेषणवाद किंवा मनोवैज्ञानिक धाराक चयन कयलनि । एहि धाराक कथामे पात्रक बाह्य वर्णनसँ अधिक ओकर आभ्यन्तरिक उहापोह ओ अन्तर्द्वन्द्वपर बेसी ध्यान केन्द्रित कयल जाइछ। मैथिलीमे एहिसँ पूर्व उमानाथझा अपन कथा सभमे एहि मनोविश्लेषवादी धाराक नीक प्रयोग कऽ चुकल छलाह । अतः ललितक प्रसिद्धि आ राजकमलक प्रचारसँ प्रभावित कथाकार मायानन्दमिश्र हिनके लोकनिक समानान्तर स्वयंकेँ ठाढ़ करबाक हेतु अपन कथासंग्रहक संग उपर्युक्त विरुद् जोड़ि लेलनि ।

आब एहि विषयपर विचार कयल जयबाक आवश्यकता अछि जे ई विरुद् कतेक अंश धरि उचित छल । हिनक कथासंग्रहक एहि विरुदावलीक प्रथम आखर अछि– **प्रगतिशील** । जँ स्वतन्त्रता प्राप्तिक पश्चातक ओहि प्रथम दशकमे साहित्यमे प्रगतिशीलताक तात्पर्य लीकसँ हटि कऽ चलब छल तँ अवश्ये ई संग्रह अंशतः प्रगतिशील मानल जायत । 1950 सँ पूर्व मैथिली कथा मुख्यतः सवर्ण ओ समृद्ध वर्गकेँ केन्द्रमे राखि लिखल जाइत रहल । मुदा 1950क बाद कथाकार लोकनिक ध्यान सवर्णेतर वर्ग दिस सेहो गेलनि । ललितक **रमजानी** तकर सबसँ पैघ उदाहरण अछि । एही सरणिपर चलैत मायानन्दमिश्र सेहो सवर्णेतर वर्गक व्यथाकेँ अपन कथाक आधार बनौलनि । **आगि मोम आ' पाथर**मे संकलित आठ गोट कथामेसँ चारिटा क्रमशः **मोम आगि आ, पाथर, कारी इजोत, रुपिया**, एवं **सुरबा** सवर्णेतर वर्गक कथा थिक । एहि दृष्टिएँ एहि संग्रहकेँ पचास प्रतिशत प्रगतिशील मानल जा सकैछ । मुदा जँ प्रगतिशीलताक अर्थ 'प्रोग्रेसिवनेस' अर्थात् प्रतिकार ओ विद्रोहसँ लेल जाय तँ एहि संग्रहक कोन प्रश्न, प्रत्युत् एहि अवधिक हिनक एकोगोट कथाकेँ प्रगतिशील नहि कहल जा सकैछ । अपन हाथक लोढ़ा छिना, मारि खाइयो कऽ दलित बाला रुपिया चुप रहि जाइछ। प्रतिकार स्वरूप लोगीदारकेँ नछोड़ि तँ सकैत छलि, एक लोइया थूक तँ ओकरा देहपर फेकि सकैत छलि । जँ सेहो नहि तँ लोगीदारकेँ परोच्छमे कमसँ कम गारि तँ पढ़ि सकैत छलि । मुदा रुपिया सेहो साहस नहि जुटा सकल । एहि अर्थमे हिनक कथाकेँ प्रगतिशील कहबाक बदला मानवीय संवेदनासँ युक्त भावुक यथार्थवादी कथा कहब बेसी उपयुक्त होयत ।

आब एहि संग्रहक दोसर विरुद् **मनोवैज्ञानिक** शब्दक परीक्षण कयला उत्तर प्रतीत होइत अछि जे कथाकार अवश्ये एहि संग्रहक कथामे पात्रक बाह्य क्रिया-कलापसँ बेसी ओकर अन्तर्मनपर ध्यान देलनि अछि । अपराध बोधसँ ग्रस्त अपन दुइ गोट

पत्नीक बीच झुलैत **सेराएल इन्होरक** डाक्टरसाहेब, कर्त्तव्य आ वात्सल्यक बीच फसल **मोम आगि आ, पाथरक** रामरूप, अतीतक समुद्रमे उबडुब करैत **मिझाइत दीपक** करिया काका आ काकी । मोटामोटी एहि संग्रहक अधिकांश कथामे पात्रक आभ्यन्तरिक स्वरूपपर बेसी फोकस कयल गेल अछि । मुदा कथाकेँ मनोविश्लेषवादी शिल्प ओ गढ़निमे प्रस्तुत करबाक प्रयासमे कथाकार बेसी ठाम अतिए कऽ देने छथि । पात्रक मोनमे उठि रहल विविध प्रकारक भाव ओ विचारकेँ चामत्कारिक ढंगेँ प्रस्तुत करबाक बदला कथाकार अपन कथामे बेर-बेर किछु सुस्थिर शब्दावलीक प्रयोग करैत रहि जाइत छथि । यथा **कारी इजोत** कथाक मुख्य पात्र भोगीक मानस पटलपर उभरैत एकटा नारीक छविकेँ **...पिंडश्याम...कुइर-कुइर आँखि ...कस्सल सोटल बाँहि** उपमा द्वारा प्रदर्शित कयल गेल अछि जाहिसँ कथाकारक सौन्दर्यबोधक परिचय भेटैत अछि मुदा कथामे एहि सुनिश्चित शब्दावलीक ततेक बेर ने आवृत्ति भेल अछि जे कथा अनेरो अरुचिकर भऽ गेल अछि । संग्रहक अन्यो कथासबमे एहि प्रकारक प्रयोगक अतिशयताक कारणे कथा श्लथ आ नीरस भऽ गेल अछि । पात्रक अन्तःमनकेँ चित्रित करबाक हेतु प्रयुक्त सुस्थिर शब्दावलीक आवृत्तिसँ कथाक प्रवाह डेग-डेगपर बाधित होइत अछि एवं एहि प्रकारक शिथिल-कथा पाठककेँ अपना संग बेसी काल बान्हि कऽ नहि राखि पबैत अछि । तथापि स्थूल-रूपमे एहि कथाकेँ मनोवैज्ञानिक कहबामे कोना तारतम्य नहि ।

एहि संग्रहक अन्यो पक्षपर किछु विचार करब अपेक्षित अछि । कथाकारक लेखन शैलीपर दृष्टि देला उत्तर प्रतीत होइछ जेना एहि अवधिमे हुनका मानक मैथिली लेखनपर पूर्ण अधिकार नहि भेल छलनि । **मिथिला मिहिर** (दरभंगा), **वैदेही** आ **निर्माण**मे प्रकाशित हुनक कथा सब सम्पादित भऽ कऽ प्रकाशित होइत रहलनि, मुदा **मिथिलादर्शन**मे कथा सभ यथावते छापि देल जाइत छल । एहि प्रथम उत्थान अवधिक हिनक कथाकेँ पढ़लासँ बुझाइछ जेना कथाकार लग शब्द-सम्पदाक अभाव होइनि । एकहि रंगक शब्दावलीक बेर-बेर प्रयोगसँ हिनक समस्त कथामे एकहि रंगक परिवेश बुझना जाइछ । **सेराएल इन्होर**मे कर्पूर नमरि कऽ सन्ध्याक **एक लोइया गाल** नोचैत अछि तँ तखन ई उपमान अभिनव लगैछ । मुदा, जखन फेर **वृत्तक त्रिभुज**मे सेहो तद्वते भाउज अलोधनि नमरि कऽ अपन देओर सुरेनक **एक बाकुट गाल** तीड़ैत अछि तँ एहिसँ कथाकारक अभिव्यक्तिक दारिद्र्य परिलक्षित होइछ ।

कथाकारक अपन अन्तर्द्वन्द्व

आगि मोम आ' पाथरक संग मनोविज्ञानवादी कथाकार होयबाक विरुद् धारण कयलाक बादो मायानन्दमिश्र अपनाकेँ अन्तर्द्वन्द्वसँ मुक्त नहि राखि सकलाह

से हिनक एहि अवधिक कथाक पारायणसँ सहजे स्पष्ट भऽ जाइत अछि। हरिमोहनझाक कार्बन कॉपी बनि **भाङक लोटा** लऽ कऽ कथा क्षेत्रमे प्रवेश कयने छलाह आ तकर बाद 1953 सँ अपन पृथक छवि गढ़बाक प्रयासमे लागि गेलाह। मुदा एहि पृथक छविमे कखनो हरिमोहनझाक हास्य, मनमोहनझाक करुणा, उमानाथझाक मनोविश्लेषण, ललितक सेक्स, राजकमलक विद्रूप कामुकता एवं किछु अपन स्वतन्त्र चिन्तनक रंग भरैत रहलाह आ एक प्रकारक अन्तर्द्वन्द्वमे फँसल रहलाह। एक बेर हरिमोहनझाक धाराक परित्याग कयलाक बाद पुनः 1954 मे **जखन हम स्वर्ग गेलहुँ** कथामे हुनके अनुसरण करैत देखल गेलाह। तथापि मर्यादा ओ अनुशासनक बन्हनमे बान्हल रहितो राजकमलकेँ हुनक गर्मकथासँ प्राप्त होइत सस्त प्रचारक आकर्षण मायानन्दमिश्रकेँ बेर-बेर आकर्षित करैत रहलनि। 1954मे **जखन हम स्वर्ग गेलहुँ**मे नारीक अन्तःवस्त्रकेँ हरिमोहनझाहिक शैलीमे **कंचुकी** कहैत छथि। मुदा 1959 मे **सेराएल इन्होर**मे अपन संकोचकेँ तोड़ैत निधोख भऽ कऽ **ब्रेसियर** शब्दक प्रयोग कयलनि। एहि कथामे राजकमलसँ प्रेरित भऽ कथाकार एकटा छोट सन सिक्वेंस ठाढ़ करबाक साहस कयलनि जाहिमे धर्म-कर्मक प्रति आस्थावान डाक्टर रतीशकेँ एकटा पेशेवर युवती अवैध सेक्सक हेतु इसारा करैत छैक, मुदा रतीशक संस्कार ओकरा विचलित नहि होअऽ दैत छैक। वस्तुतः हिनक एहि कथाक ओ कामुक युवती राजकमलक प्रभाव थिकनि तँ रतीशक चरित्र कथाकारक अपन पारिवारिक संस्कारसँ निर्देशित प्रतीत होइत अछि। **वृत्तक त्रिभुज**मे कैशोर्य ओ युवावस्थाक सन्धिपर ठाढ़ सुरेनकेँ अपन समवयस्का भाउजक पहिरल वस्त्र सुँघबैत देखा कथाकार नारी-पुरुषक बीचक सहज आकर्षणकेँ देखबितो पुनः चतुरतासँ एकटा मातृहीन किशोरक हृदयमे अपन भाउजक प्रति उपजल निश्छल प्रेम देखाय सम्हरि जाइत छथि। ई प्रेम यौनाकर्षण थिक आ की मातृभाव किंवा वात्सल्य भाव, तकर निर्णय करबाक भार पाठकपर छोड़ि दैत छथि।

वस्तुतः अपन कथामे पात्रक मनोदशा ओ अन्तर्द्वन्द्वक चित्रणपर बेसी जोर देनिहार कथाकार मायानन्दमिश्र स्वयं अन्तर्द्वन्द्वसँ ग्रस्त प्रतीत होइत छथि। कोन धारामे अपन कथा-नौकाकेँ लऽ जाथि से निश्चित नहि कऽ पबैत प्रतीत होइत छथि। जाहि कारणे हुनक अन्तरक कथाकार पूर्णतः प्रस्फुटित नहि भऽ सकलनि। स्वयंकेँ चर्चित बनयबाक अधीरताक कारणे कोनो घटना वा मनःस्थिति विशेषकेँ प्रतीक रूपमे कहि देबाक कौशल ओ स्वयंमे विकसित नहि कऽ सकलाह आ देखार होइत रहलाह। अन्ततः मिथिला मिहिर (पटना)क पुनःप्रकाशनसँ पूर्व ओहि छठम दशकक प्रायः अपन अन्तिम कथा **एक जोड़ा लोक : एक जोड़ा आँखि**मे कथाकारक धैर्यक बान्ह जेना टूटि गेलनि। पारिवारिक संस्कारक समस्त छान-पगहाकेँ तोड़ैत

कथाकार जेना एके बेर अपन एहि एहि कथाक माध्यमे राजकमलक पंक्तिमे आबि कऽ बैसबाक प्रयास कयलनि । 1954 मे ललितक **मुक्ति** कथाक शेफाली सेक्स सुख पयबाक हेतु एकटा दरबान संगे उढ़रि गेल छलि आ 1960 मे मायानन्दमिश्रक **एक जोड़ा लोक : एक जोड़ा आँखिक** सुमिन्तरा अपन बचहाओन अनभोआर पतिसँ कामवासनाक पूर्त्ति नहि होयबाक कारणे बेर-बेर भागि कऽ अपन नैहर अबैत अछि। अपन नैहरक एकटा विधुर बच्चेलाल सुमिन्तराकेँ पूर्ण पुरुष प्रतीत होइत छैक । मुदा कथाक तानी-भरनी बुनबासँ पहिने कथाकार सुमिन्तरा आ बच्चेलालक मध्य नितान्त वर्जनीय चारित्रिक हीनताक एकटा दृश्य उपस्थित करा जेना कथाकेँ एक बेर हहा कऽ खसा दैत छथि । लगैछ जेना एहि कथाक चरम उद्देश्य वैह वर्जनीय दृश्य देखायब हो । एकर बाद कथाकार पुनः पूर्ववत् सम्हरबाक चेष्टा करैत छथि । सुमिन्तराक हृदयमे अपन पतिक प्रति मात्सर्य जगा बच्चेलालसँ समन्ध करबाक विचारक त्याग करा ओकरा सासुर पठबैत छथि मुदा सुमिन्तराक घरवला तावत धरि सगाइ कऽ लेने रहैत छैक । कथाक ई अन्तिम अंश निरर्थक सन लगैत अछि । वस्तुतः एहि दशकमे स्वयंकेँ कथाकारक रूपमे स्थापित ओ चर्चित नहि करा पयबाक कुण्ठा ओ अन्धैर्यक प्रतिफल छल **एक जोड़ा लोक : एक जोड़ा आँखि** । सेक्स-कथाक चकमकीसँ अन्हरायल कथाकार मायानन्दमिश्र ओहि समयमे सम्भवतः कनेक कालक हेतु बिसरि गेल छलाह जे साहित्य लेखन साधना थिकैक, स्टंट नहि । समाजक प्रति सेहो हुनक किछु दायित्व छनि आ अभिभावक लोकनिक दृष्टि सेहो हुनकापर छनि । ध्यातव्य जे ई कथा कलकत्तासँ बाबूसाहेबचौधरीक सम्पादनमे प्रकाशित कथासंग्रह **अछिञ्जलमे** संकलित अछि । एहि संग्रहमे मायानन्दमिश्रक माम रामकृष्णझाकिसुनक कथा **संकल्पक आधार** छनि तँ हरिमोहनझा फणीश्वरनाथ रेणु, ब्रजकिशोरवर्मा, ललित, चन्द्रकान्तझा, राजकमलचौधरी एवं रामदेवझाक कथा सेहो संकलित छनि ।

अछिञ्जल ओ एहिमे संकलित मायानन्दमिश्रक कथाक प्रसंग घटित एकटा रोचक घटनाक एतऽ चर्चा करब अप्रासंगिक नहि होयत । किएक तँ ई घटना मायानन्दमिश्रक भावी रचनाधर्मिताकेँ दिशा-निर्देशित कयलक। हिनका सेक्सक पाँकमे फँसबासँ बचौलक । 1960 इ. मे **मिथिला दर्शनक** विशेषांकमे एहि संग्रहक एकटा विज्ञापन प्रकाशित भेल- **पवित्र शरीर आ मोनसँ पूजनोत्सव मनाबक लेल एतयसँ 'अछिञ्जल' सर्वत्र पठाओल जायत । सब तीर्थक जलक स्वाद भेटत** । एहि विज्ञापनक आलोकमे मायानन्दमिश्रक कथापर परोक्ष रूपसँ टिप्पणी करैत चन्द्रनाथमिश्र अमर, बाबूसाहेबचौधरीकेँ एकटा पत्र लिखलथिन जे **एहि अछिञ्जलसँ तर्पण नहि कयल जाय एहिमे कौआ लोल दऽ देने अछि** । (कर्णामृत, अप्रैल, जून 2002) ।

पुनः अमरजी एहि प्रसंग मायानन्दमिश्रकेँ सेहो एकटा चिट्ठी लिखलथिन । अमरजीक पत्रक उत्तरमे 14 जून 1961 इ. कें लिखल अपन पत्रोत्तरमे मायानन्दमिश्र अपन कथाक औचित्य सिद्ध करैत विस्तारसँ सफाइ देलनि । मुदा अन्ततः स्वयं अपन गलती स्वीकारो कयलनि- **स्वाभाविकता आ मनोविज्ञानक अतिक्रमण तँ प्रायः हम नहिये कैने छियै । मात्र एकठाँ छोड़ि कऽ जकर कने हमरो क्षोभ अछि आ जे स्थल कथाक उच्चतामे कनेक काल लेल बाधक भऽ जाइछ । नञि तँ सुमिन्तराक पीड़न अकुलाहटि स्वाभाविके छै ।** अपन एहि पत्रक अन्तमे ओ वचन दैत लिखलनि- **अपनेकेँ तँ मात्र तत्काल हमं एतबे उत्तर दऽ सकै छी जे 'भविष्यमे हम सतर्क रहब'। की? सैह ने अपनेक उद्देश्य ? बेस तँ से हैते... ।** (अमरजीक परिचय संसार ओ पत्राचार, शंकरदेवझा, 2001, पृ.- 102-103) ।

एतावता कथाकार मायानन्दमिश्र स्वातन्त्र्योत्तर मैथिली कथाक एहि प्रथम उत्थान (1950-1960)क अपन कथा-यात्रा पूर्ण कयलनि । वस्तुतः ई अवधि हिनक कथाकारक 'लर्निंग पीरियड' छलनि । कखनो-कखनो अगुतयलाह अवश्य, मुदा कुसियारक पतलोक आगि जकाँ धुधुअयलाह नहि । स्वयंपर नियन्त्रण रखैत हिनक अन्तरक कथाकार गोइठाक भुम्हुर आगि जकाँ नहुँ-नहुँ सुनगैत रहल ।

मैथिली कथाक द्वितीय उत्थान (1960-1984), पटना

सितम्बर 1960 इ. सँ पटनासँ पुनः नवीन कलेवरक संग साप्ताहिक **मिथिला मिहिरक** प्रकाशन प्रारम्भ भेल । एही संगे स्वातन्त्र्योत्तर मैथिली कथाक राजधानी दरभंगासँ सहटि कऽ पटना चल आयल । कथाकार मायानन्दमिश्र 1957 सँ पटनामे रहऽ लागल छलाह । पटना रेडियो स्टेशनक नोकरी ओ पढ़ाइ दुहू संगे-संग चलि रहल छलनि । **मिथिला मिहिरक** प्रकाशनक सूरसार प्रारम्भ होइते कथाकार लोकनिमे नव उत्साहक संचार होअऽ लगलनि । एकदिस जँ स्वतन्त्रतासँ पूर्व कालक कथाकार लोकनि सर्जनरत छलाह तँ स्वतन्त्रताक पश्चातक प्रथम उत्थान (1950-1960)क कथाकार लोकनि अपन लेखनीक कमाल देखयबा लय उत्सुक छलाह । तेसर दिस तेसर नवीन पीढ़ीक कथाकार राजमोहनझा, प्रभासकुमारचौधरी, गंगेश गुंजन, धूमकेतु, रमानन्द रेणु आदि लोकनि कथा क्षेत्रमे प्रवेश करबाक तैयारी कऽ रहल छलाह । मिहिरक प्रकाशनक संगहि एक बेर फेर मैथिली कथामे प्राचीन ओ नवीन पीढ़ीक विवाद, फ्रायडवादी अवधारणा एवं अश्लीलताक प्रश्नक संगहि साहित्यिक राजनीति नवीन रूपमे सामने आबऽ लागल ।

राजनीतिक दुष्चक्रमे फँसल मैथिली कथा

मायानन्दमिश्र **एक जोड़ा लोक : एक जोड़ा आँखि** कथाक संग अपन

नवीन तेवरक परिचय दऽ देने छलाह। पुनः एही कड़ीमे पति-पत्नीक प्रणय वर्णन करैत ई अपन एकगोट कथा **हँसीक बजट** मिहिरमे प्रकाशनक हेतु देलथिन जे 23 अक्टूबर 1960क अंकमे प्रकाशित भेलनि। ओहि समयमे मिहिरमे कोनो प्रकारक आपत्तिजनक सामग्रीक प्रकाशनपर अघोषित प्रतिबन्ध छल। अतः मिहिरक नवीन सम्पादक सुधांशुशेखरचौधरी मायानन्दमिश्रक एहि कथापर अपन सम्पादकीय कलम चला देलथिन। मायानन्दमिश्र ताहिपर तमसा गेलथिन। एतऽ एकटा बात आरो ध्यातव्य थिक जे मिहिरक प्रकाशनसँ पूर्व मायानन्दमिश्र ओ शेखरजीमे घुट्ठा-सोहार छलनि, मुदा मिथिला-मिहिरक सम्पादकक पद लऽ कऽ दुनू गोटामे मतान्तर भऽ गेल छलनि। ताहि परसँ शेखरजी हुनक कथाक शल्य-क्रिया से फराके कऽ देने छलथिन। बस मायानन्दमिश्र एहि बातक बदला 1960क **मिथिला दर्शन**क विशेषांकमे प्रकाशित अपन आलेख **मैथिली गल्प : परिस्थिति ओ परिणाम**मे शेखरजीकेँ सर्वथा कतिया कऽ लेलनि। समकालीन मैथिली कथाक समालोचनामे अपन उपेक्षासँ दुखी शेखरजी एहि सब बातक उल्लेख अमरजीकेँ 28 नवम्बर 1960केँ लिखल अपन एकगोट पत्रमे कयलनि- **एमहर फेर 'माया' चलि रहा है। हम हृदय तो आपही के पास चीड़ि सकते हैं। उसने कहानी दी हमने छापि दी। जो मिहिर को पचता नहीं था, छाँटना पड़ा। चुम्मा-चाटी केना छापते ? बस मालूम हुआ है किदन-कहाँदन करता रहता है मेरे खिलाफ। अगिलो १३ वलामे ओकरे है- कोटेसन। हम अपना जनैत नीके करते हैं, मुदा उसको आप देखते चलिये। मानि लिया लोक हमको झूट्ठे कहता है। मुदा पढ़िये कथा साहित्यपर मिथिला दर्शन के इस अंकमे उसका लेख। उसका हृदय की ठीक है ? शुद्ध है ? दावा करना गर्व भने कहि दीजिये, मुदा 'भारती', 'एक सिंघाड़ा : एक चाय', 'फूलदीदी', 'सरस गल्प', 'पुरान बात', 'फूटल घैल' को अगर मैथिली कहानी से हटा दीजियेगा तो कथा साहित्य को कूशो-कलेप नही लगेगा ? कहिये आपही धर्म से। से हमको नीचा दिखाया गया है। और हम ? हमने तो आपहीके कोठरीमे लिखकर 'बिहाड़ि पात आ पाथर' को आसमानमे धड़ दिया था। यादे होगा आपको। आप ही कहिये, अगर हम उसकी कहानी को तराजू पर रख देँ और पासंग नहीं मारेँ तो उसका वह अधिकारी है ?** (अमरजीक परिचय संसार ओ पत्राचार, पृ.-85)। ध्यातव्य थिक जे जाहि दिन दुनू गोटामे ठेहुन-छावा छलनि ताहि समयमे **मिथिला दर्शन**क अप्रैल 1960क अंकमे मायानन्दमिश्रक सद्यः प्रकाशित उपन्यास **बिहाड़ि पात पाथर**पर शेखरजीक समीक्षा प्रकाशित भेल छलनि जाहिमे एहि उपन्यासकेँ ओ ओहि दशकक सर्वश्रेष्ठ मनोवैज्ञानिक उपन्यास कहैत मैथिली उपन्यास साहित्यमे मीलक पाथर कहने छलथिन। मुदा दुहू गोटाक सम्बन्धमे जखन मालिन्य उत्पन्न भऽ गेलनि तँ दुहु गोटा एक दोसरपर प्रहार करऽ लागल रहथि। शेखरजीक उपर्युक्त व्यक्तिगत पत्र एवं अन्य साहित्यिक

आलेख तद्‌युगीन मैथिली साहित्यक आन्तरिक राजनीतिकेँ देखार करिते अछि संगहि एक-दोसराक पोल सेहो फोलैत अछि। निष्कर्ष रूपमे यैह जे मैथिली कथाक एहि द्वितीय उत्थानक आरम्भक संगहि पूर्वसँ चल आबि रहल अपन प्रचार ओ प्रतिद्वन्द्वी लोकनिपर प्रहारक साहित्यिक राजनीतिमे कमबेस मायानन्दमिश्र सेहो सम्मिलित भऽ गेलाह।

एहि दोसर उत्थान कालमे सेहो नव ओ पुरान पीढ़ीक बीच संघर्ष, कथामे श्लीलता ओ अश्लीलताक प्रश्नपर विवाद चलिते रहल। **मिथिला मिहिरक** प्रथम वर्षपूर्त्तिक अवसरपर 10 सितम्बर 1961 कें एकर प्रथम कथा-विशेषांक प्रकाशित भेल। कथामे अनावश्यक अश्लीलता ओ उद्दाम वासनाक प्रदर्शनकें अनुचित मानैत अपन सम्पादकीयमे मिहिर-सम्पादक लिखलनि जे- **आइ मैथिली कथामे चरित्र-चित्रण, मनोवैज्ञानिक अन्तर्द्वन्द्व ओ सूक्ष्मसँ सूक्ष्म अभिव्यक्तिकेँ नीक जकाँ देखल जा सकैछ। मुदा खेदक संग कहऽ पड़ैछ जे यर्थाथवादक नामपर मर्यादाक सीमाकें ढाहबाक प्रवृत्ति सर्वाधिक मुखर भेल जा रहल अछि। आब साहित्य 'कलाक हेतु कला' नहि रहि जीवनक हेतु मान्य भऽ चुकल अछि। तेँ ई आवश्यक जे जीवनकेँ ऊपर उठयबाक हेतु मर्यादाक रक्षा कयल जाय। मनुष्यमे यौन आकर्षण सत्य थिक, मुदा ओहि भावनाक प्रकाशन हेतु उचित स्थान चाही। कोनो साहित्य सार्वजनीन होइत अछि तेँ ओहिमे यौन भावनाक ताण्डव नर्त्तन गर्हित बूझल जायत। कोनो आयल अतिथि जँ हमर घर-द्वार, ओछाओन-बिछाओन, थारी-बाटी, कपड़ा-लत्ता, घरक आन वस्तु-जातसँ हमर स्थितिक अनुमान नहि लगा पओताह तँ हुनका हम अपन पयखाना देखा कऽ स्थितिसँ परिचित नहि करा सकैत छियनि। साहित्यमे अश्लीलता ओ यौन संबंधी उद्दाम वासनाक नग्न-प्रदर्शन तेहने सन बुझबाक थिक। आशा जे प्रतिभाक धनी नवीन कथाकार लोकनि मर्यादाक रक्षा करैत साहित्यक माध्यमसँ समाजकेँ ऊपर उठयबामे दत्तचित्त होयताह।**

वस्तुतः मिहिरक ई विशेष सम्पादकीय स्थापित फ्रायडवादी कथाकार राजकमल एवं एहि धारामे नव दीक्षित मायानन्दमिश्र एवं अन्य कथाकार लोकनिक हेतु लिखल गेल छलनि।

एहि द्वितीय उत्थान कालमे सेहो हरिमोहनझा अपन लोकप्रियताक शीर्षपर स्थापित छलाह जनिका ध्वस्त करबाक हेतु पूर्वमे राजकमल एकबेर जोर लगौने रहथि। मुदा असफल रहलाह। आब ई बीड़ा हुनक गुरू यात्रीजी उठौलथिन। जेना पहिने यात्रीजी एक बेर **गगनमे हेलए चानक** द्वारा अमरजी ओ मायानन्दमिश्रपर समधानि कऽ प्रहार कयने छलथिन तद्वते एहू कालमे **मिथिला मिहिरक** 15 सितम्बर 1963 क कथा-विशेषांकमे अपन जरद्‌गव सन चुटकी लिखि हरिमोहनझाकेँ

बिढ़नी जकाँ बीन्हि तिलमिला देलथिन । यात्री–राजकमलक एहि गोलक किछु आरो विस्तार भेल जाहिमे नवतूरक किछु साहित्यकार लोकनि भरती भेलाह ओ पुनः प्रारम्भ भेल वैह पुरनका अपन प्रचार ओ विरोधीपर प्रहारक खेल ।

मिथिला मिहिरक 15 सितम्बर 1963क कथा–अंकमे एकहि संग तीन पीढ़ीक कथाकार यथा पुरान पीढ़ीक यात्री, हरिमोहनझा, अमरजी, गोविन्दझा, राधाकृष्ण, मणिपद्म, नागेन्द्र कुमर छलाह तँ वर्त्तमान पीढ़ीक ललित, रामकृष्णझा 'किसुन', सोमदेव, धीरेन्द्र, राजकमल ओ बलराम तथा नवतूरक प्रभासकुमारचौधरी, गंगेश गुंजन ओ मधुकर गंगाधर आदि एकहि मंचपर उपस्थित भेलाह । मिहिरमे अग्रिम अंकसँ **पाठकक प्रतिक्रिया** स्तम्भ प्रारम्भ भेल । एहि स्तम्भमे किछु वास्तविक तँ बहुतो छद्म नामधारी पाठकक पत्र सभ छपैत रहल । एहि छद्म पत्र सभक सारांश यैह रहैत छल जे अमुक कथाकारक कथा बड़ विलक्षण एवं हरिमोहनझा सहित किछु अन्य कथाकारक कथा स्तरहीन ओ निरर्थक । ई छद्मनामधारी पाठक लोकनिमेसँ किछु छलाह धर्म ना. झा, दरभंगा(22सितम्बर1963), श्रीकालीनाथ, पटना–6 एवं अमरेन्दुकुमार, सहरसा (29सितम्बर1963), श्रीसमरेन्दुमोहन, उच्च माध्यमिक कला, पटना कॉलेजिएट स्कूल, पटना–4(6अक्टूबर1963), जे.एम. नाथ, जक्कनपुर पटना, श्रीदेवीप्रसाद, बड़ी बाजार, कटिहार (27 अक्टूबर 1963)इत्यादि । मैथिली साहित्यक वातावरणकेँ दूषित कयनिहार एहि छद्म पाठकीय प्रतिक्रियासँ आजिज भऽ कऽ अन्ततः मिहिरक सम्पादक 10 नवम्बर 1963क अंकमे अपन प्रतिक्रिया व्यक्त करैत लिखलनि– **हमरा लोकनि अधिकांश प्रतिक्रियामे पूर्वाग्रहक झाँसि नीक जकाँ देखि रहल छी । एहनो देखल गेल अछि जे लेखक स्वयं अपन प्रशंसा करयबाक हेतु कल्पित पाठकक निर्माण कऽ लैत छथि । कतेक प्रतिक्रिया तँ एहन आयल अछि जाहिमे अक्षर लेखकेक अछि, केवल पाठकक नाम बरनी किछु राखि लेल गेल अछि । ई सभ क्रिया एहन दूषित अछि जे स्वस्थ ओ निष्पक्ष विचार जनबाक मार्गमे बाधा उपस्थित कऽ रहल अछि आ उद्देश्यकेँ निष्फल कऽ रहल अछि । तेँ पाठक लोकनिसँ आग्रह जे ओ लोकनि उद्देश्यकेँ सफल बनयबाक हेतु पूर्वाग्रहकेँ त्यागि, पक्षपातकेँ फराक राखि अपन रुचि व्यक्त करथि । संगहि लेखको लोकनिसँ हमरा लोकनिक प्रार्थना जे ओ लोकनि पाठक लोकनिक रुचिक न्यायालयमे अपन रचनाकेँ समर्पित बूझथु । अपन रचनाक ओकालतिक हेतु छद्म पाठकक आश्रय नहि लेथि ।'**

स्वयंकेँ महान कथाकार सिद्ध करबाक हेतु जाहि प्रकारेँ मिथिला मिहिरमे पाठकक प्रतिक्रिया स्तम्भक दुरुपयोग कयल जा रहल छल ताहिसँ क्षुब्ध कथाकार ललितक प्रतिक्रिया सेहो पढ़बा योग्य अछि । रामदेवझाक नामे लिखित अपन एक

गोट पत्रमे ललित लिखलनि जे– **अरे ! ओना दस घर लेखक लोकनि छी आपसी बनहेज कऽकऽ एक दोसरक भूरि-भूरि प्रशंसा आरम्भ कर दी तँ आन कथा ! हम कही अलबत्त रामदेवजी- बाह कमाल कऽ देल 'बुनकऽ लागल मेघमे; अहाँ कही बाह अनहद कऽ देल ललितजी 'स्वप्नभंग'मे । सोमदेवजी कहथि- है-है की उपन्यास लिखलनि धीरेन्द्रजी बेजोड़ ! मायानन्दजी कहथि बाह रे बाह ! कविता थिक त सोमदेवक- की फ्लो छैक 'मनुक्ख आ मशीनमे ।**

किंवा कथा छपला उत्तर बामा हाथे (आ कि दहिने हाथे) पोस्टकार्ड लीखि-लीखि अपन कथा-प्रशंसामे विघ्नेश्वरलालदास (कल्पित नाम), धरणीधरझा (कल्पित नाम), अलकनन्दाझा (सर्वथा कल्पित नाम)क नामें वैदेही, दर्शन किंवा मिहिरक सम्पादकक नामे यत्र-तत्र-सर्वत्रसँ डिस्पैच कए दी त से आन गप्प (ललित, दोसर पत्र : एक कथाकारक, वैदेही, सितम्बर 1964) ।

मिहिरक प्रकाशनक आरम्भक तीन साल धरि राजकमलकें अपन कामुक कथाक संग एहिमे प्रवेश करबाक गऽर नहि लगलनि । मिहिर अश्लीलताक स्पष्ट विरोधी छल आ एकर सम्पादक छलथिन शेखरजी । ई वैह शेखरजी छलाह जे कहियो **वैदेही**क सम्पादक-मण्डलमे सेहो रहल रहथि आ एही अश्लील वर्णनक कारण 1956 मे लिखल राजकमल कथा **मलाहक टोल : एक चित्र**कें दू साल धरि दाबि कऽ रखने रहलथिन आ अन्ततः **वैदेही**क अगस्त 1958क अंक मे ई संशोधनक संग प्रकाशित भेल (साठोत्तरी कथा सन्दर्भ, सुधांशुशेखरचौधरी, मिथिलादर्शन, जनवरी 1973)। अतः मिहिरमे प्रवेश करबाक हेतु राजकमलकें आवश्यक भऽ गेलनि जे ओ अपन लेखन-शैलीमे परिवर्त्तन आनथि । एहि स्थितिमे राजकमल अपन कथा कहबाक ढंगकें बदलि लेलनि आ प्रथम बेर मिहिरक 15 सितम्बर 1963क अंकमे हुनक कथा **आवागमन** प्रकाशित भेलनि । 9 फरवरी 1964क अंक मे **पाठकक प्रतिक्रिया** स्तम्भमे ई प्रत्यक्ष रूपसँ सामने अयलाह आ 2 फरवरी 1964क अंकमे प्रकाशित प्रभासकुमारचौधरीक कथा **उपरफाँटू**क भूरि-भूरि प्रशंसा कयलनि । मिहिरक 10 मइ 1964क अंकमे पुनः हुनक दोसर कथा **पनिडुब्बी** प्रकाशित भेलनि । प्रथम दृष्ट्या एहि कथामे कोनो तेहन विशेष बात नहि बुझना जाइछ । मुदा राजकमल अपन एहि कथाक संग नवीन रूपमे अयलाह । जे बात पहिने अभिधामे कहैत छलाह से बात आब प्रतीक रूपमे कहऽ लगलाह । अपन शिल्प तँ बदलि लेलनि मुदा मनोवृत्ति वैह पुरनके रहलनि । प्रतीकक माध्यमसँ ओ पनिडुब्बीक कथा नायिका कादमकें वासनाक समुद्रमे गोँति देलथिन । सम्भवतः बहुतो गोटा कथाक एहि मर्मकें नहि बुझने होथि वा जे बुझनहुँ होथि से चुप्प रहल होयताह । पाठकक चुप्पी देखि राजकमल पुनः अपन पुरना खेल दोहराबऽ लगलाह जे कोना कऽ हुनक

कथा आ ओ स्वयं निरन्तर चर्चामे बनल रहथि। पूर्वक कल्पित बुद्धिमतीदेवी, फूलराजा, अनामिकाचौधरी, शशि राजकमल सन छद्‌म पाठकक आत्मा एहि द्वितीय उत्थान कालमे पुनः नव-नव नामधारी शरीरमे प्रवेश कऽकऽ सामने आबऽ लागल।

मिहिरक 24 मइ 1964क अंकमे राजकमल एकटा एहने छद्‌म पाठक श्रीवीरेन्द्रकुमारसिंह, संगम प्रिंटर्स, पटना-1,क आश्रय लऽकऽ अपन पनिडुब्बी कथापर अपन प्रतिक्रिया प्रकाशित करौलनि जाहिमे एहि कथाक मर्मकेँ ओ निम्न रूपेँ उद्‌घाटित कयलनि- **10मइक अंकमे श्रीराजकमलचौधरीक कथा 'पनिडुब्बी' देखलहुँ। शीर्ष चित्र नीक लागल । मुदा पढ़ला उत्तर क्षुब्ध सन रहि गेलहुँ । कादमकेँ पतिक असहानुभूति भेटैत छनि । ओ कारी छथि । जहाजपर पतिक विलगता (हीनभाव) कादमकेँ उद्वेलित कऽ रहल छनि । एतेक धरि कथाकार पाठककेँ सङ लऽ कऽ चलैत छथि । आ एक्के बेर गाछी आ फेर सोन्हि (सुरंगक प्रयोग शब्द दारिद्रयक द्योतक !) सँ बहार भऽ पोखरिमे जकर पानि सोनितसँ रंगा गेल । एहि प्रतीकक प्रयोगसँ कथाकारकेँ की अभीष्ट ? की कादम पतिता भऽ गेल छलीह, पतिक उपेक्षाक कारणेँ ? मुदा एहन समाजमे नहि देखल जाइत छैक । कोनो कुरूप कन्या अपन स्नेह-प्राप्तिक लेल देवता-पितरक भक्ति दिस मुड़ि सकैछ, अथवा आन कोनो तरहेँ अपनाकेँ तपा सकैछ यैह होइछ : ओकरा लेल समाजक सहानुभूतिक आवश्यकता रहैछ । ई होइछ आ ई अपेक्षितो । एकर स्थानपर ओहि उपेक्षिताकेँ (जे एखन नवविवाहिता अछि, आर आशा पूरित मोन छैक एखन जकरा) पतन दिस इंगित करब कथाकारक अपन कोनो यौन-नागफाँसक असफलताक संकेत दऽ रहल छनि । ई आत्महीनता-रोपण लेल कादम सन पत्नीकेँ चुनाव समाजक प्रति विश्वासघात भेल। सभ ठाम फ्रायडेक सिद्धान्त लागू नहि होइछ । देश-काल-पात्रक अनुरूपेँ कोनो मान्यता स्थापित भऽ सकैछ । एहि सन्दर्भमे कथाकारक दृष्टिदोष पाठककेँ कोन दिशामे लऽ जा रहल अछि? वा नहि जँ 'पनिडुब्बी' शीर्षक मोह (व्यामोह ?)मे पड़ि कऽ कथाकार भ्रष्ट भऽ गेलाह अछि तँ हुनकासँ हमर आग्रह जे एकबेर अपनो अपन कथाक पारायण करथु (जँ कोनो 'मूड' मे लिखल गेल हो आर पत्रकेँ पठा देल गेल हो!) आ करेजपर हाथ राखि कऽ कहथु जे ओ अपनो एकटा सभ्य समाजक सदस्य छथि आ हुनकापर पाठकक एक वर्ग आस्था रखैछ.... ।''**

मिहिरक 6जून 1965क अंकमे राजकमलक कथा सुरमा सगुन विचारै ना प्रकाशित भेलनि । अपन स्वभावक अनुरूप प्रतीकक माध्यमसँ एहि कथामे विधुर भाय आ विधवा बहिनक गर्हित यौनाकर्षणक चित्रण भेल अछि । स्वभावक अनुरूप एहि कथापर कोनो पाठकीय प्रतिक्रिया नहि उभरल । पुनः अपन एहि कथाक गुप्त मर्मकेँ उद्‌घाटित कऽ प्रचार पसारबाक उद्देश्यसँ राजकमल स्वयं मिहिरक 6 जून

1965क अंकमे **कथा समाप्तिक विघटन आ समस्या** नामक आलेखमे बिनु माँगल सफाइ प्रस्तुत कयलनि जे पाठककेँ हुनक कथामे जे अर्थ लगैत छनि वास्तवमे से बात नहि छैक । वस्तुतः ऊपरसँ अपनाकेँ निर्दोष ओ भोलाभाला देखबैत अपन आन्तरिक कुटिलताक परिचय दैत राजकमल एहि आलेखमे एकटा आरो कल्पित पाठिका टाटानगरक सुधारानीझा द्वारा कथित रूपसँ स्वयंकेँ लिखल गेल व्यक्तिगत पत्रक विवरण प्रस्तुत कयलनि, जाहिमे **सुरमा सगुन विचारै ना** कथामे विधुर प्रौढ़ भाय आ विधवा बहिनमे अनैतिक यौन आकर्षण देखयबाक आरोप हुनकापर लगाओल गेल छलनि । एहि आलेख द्वारा पुनः राजकमल अपन कथाकेँ चर्चित बनयबाक प्रयास कयलनि । प्रतिक्रिया स्वरूप मिहिरक 27 जून 1965क अंकमे सम्पादकक अनुसार एकगोट **'नवीन प्रतिभा' जीवकान्तझा, खजौलीक** विचार प्रकाशित भेलनि जाहिमे राजकमलक उक्त कथाक सम्प्रेषणीयतापर प्रश्नचिह्न लगाओल गेल छल । एहि प्रकारेँ हुनक कथापर प्रायोजित घोँघाउज चलैत रहल आ अन्ततः मिहिरक 11 जुलाइ 1965क अंकमे छद्‌म पाठक किंवा अनामिकाचौधरीक नवीन अवतार सुश्री नमिताश्रीवास्तव, द्वारा श्री एस.एन.दास, सी.टी.ओ., पटनाक नामसँ राजकमलक एकटा पत्र पाठकीय स्तम्भमे प्रकाशित भेल जाहिमे **सुरमा सगुन विचारै ना** कथाक शिल्प ओ मर्मक अवगाहन नहि कऽ सकबाक कारणेँ जीवकान्तझाकेँ बेस चौतारल गेलनि आ एहि कथाक उत्कृष्टताक मुक्त कण्ठसँ प्रशंसा कयल गेल । वस्तुतः अपनेसँ अपन कथाक समर्थन ओ विरोधमे छद्‌म पाठकक नामसँ पत्र-राजनीति करबाक पाछाँ राजकमलक पहिल उद्देश्य रहैत छलनि स्वयंकेँ निरन्तर चर्चित बनौने रहब आ दोसर अश्लीलताक कट्टर विरोधी मिहिर ओ ओकर सम्पादक शेखरजीकेँ सेहो एहि बातक ज्ञान करायब जे हुनक अश्लीलता विरोधी नीतिक ओ कोन प्रकारेँ धज्जी उड़ा रहलथिन अछि ।

यात्री-राजकमलक एहि साहित्यिक दुष्प्रवृत्तिक खुलि कऽ प्रयोग अन्यहु नवतुरक साहित्यकार लोकनि द्वारा कयल जाय लागल । नवपीढीक एहि रवैयाकेँ देखैत हरिमोहनझा 1965 मे अपन **बाबाक संस्कार** कथा लिखलनि जाहिमे प्रकारान्तरसँ पुरान पीढ़ीक साहित्कारकेँ जड़ि-मूलसँ समाप्त करबाक षड्यन्त्रपर व्यंग्य कयल गेल अछि आ कथाक अन्तमे भगीरथ बाबाक पुत्र लोकनि द्वारा अपना-अपना नामसँ खतियान बनयबाक व्यग्रतापर व्यंग्य करैत हरिमोहनझा लिखलनि जे- **तेहने उल्लास ओ उमंगसँ जेना नव पीढ़ीक किछु कर्मठ किन्तु उताहुल साहित्यकार होथि** (एकादशी, हरिमोहनझा) ।

वस्तुतः स्वातन्त्र्योत्तर मैथिली कथा-लेखनक संग एकटा ई दुष्प्रवृत्ति सेहो

विकसित होइत रहल जाहिमे कथाकारक संग-संग तिकड़मबाज होयब सेहो आवश्यक छल । मैथिली कथाक द्वितीय उत्थान कालमे मायानन्दमिश्र राजनीति तँ प्रारम्भ कयलनि अवश्य, मुदा ओ अपन कोनो गोल नहि बना सकलाह । फ्रायडवादी कथा आब ओ नहि लिखताह से अमरजीकेँ वचन दऽ देने छलथिन । मिहिर लागि कऽ शेखरजीसँ सेहो सम्बन्ध तीक्त भऽ गेल छलनि । मिहिरक सम्पादककेँ मायानन्दमिश्रक कथामे पति-पत्नीक चुम्मा-चाटी अनर्गल लगैत छलनि तँ दोसर दिस प्रतीकमे लिखल गेल राजकमलक उद्दाम सेक्सवला दुर्घट कथा ओ ओकर मर्मकेँ हलसि कऽ छपैत छलथिन । ओना मायानन्दमिश्र 1961क नवम्बर माससँ पटना छोड़ि स्थायी रूपसँ सहरसामे रहऽ लागल छलाह । पटनाक साहित्यिक सम्पर्क छूटि गेल छलनि । कथा-लेखनमे घोर कम्पीटिसनक युग भऽ गेल छल । साहित्यिक राजनीति अपन चरमपर छल । मायानन्दमिश्रक सार ओ कथाकार ललित ऑफिसर बनि जयबाक कारणे एक प्रकारेँ साहित्यक मुख्य धारासँ कटि गेल छलथिन । देखल जाय तँ मायानन्दमिश्र नितान्त एकाकी भऽ गेल छलाह । हुनका समक्ष हतोत्साहक स्थिति उत्पन्न होअऽ लागल छलनि । ओना मायानन्दमिश्र समेत हुनक समकालीन अन्यो विशुद्ध साहित्यकार लोकनिक बुते ई सम्भव नहि छलनि जे चौबिसो घंटा एही पाछाँ मगज भिड़ौने रहथु । यात्री ओ राजकमल जकाँ ई लोकनि दायित्वविहीन फुलटाइमर लेखक तँ छलाह नहि । नोकरी, परिवार, समाज सब किछु देखबाक रहैत छलनि । तथापि एहनो कठिन समयमे मायानन्दमिश्रक समकालीन अन्य कथाकार कथा लिखैत रहलाह, मुदा सम्भवतः हिनका ई प्रतीत भेलनि जे ओ कथा-लेखनमे सफल नहि भऽ रहलाह अछि । अन्ततः 1965 अबैत-अबैत मायानन्दमिश्र कथा-लेखनसँ अपन हाथे छीपि लेलनि ।

द्वितीय उत्थानक कथा-यात्रा ओ 'चन्द्रबिन्दु'

1965इ. मे मायानन्दमिश्र जे चुप्पी लधलनि से पुनः ई चुप्पी टूटल अठारह वर्षक बाद 1983 मे जा कऽ जखन की मैथिली कथाक द्वितीय उत्थान युग (1960-1984) क अवसान भऽ रहल छल । राजकमल 1967 मे विदा भऽ गेल छलाह । ललित सेहो ओही वर्ष अर्थात् 1983मे स्वर्गवासी भऽ गेलाह । तावत् धरि कोशी-कमलामे बहुत पानि बहि गेल छल । प्रयोगक कतोक सीढ़ीकेँ नँघैत मैथिली कथा नाना विध रंगमे रंगल प्लास्टिकक युगमे पहुँचि गेल छल । तखन मायानन्दमिश्र अपन **रंग उड़ल मुरुत** (मैथिली अकादमी पत्रिका, अप्रैल-मइ 1983) लऽ कऽ मैथिली कथाक बजारमे पहुँचलाह । एही वर्षक अन्तमे हिनक कथाक तेसर संग्रह **चन्द्रबिन्दु** सेहो प्रकाशित भेलनि । एहि संग्रहमे कुल तेरह गोट कथा अछि, जाहिमेसँ

किछु कथा पत्र-पत्रिकामे पूर्वेमे प्रकाशित भऽ चुकल छल तँ किछु कथा एहि संग्रहक माध्यमसँ प्रकाशमे आयल । एतावता हिनक कथा-प्रवृत्तिक अवगाहन हेतु 1960क **हँसीक बजटसँ** लऽ कऽ 1983क **रंग उड़ल मुरुत** धरिक हिनक द्वितीय उत्थानक कथा-यात्रापर सम्यक् दृष्टिपात करब आवश्यक बुझना जाइछ ।

23 अक्टूबर 1960क **मिथिला मिहिरक** अंकमे हिनक **हँसीक बजट** कथा प्रकाशित भेल छलनि । एहि कथामे आर्थिक संकटसँ जुझैत एक गोट दम्पती महेश आ गिरिजाक अन्तर्द्वन्द्व, मीठ-मधुर नोँक-झोँक आ मान-मनुहारिक चित्र उरेहल गेल अछि । एकर तात्पर्य अन्ततः यैह जे सुखपूर्वक जीबाक हेतु टाका आवश्यक छैक, मुदा ताहूसँ बढ़ि कऽ सुख छैक पति-पत्नीक एक-दोसराक प्रति असीम प्रेम भावमे । आमदनीक हिसाबसँ परिवारक बजट बनायब आवश्यक, मुदा हँसीकेँ कोनो सीमामे नहि बान्हल जाय । महेश आ गिरिजामे एहिना रूसा-फुली होइत रहैत छैक आ पुनः समझौता सेहो भऽ जाइत छैक । **कोटेशन** (मि.मि. 4 दिसम्बर 1960)मे कथाकारक दरभंगाक अपन छात्र जीवनक स्मृतिक एकटा छोट सन चित्र उरेहले छथि । एहि कथाक बहाने महान दार्शनिक लोकनिक कोटेसन रटि कऽ रखनिहार व्यक्तिक कथनी आ करनीमे अन्तरपर तीक्ष्ण व्यंग्य कयल गेल अछि । **नेपथ्यसँ हाकरोस** (मि.मि., 5 फरवरी 1961)क मुख्य पात्री अस्पतालक एकटा परित्यक्ता कर्कशा नर्स अछि जकरा प्रति लेखकक मोनमे तिक्तताक भाव रहैत छैक । मुदा प्रत्यक्षतः हृदयहीना लगितो ओहि नर्सक अन्तरमे मातृत्वक ओ वात्सल्यक सरिता प्रवाहित होइत रहैत छैक । अनाथ बच्चाकेँ पोसब ओकर हॉबी रहैत छैक । कतेको अनाथ बच्चा ओकरा आश्रयमे रहि रहल छलैक । एहि भेदकेँ फुजिते ओ नर्स कोनो पूज्या देवी सन प्रतीत होइत श्रद्धाक पात्री बनि जाइत अछि । **खाली जेबी : भरल मोन** (मि.मि., 2 अक्टूबर 1961)मे मानवीय स्वार्थक चित्र उरेहल गेल अछि । अल्प वेतनभोगी किरानी दीनानाथक सहकर्मी सब ओकर पछोड़ एहि दुआरे धयने रहैत छैक जे दीनानाथ ओकरा सबकेँ नित्तहु चाह-जलपान करबैत छैक । मुदा दरमाहा लेबा दिन दीनानाथक कागज-पत्तरमे किछु गड़बड़ी रहैत छैक । एहि हेतु अपन सहकर्मी सबसँ परामर्श देबाक याचना ओ कयने फिरैत अछि । मुदा ओहि बेरमे दीनानाथ लय ककरो पलखति नहि रहैत छैक । आत्मप्रशंसाक लोभी, मुँहदुब्बर दीनानाथ एहिना सब दिन स्वार्थी सबसँ ठकाइत रहि जाइत अछि । **एकटा चिनमा खेलियै रओ भैया** (मि.मि., 4 जून 1961)मे प्रशासनक क्षेत्रमे बढ़ि रहल भ्रष्टाचारपर व्यंग्य कयल गेल अछि । स्वतन्त्रता प्राप्तिक पश्चात देशमे जाहि प्रकारक व्यवस्थाक चलनसारि भेल ताहि कारणे इमानदारहुँकेँ बैमान बनऽ पड़लैक । जकर प्रत्यक्ष उदाहरण छथि - एन्टीकरप्सनक जूनियर इनस्पेक्टर मि. सिन्हा । मि.सिन्हाकेँ

प्रमोशन पयबाक हेतु अपन उपलब्धि देखायब आवश्यक छनि । भ्रष्ट दरोगाकेँ ओ नहि पकड़ि सकैत छथि किएक तँ ओ हुनक मित्रे छलनि । घुसखोर एस.डी.ओ. क्षेत्रक एम.पी.क भागिन छैक तेँ ओकर कोनो गप्पे नहि। अन्ततः मि. सिन्हा घूस लेबाक आरोपमे एकटा अब्बल चपरासीकेँ धऽ लैत छथि । वस्तुतः ई कथा देशक दुर्व्यवस्थापर मारुख व्यंग्य करैत अछि । **गाड़ीक पहिया** (मि.मि., 9सितम्बर 1962)मे पुनः एकटा मध्यवित्त दम्पतीक कथा कहल गेल अछि। अल्प वेतनभोगी पति कार्त्तिक आ खरचाहु पत्नी कर्पूर, दुनूक मनोवृत्तिमे बड़ पैघ अन्तर छैक । कोना चलय परिवारक ई गाड़ी ? घरसँ नेआरि दुनू बेकती सौख-सेहन्ताक वस्तु कीनऽ हेतु बजार जाइछ । मुदा आश्चर्य जे कर्पूर पूर्वसँ निर्धारित एकोटा वस्तु नहि कीनि गृहस्थीक लेल आवश्यक एकटा लोहाक छोलनी मात्र कीनि घर घूरि अबैछ । ई ठीक ओहिना भेल जेना हिन्दीक प्रेमचन्दक ईदगाह कथाक बाल नायक हामिद अपन जीह दागि अपन पितामहीक लेल लोहाक चुट्टा किनने अबैत अछि ।

सतदेवक कथा (मिथिला दर्शन, अक्टूबर 1963) वस्तुतः एकटा संस्मरणात्मक कथा थिक । शारीरिक कुरूपतासँ ग्रस्त सतदेवकेँ समाजक उपहास ओ खोभाटनि ओकरा मनोरोगी बना दैत छैक । हीनग्रन्थिसँ आक्रान्त सतदेव स्वयंसँ घृणा करैत अछि। एहि कथाक अन्त अत्यन्त मार्मिक भऽ उठल अछि, जखन लेखककेँ अपन बालसंगी सतदेव द्वारा आत्महत्या कऽ लेबाक सूचना भेटैत छनि । खिसक्करी शैलीमे लिखित एहि कथाक नायक सतदेव वस्तुतः मायानन्दमिश्रक कथा संसारक एकगोट 'टिपिकल' चरित्र छनि । **पानि महक आगि** (मि.मि., 13 अक्टूबर 1963)मे घरैया नोकरक भीतर सुनगैत चेतनाक आगिकेँ देखाओल गेल अछि । अपन अधिकार प्राप्ति एवं अस्तित्वक रक्षार्थ संगठित भऽ कऽ लड़ाइ करबाक गप्प तँ ओ करैत अछि । मुदा मालिकक खखास सुनिते देरी ओकर ई चेतना लुप्त भऽ जाइत छैक जेना आगिपर पानि पड़ि गेल हो । वस्तुतः ई प्रतीकात्मक व्यंग्य कथा अछि जे प्राइवेट क्षेत्रक मजदूर वर्गक दयनीय स्थितिक चित्रण करैत अछि । **द लास्ट पर्सनल लेटर अथवा एकटा लोहाक लड़कीक पाथरक हृदय** (वैदेही, मार्च 1964) पत्रात्मक शैलीमे लिखल एकटा प्रयोगवादी कथा अछि । एहि कथाक इरोतमे कथाकार फ्रायडक यौनवादी सिद्धान्तक व्याख्या करैत विवाहेत्तर नारी-पुरुषक सम्बन्धक ओहि आदिम यौन विधानक पैरबी करैत देखल जाइत छथि । पूर्वमे प्रेमी-प्रेमिका रहल एकटा जोड़ीक फराक-फराक विवाह भऽ जाइत छैक । विवाहक बाद पुनः संयोगवश दुनूकेँ भेट होइत छैक तँ एक-दोसराक प्रति आकर्षण बढ़ऽ लगैत छैक। ताही क्रममे फेर कोनो व्यवधान उत्पन्न दुनूक बीच भऽ जाइत छैक। आहत प्रेमी अपन प्रेमिकाक नामे एकटा अन्तिम पत्र लिखैत छैक । एहि पात्रक माध्यमे कथाकार

यौन भावनाकेँ जीवनक एकमात्र सत्य कहैत और सबकेँ फूसि कहैत छथि। स्त्रीक शारीरिक सौन्दर्यक कारणे पुरुषक आकर्षणकेँ मिथ्या कहैत छथि। प्रेम व्यापार एकटा छद्म थिक एकर चरम परिणति भोग थिक। **उपसर्ग** (मि.मि., 17मइ 1964)मे आजन्म एकसंग रहबाक हेतु तीन मित्र नरेश, मिहिर आ कृपाशंकर प्रतिज्ञा करैछ। नरेश आ मिहिर तँ एकसंग नोकरी करैत पटनामे रहि सकल, मुदा कृपाशंकरकेँ गामेमे रहऽ पड़लैक। एही बीचमे एक दिन कृपाशंकर अपन बहीन द्रौपदीकेँ परीक्षा दिअयबाक हेतु पटनामे अपन मित्रक डेरापर जाइत अछि। ओतऽ द्रौपदीकेँ लऽ कऽ नरेश आ मिहिर एक दोसरपर अविश्वास आ सन्देह करऽ लगैत छैक। आजन्म संग रहबाक प्रतिज्ञा कयनिहार ओहि दुनू मित्रमे एहि घटनाक बाद टोकाचाली पर्यन्त बन्द भऽ जाइत छैक। मुदा द्रौपदीकेँ पटनासँ जाइते देरी दुहू मित्रक सम्बन्ध पूर्ववते मधुर भऽ जाइत छैक। वस्तुतः एहि कथामे कथाकार फ्रायडक यौनवादी चिन्तनक हल्लुक आश्रय लैत देखल जाइत छथि। नारी-पुरुषक बीच आकर्षण सहज अछि तेँ नरेश आ मिहिर मित्रसँ प्रतिद्वन्द्वी बनि जाइत अछि। नरेश आ मिहिरक सन्धिक आगाँ द्रौपदीक उपसर्ग लगिते एहि शब्दक अर्थ बदलि जाइत छैक। वस्तुतः संयत भावेँ कथाकार सेक्सक तूलिकसँ नारी-पुरुष मनोविज्ञानक चित्र उरेहैत एकटा सशक्त कथाक रचना करबामे सफल रहलाह। मुदा जँ सामाजिक दृष्टिसँ देखल जाय तँ अपन आप्त मित्रक बहिनिक प्रति मोनमे एहि प्रकारक दूषित काम भाव उत्पन्न होयबे चरित्रहीनता थिक। ताहूमे जखन की दुनू मित्र विवाहित होथि।

चन्द्रबिन्दु (मि.मि., 6 सितम्बर 1964) कथामे दू पीढ़ीक जीवनशैली ओ चिन्तनक दिशाक अन्तरकेँ रेखांकित कयल गेल अछि। सेवानिवृत्त मास्टरसाहेबक निर्वाह अपन छोट बेटा ओतऽ एहि दुआरे नहि होइत छनि जे बेटा-पुतोहु अंडा खाइत छथिन आ ओ स्वयं दुद्धा वैष्णव छथि। जेठ बेटा जे प्रोफेसर छथिन तनिका लग सेहो निर्वाह कठिन छनि। किएक तँ शहरमे जगहक असौकर्य आ दोसर जे नोकरक हाथक बनाओल भोजन कऽ नहि सकैत छथि आ पुतोहु बुते भोजन बनायब पार नहि लगैत छनि। मास्टरसाहेब पुनः गामक बाट धरैत छथि। भरल-पुरल परिवार रहितो मास्टर साहेबक स्थिति अक्षरक चन्द्रबिन्दु जकाँ भऽ जाइत छनि जे सतत शिरो रेखासँ फराके रहैत अछि। **टुटैत कीलक जाँत** (मिथिला मिहिर, 12सितम्बर 1965) दू परस्पर विरोधी कर्त्तव्यक दू पाटक बीचमे पिसाइत एकटा नारीक अन्तर्द्वन्द्वक कथा थिक। अपन रुग्ण पिता ओ कुमारि बहिनिक दायित्वसँ बान्हलि शिक्षिका रागिनीकेँ अपन पतिसँ दूर अजमेरमे रहऽ पड़ैत छैक। पत्नीधर्मक निर्वाह नहि कऽ पयबाक अपराध बोधसँ ग्रस्त रागिनीक व्यवहार कखनो कऽ असन्तुलित भऽ उठैत छैक। रुग्ण पिता ज्येष्ठ सन्तानधर्मक निर्वहनक बात ओकरा निरर्थक लागऽ लगैत छैक।

ओ मातृहीना कुमारि छोट बहिनिक प्रति ओकर व्यवहार कटु भऽ उठैत छैक । मुदा अगिले क्षण रागिनीकेँ अपन व्यवहारपर पश्चात्ताप सेहो होअऽ लगैत छैक । बहिन अरेखा ओ रुग्ण पिताक यावन्तो आवश्यकताक पूर्त्तिक पुनः संकल्प लऽ कऽ रागिनी तहिना सुखद आश्चर्यक सृष्टि करैत अछि जेना ललितक रमजानी अपन बेटा मुश्ताककेँ पढ़यबाक निर्णयक घोषणा कऽकऽ चौंका दैत अछि । वस्तुतः नारी मनोविज्ञानक सूक्ष्म चित्रण करैत ई कथा मायानन्दमिश्रक किछु सफलतम कथामेसँ एक थिकनि । एही 1965इ. क अक्टूबर मासक **वैदेही**मे हिनक एक गोट औरो कथा **ताहि दिनुक लोक : ताहि दिनुक गप्प** प्रकाशित भेलनि आ तकर बाद हिनक कथा-लेखन विराम लऽ लेलकनि ।

एकटा दीर्घ अवधिक बाद 1983 इ.मे पुनः ई अवतीर्ण भेलाह अपन कथा **रंग उड़ल मुरुत** (मै.अ.प., अप्रैल-मइ 1983)क संग । एहि कथामे परम्परा ओ आधुनिकताक बीच चलि रहल संघर्षकेँ देखाओल गेल अछि । माटिक मुरुत बनौनिहार खानदानी कलाकार अर्जुनपंडित परम्पराक प्रतीक थिक तँ खानदानी पेशा छोड़ि प्लास्टिक खेलौना बेचबाक पक्षपाती ओकर साक्षर बेटा कार्तिक आधुनिकताक प्रतीक अछि । एहि आधुनिकतासँ लड़बामे जखन अर्जुनपंडित स्वयंकेँ अक्षम बूझऽ लगैछ तखन बेटाक आनल प्लास्टिक खेलौना सब उठा कऽ इनारमे फेकि दैत अछि। मुदा ने तँ एकोटा खेलौना डूबैत छैक आ ने ओकर रंगे भड़छैत छैक । पलायनवादी अर्जुनपंडितपर आधुनिकता भारी पड़ैत छैक । एहि कथाक कथानक छोट अछि मुदा अपन पूर्व स्वभावक अनुरूप कथाकार एकरा विस्तृत कैनवासपर उतारबाक चेष्टा कयने छथि जाहिसँ कथाक रंग पतरा गेल अछि ।

एही 1983क नवम्बर मासमे मैथिली अकादमी, पटनासँ आलोच्य हिनक अग्रिम कथा संग्रह **चन्द्रबिन्दु** प्रकाशित भेलनि । एहि संग्रहक **कालरेत** शीर्षक कथा पूर्वमे **आगि मोम आ' पाथर**मे सेहो आबि चुकल अछि। शेष आठ गोट कथा क्रमशः **हँसीक बजट, गाड़ीक पहिया, टुटैत कीलक जाँत, खाली जेबी भरल मोन, उपसर्ग, सतदेवक कथा, चन्द्रबिन्दु** एवं **रंग उड़ल मुरुत** विभिन्न पत्र-पत्रिकामे प्रकाशित भऽ चुकल छलनि । एहिसँ भिन्न चारि गोट कथा **एकटा सुखी लोकक डायरी, उत्तरचरित, सत्यक मिथ्या,** एवं **ट्रान्सफर** नव कथा छनि ।

एकटा सुखी लोकक डायरी कथा **टुटैत कीलक जाँत**क पूर्व भाग थिक । टुटैत कीलक रागिनी 1965 मे पतिसँ दूर रहबाक पीड़ा भोगि रहलि अछि तँ ओहि सँ पूर्व 1962 मे ओकर पति माधवजी पटनामे अर्थोपार्जनक हेतु खाक छनैत, विवाहित रहितो एकाकी जीवन जीबाक पीड़ा भोगैत रहैत छैक । तथापि ई दम्पती

अपन पीड़ाकेँ एक दोसरापर प्रकट नहि होअऽ दैत अछि, एहन सन जेना दुनू बड़ सुखसँ जीबैत होअय । वृद्धावस्थामे पारिवारिक उपेक्षा ओ अपमानक कथा कहैत अछि **उत्तर चरित,** से चाहे ओ धरणीधरझा रहथु किंवा काशीनाथ । सबहक गति एक्के रंग छनि । **सत्यक मिथ्या** कथाक पृष्ठभूमि अछि 1977–1980क जनतापार्टीक शासन काल । अपन कथा-लेखनक लीकसँ हटि कऽ कथाकार एहि कथामे राजनीतिकेर विद्रूप चरित्र ओ ओहिसँ मोहभंग होइत समाजक रेखाचित्र उरेहलनि अछि । स्वतन्त्रता सेनानी दुखहरणबाबू देशक हेतु त्याग कयनिहार वर्गक प्रतीक छथि, तँ मंत्री सिन्दूरीठाकुर ओ विपक्षक नेता विश्वनाथमिश्र ओहि वर्गक प्रतीक अछि जे स्वतन्त्रताक गाछमे फड़ैत सत्ता रूपी फलकेँ लुझबाक हेतु अपस्याँत अछि । **ट्रान्सफर** एकटा निर्जन चौककेँ विकसित होयबाक कथा कहैत अछि । नगरीकरणक संगहि लोकक बोली-बानी, आचार-व्यापार, रहन-सहन कोना बदलैत छैक, कथामे तकरे चित्रण भेल अछि । कहियो मोन मसोसि कऽ एहि निर्जन स्थानमे स्थापित भेल थानामे दरोगा बनि कऽ आयल अमरेन्दर क्रमशः एही परिवेशमे रमि जाइत अछि । साले भरिमे विकसित भऽ कऽ जखन ई स्थान प्रखंडक दर्जा प्राप्त कऽ लैछ की तखने दरोगाक ट्रान्सफरक चिठ्ठी आबि जाइत छैक । जाहि देशक गाम-देहात वर्षक वर्ष विकासक लेल खेखनिआँ कटैत रहि जाइत अछि ओतऽ एक सालमे निर्जन चौराहाकेँ नगर ओ प्रखंड बनि जयबाक कथा घोर अविश्वसनीय सन लगैत अछि । कथाक तन्तु छोट अछि । मुदा नमारि कऽ सोलह पेजमे लिखबाक अपन स्वभावक कारणे कथाकार पाठककेँ बेस अकछबैत छथि ।

चन्द्रबिन्दुक आत्म-प्रशस्ति 'कालपथ' एकटा छद्म इतिहास

जेना 1960 मे प्रकाशित अपन **आगि मोम आ' पाथर**क संग मायानन्दमिश्र **प्रगतिशील आ मनोवैज्ञानिक कथा संग्रह**क विरुद् जोड़ने रहथि तहिना **चन्द्रबिन्दु**मे **कालपथ** नामसँ भूमिका लिखने छथि जाहिमे अपन कथा-यात्राक बहाने अपनेसँ अपन **आत्मप्रशस्ति** लिखि स्वातन्त्र्योतर मैथिली कथा-साहित्यक इतिहासकेँ एकटा नवे रूप दऽ देलनि अछि जकर परीक्षण करब आवश्यक बुझना जाइछ ।

कालपथमे कथाकार मायानन्दमिश्र स्वातन्त्र्योत्तर मैथिली कथा-लेखनमे एकटा **त्रिपुण्ड**क परिकल्पना कयलनि अछि जकर दूटा पुण्ड क्रमशः ललित आ राजकमलकेँ बनौलनि अछि आ तेसर कथाकार मायानन्दमिश्र स्वयं छथि । कथाकारक दावा छनि जे मैथिली कथाकेँ आधुनिक शिल्प बोधक संग युग चेतनाक ठोस यथार्थ धरातलपर प्रतिष्ठापित करबाक एकमात्र श्रेय एही त्रिपुण्डकेँ छनि और ई **प्रचण्ड त्रिपुण्ड** सन सत्तरिक दशक धरि प्रखर-मुखर रहल ।

वस्तुत: कथाकार मायानन्दमिश्रक ई गर्वोक्ति अन्तर्द्वन्द्वसँ ग्रस्त, अवसरसँ चुकल एकटा साहित्यकारक मिथ्या आत्मघोष थिकनि । ई स्वयं 1953मे आधुनिकता बोधक कथा-लेखन प्रारम्भ कयलनि । मुदा ओहि समयमे साहित्य शिल्पी ललितक कथाक ऊष्मा आ तेवरक आगाँ हिनक कला मन्द बनल रहलनि ओ तकर बाद राजकमलक प्रचण्ड कथा-राजनीति तेना भऽ कऽ ने प्रारम्भ भेल जे मैथिली कथामे यथार्थ आ शिल्पक बात तँ कोठीक कान्हपर चल गेल । मुख्य बात भऽ गेल गुटबंदी, आत्म प्रचार ओ प्रतिद्वन्द्वीपर प्रहार । एहि साहित्यिक राजनीतिक बिहाड़िमे आधुनिक मैथिली कथाक हस्ताक्षर ललित स्वयं फेका गेलाह आ मायानन्दमिश्र सेहो 1965 मे कथाक मैदाने छोड़ि कऽ भागि गेलाह । अपन एकटा स्कूल तैयार नहि कऽ पयबाक कारणे ललित उपेक्षाक दंशसँ सीदित होइत रहलाह । ओमहर अपना कथामे काल्पनिक रुमानी संसारक रंगीन चित्र उरेहनिहार राजकमल सेहो 1967 मे एहि संसारसँ विदा भऽ गेलाह । मुदा जेँ की ओ अपन एकटा सशक्त स्कूल ठाढ़ करबामे सफल भेल रहथि तेँ मृत्युक पश्चात अपन स्कूलक छात्र लोकनि द्वारा ओ एकदिशाहे मैथिली कथाक बेताज बादशाह घोषित कऽ देल गेलाह । 1970 इ.क बादेसँ **मिथिला मिहिर**क प्रभामंडल मलिन पड़ऽ लागल । स्वातन्त्र्योत्तर मैथिली कथाक द्वितीय केन्द्रभूमि पटना ओ ओकर सिरमौर **मिथिला मिहिर**क वर्चस्विताकेँ चुनौती दैत मैथिली कथाक अनेकानेक क्षत्रप लोकनि स्वयंकेँ बादशाह राजकमलक गुलाम घोषित करैत विद्रोहक झंडा ठाढ़ करऽ लागल छलाह । एहन अराजक समयमे कहियो कथा-मैदानसँ पीठ देखा कऽ भागल कथा-सैनिक मायानन्दमिश्र पुन: अठारह वर्षक बाद 1983 मे कथा-मैदानमे पहुँचलाह तँ अपन अतीतपर झाँपन देबाक हेतु एवं वर्त्तमानक संग स्वयंकेँ समायोजित करबाक हेतु किछु अदभुत चमत्कार देखायब हुनका आवश्यक प्रतीत भेलनि । अतएव एहि नवयुगमे स्वयंकेँ फेरसँ स्थापित करबाक उद्देश्यसँ कहियो कथाक दंगलमे दूरे-दूरसँ ढेप फेकनिहार मायानन्दमिश्र एहि 1983 मे अपन प्रकाशित कथासंग्रह **चन्द्रबिन्दु**क माध्यमे एकटा त्रिपुण्डक शगूफा छोड़लनि ओ आधुनिक मैथिली कथाक हस्ताक्षर ललित एवं प्रायोजित मसीहा राजकमलक संग स्वयंकेँ नत्थी करैत मैथिली कथाक शीर्षपर बैसा लेलनि । जावतधरि राजकमल किंवा ललित जीबैत रहलाह तावतधरि मायानन्दमिश्रकेँ ई साहस नहि भेलनि आ 14 अप्रैल 1983 मे ललितकेँ एहि संसारसँ विदा होइत देरी नवम्बर 1983मे प्रकाशित अपन **चन्द्रबिन्दुमे** एकटा छद्म इतिहास गढ़ि कऽ जोड़ि देलनि । ओना एकटा बात औरो जे ललित तँ मायानन्दमिश्रक सारे छलथिन आ राजकमल अपन जिला जयबारेक भेलथिन । ताहुसँ बढ़ि कऽ ई जे राजकमल ओ मायानन्दमिश्र दुहूक सासुर बसैठ-चानपुरा, मने दुनू गोटामे सढुआरी सेहो । ई

सम्बन्ध बड़ मधुर ! सार-साढ़ूक एहि त्रिकोणमे सरहोजि जकाँ बैसा देल गेलीह मैथिली कथा ! तखन जँ इतिहासक संग एहन चौल भेल तँ कोनो बेजाय नहि ।

मुदा इतिहासक संग ई चौल मात्र कथनहि धरि सीमित नहि राखल गेल । अपितु एहि चौलकेँ प्रमाण-पुष्ट बनयबाक हेतु मायानन्दमिश्र कोनो चतुर किरानी जकाँ पुरान अभिलेख ओ दस्तावेजमे सेहो मनोनुकूल परिवर्त्तन कयलनि । अपन बाल्यकाल ओ छात्रजीवनक स्मृतिसँ जुड़ल हिनक कय गोट कथा सब छनि ताहीमेसँ एकगोट कथा अछि- **उपसर्ग** । प्रथम बेर ई कथा 17 मइ 1964क **मिथिला मिहिरक** अंकमे छपल छल । पुन: जखन यैह कथा चन्द्रबिन्दुमे आयल तँ कथाकार अपन **त्रिपुण्डक** परिकल्पनाकेँ यथार्थ प्रतीत करयबाक हेतु एहिमे कतिपय नव अंश जोड़ि देलनि । कथाक तीन गोट प्रगाढ़ मित्र नरेश, मिहिर आ कृपाशंकरकेँ मूल कथामे **त्रिकोण** कहल गेलैक अछि । मुदा चन्द्रबिन्दुमे एहि कथाकेँ संकलित करबा काल एहि कथामे तीनू मित्रक प्रगाढ़ मैत्री हेतु एकटा औरो **त्रिपुण्ड** विशेषण जोड़ि देल गेल अछि । पढ़निहार बूझि जाओ जे ई तीनू मित्र और केओ नहि ललित, राजकमल आ मायानन्दे थिकाह । मूल प्रकाशित कथामे दरभंगाक अनेक स्थानक चर्च भेल अछि । मुदा जखन यैह कथा **चन्द्रबिन्दु**मे संकलित कयल गेल तँ एहिमे विशेषरूपसँ दरभंगाक **माधवेश्वरघाट** सहित किछु औरो नव स्थान सबकेँ जोड़ि देल गेल । ध्यातव्य थिक जे दरभंगामे राजकमलक विशेष बैसार **माधवेश्वरघाट**मे भेल करैत छलनि जाहि बातक उल्लेख 1968 मे प्रकाशित **रमानाथझा अभिनन्दन ग्रन्थमे संकलित ललितक संस्मरण मैथिलीक अन्यतम दिग्पाल**मे भेल अछि । अतएव राजकमलक संग अपन प्रगाढ़ निकटता जनयबाक हेतु मायानन्दमिश्र अपन **उपसर्ग** कथाक पुनर्लेखन करैत चन्द्रबिन्दुक अपन भूमिका **कालपथ**केँ सेहो ललितक ओही संस्मरणक ढर्रापर लिखलनि । **उपसर्ग** कथामे एकटा प्रसंग आयल अछि- अपन बहीन द्रौपदीक संग पटना आयल कृपाशंकर बीचमे सुपौल चल जाइत अछि किसुनजी (रामकृष्ण झा)क नवप्रकाशित कविता संग्रह आनऽ । पहिल बेर मिहिरमे प्रकाशित **उपसर्ग**मे एहि कविता संग्रहक नाम **परस्मैपद** अछि । मुदा **चन्द्रबिन्दु**मे एहि कथाकेँ संकलित करबा काल एहि नामकेँ बदलि कऽ **आत्मनेपद** कऽ देल गेल अछि ।

अपन **कालपथ**मे राजकमलीय स्टाइलमे एहि कल्पित **त्रिपुण्डक** कथाकार लोकनिक जाहि शिल्पबोध आ युगचेतनाक मुक्त कण्ठसँ मायानन्दमिश्र प्रशंसा कयलनि अछि तकरो परीक्षण कैये लेल उचित होयत । ललित भने कतिया देल जाथु, मुदा एकटा बात निर्विवाद जे ललितकेँ अपनो समयमे आ आबो अपन कथाक हेतु ककरोसँ सार्टिफिकेट लेबाक हेतु मुँहतक्की नहि छनि । मुदा जे राजकमल अपन

जीवितावस्थामे मायानन्दमिश्रकेँ कहियो नहि अरघलथिन ताहि राजकमलक शिल्प ओ कथा बोध 1983क अन्तमे आबि कऽ मायानन्दमिश्रकेँ अदभुत लागऽ लगलनि। मायानन्दमिश्रक दृष्टिमे 1960 धरि राजकमल कोनो धाराक कथाकार नहि छलाह। ध्यातव्य जे **मिथिला दर्शन**क 1960क विशेषांकमे मायानन्दमिश्र अपन एकगोट आलेख **मैथिली गल्प : परिस्थिति ओ परिणाम**मे तत्कालीन मैथिली कथाक तीन गोट प्रमुख धारा क्रमशः **सामाजिक- व्यंग्य-हास्यधारा, सामाजिक-मनोवैज्ञानिक गल्पधारा** एवं **रोमांटिक प्रेम-कथा तथा पारिवारिक दाम्पत्य जीवन गल्पधारा** निरूपित कयलनि। मुदा लेखकक अनुसार ओहि समयमे **राजकमल** सहित बहुतो अन्यान्य कथाकार एहि तीनूमेसँ कोनो धाराक कथाकार नहि छलाह। आलेखमे मायानन्दमिश्र लिखने छथि- **समकालीन मैथिलीमे एकरा अतिरिक्त आरो बहुतो गल्पकार लोकनि रचना कऽ रहलाह अछि, जनिका लोकनिक कृति बड़ प्रौढ, सशक्त ओ मार्मिक होइछ। मुदा हिनका लोकनिक कोनो विशेष स्वर स्पष्ट नहि भऽ सकल अछि। एहन रचनाकारमे प्रो. रमाकर, प्रो. रमाकान्तझा, योगानन्दझा, राधाकृष्ण, राजकमल, गोविन्दझा, कल्पनाशरण, विकल विशारद, सोमदेव, प्रो. इन्द्रानन्दसिंह, तथा शेखर आदिक नाम सबसँ पहिने लेबाक चाही।**

वस्तुतः 1960 मे जाहि राजकमलकेँ मायानन्दमिश्र स्वयं खारिज कऽ चुकल छलाह, तनिका 1983 मे मसीहा बनल देखि **कालपथ**मे प्रायश्चित्ते नहि करैत छथि अपितु प्रायोजित इतिहासमे एकटा आरो क्षेपक जोड़ि स्वयंकेँ सेहो नायकत्वक महिमासँ मंडित कऽ लेलनि। वस्तुतः अपन कथाक शिल्प ओ बोधक अपनेसँ जेना कथाकार प्रशंसा कयलनि अछि, से जँ अपन कथा-लेखनक यौवन कालमे यथार्थ रहितनि तँ अवश्ये मायानन्दमिश्र मैथिली कथाक मैदानमे अंगद जकाँ डटल रहितथि, भगितथि नहि। कथाकार स्वयं ई कहबाक स्थितिमे नहि छलाह जे 1953 सँ 1965 धरिक हुनक प्रथम कथा यात्राक अवधिमे हुनक कोनो एकटा कथा जे अपन उत्कृष्ट शिल्प ओ चेतनाक कारणे 'मास्टर पीस' बनल होइनि जेना कि ओहि अवधिमे **रमजानी, ललका पाग, रंगीन परदा** अथवा **एक खीरा : तीन फाँक** सन कथा प्रसिद्ध भेल छल। सम्भवतः कथाकार लग एकर उत्तर छलनिहो नहि। पुनः अपना समयमे राजकमल सेहो हिनक कहियो तेना भऽ कऽ नोटिसो लेने होयथिन, ताहू बातक प्रमाण नहि भेटैत अछि। दोसर दिस सम्बन्धेँ सार होइतो ललित, कथाकार मायानन्दमिश्रक सम्पूर्ण साहित्यिक व्यक्तित्वपर 1973 मे जे टिप्पणी कयने छथि सेहो एहि त्रिपुण्डक पोल खोलैत अछि। **मिथिला दर्शन** (मार्च-अप्रैल 1973)क संग अपन एकटा साक्षात्कारमे ललित कहने छथि- **मायानन्द कवि छथिहे नहि। देशान्तर (मायानन्द)क लेखक जीनियस तऽ नहिये छथि, गीतकारोमे ओ विद्यापतिक परम्परा छथि। कथाकारमे सेहो मायानन्द श्रमिक छथि।**

कालपथमे पुनः मायानन्दमिश्र आगाँ लिखैत छथि जे **जखन ई त्रिपुण्ड कथा क्षेत्रमे ताबडतोड़ लेखनी भाँजि रहल छलाह ओहि समयमे रामदेवजी, मन्त्रनाथजी आ प्रभासजी कथायात्राक तैयारी कऽ रहल छलाह। एना धीरेन्द्रजी ओ सोमदेवजी सेहो कौखन गल्पविधा दिस ताकि लैत छलाह, मुदा हिनका लोकनिकेँ कविता-नाटक-बाल साहित्यसँ पलखति कम भेटैत छलनि।** आब कने मायानन्दमिश्रक एहू कथनक परीक्षण करब उचित होयत। ललित तँ 1950 मे वैदेहीक प्रकाशनक संगहि **नागा बाबा** आ **जड़ भरत**क नामसँ लघुकथा (गल्पक प्रपितामह)क क्षेत्रमे उतरि चुकल छलाह। मायानन्दमिश्र स्वयं 1951मे अपन हास्य कथाक संग्रह **भाङकलोटा** लऽ कऽ उपस्थित भेलाह। मुदा एहि संग्रहकेँ कथाकार एही **कालपथ**मे आब अपन रचना नहि मानने छथि। एहनामे सामाजिक चेतना मूलक हुनक प्रथम आधुनिक कथा **रुपिया** 15 अगस्त 1953 मे मिहिरमे प्रकाशित भेलनि। धीरेन्द्रक प्रथम कथा **सभ्यलोक** 7 जनवरी 1953केँ मिहिरमे प्रकाशित भेलनि। रामदेवझाक प्रथम कथा **मुदा आब की ?** मिहिरक 17 जुलाइ 1953क अंकमे प्रकाशित भेलनि। सोमदेवक प्रथम कथा **वकील साहेब** वैदेहीक फरवरी 1954क अंकमे प्रकाशित भेल छलनि। हिनका लोकनिक बादे राजकमलक मैथिली कथा क्षेत्रमे पदार्पण भेलनि सेहो हिन्दीसँ अनूदित कथा **अपराजिता,** (वैदेही, अक्टूबर 1954)क संग। मन्त्रनाथझा (हंसराज) अवश्ये 1956 मे वैदेहीक जनवरी अंकमे प्रकाशित कथा **आज्ञाक** संग अयलाह आ प्रभासकुमारचौधरीक सेहो1957 मे वैदेहीक मार्च अंकमे प्रकाशित अपन बालकथा **धरती कुहरि उठल**क संग आगमन भेलनि। ओना बालसाहित्य कोनो निकृष्ट साहित्य नहि होइछ। ध्यान रखबाक थिक जे वैदेहीक एही मार्च 1957क अंकमे मायानन्दमिश्रहुक बालकथा **अन्नक प्रभाव** प्रकाशित भेल छलनि।

कथा-लेखनक क्षेत्रमे प्रवेशक संगहि उपर्युक्त सब गोटा कोना रचनाशील रहलाह तकर गवाह अछि स्वातन्त्र्योत्तर मैथिली कथाक ओहि प्रथम दशक (1950-1960) मे प्रकाशित पत्र-पत्रिकाक फाइल सभ। उपर्युक्तमेसँ अधिकांश कथाकार लोकनि रचनाशील रहलाह। स्वयं मायानन्दमिश्रहि 1965 मे मैदान छोड़ि भागि गेलाह। पुनः **कालपथ**मे कथाकार तथाकथित **त्रिपुण्ड**क जाहि कथा चेतना आ शिल्पक मुक्त कण्ठसँ प्रशंसा कयलनि अछि, ताहिसँ लगैत अछि जेना आधुनिक कथा चेतना आ शिल्पक बोध मात्र ओहि त्रिपुण्डहिटाकेँ छलनि शेष अन्य गोटाक कथा चेतना मध्यकालीन छलनि आ शिल्प कवीश्वर चन्दाझा किंवा म. म. उमेशमिश्रवला ? प्रश्न उठैत अछि जे की तथाकथित त्रिपुण्डसँ मित्र शेष कथाकार लोकनि की पौराणिक आख्यान लिखैत छलाह ? निश्चयतः **कालपथ**क लेखक लग एकर उत्तर नहि छलनि। ओना ई उत्तर दऽ चुकल छलाह से बहुत पहिनहिँ। अवस्थाक दोषक

कारणे प्रायः बिसरा गेल छलनि से सम्भव ! तेँ मोन पाड़ब सर्वथा उचित थिक । मायानन्दमिश्रक अनुसार जखन तथाकथित **त्रिपुण्ड** मैथिली कथा साहित्यक ललाटपर रेखांकित भेल ओहि समयमे रामदेवझा कथा लेखनक तैयारी कऽ रहल छलाह । ध्यातव्य जे आलोच्य कथाकारक 1960 मे प्रकाशित हुनक कथा संग्रह **आगि मोम आ' पाथरक** भूमिका वैह रामदेवझा लिखने छलथिन । 1960 क **मिथिला दर्शनक** विशेषांकमे मायानन्दमिश्रक समीक्षात्मक आलेख **मैथिली गल्प : परिस्थिति ओ परिणाममे** रामदेवझाक चारि गोट कथा क्रमशः **बट गाछक छाहरि, दोहरी दीप, एक खीरा : तीन फाँक,** तथा **शीतल दीप : शीतल छाहरिकेँ** स्वातन्त्र्योत्तर कालक ओहि प्रथम दशकक उत्कृष्ट गल्पमे परिगणित कयल गेल अछि । संगहि तत्कालीन मैथिली कथाक तीन गोट प्रमुख धारामेसँ एक **सामाजिक मनोवैज्ञानिक गल्पधाराक** तीन गोट समर्थ रचनाकार लोकनिमे प्रो. उमानाथझा, ललित एवं रामदेवझाक नाम गनौने छथि । वैह 1983 मे आबि कऽ अपनहिसँ अपन कथनकेँ फूसि साबित करबाक हास्यास्पद प्रयास थिकनि हुनक ई **कालपथ** । वस्तुतः सत्य तँ यैह थिक जे ओहि प्रथम दशकमे राजकमलीय राजनीतिसँ पृथक आन सब गोटाक कथा-धारा एक समानान्तर मुदा विविध प्रवाहमे बहैत लक्ष्य दिस बढ़ैत रहलनि । अन्तर एतबे जे **मिथिला-दर्शनमे** प्रकाशित कथाकेँ री-प्रिन्ट' करा पुस्तकाकार करयबाक योजनाक अधीन मायानन्दमिश्रक कथाक संग्रह **आगि मोम आ' पाथर** छपि गेलनि आ अनकर कोनो संग्रह नहि छपि सकलनि । ओना एहि योजनाक अन्तर्गत रामदेवझाक कथा संग्रह **एक खीरा : तीन फाँक,** सुधांशुशेखरचौधरीक संग्रह **एक सिंघाड़ा : एक चाय** एवं अन्यहु गोटाक संग्रह छपबाक घोषणा **मिथिला-दर्शन** द्वारा भेल छल आ तत्सम्बन्धी विज्ञापन सेहो दर्शनक विभिन्न अंक सभमे (सितम्बर, अक्टूबर 1960 एवं, अक्टूबर तथा नवम्बर-दिसम्बर 1961) प्रकाशित होइत रहल । मुदा जानि नहि किएक ई घोषणा, घोषणे धरि रहि गेल, मूर्त्त रूप नहि लऽ सकल । वस्तुतः अपन कथा-संग्रहक प्रकाशनक आशा जानि मायानन्दमिश्रक कथा-लेखनक गति ओही 1958-60 मे जोर पकड़लकनि आ यैह प्रवृत्ति हिनक कथाकारक लेल घातक सेहो सिद्ध भेलनि । री-प्रिन्ट लेल आवश्यक सोलहपेजी फर्मा पुरयबाक हेतु एहि कालमे ई अनावश्यक रूपसँ दीर्घकथा सभ एकसुर्रे लिखैत रहलाह । सम्भवतः एही कारणे ललित हिनका **श्रमिक कथाकार** कहलथिन अछि । एहि दृष्टिएँ जाहि कोनो कारणे मिथिला-दर्शन द्वारा घोषित अन्य कथाकारक कथाक संग्रह सब प्रकाशित नहि भऽ सकल हो, मुदा ताहिसँ ओहि कथाकार लोकनिक उपकारे भेलनि अपकार नहि ।

पुनः अपन **चन्द्रबिन्दुक कालपथमे** मायानन्दमिश्र लिखैत छथि- **हम स्वयं कविता दिस बहुत कम जाइत छलहुँ ।'** हिनक एहि आत्म प्रवंचनाक विरुद्ध प्रमाण

दैत अछि तत्कालीन पत्र-पत्रिका ओ ओहि पीढ़ीक साहित्यकार लोकनिक संस्मरण सब। भावुक-रोमांटिक गीतक मधुर गायक मायानन्दमिश्र 1950-60क बीचक मैथिली कवि सम्मेलनक मुख्य आकर्षण भेल करैत छलाह। कविक रूपमे हिनक एही ख्यातिकेँ देखैत **वैदेहीक** जुलाइ 1957क अंकमे सुधांशुशेखरचौधरी अपन **मैथिली काव्य साहित्य** शीर्षक निबन्धमे लिखैत छथि- **मायानन्दक गीत तँ कोमल एवं मधुर होयबाक कारणेँ ततेक लोकप्रिय भेल अछि जे बड़ थोड़बे समयमे विद्यापतिक गीत जकाँ लोकक कण्ठमे स्थान ग्रहण कैने चल जाइछ।' कालपथमे** मायानन्दमिश्र तत्कालीन जाहि-जाहि साहित्यकारक नाम गनौने छथि ताहीमेसँ किछु गोटाक संस्मरणात्मक लेखकेँ जँ आधार मानी तँ ओहि समयमे मायानन्दमिश्रक परिचित कथाकारसँ बेसी एकटा विशुद्ध सुमधुर भावुक कविक रूपमे छलनि। एहि प्रसंग द्रष्टव्य अछि 1968मे **रमानाथझा अभिनन्दन ग्रन्थमे** प्रकाशित ललितक संस्मरण **मैथिलीक अन्यतम दिग्पाल,** दिसम्बर 1984क **रचनामे** प्रकाशित प्रो. रमाकान्तमिश्रक संस्मरण **स्मृति राजकमलक** एवं **भूमिजा** (अंक 1, 2002) मे प्रकाशित चन्द्रनाथमिश्र 'अमर'क आलेख **मैथिली साहित्यमे अकविता**। वस्तुतः ओहि प्रथम दशकमे मायानन्दमिश्रक साहित्यिक परिचिति मुख्यतः कविहिक रूपमे स्थापित भेल छलनि। हिनक कवितासँ किछु गोटाकेँ स्पृहा होइत छलनि तँ बहुतो गोटाकेँ डाह। हिनक कथासँ ककरो भय नहि छलैक। हिनक कविता अवश्ये बहुतो गोटाक पेटक पानि डोला देने छलनि तेँ ने अमरजी ओ मायानन्दमिश्रकेँ लक्ष्य कऽ **यात्रीजी हिन्दीमे आसमानमें चन्दा तैरे** सन कुकथा लिखने रहथि आ 1958 मे राजकमल ओकर मैथिली अनुवाद **गगनमे हेलए चान** नामसँ कयलनि। वस्तुतः अपनाकेँ शीर्ष कथाकार साबित करबाक हेतु, अपन पुरान ओ वास्तविक परिचयकेँ नुकयबाक हेतु एतेक रासे 'कल्प-कथा'क सृष्टि चन्द्रबिन्दुक भूमिका **कालपथमे** लेखक कयने छथि। राजकमलक जीवैत जाहि अस्त्रक प्रयोग करब हुनका बुते पार नहि लगलनि आ कथा क्षेत्रसँ हटि गेलाह ओहि अस्त्रक प्रयोग राजकमल ओ ललितक मृत्युक पश्चात 1983मे राजकमलहिक स्टाइलमे कयलनि अछि। अन्तर एतबे जे राजकमल **अनामिकाचौधरी** किंवा कोनो अन्य छद्म नामक कनहापर बन्दूक राखि अऽढसँ फायर करैत रहलाह आ मायानन्दमिश्र सोझे-सोझ कऽ देलनि। मुदा तथ्यक आधारपर देखल जाय तँ मायानन्दमिश्रक **कालपथ** मिसफायरे साबित होइत छनि। वास्तवमे इतिहासमे क्षेपक तँ जोड़ल जा सकैछ, मुदा इतिहासक शिलापर पड़ल गहीँर चिह्नकेँ हाथसँ रगड़ि कऽ मेटायब सम्भव नहि होइत अछि। अस्तु जे से 1983क चन्द्रबिन्दुक ई **कालपथ** वस्तुतः मायानन्दमिश्रक दोसर पारीक कथा यात्रा प्रारम्भ होयबाक सूचना देबऽवला दुन्दुभि छलनि। एहिसँ इतिहासकेँ

डेरयबाक प्रयोजन नहि अछि । अराजकताक युगमे प्रवेश कऽ रहल मैथिली कथा ओ छूरी फनकौनिहार ओहि समयक मैथिली कथाक विभिन्न सूबेदार लोकनिक हेतु कालपथक ई नगाड़ा अवश्ये चुनौती छलनि ।

मायानन्दमिश्रक कथा-यात्राक दोसर खेप (1983 सँ अद्यपर्यन्त)

अठारह वर्षक दीर्घ अन्तरालक बाद 1983 मे जखन मायानन्दमिश्र अपन कथा-यात्राक दोसर पारी प्रारम्भ कयलनि ओहि समय धरि मैथिली साहित्य ओ मैथिली कथा, दुहूक दशा ओ दिशा, रीति ओ नीति बदलि चुकल छल । साहित्यमे अभिभावकत्वक परम्परा समाप्त भऽ गेल छलैक आ उच्छृंखलता अपन चरम दिस बढ़ि रहल छल । साहित्य-लेखन साधना नहि अस्त्र बनि चुकल छल । साहित्यक राजनीति ओ गुटबन्दीक स्वरूप बीभत्सतम भेल जा रहल छलैक । प्रयोगातिशयताक कारणे मैथिली साहित्य जनजीवनसँ कटल जा रहल छल । एहन दुर्दिन कालमे मैथिली पत्रकारिताक मेरुदण्ड साप्ताहिक **मिथिला मिहिर** 1984 मे टूटि गेल । मिहिर की अस्त भेल मैथिली साहित्ये तिमिराछन्न भऽ उठल । पाठक आ लेखकक बीचेटा नहि स्वयं लेखकहु लोकनिक बीचमे संवादहीनताक स्थिति उत्पन्न भऽ गेलनि । एहनामे साहित्यक नामपर अन्हरमारि होयब स्वाभाविक छल ।

दोसर दिस भारत ओ बिहारक राजनीति सेहो कतेको करौट फेरि चुकल छल । कांग्रेसक तानाशाहीक विरोधमे 1974 मे जयप्रकाशक शंखनाद, 1975 मे देशमे आपात् कालक घोषणा । सम्पूर्ण क्रान्तिक अऽढ़मे अपराधी तत्त्वक राजनीतिमे प्रवेश, 1977क चुनावमे कांग्रेसक पराजय आ केन्द्र तथा बिहारमे जनता पार्टीक शासन । 1980 मे मध्यावधि चुनावक संग कांग्रेसक पुनःआपसी । सत्ताक खेलमे मन्त्री, नेता, अफसर, ठेकेदार, व्यवसायी ओ अपराधीक आन्तरिक गठजोड़, 1984मे इन्दिरागान्धीक हत्या आ पुनः अजेय बहुमतसँ काँग्रेसक राजतिलक । 1989क लोकसभा ओ 1990क बिहार विधानसभा चुनावमे कांग्रेसक घोर पराजय आ ताही संग सामाजिक समरसताकेँ क्षत-विक्षत कयनिहार दिशाहीन सामाजिक न्याय आन्दोलनक प्रारम्भ । जातिवादक नग्न नृत्य आ राजनीतिमे पैसि कऽ सत्तापर कब्जा जमौनिहार अपराधी तत्त्वक ताण्डव । तात्पर्य यैह जे जँ एकदिस मैथिली भाषा-साहित्यमे अराजकता चरम दिस बढ़ि रहल छल तँ दोसर दिस प्रदेश ओ देश दुहूक स्थिति एहने सन छल ।

एहन दुर्घट समयमे मायानन्दमिश्रकेँ अपन दोसर पारीक कथा-लेखन प्रारम्भ करबाक छलनि । 1983 मे **रंग उड़ल मुरुतक** संग प्रवेश कयलनि आ तत्कालीन समयक नाड़ीक धड़कन सेहो टोबि कऽ देखलनि । जँ ओ कथा-लेखनक अपन ओही पुरना रीति ओ शैलीकेँ अपनबितथि तँ वर्त्तमान समयमे टीकि पायब

कठिन होइतनि । अनुभवक खराजपर खराजल मायानन्दमिश्रक समक्ष मैथिली कथाक जे स्थिति छलनि ताहिमे कथा, कथा नहि रहि कऽ राजनीतिक पार्टीक नारा आ प्रचार लिटरेचर भेल जा रहल छल । मार्क्सकेँ गीजैत-मथैत कल्पकथाक रचना भऽ रहल छल । जँ ओहो ओही सुरमे सुर मिलबितथि तँ केओ किएक मोजर दितनि ? एतावता ओ अपन कथा-लेखनक ट्रेण्डकेँ बदललनि । तत्कालीन राजनीति ओ व्यवस्थाक विकृति सब कथा-लेखनक हेतु पर्याप्त कच्चा माल उपलब्ध करा रहल छल, ताहि दिस मैथिली कथाकार लोकनिक ध्यान नहि छलनि । अपितु ओही व्यवस्थाक हँऽमे हँऽ मिलबैत कथा लिखल जा रहल छल । अतएव ओ अपन कथा-लेखनक नव दिशाक संकेत 1983 मे प्रकाशित कथा संग्रह **चन्द्रबिन्दु**मे दऽ देलनि । एहि संग्रहमे जँ एकदिस भूमिकाक रूपमे **कालपथ** लिखि तत्कालीन परिप्रेक्ष्यमे फेरसँ अपन मैथिली कथाक राजनीति प्रारम्भ करबाक घोषणा डंका बजा कऽ कयलनि तँ **सत्यक मिथ्या** कथाक संग राजनीतिक कथा लिखबाक संकेत सेहो दऽ देलनि । वस्तुतः 1983 सँ अद्यपर्यन्त एहि दोसर खेपक हिनक कथा-यात्राक मुख्य स्वर यैह राजनीति रहलनि जकर अवगाहन करबाक हेतु हिनक एहि अवधिक कथाक विश्लेषण करब अपेक्षित अछि ।

चन्द्रबिन्दुमे संकलित **सत्यक मिथ्याक** पश्चात 1983मे मायानन्दमिश्रक दोसर राजनीतिक कथा **माध्यम** (मि.मि., 6 नवम्बर 1983) प्रकाशित भेलनि । एहि कथामे भारतमे व्याप्त भ्रष्टाचार, दलाली ओ घुसखोरी संस्कृतिक प्रसारपर तीक्ष्ण चोट कयल गेल अछि । जूट कॉरपोरेशन प्रति मोन बीस टाका बेसी दऽ पटुआ किनबाक निर्णय लैछ । किसान होयबाक पात्रताक सर्टिफिकेट देबाक दायित्व समाजक गण्यमान्य लोककेँ देल जाइत छनि । मुदा ओ लोकनि घूस-पेंच लऽ कऽ स्वयं मोटाइत छथि आ असली किसान एहि लाभसँ वंचित रहि जाइछ । पुनः ई भार मुखिया लोकनिकेँ तकर बाद बी.डी.ओ-जनसेवककेँ आ अन्ततः एम.एल.ए.-मिनिस्टर लोकनिकेँ देल जाइछ । पटुआ खरीदक नामपर भेल एहि महाघोटालाक पोल फूजि जाइत अछि । कॉरपोरेशन अपन निर्णयकेँ आपस लऽ लैत अछि । वस्तुतः एहि घटनाकेँ प्रतीक बनाय कथाकार विभिन्न कल्याणकारी योजनाक दुर्दशा ओ भ्रष्ट खौंकारी संस्कृतिपर कठोर व्यंग्य कयलनि अछि । **भैरव** (रचना, अगस्त 1984)कथामे जातिवाद, भाइ-भतीजात्राद, आदिक कारणे अपन अधिकारसँ वंचित रहि गेल प्रतिभावान युवावर्ग हताशाक स्थितिमे कोना अपन प्रतिभाकेँ विकृति और ध्वंस दिस मोड़ि लैत अछि, ताहि दिस संकेत कयल गेल अछि । एहने किछु युवा रजनी, मधुकान्त आदि मिलि कऽ युवा संघर्ष मोर्चा नामक संस्था चलबैत अछि । प्रतिभा रहितो जे उपलब्धि ई युवा लोकनि स्वयं हासिल नहि कऽ सकल से उपलब्धि पैसा

खर्च कयला उत्तर केहनो सँ केहनो अपाटककेँ साम, दाम, दण्ड, भेद, छल-बल आदिक माध्यमे हासिल करायब एकरा लोकनिक व्यवसाय रहैत छैक । जाहि दुर्व्यवस्थाक कारणे ई युवा सब स्वयं बरबाद भेल छल से अन्ततः ओही व्यवस्थाक अंग बनि जाइत अछि । तेँ दिलीप सन जमिन्दार-ठेकेदारक बेटा एहि मोर्चाक बलेँ विश्वविद्यालयक छात्र संघक चुनाव जीति जाइछ ।

भये प्रगट कृपाला (माटिपानि, दिसम्बर 1984)मे लोकतन्त्रपर हावी पूजीवादी व्यवस्थाक चित्र उरेहल गेल अछि । अंग्रेज व्यापारी डिक्सनसँ श्वेतश्याम इड़ला नहि केवल ओकर सम्पूर्ण व्यापारे हथिऔलनि अपितु मिठका छुरीसँ जनताक गरदनि कोना छोपल जाय, समस्त तन्त्रक आँखिमे गरदा झोँकैत ओकरा अपन पूजी ओ प्रभामण्डलमे कोना कऽ ओझरा कऽ राखल जाय सेहो मन्त्र सिखलनि । हुनक ओहि मन्त्रक कारणहि मन्त्री, आफिसर, जनता-जनार्दन, गरीब-गुरबा, साहित्यकार-पत्रकार सब हुनक वशवर्त्ती बनल रहैत छनि । से इड़लाजी मृत्यु शय्यापर अन्तिम साँस लऽ रहल छथि । सबकेँ हुनक मृत्युक प्रतीक्षा छैक । जँ गरीबलोक सब हुनक शवयात्राक समय पैसा लुटबाक हेतु व्यग्र अछि तँ दोसर दिस एकटा वर्ग एहनो अछि जे मृत्युक सूचना पबिते सबसँ पहिने अपन शोक संवेदना व्यक्त करबा लय व्याकुल अछि । पत्रकार मस्तानजी फराके मृत्युक समाचार पयबा लय बेकल भेल छथि । इड़लाजीक बेटा लोकनिक कृपापात्र बनबाक एहि हूलिमालिक बीच हुनक मृत्युक आधिकारिक घोषणा होइछ आ सब अपन-अपन अभियानमे जुटि जाइछ । **अभिनन्दन** (रचना, दिसम्बर 1984) मे बदलैत राजनीतिक-आर्थिक परिवेशमे बुद्धिजीवी वर्गक टूटैत आदर्श ओ ध्वस्त होइत आत्मसम्मानक कथा कहल गेल अछि । दबावक कारणे प्रो. साहेबकेँ अपन पुत्रक हेतु एकटा नोकरीक याचनामे कैबिनेट मन्त्री धरणीधरक दरबारमे जाय पड़ैत छनि । प्रो. साहेबक कॉलेजमे एकटा गुण्डा-दुश्चरित्रक रूपमे ख्यात रहल धरणीधर प्रो. साहेबकँ नोकरीक आश्वासन दैत हुनक विद्वत्ताक उपयोग अपना हेतु भाषण लिखयबामे करैत अछि । भाषणकेँ मनोनुकूल नहि पाबि ओ ओकरा रिजेक्ट सेहो कऽ दैछ । प्रो. साहेबक आत्मसम्मान मर्दित होइत रहैत छनि आ अन्ततः मन्त्री धरणीधर अपना हेतु फरमाइसी अभिनन्दन-पत्र लिखि देबाक मीठ आदेश हुनका दैत छनि । तखने प्रो. साहेबकेँ एके बेर धरणीधरक विगत जीवन मोन पड़ि जाइत छनि तँ ओ जेना चौंकि उठैत छथि । नमूनाक रूपमे लिखित अभिनन्दन-पत्र फाड़ि दैत छथि आ हुनक सुषुप्त स्वाभिमान फेरसँ जागि उठैत छनि ।

जे काज हिनक **भैरव** कथाक पढ़ल-लिखल युवक महीनीक संग करैत अछि, वैह काज मोट रूपमे करैत अछि हिनक कथा **धन्धा** (मैथिली अकादमी पत्रिका, सितम्बर-अक्टूबर 1984)क कथानायक धनपति । अनपढ़ धनपति कतेक

बेलना ने बेललक, मुदा अन्ततः स्थिर भेल भीड़ जुटयबाक धन्धापर । सत्ताक राजनीतिसँ लऽ कऽ ट्रेड यूनियन धरिक राजनीतिक शक्तिक परिचायक बनि गेल अछि लोकक अपार भीड़ । धनपति भाड़ापर सभक हेतु लोकक भीड़ जुटयबाक धन्धा करैत अछि । सिद्धान्ततः धनपतिक धन्धा बैमानीक धन्धा छैक जे राजनीतिकेर पतनशीलताक गतिकेँ औरो बेसी तीव्र करैत अछि । तथापि धनपति अपन धन्धामे इमन्दार अछि । आइ धरि ककरो धोखा नहि देलकैक । गरीबीसँ उपर उठल अछि तेँ गरीबीक मर्म जनैत अछि आ भीड़मे आयल लोककेँ इमन्दारीसँ ओकर मेहनताना दऽ दैत छैक । तेँ ओकर चारू दिस साख ओ धाख जमल छैक । से धनपति एकदिन बम-विस्फोटमे मारल जाइत अछि, तँ स्वाभाविक रूपसँ ओकरा प्रति लोकमे सहानुभूति उत्पन्न होइत छैक, आ पाठकसँ सेहो सहानुभूति प्राप्त करैत धनपति एकटा छाप छोड़ि जाइत अछि ।

दीनदयाला (माटिपानि, जनवरी 1985)मे राजनीतिक तिकड़मक बलेँ हरिजन कल्याणमन्त्री बनि जाइछ नकछेदीपासवान । हरिजनक हेतु आवास बनयबाक एकटा योजनाक ठेकेदारी मन्त्रीक प्रभावेँ ठेकेदार दिग्विजय नारायणकेँ भेटेत छैक । ठेकेदारकेँ एहि हेतु मन्त्री, ऑफिसरसँ लऽ कऽ स्थानीय नेताकेँ घूस देबऽ पड़ैत छैक । ओ घटिया निर्माण करैत अछि आ पाँच सयक बदला मात्र पचासटा आवास बनबैत अछि जे एकदिन अन्हड़मे ढहि-ढनमना कऽ खसि पड़ैत छैक । एहिमे कतेको लोक मारल जाइछ । एहि भ्रष्टाचारकेँ लऽ कऽ सड़कसँ विधानसभा धरि हल्ला होइत छैक । नकछेदीपासवान त्राहिमाम् करैत मुख्यमन्त्रीक दरबारमे हाजिर होइछ । मुख्यमन्त्री एहि काण्डक नीपा-पोती करयबाक हेतु अपन सेक्रेट्री सिन्हाजीसँ भेट करबाक परामर्श दैत छथिन । अन्ततः सिन्हाजी अपन मेहनताना लऽ कऽ एहि 'दीन' लोकनिक प्रति अपन दया देखबैत अछि ।

दोसर खेपक अपन एहि राजनीतिक कथा लेखनक प्रवृत्तिक मध्य कथाकार मायानन्दमिश्र **प्रथम शैलपुत्री : अगना** (मै.अ.प., जनवरी-दिसम्बर 1985) सन काल्पनिक इतिहास-कथा सेहो लिखलनि । एहि कथामे आदिम कालीन मनुष्यक स्वच्छन्द जनजीवन ओ विकास क्रमक एकटा काल्पनिक चित्र ठाढ़ कयल गेल अछि । वस्तुतः ई कथा नहि अपितु एहि अवधिमे कथाकार द्वारा प्राक्युग एवं ऋग्वैदिक कालीन जनजीवनपर लिखल जाइत हिनक उपन्यास शृंखलाक एकटा अंश मात्र थिकनि ।

पुनः 1985 मे **बसातक** दिसम्बर अंकमे हिनक एक गोट औरो कथा **हर्रे लगे न फिटकरी** प्रकाशित भेलनि । राजनीतिक यूनियनबाजीक उपयोग कोना

वर्त्तमान समयमे रक्षा कवच जकाँ कयल जाइछ तकर प्रत्यक्ष उदाहरण अछि व्यवसायी रामभजन । अफसर संग मेलक कारणे रामभजनक दोकानदारी दिन प्रतिदिन उन्नति करैत चल जाइत छैक । मुदा एकटा इमन्दार बतहा एस.डी.ओ. लग रामभजनक दालि नहि गलैत छैक । मिलावटी एवं अवैध वस्तुक कारोबार तथा हाकिमकेँ घूस देबाक अपराधमे ओकरा जेल भऽ जाइत छैक । ओना रामभजन लय जेल सेहो लाभदायके सिद्ध होइत छैक आ ओहूठाम अपन कारोबार बढ़यबाक जोगार ओकरा लागि जाइत छैक । जेलरकेँ घूस दऽ जेलमे माल सप्लाइ करबाक ठेका पाबि लैत अछि । मुदा ज़ेलसँ निकलिते बतहा अफसर, स्थानीय रंगदार आदिक हर-हर, खट-खटक एकमुस्त समाधान हेतु व्यापारिक संगठन बना स्वयं ओकर नेता बनि जाइत अछि । आब एहि संगठनक शक्तिक आगाँ ककर कल्ला अलगि सकैत छलैक । तावत बतहा एस.डी.ओ.क बदली सेहो भऽ जाइत छैक । कहबी चरितार्थ होइत छैक -हर्रे लगे न फिटकरी चोखो उतरे माल ।' एही 1985क **स्वातीक** नवम्बर अंकमे हिनक **नमकहराम शीर्षक कथा प्रकाशित** भेलनि । एहू कथामे व्यापारी वर्गक कालाबाजारी, नफाखोरी आदि सन भ्रष्ट आचारक आलोकमे कथाक तानी-भरनी बूनल गेल अछि । मुनीमजी अपन सेठक सम्पूर्ण कारोबारक कर्त्ते-धर्त्ते नहि अपितु ओकर रक्षाकवच सेहो अछि । कड़ू तेलक कृत्रिम अभाव उत्पन्न करबाक हेतु व्यापारी सब गोदाममे माल बन्द कऽ लैत अछि । सेठजीक कड़ू तेलक टीन सब मुनीमजीक गोदाममे राखल जाइत छैक । मुदा मुनीमजीक आँखिक निन्ने जेना हेरा जाइत छैक । तकर कारण छैक नवका बतहा एस.डी.ओ. जे सौंसे शहरमे हरहोड़ मचौने रहैत छैक । मुदा ताहूसँ बढ़ि कऽ चिन्ताक कारण बनि गेल छलैक मुनीमजीक बेटा चौठिया जे राजनीतिक कार्यकर्त्ता छल आ जनताक लेल लड़ैत छल । अन्ततः होइतो छैक सैह । चौठिया अपनेसँ अपन घरमे छापा मरबा दैत अछि । मुनीमजी गिरफ्तार कऽ लेल जाइछ । वस्तुतः नवयुवक चौठिया एकटा आदर्श तँ उपस्थापित करैत अछि, मुदा अपन बापक हेतु तँ ओ एक नम्मरक नमकहरामे साबित होइत अछि ।

कौशल्या हितकारी (हालचाल, जनवरी 1986) मे गान्धीवादी राजनीतिक दुर्दशा, वर्त्तमान समयमे ओकर निरर्थकतापर मार्मिक व्यंग्य कयल गेल अछि तँ दोसर दिस मूल्यहीन राजनीतिक परम्पराक एहि अन्धकार युगमे दीप बनि कऽ ठाढ़ भेल देखल जाइत छथि शिवनाथशर्मा । स्वतन्त्रता सेनानी, आपाद मस्तक इमन्दार, धर्मनिष्ठ, शर्माजी जे कहियो अंग्रेजी शासन कालमे बलात्कारी अंग्रेज डिक साहेबकेँ जानसँ मारि देने छलाह तनिक स्वास्थ्य मन्त्रीत्व कालमे तीनटा नर्सक संग सामूहिक बलात्कारक बाद ओकर हत्या कऽ देल जाइत छैक । बलात्कारी ओ दोषी मेट्रनकेँ दण्डित करबाक माँगक संग जनताक आक्रोश भड़कि उठैत छैक । राजनीतिक छल-प्रंपचसँ दूर शर्माजीकेँ

जखन नारी शरीरक व्यापार, नकली दवाइक कारोबार आ ओहिमे ऊपरसँ नीचाँ धरिक लोकक आकण्ठ संलिप्तताक कथा बुझल होइत छनि तँ ओ क्षुब्ध रहि जाइत छथि। ओ घटनाक उच्च स्तरीय जाँचक आदेश दैत छथि। मुदा एहि प्रकरणपर झाँपन देबाक हेतु सब एकजुट भऽ जाइछ आ मुख्यमन्त्री सेहो जाँचक प्रक्रियामे हेर-फेर करबाक संकेत दऽ दैत छथि। शिवनाथशर्मा ई जानि अवाक रहि जाइत छथि। वर्त्तमान राजनीतिमे ओ कतेक अपटु आ एकाकी छथि, तकर भान भऽ जाइत छनि आ अपन इस्तीफा देबाक हेतु रिक्शासँ राज्यपालक ओतऽ विदा भऽ जाइत छथि।

झाँखी, हिन्दुस्तान के (अखिल भारतीय मैथिली साहित्य परिषद् पत्रिका, मार्च 1987) कथामे वर्त्तमान सत्ताक राजनीति ओ राजनीतिज्ञक परस्पर विरोधी चरित्र, कथनी एवं करनीमे अन्तरकेँ कलात्मक ढंगेँ चित्रित कयल गेल अछि। ई कथा नहि वस्तुतः बाइ एलेक्शन, विधानसभामे शक्ति परीक्षण, मन्त्रिमंडलमे हेरफेर, तीन गोट नर्सक संग सामूहिक बलात्कारक पश्चात हत्या आदि सन कतेको काण्डकेँ एक सङ अङेजने देवत्वक महिमासँ मण्डित एकटा मुख्यमन्त्रीक एक दिनुक भोरका उखड़ाहाक ओकर व्यस्ततम दिनचर्या ओ ओकर दरबारक भव्यताक वर्णन कयनिहार शब्द-चित्र थिक। आजुक राजनीति कतेक जटिल, कतेक पेंचिल भऽ गेल अछि। बाहरसँ सहृदयताक देखाबा आ भितरे-भीतर चलैत शहमातक खेल। मुख्यमन्त्रीक अन्तः कक्षमे विरोधीक मान-मर्दन, असन्तुष्टक मान-मोचन, राजनीतिक सौदेबाजी, भितरघात, चुनाव आ पार्टी हेतु चन्दाक ओरिआओन यैह तँ नित्यप्रति होइत अछि। आ एहि खेलकेँ मूर्त्त रूप देबामे मुख्यमन्त्रीक पी.ए.क योगदान सबसँ बेसी महत्त्वपूर्ण। मुख्य मन्त्रीक सत्ताक शक्तिक आगाँ सब नतमस्तक, दर्शन एवं चरण धूलि पयबा लय सब बेहाल-यैह तँ थिक आजुक हिन्दुस्तानक झाँखी !

जिंजीर (मिथिला मिहिर, सितम्बर 1987) कथामे वर्त्तमान निर्घिन राजनीतिक प्रवृतिसँ ठकायल लाचार बनल, पुरान पीढ़ीक एकटा मूल्यवादी राजनीतिज्ञक मनोदशाकेँ उरेहल गेल अछि। स्वतन्त्रता सेनानी कैलासबाबा मुखियाक दुश्चरित्र ठेकेदार बेटा ओ कांग्रेस उम्मीदवार गणेशक विरुद्ध सोशलिस्ट पार्टीक टिकटपर चुनाव लड़ैत छथि आ हारि जाइत छथि। बादमे हुनका बुझबामे अबैत छनि जे हुनक अपने पार्टीवला सब मुखियाजीसँ टाका लऽ कऽ वोटकटबाक रूपमे हुनका चुनावमे ठाढ़ करबौलकनि जाहिसँ गणेशक जीतक मार्ग प्रशस्त भऽ सकलैक। कैलासबाबा स्तब्ध रहि जाइत छथि। कहियो जाहि अंग्रेजक जिंजिरसँ भारतमाताकेँ ओ लोकनि मुक्त करौने छलाह से भारतमाता आइ अपने सन्तान लोकनि द्वारा जिंजिरसँ बान्हि देल गेल छलीह। क्षोभसँ भरल कैलासबाबा पार्टीक पैसासँ कीनल अपन खादी वस्त्रकेँ अपनेसँ आगिमे डाहि दैत छथि।

एहि कथाक प्रकाशनक बाद पुनः दीर्घ अवधि धरि मौन धारण कयने रहलाह कथाकार। हिनक ई चुप्पी टुटललि तेरह वर्षक बाद **अंतिकाक** जनवरी-मार्च 2000 अंकमे प्रकाशित कथा **आधारसँ**। वैधानिक व्यवस्थाकेँ चुनौती दैत ओकरे समानान्तर चलि रहल भ्रष्टाचार ओ अपराधक सुसंगठित तन्त्रक बोध करबैत अछि ई कथा। देशक राजनीतिपर अपराधी तत्त्वक बढैत वर्चस्विताक प्रतीक छथि नेताजी। नेता बनबाक हेतु ठेकेदारीक प्रथम सीढ़ीकेँ पार कऽ अनेक हत्या ओ कुकाण्डक आयोजक बनैत अकूत सम्पतिक स्वामी बनि जाइत छथि। हिनक एही प्रतिभाकेँ देखैत प्रमुख मन्त्रीजी अपन पार्टीमे हिनका लऽ लैत छथिन आ चुनावक टिकटक आश्वासनो दैत छथिन। मुदा तखने सरकार खसि पड़ैछ। राष्ट्रपति शासन लागू भऽ जाइछ आ नेताजी एकटा पुरान हत्याकाण्डमे गिरफ्तार कऽ लेल जाइत छथि।

अभिनन्दन (अंतिका, अक्टूबर-दिसम्बर 2000)मे वर्त्तमान गुण्डागर्दीक राजनीतिक युगमे इमानदारीक लाश उघैत एकटा हठधर्मी अधिकारीक कथा कहल गेल अछि जे लाख अपमानक अछैतो एहि व्यवस्थाक आगाँ झुकबाक लेल तैयार नहि होइछ। अधिकारी दुखमोचनबाबू अपन इमन्दारीक कारणे झक्की आ बताहक उपमा पबैत छथि, डेग-डेगपर अपमानित होइत छथि आ अन्ततः समयसँ पहिने सेवानिवृत्ति लऽ लैत छथि। हिनक एही साहसकेँ देखैत हिनक अभिनन्दनक नेयार होइछ, तावत अपने सन इमन्दार जिलाक डी.एम.क. सेहो स्थानान्तरण भऽ जाइत छनि। नवका पदस्थापित डी.एम. राजनीतिज्ञक वशवर्त्ती ओ ओकर भ्रष्ट तन्त्रक अंग अछि एहनामे ओकरा हाथेँ कोना कऽ अपन अभिनन्दन स्वीकार कऽ सकैत छलाह दुखमोचनबाबू! तँ एहि अभिनन्दनकेँ जँ ओ नकारि दैत छथि तँ एहिमे कोनो आश्चर्य नहि।

एतावता मायानन्दमिश्रक एहि दोसर खेपक कथायात्रामे 1974 सँ अद्यपर्यन्तक भारतीय राजनीतिक पतनशीलताक क्रमवार झलकी भेटैत अछि। ऊपरसँ शान्त लगितो एहि कथा सभक भीतरमे तीक्ष्ण व्यंग्य नुकायल अछि। एक स्वरसँ जकर चोट वामपंथी, दक्षिणपंथी, समाजवादी एवं मध्यममार्गी सब दलपर कयल गेल अछि तँ एकरा संगहि अफसरशाही, पूजीवादी एवं अवसरवादीकेँ सेहो बकसल नहि गेल अछि। एहि कथा सबमे 1977क बादसँ बिहारक राजनीतिमे अबैत परिवर्त्तन एवं अनेकशः भेल घपला-घोटाला, स्कैण्डल आदिकेँ छाया रूपमे देखल जा सकैछ। एहि घपला-घोटाला ओ स्कैण्डलकेँ साकार करैत रहनिहार बिहारक कतिपय चर्चित राजनीतिज्ञ, नोकरशाह ओ पूजीपतिक छाया रूप नामान्तरक संग उपस्थित भेल अछि हिनक एहि कथा सभमे। जँ **सत्यक मिथ्या, कौशल्या हितकारी** एवं **जिंजिरमे**

महात्मा गान्धी, नेहरू, लोहिया, पटेल, राजेन्द्रमिश्र सन कतिपय प्रख्यात नेता एवं पटनाक सदाकत आश्रम सन स्थान प्रत्यक्ष रूपमे आयल अछि तँ **सत्यक मिथ्याक** सत्तापक्षक समाजवादी मन्त्री सिन्दूरीठाकुर ओ विपक्षक कांग्रेसी नेता विश्वनाथमिश्र, **भये प्रगट कृपाला**क उद्योगपति श्वेतश्याम इड़ला, **कौशल्या हितकारी**क निश्छल-इमन्दार स्वास्थ्य मन्त्री शिवनाथशर्मा, **झाँखी हिन्दुस्तानके**क साटा आयरन एंड स्टील कम्पनी एवं गोदीसाहेब आदि सन पात्रकेँ सेहो ककरो चिन्हबामे भ्रम नहि होइत छैक। आपात कालोत्तर भारत ओ बिहारक जाहि निराशाजनक चित्र हिनक कथा सभमे उभरल अछि, ताहूमे आशाक एकटा क्षीण किरण देखबैत अछि **नमकहराम**क नवतुरिया नेता चौठिया, **कौशल्या हितकारी**क शिवनाथशर्मा, **अभिनन्दन** (प्रथम)क प्रो. साहेब आ **अभिनन्दन** (द्वितीय)क सेवानिवृत्त अधिकारी दुखमोचनबाबू। यद्यपि एहि आशाक किरण लोकनि लगमे ई सामर्थ्य नहि छनि जे ओ लोकनि तत्काल व्यवस्थामे कोनो परिवर्त्तन कऽ सकथि। तथापि हिनक कथाक एहि पात्र सभक आदर्शवादी स्वरूपसँ ई अवश्ये प्रतिध्वनित होइछ जे इमन्दारी, नैतिकता आ सदाचार सन शब्दक सर्वथा लोप नहि भऽ गेलैक अछि। ओकर बीज एखनो सुरक्षित छैक जे अवसर पाबि पुनः अंकुरित भऽ जा सकैत छैक। हिनक कथाक यैह स्वर कथाकारक समाजचक्र सिद्धान्तक प्रति आस्थावान होयब सिद्ध करैछ। कागजपर क्रान्ति देखौलासँ समाजमे क्रान्ति नहि आबि जाइत छैक। क्रान्ति एकटा दीर्घकालीन प्रक्रिया थिक। नियत समय अयलापर क्रान्ति होयबेटा करत। ओकर सूत्रधार चौठिया, शिवनाथशर्मा, प्रो. साहेब किंवा दुखमोचनबाबू केओ भऽ सकैत छथि।

मायानन्दमिश्रक कथासंसार : एक दृष्टिमे

कथा-लेखनक प्रथम अवधि (1953-1965) मे मायानन्दमिश्रक कथापर गहिंकी नजरि देला उत्तर प्रतीत होइछ जे आरम्भिक छात्र जीवन कालमे जावत धरि हिनका गाम-घरसँ सम्पर्क रहलनि तावत धरि समाजक निम्न वर्ग हिनक कथामे प्रवेश पबैत रहल, मुदा जखन 1957क बाद पटनामे रहैत अपन दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ कयलनि तँ हिनक कथाक मुख्य स्वर भऽ गेलनि मध्यम वर्गीय परिवारक दैनन्दिन उहापोह आ ओकर अर्थ संकट। हिनक एहि मध्यमवर्गीय परिवारमे पति-पत्नी आ ओकर बच्चा छैक। अर्थोपार्जन लेल संघर्ष एवं एही लऽ कऽ पारिवारिक मनोमालिन्य उत्पन्न होइत छैक आ पुनः पति-पत्नीमे समझौता भऽ जाइत छैक। एहि मध्मवर्गीय आधुनिक परिवारमे वृद्ध लोकनिक हेतु कोनो स्थान नहि छैक। मायानन्दमिश्र अपन एही कथा-परिधिमे घुमैत कौखन-कौखन अपन बाल्य ओ छात्रजीवन कालक सेहो स्मरण करैत रहलाह आ जखन एहि परिधिसँ एँड़ी

अलगा कऽ बाहरक दुनियाँ देखलनि तँ अपवाद स्वरूप हिनकासँ **एकटा चिनमा खेलियौ रओ भैया** सन कथाक सृष्टि भऽ सकलनि । पुनः अपन कथा-लेखनक दोसर अवधि अर्थात 1983क बादसँ हिनक कथाक मुख्य स्वर राजनीतिज्ञ, अधिकारी, ओ बनियाँ आदिक गठजोड़सँ उत्पन्न भ्रष्टाचारक चित्रण करब भऽ गेलनि ।

मायानन्दमिश्रक सम्पूर्ण कथा-यात्राक अवलोकन कयला उत्तर हुनक कथाकारक एकगोट विशेषता परिलक्षित होइत अछि जे कथाकारकेँ अपन कथाक जे प्लॉट, कथाक जे बिन्दु, पात्रक नाम आदि विशेष अपील करैत रहलनि तकरा ओ बेर-बेर लिखैत रहलाह, अनेक ढँगेँ लिखैत रहलाह । **कालरेत, हँसीक बजट** एवं **गाड़ीक पहिया** तीनू तीनटा कथा होइतो वस्तुतः एकेटा कथा थिक । सुधीर-राधा, महेश-गिरिजा, एवं कार्त्तिक-कपूर तीनू तीन नामसँ भिन्न-भिन्न दम्पतीक रूपमे सम्बोधित होइतो वस्तुतः एके थिक । एके रंगक परिवेश, एके रंगक दिनचर्या आ एके रंगक संघर्ष तीनूक अछि । **टुटैत कीलक जाँत**क पूर्व भाग थिक **एकटा सुखी लोकक डायरी** । एकरा दुनूकेँ जँ मिला देल जाय तँ एकटा सम्पूर्ण कथा बनि जाइत अछि ।

उपर्युक्त विशेषता हिनक दोसर अवधिक कथालेखनमे आरो बेसी जगजियार भेलनि अछि । हिनक एक कथाक घटनावस्तु दोसर कथासँ सम्पृक्त छनि । एक कथाक पात्र पुनः दोसर कथामे अपन मूल रूपमे किंवा नाम बदलि कऽ आबि गेलनि अछि । तहिना एहि कथा सभक परिवेश ओ पात्रक चरित्र इत्यादि सेहो एके रंगक छनि । हिनक एहि समस्त कथाकेँ जँ मिला देल जाय तँ एकटा नीक राजनीतिक उपन्यास अवश्ये बनि जा सकैत अछि । **सत्यक मिथ्याक** दुखहरनबाबू, **जिंजिरक** कैलाशबाबा एवं **कौशल्या हितकारीक** शिवनाथशर्मा ई तीनू पात्र वस्तुतः एके थिकाह । तीनू गोटा स्वतन्त्रता सेनानी छथि आ तीनू गोटाकेँ आधुनिक छल-छद्मक राजनीतिक कारणे मोहभंग होइत छनि । अन्तर एतबे जे दुखहरनबाबू आधुनिक राजनीतिक लौहद्वारकेँ नहि भेदि पबैत छथि, दोसर छथि कैलासबाबा जे चुनावक माध्यमे प्रवेश करबाक अपन प्रयासमे गणेश सन ठेकेदारक हाथेँ हारि कऽ असफल रहि जाइत छथि आ तेसर छथि शिवनाथशर्मा जे एहि राजनीतिमे प्रवेश कयलाक बादो क्षुब्ध भऽ कऽ एहिसँ निकलबाक निर्णय लऽ लैत छथि । एहिना **जिंजिरक** गणेश, **अभिनन्दन** (1984)क मन्त्री धरणीधर, किंवा **दीनदयालक** नकछेदीपासवान तीनूक चरित्र एक समाने अछि । एहने भ्रष्ट नेता सभक चुनावक लेल **भय प्रगट कृपालाक** इड़लाजी धन दैत छैक, **भैरवक** रजनी आ मधुकान्त मतक व्यवस्था करबैत छैक, **धन्धाक** धनपति भीड़ जुटबैत छैक । यैह धरणीधर **माध्यममे** जूट

किसानकेँ सर्टिफिकेट दैत अछि। एही धरणीधर आ इड़लाजीक आगाँ-पाछाँ करऽ पड़ैत छनि विद्वान प्रोफेसर साहेबकेँ आ पत्रकार मस्तानजीकेँ। इड़लेजीक लघु रूप थिक **हर्रे लगे न फिटकरी**क दोकानदार रामभजन। **हर्रे लगे न फिटकरी** एवं **नमकहराम** कथामे आयल इमानदार बतहा हाकिमे तँ थिकाह **अभिनन्दन** (2000) क दुखमोचनबाबू जनिका अन्ततः अपनेसँ रिटायरमेंट लेबऽ पड़ैत छनि। **दीनदयाला, कौशल्या हितकारी** एवं **झाँखी हिन्दुस्तान के** एहि तीनूक मुख्यमन्त्रीक एके व्यक्ति थिक, प्रत्येक भ्रष्टाचार ओ कुकाण्डकेँ मटियामेट करबामे माहिर। कोनो आश्चर्य नहि जे 1961मे **एकटा चिनमा खेलियौ रओ भैया**क अधिकारी सिन्हासाहेब भ्रष्टाचारमे पारंगत भऽ पदोन्नति पबैत 1985मे **दीनदयाला**क समयमे आबि कऽ मुख्य मन्त्रीक सेक्रेटी बनि गेल होथि।

वस्तुतः अपन कथाक कोनो पात्रक नाम प्रिय लगलापर कथाकार पुनः ओकरा दोहरबितो रहलाह अछि। **सेराएल इन्होर** (1960)क एकटा कथा पात्री अछि कर्पूर तँ पुनः **गाड़ीक पहिया** (1962) मे सेहो मुख्य पात्रीक नाम यैह अछि। **गाड़ीक पहिया**क नायकक नाम ओ **रंग उड़ल मुरुत** (1983) दुहूक एक-एक पात्रक नाम कार्त्तिक थिक। **उत्तर चरित** ओ **अभिनन्दन** (1984) दुहूमे धरणीधर नामक पात्र अछि। केवल अपन पात्रक नामे नहि अपितु कथाक शीर्षककेँ सेहो दोहरबैत रहलाह अछि कथाकार। एकर उदाहरण अछि **अभिनन्दन** शीर्षकसँ लिखल हिनक दुइ गोट कथा। एहिमे प्रथम 1984मे रचनामे ओ दोसर 2000मे अंतिकामे प्रकाशित भेल अछि।

कथाकारक ई स्वयंकेँ दोहरयबाक प्रवृत्ति हिनक कथाक उपमा-उपमान ओ वर्णन-विन्यासमे सेहो परिलक्षित होइत अछि। अपन आरम्भिक कथा सभमे जेना ई पात्रक स्वरूप चित्रित कयने छथि से बुझना जाइछ जेना हिनक अधिकांश पात्रक मुँह-ठान एके रंगक होइनि। **कारी इजोत**क भोगी ओ **उपसर्ग**क मिहिर दुहूक मानस पटलपर जे नारी चित्र उभरैत छैक ओहि दुहू नारीक एकटा समान विशेषता छैक- **गस्सल-गस्सल** किंवा **सोंटल-सोंटल गोल बाँहि**। काव्यमय व्यक्तित्व होयबाक करणे कथाकारक भाषा सेहो सवत्र पद्यगन्धी छनि। कहले बातकेँ बेर-बेर स्थिरताक संग फड़िछा-पड़िछा कऽ कहैत छथि। सुमधुर गायक होयबाक कारणे गायनमे 'ध्रुवपद' किंवा 'स्थायी' क पुनः पुनः आवृत्ति ओ अन्तराकेँ रेघा-रेघा कऽ गयबाक कलासँ ई पूर्ण परिचित छलाह, जकर प्रत्यक्ष प्रभाव हिनक कथाक भाषापर सेहो गम्भीर रूपसँ पड़ल देखबामे अबैत अछि। एहिसँ हिनक कथाक प्रवाहमे अवरोध उत्पन्न भेलनि अछि तँ कथामे अनावश्यक नमार सेहो। तथापि हिनक कथा धैर्यवान

पाठककेँ काव्यमय औपन्यासिकताक स्वाद तँ दैते अछि। एहि सन्दर्भमे कुलानन्दमिश्रक ई कथन सर्वथा युक्ति संगत लगैछ जे- **मायाबाबू कथा कहय जनैत छथि। हुनका अपना तरहेँ नीक जकाँ जानल बात सुस्ता-सुस्ता आ चिबा-चिबा कऽ प्रस्तुत करब खुबे अबैत छनि।** (कथा यात्रा : सातम दशक धरि, मै.अ.प., 1989)

मायानन्दमिश्रक कथा-संसारक एकगोट औरो विशेषता छनि, ओ थिक हिनक कथाक सहजता और कथामे जमीनी सत्यताक पुट होयब। किछु अपवादकेँ छोड़ि देल जाय तँ हिनक अधिकांश कथा यथार्थ समाजक कथा थिक। जाहि समाजक सदस्य कथाकार अपनहुँ छलाह, तेँ बहुत किछु भोगलो छलनि तँ बहुत किछु देखलो छलनि। अपन कथामे ई कल्पनाक संसार नहि बुनैत छथि तेँ हिनक **सेराएल इन्होरक** परित्यक्ता करपूर सामान्य मैथिल नारी जकाँ रहैत अछि, एकर तुलनामे राजकमलक **पनिडुब्बीक** कादम पतिता भऽ जाइछ। ललितक **मुक्तिक** शेफाली रुग्ण पतिकेँ छोड़ि दरबान संगे उढ़रि जाइछ, शशिचौधरीक छद्मनामसँ लिखल राजकमलक **धर्म्मप्रिया तर्कनिष्ठाक** वयसाहु वैष्णव गृहस्थ सीतादासक पत्नी हीरा सहरसाक मधुपुर स्टेटक जमीन्दारक पुत्र अमरनाथबाबूक संग रंग-रभस कऽ अबैत अछि। वस्तुतः एहि कोटिक चित्रण कथाकारक अपन संसारक उपज थिकनि। मुदा मायानन्दमिश्र एहि प्रभावमे आबि कऽ कल्प-कथा लिखितो अन्ततः जमीन तकैत रहलाह। तेँ **एक जोड़ा लोक : एक जोड़ा** आँखिक सुमिन्तराक हृदयमे नारी सुलभ मात्सर्य जगा ओकरा अपन पतिक ओतऽ पुनः पठबा देलनि। तथापि एकटा गलती भैये गेलनि। एहि बीचमे सुमिन्तराक घरवलाक दोसर वियाह कराय ओकरा मझधारमे छोड़ि देलनि। एहने नारीकेँ फुसिया कऽ तँ राजकमल अपन कथाक पात्री बनबैत रहलाह। कल्पनाशरणक **रंगीन परदाक** पतिता मालतीकेँ **हरिद्वारवासमे** कुलटा आ हत्यारिणी पर्यन्त बना देलनि। मालतीक प्रेमी मोहनबाबूक विधवा पर्यन्तकेँ एहि खाधिमे धकेलि देल गेल। एतावता राजकमलक कथामे जतऽ नारीकेँ एकमात्र भोग्या बना कऽ राखल गेल अछि आ पुरुष वासनाक कीड़ाक रूपमे चित्रित भेल अछि। ओतहि मायानन्दमिश्रक कथाक नारीक अपन गरिमा छैक। **नेपथ्यसँ हाकरोसक** परित्यक्ता नर्स किंवा **टुटैत कीलक जाँतक** रागिनी, दुहू पतिसँ दूर अछि। तथापि दुहू अपन कर्त्तव्यक निर्वहनमे लागलि अछि। जँ राजकमल एहि प्लॉटपर कथा लिखने रहितथि तँ अवश्ये ओ चिकित्सालय एवं रागिनीक नैहरकेँ वेश्यालय बना देने रहितथि। कखनो केबाड़ी भिड़का कऽ, कखनो बिजली मिझा कऽ वा 'सुरंग आ पोखरि' सन प्रतीकक प्रयोग कऽ कऽ आत्मसुख पबितथि। रागिनीक अन्यो बहिनि रेखा, सुरेखा, अरेखा ओ ओकर रुग्ण पिता पर्यन्तकेँ एहि सेक्सक अन्हार कोठरीमे धकेलि देने रहितथि। मुदा मायानन्दमिश्रक अधिकांश

कथाक नारी ओ पुरुष पात्र सामाजिक प्राणी अछि। तेँ हिनक कथा मिथिलाक कथा अछि, मिथिलाक जनजीवनक कथा अछि। हिनक एहि समस्त कथाकेँ एक संग राखि स्वातन्त्र्योत्तर मिथिलाक सामाजिक एवं राजनीतिक जीवनक एकटा विश्वसनीय चित्र उरेहल जा सकैछ जाहिमे निम्न ओ मध्यमवर्गीय जीवनक अपन संघर्ष छैक, मनुष्यक बाह्य ओ आभ्यन्तरिक अन्तर्द्वन्द्व छैक, मर्यादित सेक्स छैक, राजनीति एवं प्रशासन सहित विभिन्न क्षेत्रमे व्याप्त कूटनीति एवं भ्रष्टाचार छैक, प्रत्येक स्तरपर पीढ़ीक बीच व्याप्त संघर्ष छैक। यैह भेलनि मायानन्दमिश्रक कथा-संसारक विशेषता आ अपन एही विशेषताक कारणे मैथिली कथा साहित्यमे ई विशिष्ट स्थान पयबाक अधिकारी रहलाह अछि।

उत्तर कथा

मायानन्दमिश्र स्वातन्त्र्योत्तर मैथिली कथा साहित्यक एकटा सशक्त हस्ताक्षर मानल जाइत रहलाह अछि। मुदा जखन हिनक कथा-यात्रापर दृष्टिपात कयल जाइछ तँ लेखनमे जे एकटा जे निरन्तरता होयबाक चाही तकर अभाव छनि। कथाकार समय-समयपर ध्रुवतारा जकाँ उगैत-डूबैत रहलाह। हिनक कथा-लेखनक प्रथम अवधि अछि 1950 सँ 1965 धरि। एकर बाद अठारह वर्षक दीर्घ विरामक बाद ई 1983 मे पुनः कथा मंचपर देखल जाइत छथि। मुदा मात्र चारि-पाँच वर्ष कथा-लेखनमे सक्रिय रहलाह बाद फेर ई 1987क बाद जे चुप्पी लधलनि से चुप्पी 2000 इ.मे जा कऽ टुटलनि। एहू अवधिमे कथा-क्षेत्रमे किछु सक्रियता मात्र देखा जेना तकर बाद ई कथा-लेखनसँ संन्यासे लऽ लेलनि।

एहिना अपना हेतु कथा-लेखनक कोनो अपन मौलिक प्रवृत्ति ई नहि विकसित कऽ सकलाह। आरम्भमे हरिमोहनझासँ प्रभावित भेलाह। फेर किछु दिन धरि योगानन्दझा प्रभृति कथाकारक रोमांटिसिज्म प्रभावित कयलकनि। किछु दिन ललितक प्रभावेँ प्रगतिवादी बनबाक सेहन्ता रहलनि तँ किछु समय राजकमलक प्रभावेँ फ्रायडवादी भेलाह। अपन पन्द्रह वर्षक प्रथम अवधिमे ई एतेक रासे पाटि बदलैत रहलाह। मुदा कोनो धारामे स्वयंकेँ स्थापित नहि कऽ सकलाह। एतबे नहि हिनक कवि व्यक्तित्व से हिनका कथाकारक रूपमे स्थापित नहि होअऽ देलकनि। कथामे जे तीक्ष्णता चाही से उभारबाक स्थानपर ई गद्य-काव्य लिखैत रहलाह आ अन्ततः समकालीन साहित्यिक गुटबन्दी ओ कथा-दौड़मे नहि सकि सकबाक कारणेँ कथा-क्षेत्रसँ हटि गेलाह।

1983मे आबि कऽ मायानन्दमिश्र पुनः कथा-क्षेत्रमे स्वयंकेँ स्थापित करबाक प्रयास कयलनि। मुदा से एकटा विरोधाभासक संगे। एकदिस तँ ओ अपन 1950 सँ

1965 धरिक कथा-लेखनकेँ अपनेसँ खारिज करबाक घोषणा कयलनि तँ दोसर दिस ओही अवधिक अपन कथा-पूजीक आधापर एकटा कल्पना करैत ललित-मायानन्द-राजकमलक त्रिपुण्ड गढ़ि लेलनि। वास्तवमे अपन प्रथम कथा-लेखन अवधिमे जाहि राजनीतिमे ई नहि सकि सकलाह ओहि अतृप्त आकांक्षाक पूर्त्ति 1983 मे ललित ओ राजकमलक मृत्युक बाद कयलनि। तथापि हिनक ई त्रिपुण्ड एकटा छद्म इतिहास मात्र थिक। विगत शताब्दीक नवम दशकमे कथा-क्षेत्रमे फेरसँ स्वयंकेँ स्थापित करबाक हेतु एहि प्रकारक किछु तरंग उठायब हिनक विवशता छलनि। वास्तवमे एकटा स्वतन्त्र कथाकार-व्यक्तित्वक रूपमे मायानन्दमिश्र 1983सँ बेसी चीन्हल जाय लगलाह राजनीतिक धाराक कथाकारक रूपमे। वस्तुतः अपना पीढ़ीक कथाकारक संग तुलनामे मायानन्दमिश्र अठारह-उनैस भऽ सकैत छथि। मुदा आजुक कथा ओ कथाकार एहि दुहूपर निस्सन्देह एकैस साबित होयताह। अलपजिवाह कथा-लेखन ओ कथा-राजनीतिकेर एहि रड़धुम्मस कालमे भने मायानन्दमिश्र कतिया देल जाथु। मुदा जहिया कहियो मैथिली कथाक खण्डहरक उत्खनन होयतैक, मैथिली कथाक भथल इनार उड़ाहल जयतैक तहिया कालक आगि, पानि ओ बसातसँ अप्रभावित सही साबूत रूपमे बहरायत यैह रंग उड़ल मुरुत जे खाँटी मिथिलाक माटिक सुगन्धि पसारत आ अपन गढ़नि एवं शिल्पक परिचय देत।

●

मैथिलीक इतिहासमूलक उपन्यास

ऐतिहासिक उपन्यास जो इतिहासमूलक उपन्यास दुनू दूटा भिन्न वस्तु भेल। जे उपन्यास इतिहास बनाबय तकरा ऐतिहासिक उपन्यास कहल जायत। जेना म. म. परमेश्वरझा कृत **सिमन्तिनी आख्यायिक** (1906) किंवा पुलकितमिश्र प्रसिद्ध जीवनाथमिश्र लिखित **मोहिनी मोहन** (1908) मैथिलीक आद्य उपन्यास थिक तेँ ऐतिहासिक कहा सकैत अछि। हरिमोहनझाक **कन्यादान** किंवा योगानन्दझाक **भलमानुस** मैथिलीमे अपार पठनीयता ओ लोकप्रियताक कारणे एकटा इतिहास बना देलक तेँ इहो दुनू ऐतिहासिक उपन्यास भेल। मुदा उपर्युक्त उपन्यास सभक विषय-वस्तु पौराणिक किंवा सामाजिक अछि। एकर विपरीत कोनो ऐतिहासिक घटना ओ ऐतिहासिक पात्रकेँ आधार बनाय जखन उपन्यास लेखन कयल जायत तँ एहि कोटिक उपन्यासकेँ इतिहामूलक उपन्यास कहल जायब बेसी समीचीन होयत।

इतिहासमूलक उपन्यासक लेखन करब तरुआरिक धारपर चलब सदृश होइछ। मात्र कोनो इतिहास-कथा किंवा इतिहासक पात्रकेँ विषय-वस्तुक रूपमे ग्रहण कऽ लिखल गेल उपन्यासकेँ इतिहासमूलक नहि मानल जा सकैछ, जावत धरि ओहिमे विश्वसनीय स्रोतसँ प्राप्त तथ्यक विवेक सम्मत प्रयोग नहि कयल गेल होअय। एतावता इतिहास-बोद्धा एवं इतिहास-दृष्टिसँ सम्पन्न कोनो साहित्यकारहिसँ एहि कोटिक कार्य कयल जायब सम्भव होइछ। इतिहासमूलक उपन्यासमे ऐतिहासिक तथ्यक रक्षा करैत ओकर परिधियेमे कथानकक तरनी-भरनी बुनबाक विवशता रहैत अछि। कोनहुँ प्रकारक भावुकता एवं पूर्वाग्रहसँ अपन लेखनीकेँ बचबैत इतिहासक घटनाक समस्त विशृंखलित कड़ीकेँ अपन इतिहास-बोधसँ जोड़ैत ओकर बीचक रीक्ति मात्रकेँ भरबाक लेल कल्पनाक आश्रयण लेल जाइछ। मुदा एहू कल्पनामे ओहि युगक यावन्तो परिस्थितिक ध्यान राखब आवश्यक होइछ। वास्तवमे ऐतिहासिक तथ्यात्मकता ओ कथात्मकता आदिसँ अन्त धरि जखन सन्तुलन बना कऽ पटरीपर

चलैछ तखनहि ओहि कृतिकेँ वास्तविक इतिहासमूलक उपन्यासक खातामे राखल जा सकैछ।

बंगला ओ मराठी सन भाषामे बहुत पूर्वहिसँ इतिहासमूलक उपन्यास-लेखनक परम्परा रहल अछि। बंगालक बंकिमचन्द्र श्रेष्ठ इतिहासमूलक उपन्यासकार मानल जाइत छथि। हिनक दुर्गेशनन्दिनी, राजसिंह, सीताराम एवं मृणालिनीकेँ इतिहासकार लोकनि विशुद्ध इतिहासमूलक उपन्यासक श्रेणीमे रखलनि अछि। मुदा आनन्दमठ एवं देवी चौधुरानी जे इतिहास विषयसँ सम्बद्ध अछि अवश्य तथापि एहिमे कल्पनाक मात्राक आधिक्यक कारणे एकर तथ्य प्रभावित भेल अछि तेँ एकरा विशुद्धताक परिधिसँ बाहर कऽ देल गेल अछि।[1] वस्तुतः विदेशी पराधीनताक ओहि युगमे जखन राष्ट्रिय पुनर्जागरणक लहरि समस्त देशमे उठि रहल छल, ताहि समयमे भारतवासीकेँ अपन गौरवशाली इतिहाससँ परिचय करयबाक हेतु विभिन्न भारतीय भाषामे इतिहासमूलक उपन्यास लिखबाक प्रवृत्ति जोर पकड़लक।[2] मिथिलामे पुनर्जागरणक बसात कने देरीसँ पहुँचलैक आ एहि ठाम सामाजिक कुरीतिये ततेक प्रबल छल जे मैथिलीक उपन्यास-लेखन मूलतः एहीपर केन्द्रित रहल।

यद्यपि मुख्यधाराक इतिहाससँ पृथक मिथिलामे जनसामान्य वर्ग ओ विभिन्न जातीय समूह सभक इतिहास एहि ठामक प्रचलित लोकगाथा सभ थिक। ब्रजकिशोरवर्मा मणिपद्म सन लेखक एहि जातीय गाथा सब, यथा- सल्हेस, लोरिक, नयका बनिजारा, दुलरा दयाल आदिकेँ अपन उपन्यासक विषयवस्तुक रूपमे ग्रहण कयलनि। मुदा हिनक अतिवादी कल्पनाक कारणे एहि गाथा सभक अपनहुँ जे किछु ऐतिहासिकता छलैक से नष्ट भऽ गेलैक। हिनक **विद्यापति** उपन्यासक सेहो यैह हाल भेलनि। एतावता मैथिलीमे एखन धरि किछु गनले-गुथल इतिहास विषयक उपन्यासक जे लेखन भऽ सकल अछि, तकरा विश्लेषण हेतु दू कोटिमे विभाजित कयल जा सकैत अछि- प्रथम ऐतिहासिक तथ्याधारित उपन्यास और दोसर इतिहासाभास परक उपन्यास।

ऐतिहासिक तथ्याधारित उपन्यास

एहि कोटिमे रखबा योग्य जे किछु उपन्यास एखन धरि दृष्टिपथपर आयल अछि ओ थिक चन्द्रनारायणमिश्रक **बालादित्य** (1980) एवं **वैशाखी पूर्णिमा** (1982), मदनेश्वरमिश्रक **एक छलीह महारानी** (1993) एवं राजनाथमिश्रक **मोगलानी** (2013)।

चन्द्रनारायणमिश्र द्वारा लिखित **बालादित्य** मैथिलीक प्रथम ऐतिहासिक

तथ्याधारित उपन्यास थिक । एहिमे भारतीय इतिहासमे स्वर्णयुग संज्ञासँ अभिहित गुप्त वंशक एकटा प्रतापी शासक नरसिंहगुप्त, जनिक अपर नाम बालादित्य[3] छलनि, तनिके केन्द्रमे राखि उपन्यासक भव्य महल ठाढ़ कयल गेल अछि । एकर लेखनक उत्सक एकटा रोचक कथाक विवरण स्वयं लेखक द्वारा देल गेल अछि ।[4] 1946मे सुल्तानगंजमे गंगाक डिग्रीघाटमे एकटा स्वर्ण मुद्रा पाओल गेल । गुप्तकालीन ई स्वर्णमुद्रा अद्‌भुत प्रकारक छल । धनुर्धारी मुद्रामे अंकित राजपुरुषक छविबला एहि मुद्रामे एक पृष्ठपर नरसिंहगुप्त अभिलेख अंकित अछि तँ दोसर पृष्ठपर बालादित्यक छवि । लेखकके एहि मुद्राक विशिष्टता, एहिमे स्वर्णक अत्यधिक मात्रा आदिकेँ देखैत बालादित्यक गम्भीर अध्ययन करबाक हेतु विवश कयलकनि । विद्वान लेखक आर्यमंजुश्रीमूलकल्प सदृश बौद्ध ग्रन्थ, चीनी बौद्ध यात्री ह्वेनसांगक यात्रा विवरणक अतिरिक्त अपनासँ पूर्ववर्त्ती इतिहासकार लोकनिक अनुसन्धानकेँ सूक्ष्मतासँ पढ़ैत नरसिंहगुप्तक सम्बन्धमे तथ्य सब एकत्रित करैत रहलाह । अवश्ये हुनक एहिपर आधारित एकगोट शोधपत्र **ए रेयर स्पेसीमेन ऑफ एन आर्चर क्वाइन–टाइप ऑफ नरसिंह गुप्त बालादित्य** शीर्षकसँ क्रमशः **इंडियन एंटीक्वेरी**[5] तथा **बुलेटिन ऑफ मिथिला रिसर्च इंस्टीच्यूट**[6], दरभंगामे प्रकाशित भेलनि । एहि शोधपत्रकेँ आलोच्य उपन्यासक सिनाप्सिसक संज्ञा देल जा सकैत अछि । लेखक नरसिंहगुप्तसँ सम्बद्ध जतेक ऐतिहासिक सामग्रीक संचयन कयलनि तकरा उपन्यासक रूपमे प्रस्तुत करबाक योजना बनबैत आलोच्य उपन्यासक प्रणयन कयलनि ।

एहि उपन्यासमे गुप्तकालीन भारतक विस्तृत कैनवासपर नरसिंहगुप्तक सम्पूर्ण सजीव छवि उरेहल गेल अछि । प्रजापालक, योद्धा, संगठनकर्त्ता नरसिंहगुप्त अपन निजी साम्राज्य विस्तारसँ अधिक राष्ट्रक रक्षाकेँ महत्त्व देलनि । बर्बर हूण आक्रमणकारीक विरुद्ध गौड़सँ लऽकऽ वलभी धरिक शासककेँ संगठित कऽ ओ हूण सरदार मिहिरकुलकेँ पराजित कयलनि । तथापि ओहि आक्रान्तक प्रति प्रतिशोध भावना नहि राखि ओकरा क्षमा प्रदान कऽ देलनि । नरसिंहगुप्त भागवत धर्ममे आस्था रखितो बौद्ध दर्शनसँ अत्यन्त प्रभावित छलाह आ तेँ राष्ट्रकेँ सुरक्षित कऽ लेलाक बाद ओ प्रवज्या लऽ लेलनि ।

नरसिंहगुप्तक एही आदर्श चरित्रकेँ उपन्यासकार अत्यन्त कलात्मकताक संग सतर्कतापूर्वक विन्यस्त कयलनि अछि । उपन्यासमे गुप्तकालीन भारतक परिवेश ओ वातावरणकेँ ताहि रूपेँ उपस्थापित कयल गेल अछि जे पाठककेँ ओहि युगमे विचरण करबाक अनुभूति प्रदान करैत छैक । कथानकक कालखंडक अनुरूपहि उपन्यासमे अभिव्यक्ति लेल शब्दक चयन करैत भाषा–प्रयोग कयल गेल अछि जे

उपन्यासक विश्वसनीयताक चरम प्रतीति पाठकके करयबाक सामर्थ्य रखैत अछि। ऐतिहासिक तथ्य सबके जाहि कलात्मकताक संग कथानकक चासनीमे बोरि कऽ प्रस्तुत कयल गेल अछि, जे ने तँ कतहु आँकड़ जकाँ अभरैत अछि आ ने पाठकके तकर आभासे होअऽ दैत अछि। वस्तुतः **बालादित्य** मैथिलीक सफलतम अद्वितीय इतिहासमूलक उपन्यास थिक जकरा क्लासिक्सक कोटिमे राखल जयबाक चाही।

चन्द्रनारायणमिश्रक ऐतिहासिक तथ्याधारित दोसर उपन्यास थिकनि **वैशाखी पूर्णिमा**[7]। एहि उपन्यासक परिदृश्य ओ काल अछि ईसा पूर्व छठम शताब्दी, बुद्धकालीन भारत। उपन्यासक केन्द्रिय स्थल अछि मगधक राजधानी गिरिव्रज किंवा राजगीर। उपन्यासक ऐतिहासिक स्रोत अछि बौद्ध ग्रन्थ विनयपिटकक महाबग्ग आ एकर केन्द्रिय पात्र अछि बौद्ध साहित्यमे विभिन्न ठाम वर्णित भेल महान चिकित्सक जीवक कुमार भृत्य।

मगधमे ओहि समयमे हिरण्यक वंशक बिम्बिसार (544-492 इ. पू.)क शासन छल। मगधक उत्तरमे छल विदेह महाजनपद, जतऽ गणतान्त्रिक पद्धतिक शासन छल। एकर राजधानी छलैक वैशाली। विदेहराज चेटकक पुत्री चल्हना मगध सम्राट् बिम्बिसारक द्वितीया पत्नी छलि। मगध ओ विदेह दुहू वैवाहिक सम्बन्धसँ आबद्ध छल।[8] समकालीन राजनीतिमे वैशालीक प्रसिद्धिक अनेक कारणमेसँ एकटा कारण छल एहि ठामक नगरवधू आम्रपालीक अनिन्द्य सौन्दर्य। मगधक श्रेष्ठिगणके वैशालीमे एहि सुन्दरीके निकटसँ देखबाक सुयोग प्राप्त भेलनि आ हुनको लोकनिमे ई लालसा जगलनि जे मगध साम्राज्यक राजधानी गिरिव्रजमे सेहो जनपद कल्याणीक नियुक्तिक परम्परा प्रारम्भ होअय! श्रेष्ठि लोकनि सम्राट् बिम्बिसारसँ एकर अनुरोध कयलनि। सम्राट् तन्निमित्त वेशनगरक निर्माण कराय आम्रपालीक सदृश एकगोट सुन्दरी सालवतीक चयन कयलनि। काशीसँ गणिकाध्यक्षाके मँगाय सालवतीके नृत्य-संगीतमे प्रशिक्षित कराओल गेल। सालवती मगधक प्रथम जनकल्याणीक पदपर नियुक्त भेलि आ एकटा विशिष्ट समारोहमे सम्राट स्वयं ओकरा यावन्तो अनुष्ठानपूर्वक अभिषेक कयलथिन। एहि घटनाक बाद गिरिव्रजमे सम्राटक नगर सचिवके एक दिन भोरे-भोर एकटा सद्यःजात शिशु भेटलनि जकरा ओ उठाय राजमहलमे अनलनि। ओहि शिशुक पालन-पोषण राजमहलहिमे भेल। कोमारभच्च संज्ञासँ अभिहित कयल जाइत ओहि बालकके वैद्यक शिक्षा देल गेलैक जे पश्चात प्रख्यात चिकित्सक जीवक कुमार भेल। ओमहर रूप-लावण्य घटला उत्तर सालवती जनपद कल्याणीक पदसँ हटाओल गेलि तँ ओ भिक्षुणी शीलवती बनि अपन जीवन निर्वाह करऽ लागलि। मुदा ओकर कुण्ठित मातृत्व ओकरा तेना मथैत रहलैक जे ओ

रोगिणी भऽ गेलि । ओकर चिकित्साक हेतु जीवक कुमार जखन उद्यत भेल आ रोगिणी शीलवतीकेँ माँ कहि सम्बोधित कयलकैक तँ शीलवतीक अतृप्त मातृत्व जेना परमतृप्तिक अनुभव कयलक आ ओकर रोग बिना कोनो औषधि सेवन कयने बिला गेलैक ।

बालादित्यक तुलनामे **वैशाखी पूर्णिमाक** कैनवास छोट अछि मुदा उपन्यास कसल-गठल अछि । लेखक संकेतेमे सब किछु कहैत जाइत छथि जकर प्रतीतिमे पाठककेँ कतहुसँ असौकर्य नहि होइत छैक । सालवतीक ब्याजेँ लेखक समकालीन भारतमे प्रचलित नगरवधू सन परम्परा आ ताहि कारणे नारीक दशा, ओकर मर्म ओ पीड़ाकेँ साकार कऽ देलनि अछि । छोट फलक रहितो **वैशाखी पूर्णिमाकेँ** सेहो सफल उपन्यास कहल जायत ।

ऐतिहासिक तथ्याधारित जे तेसर उपन्यास दृष्टिपथपर आयल अछि ओ थिक मदनेश्वरमिश्रक **एक छलीह महारानी** । लेखक अर्थशास्त्रक विद्वान ओ प्राध्यापक छलाह । आलोच्य उपन्यास हुनक गहन अध्ययन ओ अन्वेषणक परिणाम थिकनि । एहि उपन्यासक लेखनक उत्सक संकेत लेखक अपन पोथीक प्राक्कथनमे कयने छथि । पूर्णिया जिलाक भू-राजस्वक इतिहासपर शोध करबाक क्रममे लेखककेँ पूर्णियाक पहसरा स्टेटक विशाल जमिन्दारी आ एकर एकटा महिला प्रशासिका इन्द्रावतीक प्रशासन दक्षताक सम्बन्धमे प्रचुर ऐतिहासिक सामग्री सब भेटलनि । एहि उपन्यासक कालखंड थिक संक्रमण युगक नामसँ ख्यात अठारहम शताब्दीक उत्तरार्द्ध आ एकर स्रोत अछि कम्पनी शासनक विभिन्न अभिलेख, बुकननक पूर्णिया रिपोर्ट, पंजी-प्रबन्ध, बसैटी शिवमन्दिरक अभिलेख इत्यादि । एकर अतिरिक्त लेखक इन्द्रावतीसँ सम्बद्ध स्थल सभक परिभ्रमण कऽ कऽ तथ्य सब एकत्रित कयलनि ।[9]

लेखक इन्द्रावतीक चरित्र ओ उपलब्धिकेँ केन्द्रमे राखि उपन्यासक रेखा खिचलनि अछि जे सोझे डाढ़िये बढ़ल चल गेल अछि । ऐतिहासिक तथ्य सभक कोलाज बनाय ओकर बीचक गैप सबकेँ अपन तद्‌युगीन कल्पनाक रंग-टीपसँ भरबाक प्रयास कयलनि अछि । इन्द्रनारायणराय ओ इन्द्रावतीक विवाहक अवसरपर विध-बाध, भोजन विन्यास आदिक वर्णन करैत लेखक कुलीनताक प्रति बेसी आग्रही बुझना जाइत छथि ।

इन्द्रनारायण ओ इन्द्रावतीक द्विरागमन-यात्राक क्रममे नव दम्पतीक बीच भेल ऐकान्तिक गप्प-सप्पक ब्याजेँ लेखक समकालीन शिक्षा प्रणालीक चित्र उरेहबाक प्रयास कयलनि अछि । मुदा बारह वर्षीया इन्द्रावतीकेँ लीलावती समेत अनेक शास्त्रमे प्रवीणा होयब जेना अरघैत नहि अछि ।[10] ओहुना नवविवाहित दम्पतीक बीच उल्लासक एहि क्षणमे किछु रोमांटिक गप्प होयब बेसी छजितय मुदा तकर बदला दुनू गोटामे

शुष्कवार्त्ता होइछ जे पाठककेँ नहि रुचतनि । उपन्यासमे लेखक समकालीन परिदृश्य उरेहबाक अपना जनैत पूर्ण प्रयास कयलनि अछि । तथ्यक विश्वसनीयताक प्रतीति करयबाक हेतु विभिन्न ठाम इस्वी आ आँकड़ा सभक उल्लेख करैत गेलाह अछि । मुदा ई सब जँ उपन्याससे कोनो घटनाक माध्यमसँ परसल जैतय तँ ताहिसँ बेसी स्वाभाविकता अबितय । मुदा लेखक जखन स्वयं बीच-बीचमे उपस्थित भऽ तथ्य उपस्थापित करऽ लगैत छथि तँ ई नहि केवल आँकड़ जकाँ गड़ैत अछि अपितु उपन्यासक प्रवाहमे अवरोध ठाढ़ करैत अछि । एतावता एहि प्रकारक किछु त्रुटिक उपरान्तो **एक छलीह महारानीके** सफल इतिहासमूलक उपन्यास मानबामे तारतम्य नहि अछि । उपन्यासक ऐतिहासिक तथ्यकेँ निधोख सन्दर्भ-स्रोतक रूपमे ग्रहण कयल जा सकैत अछि ।

इतिहासमूलक नवीनतम उपन्यास दृष्टिगोचर भेल अछि राजनाथमिश्रक मोगलानी । एहि उपन्यासक रचयिता इतिहासक मर्मज्ञ छथि । तेँ भावनावश नहि अपितु पर्याप्त शोधक उपरान्त ओ एहि उपन्यासक रचना कयलनि अछि । एहि उपन्यासमे मुगल वंशक बेटी लोकनिपर थोपल गेल एकटा अप्राकृतिक यातनाकेँ केन्द्रमे राखि उपन्यासक ठाठ ठाठल गेल अछि । सम्राट अकबर अपना समयमे एहन नियम बनौलनि जे मुगल राजपरिवारक कोनो बेटीक विवाह नहि कराओल जयतनि । ओ जीवन पर्यन्त अक्षत यौवना रहतीह । मुदा दोसर दिस मुगल शाहजादा लोकनिकेँ अपन हरदमे अनेको स्त्रीकेँ रखबाक स्वतन्त्रता छलनि । जहाँगीरसँ लऽकऽ शाहजहाँक शासनावधिक बीच मुगल वंशक शहजादी लोकनि मुगलिया जनानखानामे एकसरे औना-औना कऽ जीवैत रहलि । मुगल राजवंशक ई अमानवीय प्रथा कोना नारी उत्पीड़नक पर्याय बनल जे एहि वंशमे भितरे भीतर घून लगौने चल गेल । मुदा औरंगजेब अपन पिता ओ पारिवारिक परम्पराक विरोधमे जाय अपन पुत्रक विवाह अपन भाय शूजाक पुत्री गुलरुखसँ करब निश्चित करैत अछि । ई परिवर्त्तन मुगलवंशमे एकटा क्रान्ति आनि देलक जकर परिणाम भविष्यमे देखल गेल ।

उपन्यासकार प्रचुर तथ्यक आलोकमे मुगल राजवंशक एहि आन्तरिक मूक परिदृश्यकेँ अत्यन्त कलात्मकता ओ विश्वसनीयताक संग उपस्थापित कयलनि अछि । मुगल वंशक नीरस इतिहासक भीतर एतेक मार्मिकता अछि तकरा सम्पूर्णतः उभारि सकबामे लेखक सफल रहलाह अछि । ई उपन्यास पाठककेँ नीक जकाँ बान्हि लैत अछि आ ओकर संवेदनाकेँ जगा दैत अछि ।

इतिहासाभासपरक उपन्यास

एहन उपन्यास जे मात्र इतिहासक आभास करबैत अछि, ओकर किछु पात्र ऐतिहासिक होइक आ शेष वर्णन लेखकक कल्पना प्रसूत होइनि किंवा अपन

अपटुता वा पूर्वाग्रहक कारणे लेखक ओहि ऐतिहासिक चरित्रहुक संगे न्याय नहि कऽ सकल होथि तँ ताहि कोटिक उपन्यासकेँ इतिहासाभासपरक उपन्यास कहब समीचीन होयत ।

एहि कोटिक उपन्यासमे जे पहिल उपन्यास दृष्टिपथपर पड़ैत अछि ओ थिक मायानन्दमिश्रक **मंत्रपुत्र** (1986) साहित्य अकादेमी द्वारा 1988मे एहि उपन्यासकेँ पुरस्कृत कयल जा चुकल अछि । एहि उपन्यासक विषयवस्तु अछि पूर्व वैदिक काल । मुदा एहि कालखंडक कथानककेँ ग्रहण करितो उपन्यासकार एकर यथातथ्यताक निर्वहण नहि कऽ सकलाह अछि । साम्राज्यवादी इतिहासकार लोकनि द्वारा आर्य-अनार्यक एकटा विभेदकारी व्याख्या कयल गेल एव वामपंथी इतिहासकार लोकनि ओहि व्याख्याकेँ औरो बेसी परिपुष्ट करैत रहलाह । मायानन्दमिश्र ओही व्याख्यासँ प्रभावित भऽ मंत्रपुत्रक रचना कयने छथि । हिन्दीमे रांगेय-राघव एवं राहुल सांस्कृत्यायन प्रभृति वामपंथी लेखक लोकनि द्वारा एहि कोटिक इतिहासभासापरक उपन्यासक लेखन कयल गेल अछि । मायानन्दमिश्र अपन मंत्रपुत्रमे ओकरहि अनुकरण करैत देखल जाइत छथि । आर्यकेँ बाहरसँ आगत एकटा आक्रान्ता एवं शोषक वर्ग सिद्ध करबाक प्रयत्न करैत एहि उपन्यासमे काल्पनिक पात्र ओ घटनावलीक ततेक बेसी प्राचुर्य अछि जे एहिमे इतिहास ताकबे व्यर्थ अछि।

एहि कोटिक दोसर उपन्यास थिक गोविन्दझाक **विद्यापतिक आत्मकथा** (1993) । विद्यापति एकटा निर्विवाद ऐतिहासिक पात्र छथि आ हिनका सम्बन्धमे आ हिनक युगक सम्बन्धमे जतेक ऐतिहासिक तथ्य सब उपलब्ध अछि ताहि आधारपर एकटा प्रामाणिक इतिहासमूलक उपन्यासक लेखन कयल जा सकैत छल, मुदा से करबामे गोविन्दझा कदाचित् चूकि गेलाह । आत्मकथात्मक शैलीमे लिखित एहि उपन्यासमे लेखक दाबा कयलनि अछि जे ओ विद्यापतिसँ सम्बद्ध समस्त मिथक सभक परित्याग करैत मात्र तथ्यक अनुसरण कयलनि अछि । मुदा उपन्यास पढ़ला उत्तर ई सर्वत्र प्रतीत होइत अछि जे लेखक भने मिथकक परित्याग कयने होथि मुदा ओ ओहि भ्रान्त अवधारणा सभक शिकार अवश्ये भऽ गेलाह अछि जे सत्ताच्युत ओइनिवार राजवंश और सत्तासीन खड़ौरय वंशक बीच दीर्घकाल धरि चलैत रहल टकरावक कारणे क्रमशः पसरैत चल गेल । उपन्यासकार ने तँ ऐतिहासिक तथ्ये आ ने विद्यापतिक चरित्रेक संग न्याय़ कऽ सकलाह अछि । जखन विद्यापति रचित कीर्त्तिलतामे स्पष्ट अछि जे असलान गणेश्वरक हत्या कयलक तँ पुनः भवसिंहपर लगाओल गेल मिथ्या कलंक-कथाकेँ एहि उपन्यासमे ग्रहण करबाक की औचित्य अछि ? एहन अनेकशः भ्रान्ति ओ विसंगतिसँ आक्रान्त अछि

ई उपन्यास । लगैत अछि जेना कोनो पूर्वाग्रहसँ ग्रस्त भऽ लेखक इतिहासक संग खेलौर कऽ रहलाह अछि ।

इतिहासाभासपरक उपन्यासमे उषाकिरण खानक **भामती** (2007)केँ सेहो लेल जा सकैत अछि । द्वादश दर्शनक वेत्ता, शंकराचार्यक ब्रह्मसूत्रक 'भामती' नामसँ टीका कयनिहार वाचस्पतिमिश्रक पत्नी भामतीकेँ केन्द्रमे राखि एहि उपन्यासक वितान तानल गेल अछि । वाचस्पति ओ भामती दम्पती अवश्ये इतिहास-पात्र छथि जनिका सम्बन्धमे प्रचलित अनेक दन्तकथा सब हुनक जीवन्तताक प्रमाण अछि । एकर लेखिका इतिहास विषयक प्राध्यापिक रहलीह अछि, मुदा उपन्यास लेखन-कालमे ओ अपन विषय-विशेषज्ञताकेँ स्वयंसँ सर्वथा फराक रखैत विशुद्ध सामान्य लेखिकाक रूपमे एकर लेखन कयलनि अछि । उपन्यासक शेष सब पात्र ओ घटनावली हिनक अपन कल्पनाक उपज थिकनि तेँ इतिहाससँ सम्बद्ध रहितो एहिमे ऐतिहासिकता तकबाक प्रयास व्यर्थ होयत । एहि उपन्यासक भाषा जतबे विकृत ओ अनसोहाँत अछि ततबे एकर वर्णन शिथिल एवं वातावरण निर्जीव सन अछि ।

एही कड़ीमे चारिम उपन्यास प्रकाशित भेल अछि वीणाठाकुरक **भारती** (2009) । मिथिलाक गौरवशाली विद्वत् परम्परामे मण्डन-भारती दम्पतीक नाम प्रमुखतासँ लेल जाइत छनि । किंवदन्ती अछि जे भारती शास्त्रार्थमे शंकराचार्यकेँ पराजित कयने छलथिन । एही किंवदन्तीकेँ आधार बनाय एहि उपन्यासक लेखन कयल गेल अछि। ऐतिहासिक तथ्य एहिमे गौण अछि । जे किछु घटना अछि से लेखिकाक अपन कल्पना थिकनि । मुदा उपन्यास हेतु जे तदनुकूल वातावरण चाही तकर निर्माण दिस लेखिका एहिमे सचेष्ट देखल जाइत छथि आ उपन्यासक भाषा, शब्दक चयन ओ ठाम-ठाम दार्शनिक मंथनयुक्त व्याख्यान सब एहिमे सहायक भेल अछि। एकटा दार्शनिक दम्पतीपर केन्द्रित उपन्यासमे दर्शनक झाँस रहब स्वाभाविक अछि। मुदा एहिमे तकर अतिरेक भऽ गेल अछि । असन्दर्भित दार्शनिक व्याख्यानक प्राचुर्यक कारणे उपन्यास जबदाह भऽ गेल अछि । लगैत अछि जेना वर्त्तमानमे बैसि लेखिका अतीतक कल्पनात्मक कमेंट्री कऽ रहल होथि । एहि कारणे पाठकक मानस पटलपर एहि उपन्यासक घटनाक चित्र नहि उभरि पबैत अछि । एकर शैली श्रव्य साहित्य परम्पराक अधिक निकट अछि ।

निष्कर्षतः कहल जा सकैछ जे मैथिली उपन्यासक विकास यात्रा आब अपन दोसर शताब्दीमे प्रवेश कऽ चुकल अछि, मुदा एतेक दिनमे आँगुरेपर गनल जयबा योग्य मात्र किछु इतिहासमूलक उपन्यासक लेखन कयल जायब मैथिली साहित्यमे गम्भीर ओ गवेषणापूर्ण लेखनक अभावकेँ प्रदर्शित करैत अछि । एहनामे

आवश्यक अछि जे साहित्यसँ इतर इतिहास, दर्शन, अर्थ, राजनीति आदि क्षेत्रक विद्वान लोकनि अपन गहन अध्ययनकेँ उपन्यासक रूपमे उपस्थापित कऽ मैथिलीक एहि घोर अभावकेँ दूर करथि।

सन्दर्भ :

1. अनिलचन्द्र बनर्जी, **जदुनाथ सरकार (मोनोग्राफ)**, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली, 1996
2. विद्याधर महाजन, **प्राचीन भारत का इतिहास**, एस चन्द एण्ड कंपनी लि., नई दिल्ली, 1986
3. चन्द्रनारायण मिश्र, बालादित्य, मैथिली अकादमी, पटना, 1980
4. **इंडियन एंटीक्वेरी, वो. 1, नं.-4,** बम्बइ
5. **बुलेटिन ऑफ मिथिला रिसर्च इंस्टीच्यूट** (महाराजाधिराज डा. सर कामेश्वरसिंह मेमोरियल वोल्यूम), वो. 1, पार्ट-2, दरभंगा
6. रामशरणशर्मा, **प्राचीन भारत**, एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली, 1990
7. मदनेश्वरमिश्र, **एक छलीह महारानी**, उषा-तीर्थानन्द प्रकाशन, पूर्णिया, 1993
8. गोविन्दझा, **विद्यापतिक आत्मकथा**, पटना, 1993
9. **विद्यापतिकृत पुरुष परीक्षा**, (अनु.) चन्दाझा, राज दरभंगा यन्त्रालय, शाके 1810
10. **कीर्त्तिलता**, वासुदेवशरण अग्रवाल (व्याख्याकार), साहित्य सदन, झाँसी, 1962
11. उपेन्द्रठाकुर, **मिथिलाक इतिहास**, मैथिली अकादमी, पटना, 1980
12. मिसरूमिश्र, **विवादचन्द्रः**, विद्याविलास प्रेस, बनारस, 1931
13. उषाकिरणखान, **भामती (अविस्मरणीय प्रेमकथा)**, मंच प्रकाशन, पटना, 2007
14. वीणाठाकुर, भारती, मिथिला रिसर्च सोसाइटी, दरभंगा, 2009

●

पत्रात्मक समीक्षाक दर्पणमे रामदेवझाक साहित्य

समीक्षावृत्ति स्वयंमे एकटा सम्पूर्ण शास्त्र थिक । समीक्षाक कतेक प्रकार अछि से हमर विचारक विषय नहि । अपितु हमर विचारणीय वस्तु अछि समीक्षाक प्रस्तुति विधान । सामान्यतः कोनो साहित्यिक कृतिक समीक्षाक प्रस्तुति दू प्रकारेँ कयल जाइत अछि - वाचन आ लेखन द्वारा । वाचनसँ तात्पर्य अछि जे कोनो गोष्ठी इत्यादिमे कोनो कृतिक समीक्षाक वाचन समीक्षक द्वारा सार्वजनिक रूपसँ कयल जाइत अछि, जाहिपर मुक्त विचार-विमर्श होइछ । समीक्षा प्रस्तुतिक दोसर प्रकार अछि प्रकाशनक द्वारा एकरा पाठक समुदाय धरि पहुँचायब । चाहे ओ प्रकाशन पत्रिकाक माध्यमे हो किंवा कोनो पोथीक रूपमे । समीक्षा प्रस्तुतिक इहो पद्धति सार्वजनीने होइछ जाहिमे साहित्य-रसिक ओ पाठक वर्ग एकर रसास्वादन लैत एहिमे सहभागी सेहो बनैत छथि । समीक्षा प्रस्तुतिक ई दुनू प्रचलित पद्धति जेँ की सार्वजनिक अछि तेँ एहिमे कतोक गुण आ दोष होयब स्वाभाविक अछि । समीक्षाक रूपमे अपन विचार ओ दृष्टिकोणकेँ सार्वजनिक करबाक क्रममे कतोक प्रकारक राग-द्वेष ओ आग्रह-पूर्वाग्रहसँ ग्रस्त भऽ जायब सहज मानवीय स्वभाव अछि। एहि कारणे बहुधा देखल जाइछ जे बहुत कमे समीक्षा नीरक्षीर विवेचनक कसौटीपर उतरि पबैत अछि अन्यथा वा तँ ओ समीक्षा काकवृत्ति किंवा कोकिलवृत्तिक पाटि धऽ लैत अछि । ताहिपरसँ जँ क्रिया-प्रतिक्रिया, टीका-टिप्पणी आदि प्रारम्भ भेल तँ समीक्षा अपन उद्देश्यकेँ बिसरा एकटा तेसरे स्वरूप ग्रहण कऽ लैछ आ बहुधा संवादक स्थानपर विवाद ठाढ़ भऽ गेल करैछ । एहि कारणे साहित्यिक विचार-विमर्श अपन निष्कर्ष धरि नहि पहुँचि पबैछ ।

समीक्षा प्रस्तुतिक उपर्युक्त दुनू पद्धतिसँ इतर एकगोट एकर औरो प्रकार अछि जाहिमे एहि प्रकारक विवादक कोनो खतरा प्रायः नहि रहैत अछि । ओ पद्धति

थिक – पत्रात्मक समीक्षा । पत्रात्मक समीक्षासँ हमर तात्पर्य अछि जे पत्रक माध्यमसँ कोनो विद्वान् किंवा पाठक लेखकक कोनो कृतिपर अपन विचार ओ प्रतिक्रिया प्रेषित करैत छथि । ओ एकान्तिक विचार सेहो साहित्यिक समीक्षा प्रस्तुतिहिक एकटा प्रकार थिक। यद्यपि एहि दिस एखनो साहित्य विशेषज्ञ लोकनिक ध्यान नहि गेलनि अछि । साहित्यकार लोकनिक बीच एहिसँ सन्दर्भित होइत निजी पत्राचार किंवा पत्रक रूपमे प्राप्त बोधगर पाठक लोकनिक प्रतिक्रिया वस्तुतः कागतक भीड़मे दबले रहि जाइछ वा नष्ट भऽ जाइछ । हमरा जनतबेँ तँ ई पत्रात्मक समीक्षा, समीक्षा पद्धतिक विशुद्धतम रूप थिक । जेँ की ई समीक्षा निजी पत्राचारक द्वारा कयल जाइछ तेँ एकरा सार्वजनिक होयबाक कोनो प्रश्न नहि रहैत छैक । एहिमे ककरो तेसराक हस्तक्षेपक सम्भावनो नहि रहैत छैक । तेँ एहि प्रकारक पत्रमे कोनो कृतिक सन्दर्भमे व्यक्त विचार कोनो प्रकारक आग्रह–पूर्वाग्रहसँ मुक्त रहैत अछि से मानल जयबाक चाही । अपितु 'पत्रात्मक समीक्षा'क सम्बन्धमे इहो कहब अनुचित नहि होयत जे जेँ की एहिमे प्रेषक लेखकमे आत्मप्रचार किंवा प्रेषिती साहित्यकारपर सुनियोजित प्रहारजन्य कोनो दुर्भावना नहि रहैछ आ जकर गुंजाइस एहि पद्धतिमे छैको नहि, तेँ समीक्षाक एहि प्रकारमे अभिव्यक्त विचार कोनो प्रकारक बाह्य प्रभावसँ सुरक्षित रहैछ । कहल जयबाक चाही जे पत्रात्मक समीक्षाक रूपमे व्यक्त विचार ओकर लेखकक आन्तरिकता, ओकर साहित्य दृष्टि ओ साहित्य बोधकेँ विशुद्ध रूपसँ प्रदर्शित करैत अछि। जाहि तथ्यकेँ कोनो विद्वानकेँ सार्वजनिक रूपसँ व्यक्त करबामे संकोच होयतनि, किंवा कोनो दबावक कारणे ओ व्यक्त नहि कऽ पबैत होथि तेहन विचार पत्रक माध्यमसँ इमानदारीपूर्वक ओ व्यक्त कऽ पबैत छथि । अवश्ये ई विचार कखनो कटु, कखनो मधुर, कखनो उपदेशप्रद, कखनो कोनो आने प्रकारक भऽ सकैछ । परन्तु ई जाहि कोनो प्रकारक हो, प्रत्येक रूपमे ई विशुद्ध ओ स्वच्छ होइत अछि । एहि रूपमे अवश्ये ई विमर्श अपन निष्कर्ष धरि पहुँचैत अछि जे प्रायः समीक्षाक पारम्परिक पद्धतिक द्वारा सम्भव नहि भऽ पबैछ ।

मैथिली भाषा–साहित्यमे रामदेवझा 'सव्यसाची' साहित्यकारक रूपमे ख्यात छथि । हिनक लेखनी जतबे रचनात्मक साहित्यिक विधाक क्षेत्रमे प्रखर रहलनि अछि, ततबे अनुसन्धान–आलोचनामे मुखर रहलनि अछि । रामदेवझाक विभिन्न रचना ओ कृति सभपर निरन्तर कोनो अज्ञात–अपरिचित पाठक किंवा मैथिलीक मान्य विद्वान् ओ साहित्यकार, किंवा साहित्यसँ इतरहु क्षेत्रक साहित्यप्रेमी विशिष्ट जन लोकनिक विचारात्मक–आलोचनात्मक–प्रशंसात्मक पत्र सब अबैत रहलनि अछि । एहि पत्रावलीमेसँ अनेक पत्र निस्सन्देह महत्त्वपूर्ण अछि जकर समीक्षात्मक मूल्य छैक ।

रामदेवझा, सन्धिकाल (1950-1960) किंवा ललित-मायानन्द पीढ़ीक निविष्ट कथाकार छथि । हिनक प्राय: अधिकांश कथा सभ पाठक द्वारा समादृत होइत रहलनि अछि । 11 जनवरी 1976 क मिथिला मिहिरमे हिनक **हत्थाजोड़ी** कथा प्रकाशित भेल छलनि । समाजक निम्नवर्गीय एकटा दम्पतीक आपसी नोंक-झोंक ओ राग-विराग, पति द्वारा अपन पत्नी मानवतीक नारीत्वक अपमान ओ पुन: पतिपर भेल चतुर्दिक प्रहारसँ पत्नीक हृदयमे उपजल अजस्र मात्सर्यक कारणे एकटा रोचक दृश्य उपस्थित करैत ई कथा अपन प्रकाशनक बाद बेस चर्चित भेल छल । साहित्य सेहो कखनो कऽ रोग निवारक औषधिक काज करैत अछि तकर प्रत्यक्ष प्रमाण अछि एहि कथापर जमशेदपुरसँ पठाओल एकटा पाठक दम्पतीक पत्र । एतऽ इहो बात ध्यातव्य जे हत्थाजोड़ीपर उक्त पाठकक प्रतिक्रिया कथाकारकेँ नहि पठाओल गेल छलनि अपितु पाठकक स्तम्भमे प्रकाशनार्थ मिथिला मिहिरकेँ पठाओल गेल छलैक । मिहिर एहि रोचक पत्रकेँ प्रकाशित नहि कयलक तकर जे कारण रहल हो, मुदा मिहिरक सम्पादन कार्यसँ ओहि समयमे सम्बद्ध रहल भीमनाथझा उक्त पत्र सोझे कथाकारकेँ निम्न टिप्पणीक संग पठौलथिन -

मिथिलामिहिर, पटना / 18 मार्च 76

स्वस्ति, डाक्टरसाहेब,

एहि पाठक-पाठिकाक सम्मिलित प्रतिक्रियासँ मिहिरक अन्य पाठक लोकनिकेँ नहि अवगत करा सकबाक खेदक संग प्रेषित अछि ई पत्र । जँ दसो दिन पूर्व हमरा ई भेटि गेल रहैत तँ (फगुआ अंकक माध्यमे) एना नहि पठबऽ पड़ैत !

-भीमनाथझा

पैरमे मेच पड़लाक पीड़ासँ त्रस्त जमशेदपुरक श्री एवं श्रीमती गंगेशझाकेँ **हत्थाजोड़ी** कथा कोना अपन पीड़ाकेँ बिसरबाक हेतु विवश कऽ देलकनि, कोना झा-दम्पती एहि कथाकेँ पढ़ि हँसि कऽ लोट-पोट होइत रहलाह से हुनकहि एहि पत्रसँ जानल जा सकैछ -

जमशेदपुर /6 मार्च 1976

अभिन्न हृदय स्नेही सम्पादक महोदय, जय मैथिली ।

आगाँ 11 जनवरी 76क मिहिरक अंकक 'हत्थाजोड़ी' कथाक प्रणेता डा. श्रीरामदेवझाजीकेँ अपनेक पत्रिकाक माध्यमसँ हुनका धरि, हमरा लोकनिक शुभकामना व्यक्त करबाक हेतुएँ अपनेसँ आग्रह । संयोगवश हुनक ई कथा पढ़बाक मौका किछु विलम्बसँ तखन भेल जखन हम रातिमे पैर मुका मोचक दर्दक कारणेँ दवा-दारू

आ घरैया उपचारक बादो पीड़ित छलहुँ । हमरा कष्टमे देखि ध्यान मोड़बाक ख्यालसँ मिहिरक यैह कथा हमर गृहिणी हमरा सुनाबय लगलनि । कथाक रोचकता तद्वते हमर ध्यान आकृष्ट करैत गेल आ दर्द हमर भुलाय लागल । श्रद्धेय हरिमोहनबाबूक अलभ्य कृतिकेँ बहुत पूर्व पढ़लाक बाद मैथिलीमे पुनः दोसर बेर यैह कथा पढ़लाक बाद हम सपरिवार ओतेक हँसलहुँ अछि । ओतवे नहि, गृहिणीसँ पोथी लऽ हम स्वयं कथाक अगिला अंश पढ़बामे दत्तचित्त भेलहुँ । पढ़ैत काल हँसी ततेक ने लागय जे पेटमे बघापर बघा पड़य लागल । तइयो तोड़ नहि थम्हय । विद्यार्थी सब द्वारा कुब्बी आ ठुनका मारिक आगाँ हँसीक बाढ़ि नहि रुकि सकल । फलतः आगाँ पढ़बक क्षमता हमरा नहि रहल । कहुना कथाक शेष अंशकेँ पढ़ि सुनयबामे हमर गृहिणीकेँ कमसँ कम पाँच मिनट प्रति पाँती जरूर लगनि आ कहबाक बात नहि हमर दर्द राति भरुक हेतु भागि गेल छल ।

डा. साहेब मनतोरियाक मान तोड़यबाक जाहि ताना-बानासँ कथा-जाल बुनलनि अछि सम्भवतः ओ समाजक हजारो-हजार मानवतीक यथार्थ मान-चित्रणक समस्या थीक । समाजक एक एहेन मनतोरियाक प्रत्यक्ष अनुभूति हमरा लोकनिकेँ अछि जे डा. साहेबक सीमा-रेखाकेँ लाँघि एहि मोह-मायासँ उबि सरिपों दोसर संसारक बाट सदाक हेतु धऽ लेलक । हमरा लोकनि डाक्टरसाहेबक हास्यरसयुक्त यथार्थ चारित्रिक चित्रण क्षमता आ हुनक कलम चातुर्यक सतत कायल छी । भगवतीसँ प्रार्थना हुनक सुदीर्घ लेखन कलाक प्रसादेँ माँ मैथिलीक श्रीवृद्धि अभिनव होइत रहय आ पाठकवर्ग हमरे जकाँ पीड़ारहित भय तकर रसास्वादनमे अनन्त काल धरि लीन रहथु । अपनेक नायकत्वमे 'मिहिर' लोकचित्तक संस्कार करैछ आओर करैत रहत, ताहि विश्वासक संग -

श्री/श्रीमती गंगेशझा 'रश्मि'

अध्यक्ष- मिथिला नवयुवक संघ

189/2/8, छोटा गोविन्दपुर, जमशेदपुर - 4

रामदेवझाक कथा संग्रह **मनुक सन्तान** बेस चर्चित रहलनि । मानव मात्रकेँ एक बूझि समस्त प्राकृतिक संसाधनपर सभक समान अधिकारक पैरवी करैत ई संग्रह विभिन्न विचारधाराक लोकककेँ प्रभावित कयलक । 1966 मे प्रकाशित हिनक एहि कथा संग्रहक कतोक कथाक अनुवाद भाषान्तरहुमे भेल अछि । एहि संग्रहपर एकटा खास विचारधाराक अवक्षेपण जानि ई संग्रह कम्युनिस्ट शासन पद्धतिबला देश रूसमे सेहो पहुँचल आ ओतहु पढ़ल गेल । एहने एकटा नेपालीय मैथिलीभाषी आ मास्को प्रवासी पाठक देवनारायणठाकुर पत्रक माध्यमसँ **मनुक सन्तान**पर अपन प्रतिक्रिया पठौलनि । कम्युनिस्ट शासनक ओहि यौवन कालमे ओहि विचारधारासँ विशेष

प्रभावित देवनारायणजी रामदेवझाक कथाक प्रशंसा तँ करैत छथि, मुदा हुनक मानसपटलमे जे वर्ग-संघर्षक स्वरूप छलनि ताहि धरि रामदेवझाक कथाकेँ नहि पहूँचि पयबाक कारणे ओ एकरा आलोचनो करैत छथिन –

मास्को / 26 मइ 1976

परमादरणीय रामदेवबाबू, नमस्कार ।

हमरासँ अहाँ परिचित नहिए होयब । हम नेपाल तराइक कठाल गाँवक वासी छी । मास्कोमे अध्ययन कऽ रहल छी । तीन वर्ष बीत गेल, चारि वर्ष सोवियत संघमे रहब । अपन विषयक अध्ययनक अलावा मातृभाषा मैथिलीक सेहो उन्नति करबाक संकल्प लेने छी । 12 अक्टूबर 1973 केँ सोवियत संघमे अध्ययनरत मैथिलीभाषी बन्धु लोकनि द्वारा अखिल मैथिल समाज, सोवियत संघक स्थापना कयल गेल । संस्थाक पूर्व अध्यक्ष अजीतकुमार दास (प्रायः अपनेक ग्रामीण) हमरा लोकनिकेँ अपनेक मातृभाषा सेवासँ परिचय करौलनि, अपनेक किताब सब पढ़य लय देलनि । मैथिली भाषाक विकासमे अहाँ जुझल छी, बहुत खुशीक गप्प । अहाँ सन-सन विद्वान् मिथिलाक लेल एक-दू गोट नहि बल्कि अनेको चाही । एखन हम 'समाज'क प्रधान सचिवक पदपर काज कऽ रहल छी । एहि विदेशमे मातृभाषाक उन्नति आ पहचान बनयबा लय डेग-डेगपर अहाँक मार्गदर्शनक जरूरत अछि ।

अहाँक लिखित 'मनुक सन्तान' पढ़ऽ के मौका भेटल । ओना तऽ 1966 के लिखल पोथी हम 1976 मे पढ़लहुँ । मुदा साहित्य कहियो पुरान नहि होइत छैक । एहि किताबक सातो कथा एक-एक कऽ पढ़लहुँ अछि । एहि सम्बन्धमे हम अहाँ के किछु कहऽ चाहैत छी । जहाँ धरि 'मनुक सन्तान' पोथीक सम्बन्ध छैक हमरा बहुत नीक लागल । कारण ई नहि छैक जे एकरा डा रामदेवझा लिखने छथि, बल्कि मिथिलाक भाषामे मिथिला ओ मैथिल लोकनिक अवस्थाक आँखि देखल वर्णन ऐना जकाँ झलकैत अछि । एहि पोथीकेँ पढ़लासँ हम अहाँकेँ एक नीक सामाजिक लेखकके रूपमे राखि सकैत छी । अहाँक सभ कथामे जे वर्णन अछि से वास्तवमे एखन मिथिलामे घटि रहल छैक । मास्कोमे रहितो हमरा आँखिक सामने आबि गेल अछि । उदाहरण स्वरूप –

'मनुक सन्तान' (कथा)सँ – जिरिया मुनेसराक गप्पपर बड़ी जोरसँ बाजि उठलि – हे मुनेसरे ! बेसी लब-लब नै करऽ, अपनाकेँ काबिल बुझै छथि ।'

– जनपिट्टेकेँ आङ-समाङ ढहि जयतनि । जाहि हाथे डोका पानिमे फेकलनि से हाथ गलि जयतनि, ओहिमे डिठौरी भऽ जयतनि ।'

'नकली आदमी'सँ- तावत क्यौ बाजल-ए कमल माय! गुड़ दियउ ने मुँहमे । आइ कनिञाक मुँह मधुर कऽ दिअउ तँ पुतोहु होयत, पियरगरि.... ।'

'परमिलिया'सँ- ई चकत्ता सन देह कथी लेल छै ?'

-परमिलियाकेँ होइत छलैक जे जाँतमे गड़ि जाय । ओ अपन मूड़ीकेँ झुकबैत-झुकबैत जाँतमे सटा लेने छलि । ओ अन्न-धुन्न पिसने जाइत छलि । ओकर कपार परक केशक लट चिक्कसकेँ छूबि-छूबि लैत छलैक ।'

'भितरिया धधरा'सँ- मुचकुनमा ठाढ़ भेल देखैत रहल । सड़कपर, खेतमे, इनारक लहरापर, मन्दिरक पछुआड़मे, बढ़मथानक अङनइमे, पीपर तर..... सभ ठाम छौंड़ा सभ उक्का-बाती लेने सोहरल छल ।'

उपर्युक्त पाँती सभकेँ पढ़ि कोनो मिथिलावासीक दिमागमे अपन मिथिलाक अवस्था आबि जेतैक चाहे ओ सात समुन्दर पार किएक ने हो । अहाँक कथाक यैह विशेषता हमर हृदयकेँ छूबि लेलक । मुदा कोनो मनुक्ख आदर्श नहि होइत छैक । सभमे कोनो ने कोनो प्रकारक अवगुण अथवा कमी रहिते छैक । हमरा विचारेँ अहाँमे सेहो हम कमी निम्न रूपमे देखि रहल छी । कथा, सभ क्यौ नहि लिखि सकैत अछि, मुदा मात्र समाजक अवस्था हू-ब-हू ऐनाक प्रतिविम्ब जकाँ उतारि देनाइ हमरा विचारमे बहुत मुश्किलो नहि । कहबाक तात्पर्य ई जे अहाँ समाजक जेहन अवस्था देखा रहल छी, ओहि के पाछू अहाँक की उद्देश्य अछि ? अहाँ समाज सुधारक अथवा प्रगतिशील लेखकके रूपमे आबऽ चाहैत छी त अहाँके चाही जे समाजक अवस्थाके वर्णन करैत नीक बाट सेहो देखाबी । जेना कि जाहि ठाम अखन डोका बिछैत, जाँतमे अखन धरि पिसैत लोकसभ अछि । पुरुष-स्त्रीक अवस्थामे आकाश-पातालक फर्क छैक । एहि सम्बन्धमे हमरा विचारसँ अहाँक लेखनी नहि पहुँचि सकल अछि, मतलब समाज सुधारक पक्षमे । माफ करब भऽ सकैत अछि अहाँके हम नीक जकाँ नहि बूझि सकलहुँ अछि । सभ किछु होइतो हम अहाँके हृदयसँ धन्यवाद दैत छी खास कऽ ओहि लेल जे अहाँ हमरा सन नवयुवककेँ नया रास्ता (बाट) देखा रहल छी । अहीँके शब्दमे-बाल्यकालमे पजरल भितरिया धधरा भविष्यक भीषण क्रान्तिकारीक निर्माण करैत छैक ।' आशा अछि धधराकेँ बुझाय नहि देबैक । अपनेक-

देवनारायण ठाकुर

प्रधान सचिव

अखिल मैथिल समाज, सोवियत संघ, मास्को

रामदेवझाक कथाक तेसर संग्रह **धरतीमाता**क प्रकाशन 1985मे भेलनि। पूर्वक कथा संग्रह जकाँ धरतीमाताकेँ सेहो पाठकीय सुख ओ समीक्षा-समालोचनाक प्रचुर अवसर प्राप्त भेलैक। तद्वते कतोक साहित्यिक बन्धु लोकनि सेहो पत्र लिखि एहि पोथीपर अपन प्रतिक्रिया व्यक्त कयलथिन। धरतीमातापर प्राप्त एहि पत्रात्मक समीक्षामे एकटा महत्त्वपूर्ण पत्र अछि मैथिलीक स्वनामधन्य साहित्यकार कीर्त्तिनारायणमिश्रक पत्र जकरा एतऽ अविकल प्रस्तुत कयल जाइछ–

चित्तावालसा जुट मिल्स, विशाखापत्तनम

14 जून 1989

प्रिय भाइ,

अहाँक 20/05क पत्र गामसँ घुरलाक बाद प्राप्त भेल। पछिला सप्ताह पोथी सब सेहो प्राप्त भऽ गेल। अहाँक दू गोट कथा-संकलन 'एक खीरा : तीन फाँक' आ 'मनुक सन्तान' हम पहिनहि पढ़ि चुकल छलहु। 'इजोती रानी' देखबाक अवसर नहि भेटल। 1985मे प्रकाशित अपन कथा-संकलन 'धरतीमाता' द्वारा अहाँ सिद्ध कयलहुँ अछि जे मैथिलीकेर प्रसिद्ध कथाकार श्रीरामदेवझा कथाकारक रूपमे एखनहुँ जीवित छथि सम्पूर्ण मौलिकता-स्वाभाविकताक सङ। संकलनक प्रत्येक कथामे सामान्य जनजीवनसँ एकात्म भए सामाजिक वैषम्य आ समाज-विमुख व्यक्ति-चिन्तनपर प्रहार कैल गेल अछि। आशा अछि, लेखनमे अहाँ नैरन्तर्य बनौने रहब आ अपन नव रचनासँ एहिना प्रभावित-अनुप्राणित करैत रहब। मैथिलीमे नाटकक रचना अपेक्षाकृत कम होइत रहल अछि। अहाँक नाट्य संकलन 'पसिझैत पाथर' एहि विधाकेँ समृद्ध कैलक अछि। हम चाहब जे एकर सभक कहियो कतहु मंचनो देखि सकी। कतेक वर्षसँ अहाँसँ भेट नहि भऽ सकल अछि। आशा अछि, अहाँ सपरिवार स्वस्थ-प्रसन्न हैब। धिया-पुता सब की कऽ रहल छथि? श्रद्धेय श्रीसुमनजी एवं श्रीअमरजीकेँ हमर चरण-स्पर्श कहबनि। पुनश्च– हमरा तीन गोट संकलन बहार करबाक अछि–

1. दश गोट मैथिली कथाक संकलन 2. 'हम स्तवन नहि लिखब'क बादक लिखल प्रायः 60 गोट कविताक संकलन 3. अपन समकालीन साहित्यकारपर लिखल संस्मरणक संकलन। की 'संकल्पलोक'केँ छापऽ लेल तैयार कऽ सकैत छी? पत्राचारक क्रम नहि टूटय-एहि आग्रहक सङ। अहाँक अभिन्न **–कीर्त्तिनारायण**

मैथिली पत्रिका **भाखा**मे मइ-जून 1989मे रामदेवझाक एकगोट शब्दचित्रात्मक कथा **ठमकल घड़ी : पथरायल आँखि** प्रकाशित भेल छलनि। 1942क अगस्त

क्रान्तिक परिप्रेक्ष्यमे लिखित एहि कथामे लहेरियासराय टावरचौक ओ ओकर लगपासक तत्कालीन दृश्य उरेहल गेल अछि । कोनां एकटा राजभक्त जमीन्दारक पीठपर जखन गोरा पलटनक लाठी पड़लनि तँ तकर पीड़ाक अनुभव करैत ओ राजभक्तसँ राष्ट्रभक्त बनैत स्वतन्त्रता आन्दोलनमे कूदि पड़लाह । एहि कथापर पंडौलक पूर्व विधायक, प्रखर समाजवादी चिन्तक, राजनीतिशास्त्रक विद्वान ओ सी. एम.कालेजक पूर्व प्राचार्य प्रो. रमाकान्तझा पत्रक रूपमे अपन प्रतिक्रिया प्रेषित कयलथिन । पत्रमे एहि कथाक भूरिशः प्रशंसा करैत टावरचौकक वर्णन क्रममे किछु छूटल महत्त्वपूर्ण विषय ओ स्थलक दिस कथाकारक ध्यान आकृष्ट करौलथिन-

सोहराय / 12 अगस्त 1989

प्रिय रामदेवजी,

शुभाशीष । मइ-जून 89क भाषा'मे अहाँक 'ठमकल घड़ी : पथरायल आँखि' पढ़ल बड़ नीक लागल । एकदम सजीव चित्रण अछि, भाषाक तँ कोनो गप्पे नहि हो-प्राञ्जल ओ प्रवाहयुक्त । भाव-शैली इत्यादि अनुपम । ओहि लेखसँ बहुत नव ज्ञान भेल आ टावरचौकक महत्त्व हमरा हेतु अत्यधिक बढ़ि गेल । टावरक दोसर महलपर गान्धीजी छथि से अहीँक लेखसँ बूझल, वा यदि कहियो बुझनहुँ छल हैब तँ बिसरा गेल छल । यद्यपि हमहूँ स्वतन्त्रता सेनानी छी, पंडौल सेन्ट्रल बैंकसँ पेन्शनो पबैत छी 1942मे दू वर्ष, चारि मास, चारि दिन बिहारक विभिन्न जहलमे छलहुँ तथापि हमरहु इएह हाल जे अहाँ चित्रित कयल अछि ।

अहाँक लेखमे वर्णित हमरा एकेटा बात बूझल छल जे ई टावरचौक राजनीतिक अखाड़ा थीक । भरि दिन राजनीतिज्ञ लोकनि एतऽ गप्प लड़बैत रहैत छथि । अहाँ खाली एकटा बात छोड़ि देल जे एहि टावरचौकपर गुजिया पानवलाक पानक दोकान सबसँ पुरान अछि आ ओ स्थल वामपन्थी राजनीतिज्ञ लोकनिक अखाड़ा थीक । भरिसक अहाँकेँ ई बात नहि बूझल छल वा जानि-बूझि कऽ छोड़ि देल ? परञ्च ई बात ओहि लेखमे रहब आवश्यक छल । कखनहुँ ई गुजियाक पानक दोकान कर्पूरीठाकुरजीक सेहो अखाड़ा छल । सूरजबाबू कहियो-कहियो एतऽ हुलकी दऽ दैत छलाह । आब ने हम दोसर जिलाक भऽ गेलहुँ परञ्च कहियो तँ हमरहु घर दरभंगे जिला छल आ हमहूँ गुजियाक दोकानपर गप्प लड़ाबी । कृपया ओहि लेखक हेतु हमर हार्दिक बधाइ स्वीकार करू, आ हे एहेन-एहेन लेख जल्दी-जल्दी बहार करैत रहू आ हमरा लोकनिक ज्ञानवर्द्धन करैत रहू । मोन होइत अछि भेट कऽ कऽ बधाइ दी परञ्च से बादमे । सम्प्रति पत्रहिसँ सन्तोष कऽ लैत छी । शेष कुशल । अहाँक परम शुभेच्छु

-श्रीरमाकान्तझा

कथाकार रामदेवझाक लेखनी जतबे मानवीय संवेदनाकेँ चरम धरि पहुँचयबामे सफल रहलनि अछि ताही अनुपातमे ओ पशु संवेदनाकेँ सेहो अपन विभिन्न कथामे मुखरित करैत रहलाह अछि। भारती-मंडन-10 मे प्रकाशित हिनक कथा **कहाँ छेँ रे नुनुआँ** वर्तमान सामाजिक विद्रूपताक अपन यथार्थ चित्रणक कारणे मैथिलीक किछु उत्कृष्टतम कथामे स्थान पयबाक अधिकारी अछि। एहि कथाक भाषा-सौष्ठव ओ शब्द चयन सेहो ततबे अद्भुत अछि। एहि कथापर मैथिलीक जानल-मानल साहित्यकार ओ घराड़ी उपन्यासक लेखक सुशील पत्रक माध्यमे अपन पाठकीय प्रतिक्रिया निम्न शब्दमे व्यक्त कयलनि-

बजबज / 24 मार्च 04

प्रिय महोदय,

नमस्कार। एम्हर 'भारती मंडन'क अंक-10 पढ़बाक अवसर भेटल अछि। एहिमे अपनेक कथा 'कहाँ छेँ रे नुनुआँ' बहुत आकर्षित कयलक अछि। कथा अपन सब धर्म-गुणक संग उत्कृष्ट बनि पड़ल अछि। एहि कथाकेँ पढ़लासँ हमरा एकटा बड़का लाभ भेल अछि। किछु ठेठ मैथिली शब्द सभ जे हम बिसरि गेल छलहुँ, पुनः मानस पटलपर उभरि आयल अछि। 'भारती मंडन'क ई अंक प्रायः दू वर्षपर अयलैक अछि। पत्रिकामे चिट्ठी कहिया ने कहिया छपतैक तकर ठीक नहि। तेँ सबेर सकाल अपनेकेँ दू आखर लिखब अपन धर्म बूझल। वस्तुतः पूछी तँ नहि रहि भेल। पुनः अपनेसँ एकटा आर एहेन सशक्त कथाक आशाक संग-

सुशील

मैथिलीक सुप्रसिद्ध समालोचक ओ अन्वेषी डा. रमानन्दझा रमण सेहो एहि कथाक थीम ओ शिल्पक सम्बन्धमे पत्रक माध्यमे निम्न विचार प्रेषित कयलनि-

पटना / 14 अप्रैल 2004

मान्यवर,

जानवर/पशुक संवेदनाकेँ मानवीय संवेदनाक रूपमे अभिव्यंजित करबाक कुशलता हमरा जनतवेँ विरल होइछ। मानवीय ममताकेँ पशुक हेतु उझिलि देब आओरो विरल। डा. धीरेन्द्रक 'सुगरक बाप' आ विभूति आनन्दक 'जानवर' मे ई संवेदना मुखर भेल भेल छल, किन्तु 'कहाँ छेँ रे नुनुआँ'- विशिष्ट अछि। संगहि वर्त्तमान समाजमे व्याप्त मूल्यहीनताक अभिव्यक्ति प्रभावक अछि। पाठककेँ दक्क सन लगैत छैक। धन्यवाद! **—रमानन्दझा 'रमण'**

रामदेवझा मैथिलीक एक निविष्ट नाटककार छथि । हिनक नाट्यसंग्रह **पसिझैत पाथर**पर 1991मे साहित्य अकादेमी द्वारा हिनका पुरस्कृत कयल गेल छलनि। एहि संग्रहक प्रत्येक नाटक प्रकाशनसँ पूर्वहि अनेक बेर मंचित भऽ कऽ चर्चित-अर्चित होइत रहल। कोनो ने कोनो सामाजिक समस्याकेँ स्वर दैत मानवीय संस्पर्शसँ परिपूरित एहि संग्रहक शीर्षक नाटक **पसिझैत पाथर**क प्रथम मंचन 1976मे चेतना समितिक मंचपर भेल छल जे कतोक दृष्टिएँ ऐतिहासिक रहल । एहि प्रथम मंचनक दर्शकमेसँ एकटा रहथि पूर्व विधायक, समाजवादी चिन्तक ओ सी.एम. कालेज, दरभंगाक पूर्व प्रिन्सिपल प्रो.रमाकान्तझा । अपना आँखिसँ देखल नाटक जखन पोथीक रूपमे हुनक हाथमे पड़लनि तँ ई पोथी गुजरात-राजस्थानक हुनक एकटा यात्रामे पाथेय साबित भेलनि । एहि संग्रहकेँ पढ़लाक बाद हुनक पाठकीय प्रतिक्रिया कोन रूपक भेलनि से हुनका द्वारा पठाओल गेल दू गोट पत्रसँ जानल जा सकैछ । साहित्यसँ इतरहु क्षेत्रक बोद्धा पाठकक समीक्षा दृष्टि कतेक स्फीत भऽ सकैछ तकर अवगाहन हुनक पत्रकेँ पढ़ि कऽ कयल जा सकैछ। विलक्षण पत्रात्मक समीक्षाक आस्वादन प्राप्त करबाक हेतु **पसिझैत पाथर**पर लिखल गेल हुनक ओ दुनू गोट पत्र एतऽ क्रमशः प्रस्तुत कयल जा रहल अछि-

वारमेड़ (राजस्थान)/ 16 सितम्बर 1990

प्रिय रामदेवबाबू

सस्नेह नमस्कार । कुशल-कुशलापेक्षित । अहाँकेँ विश्वास नहि हैत जे हम अहाँक पोथी 'पसिझैत पाथर' गामपर नहि पढ़ि सकलहुँ । अम्बाला कैन्टसँ लालगढ़क यात्रामे 'पसिझैत पाथर' पढ़ल आ' जोधपुरसँ वारमेड़क यात्रामे 'लोचन धाए फेधाएल' । दुहू नाटक बेस नीक लागल । परञ्च पहिल आओरो नीक । पहिने 'पसिझैत पाथर'क मादे । अहाँक भूमिका बिसरल बात मोन पाड़ि देलक । चेतना परिषद् (समिति)मे जे अहाँक 'पसिझैत पाथर'क मंचन भेल छल ताहिमे एकटा दर्शक हमहूँ रही । तखनहुँ नाटकक अन्तमे हमर आँखिसँ नोर खसल छल आ पढ़बा काल सेहो तहिना भेल । अहाँक नाटकक बाद पटना विश्वविद्यालयक एक नाटकक मंचन सेहो भेल छल । एही दुहू नाटकमे एक प्रथम आ दोसर द्वितीय भेल छल । परञ्च मोन नहि पड़ैत अछि जे कोन प्रथम आ कोन द्वितीय । बिसराह तँ हम छीहे । हमरालेल आत्मीयताक बात ई छल जे अहाँक नाटकमे हमर बालसखा किसुनजीक कन्या कमला मुख्य पात्रीक रोल केने छलि आ दोसर नाटकमे हमर सहपाठी श्रीसूर्यकान्तचौधरीक (लोहाक) कन्या मुख्य पात्रीक पार्ट केने छलि आ ओही दुनूमे एक प्रथम भेल छल आ दोसर द्वितीय । फेर मोन नहि पड़ि रहल अछि जे के की भेल छल ।

'पसिझैत पाथर' बेस नीक लगबाक एक कारण इहो भऽ सकैछ जे कमला (अभागलि कमला) ओहिमे पार्ट केने छलि तेँ हम ओकरा अप्पन नाटक बुझैत छी। परञ्च से की हैत–ओहि नाटकमे कला अपन चरमबिन्दुपर पहुँचि गेल अछि। हम तँ राजनीतिशास्त्र सन नीरस विषयक छात्र छी। परञ्च अहीँ लोकनिक मुँहसँ जे किछु साहित्यक बात सूनल अछि वा किछु पढ़लो अछि तकरे आधारपर ने किछु कहब। पढ़ल छल जे काव्य (साहित्ये भेल)मे नाटक अति रमणीय। से अहाँ 'पसिझैत पाथर'केँ अति रमणीय बनाइए कऽ छोड़ल। पढ़ब प्रारम्भ कयल आ पढ़िते जाय पड़ल। छोड़ल कहाँ! नाटकमे ई धाराप्रवाह अहीँक नाटकमे बुझना गेल। हिन्दीक किछु नाटक पढ़ल अछि, परञ्च ताहू सबमे ई धाराप्रवाह कहाँ बूझि पड़ल छल। अहाँ नाटकक आरम्भमे नाटकक मंचनमे परस्पर विरोधकेँ उतारि देल–इहो कमाल ! आ' ओहिसँ नाटकक उपादेयता आ अभिनेयता आओरो बढ़िए गेल। सतक विजय असतपर हो से अहाँ नाटकक प्रारम्भहिमे देखा देल। सबसँ नीक चानन–चम्पाक संवाद लागल। बिल्कुल स्वाभाविक लागल जेना गामक सम्पूर्ण वातावरण आँखिक सोझाँ नाचि रहल हो। कालक प्रभाव नाटककेँ आओर फड़िछा कऽ मंचपर उतारि देलक अछि। खास कऽ हमरा सन प्रगतिवादी, प्रगतिवादिए नहि समाजवादी व्यक्तिक तँ ई सम्पूर्ण हृदयकेँ विलोड़ित कऽ देलक, आत्मानुभूतिमे रमि गेलहुँ आ कमला (प्रतिमा)क व्यथाक अन्तसँ अति आनन्द भेल, नोर ताहीपर खसल। एकटा तँ भइए गेलैक जे नाटकमे ओ प्रोफेसरक पार्ट केलक तँ प्रोफेसर भऽ कऽ रहल आ ओकर जीवन निराशाक मध्य आशाजनक भऽ गेलैक। भगवान ओकर बालककेँ महान बनाबथि। ओझरैल धनेश्वर सन व्यक्तिकेँ अहाँ सोझरा देल आ से सहज भावसँ, कष्टसाध्य रूपमे नहि जे कि आन नाटकमे भेल अछि–सेहो कमाले अछि। 'नाटकक टेकनिक' आ मूल तत्त्व सभक निर्वाह अत्यन्त कौशलपूर्वक कोना–कोना भेल अछि तकर मादे एखन नहि कहब। गाड़ीक समय भऽ गेल अछि आ स्नान–ध्यान बाँकिए अछि।

सुमनजीक प्रथम उपन्यास 'उगनाक दयादवाद' हमरा नीक लागल। जटिलजीसँ पोथी कीनि पढ़ने छलहुँ। परञ्च सुमनजी से प्रयास जारी राखथि से निवेदन। जटिलजी कहने छलाह जे नौटा नाटक (उपन्यास) ओ आओर लिखताह से दोसर बहरैल छन्हि की नहि ? पत्रोत्तर एना दी जे 16/10/1990केँ दीयाबातीसँ प्रायः दू दिन पूर्व पहुँचलापर तुरन्त भेटि जाय, पहिने नहि। हमरा प्रति आत्मीयता एहिना रखने रही से निवेदन। गलती तँ हमरासँ होइते हैत, परञ्च तकर खेयाल नहि राखी शेष कुशल। अहाँक परम शुभेच्छु– **श्रीरमाकान्तझा**

जेरलसर (गुजरात) / 23 सितम्बर 1990

प्रिय रामदेवबाबू

सस्नेह नमस्कार । मरुधर मध्य 'मरुधर एक्सप्रेस' मे (जोधपुर-मेरता रोडक बीच) अहाँक मरुधरजन्य नाटक 'पिपासा' पढ़ल नीक लागल । ई प्रसंग हमरा बुझलो नहि छल सेहो बुझा गेल । आब अहाँक सातो नाटक हम पढ़ि लेल । 'रहऽ दियौ गंगाकेँ निर्मल' आत्मीयतासँ सराबोर बूझि पड़ल । सदानन्द पात्र तँ अहाँ महाबीहड़ आ यथार्थ (वास्तविक) गढ़ि लेल । एहेन-एहेन धुरन्धर पैरवीकार एहि धरतीपर जन्म लेने छथि सी.एम. साइन्स कॉलेजमे आ अन्यहु । रघुराजमे एकठाम गंगाक निर्मलता से बहऽ लागल सन बुझैल, यथा- ... रघुराज- बॉस अरे दू-चारि नम्बर बढ़ा देब कोन तेहन बात भेलैक ! ई तँ समादो पठा दितथि तँ भऽ जैतनि ।'

'रघुराज- तैयो जखन समधि समाद पठौलनि अछि तँ हुनक सम्मान होएबेक चाहियनि ।'

हम निश्चित कहब जे ई उक्ति सब हमर सिद्धान्तक खिलाफ अछि । अहाँ ई नहि बूझि लेब जे हम आत्मप्रशंसा कऽ रहल छी । हमर जीवनक ई निरपेक्ष सिद्धान्त (Absolute Principle) रहल आ भगवान से निवाहि देल तेँ उपकृत छी हुनक ।

'लोचन धाए फेधाएल'क बनौली राज कतऽ छैक? बनैली तँ ने? इहो नाटक बड़ दीव लागल ।

'चाननक बसात' तँ हमर अपन जीवनक किछु घटना सबकेँ मोन पाड़ि देलक । बुझाइ पड़ल जे धीरेन्द्र हम अपनहि तँ ने छी ? भोलाझाओ सन व्यक्तिकेँ अहाँ रस्तापर लऽ अयलहुँ-ई नाटकक विशेष खूबी । ओना नाटकक ई धर्म थीकहिए। चमत्कार तँ ई जे भोलाझासँ घूस पाबिओ कऽ आइ-काल्हुक दरोगा रस्तापर आबि गेल से ई सामान्य जीवनमे नहि होइछ । 'दुलारक भूख' बेस नीक अछि । 'मनुष्यक देवता' बढ़िएँ लागल ।

हमरा होइत छल जे अहाँ प्रथम कोटिक समालोचक आ शोधकर्त्ता छी-Creative writer नहि । परञ्च से भ्रम ई पोथी दऽ अहाँ दूर कऽ देल । हमरा विचारेँ अहाँक शोध-लेखन आ सर्जनात्मक साहित्यक निर्माण दुहू संगहि समानान्तर रूपेँ चलैत रहै से बड़ नीक । जटिलजीक माध्यमे सुमनजी आ अहाँक गतिविधिसँ परिचित होइत रहैत छी । सुमनजीक हम भक्त छी, हालांकि हुनक राजनीतिक

जीवनक सख्त खिलाफ । परञ्च हम भक्तक कर्त्तव्यक निर्वाह करिते आयल छी । राजनीति ताहिमे बाधा नहि करैछ आ ओ सतत हमरा आशीर्वाद दैत आयल छथि आ तकर हम सतत आकांक्षो करैत रहैत छी । रेलक बेर भऽ गेल । विदा । अहाँक परम शुभेच्छु-

श्रीरमाकान्तझा

1960सँ 1963क बीच मिथिलामिहिरमे रामदेवझाक क्रमशः तीन गोट पत्रात्मक धारावाहिक **अंगरेजीफूलक चिट्ठी, बहिनाक विरोग**, ओ **रामजोड़ी कागतक पाँखिपर** प्रकाशित भेल छलनि । अपना समयमे ई तीनू धारावाहिक पाठक वर्गक बीच बेस लोकप्रिय भेल रहय आ एहि धारावाहिक सभक तानी-भरनी ओ प्रयोगधर्मी शिल्पकेँ देखैत समालोचक लोकनि एकरा उपन्यासक संज्ञासँ अभिहित कयलनि । अपन प्रकाशनक चारि दशक बाद ई तीनू धारावाही 2002 मे जखन पुस्तकाकार प्रकाशित भेल तँ एक बेर फेर ई तीनू कृति चर्चाक केन्द्रबिन्दुमे आयल । आइसँ पाँच दशक पूर्व लेखक द्वारा स्वयंमे नारीक अवतरण कऽ कऽ मैथिलीमे स्त्री विमर्शक बीजारोपण कयल गेल छल । मैथिलीक मान्य विद्वान ओ साहित्यकार प. गोविन्दझा अंगरेजीफूलक चिट्ठीकेँ उपन्यास नहि उपन्यास सनक वस्तु मानैत छथि, तथापि एहि कृतिमे प्रयुक्त 'नारी भाषा' हुनका अत्यन्त प्रभावित कयलकनि से ओ अपन एकटा पत्रमे निर्द्वन्द्व भावसँ स्वीकार करैत लिखलनि-

पटना, पटेलनगर (पश्चिम)सँ / 15 मार्च 05

स्वस्ति, नमस्कार ।

'अंगरेजीफूलक चिट्ठी' पहुँचल । भूमिका भाग पढ़ल । छद्म नामसँ लिखल वस्तु कखनो काल विवादास्पद भए जाइत अछि एतेक सफाइ देबाक आवयकता नहि छल । हँ, एकरा उपन्यास मानबामे हम सहमत नहि छी । उपन्यासक आभास अवश्य अछि । एक बेर फेर पढ़ब तखन .... । एखन एतबे । भाषा विज्ञानमे पुरुष-भाषा आ नारी-भाषा एक अध्याय लिखल अछि । ताहिमे अहाँक ई पोथी प्रचुर सामग्री देलक अछि । नारी-भाषाक वैशिष्ट्य अहाँक अनेक कथा सभमे भेटल अछि । 'टीस' पढ़ल । नीक से कते कही- **गोविन्दझा**

एहि उपन्यासक प्रसंग गोविन्दझा एकटा दोसरहु पत्रमे अपन विचार, मुक्त रूपसँ व्यक्त कयलनि । हुनक दृष्टिमे अंगरेजीफूलक चिट्ठी ओ बहिनाक विरोग ने तँ रामदेवझाक साहित्यिक प्रतिष्ठाक अनुरूपे थिकनि आ ने वर्त्तमान समयमे ओ एकर प्रकाशनक औचित्ये बुझैत छथि । मुदा एहि दुहू कृतिकेँ शब्द प्रयोग ओ भाषा

प्रयोगक दृष्टिएँ ओ अत्यन्त महत्त्वपूर्ण कहलनि अछि । गोविन्दझा अपन पत्रमे ई स्वीकार कयने छथि जे एहि कृतिमे कतोक एहन शब्द सभक प्रयोग भेल अछि जे हुनक कल्याणी कोश ओ व्याकरणमे स्थान नहि पाबि सकलनि । कोश निर्माणसँ पूर्व जँ ई कृति सभ पुस्तकाकार भेल रहितय तँ कदाचित् एहिमे प्रयुक्त कतोक रासे ठेँठ ग्रामीण शब्दावली सभ कोशमे स्थान प्राप्त कऽ सकितय । तहिना पत्र लेखककेँ एहू बातक खेद छनि जे जँ हुनका 'मैथिली भाषा परिचय' नामक अपन पोथी लिखबा कालमे ई पोथी भेटल रहितनि तँ महिला भाषाक वैशिष्ट्य नामक अध्यायक लेखनमे एहिसँ बड़ बेसी सहायता भेटल रहितनि । गोविन्दझाक समीक्षात्मक टिप्पणीकेँ देखबाक लेल प्रस्तुत अछि हुनक ई दोसरो पत्र-

पटना / 19 अप्रैल 05

स्वस्ति श्रीरामदेवजी, नमस्कार ।

'अङरेजीफूलक चिट्ठी'क पहुँचनामा लिखि चुकल छी । पहुँचल होएत । लगले 'बहिनाक विरोग' सेहो पहुँचल । पहिल अंशतः पढ़ल, दोसर सम्पूर्ण । जाहि डा. रामदेवझाक कृतिक हम प्रशंसक रहलहुँ अछि ई दूनू ताहि प्रकारक वस्तु नहि थिक । नीक होइत जे दूनू छद्मनामहिसँ छपबितहुँ । केहन लागल ताहि प्रसंग एतबे कहब जे जँ हम 1940इ.मे नव-साक्षरा नवागता कुलवधू रहितहुँ तँ निश्चय बड़ दिब लगैत आ बहुत रास जीवनोपयोगी उपदेशसँ लाभान्वितो होइतहुँ । तथापि दू अंशमे ई पढ़ब सार्थक भेल । पहिल ई जे बहुत-रास एहन पद, पदबन्ध आ वाक्यबन्ध भेटल जे हमर कोश आ व्याकरणमे छूटल अछि । यथा, विरोग (पृष्ठ 1), हमरा ताइञे (5), तिरेजन (5), गुड़ोँत (15), महजरो (15), परधान (23), अरमज (26), सिरखार (27) आओर कतेक गनाउ । दोसर ई जे महिलामुखी (मौगिआही) भाषाक नीक उदाहरण भेटल । भारतीय भाषा संस्थान, मैसूरक हेतु जे मैथिली भाषा परिचय लिखल अछि ताहिमे एक अध्याय छैक महिलाभाषाक वैशिष्ट्य । से लिखबाक काल जँ ई ध्यानपर रहैत तँ एहिसँ बड़ उपकार होइत । एक प्रसंग बड़ रोचक लागल- रुसा-फूलीक अन्त (पृष्ठ 61) । अन्तिम पत्रमे वर किएक रुसलाह से प्रश्न अनुत्तरित रहि गेल ।

पत्र लिखबाक काल किछु उलहन-उपराग फुरल, मुदा कलम रुकि गेल । कलम कहलक, "कतबो हमरा फेरबह, ताहिसँ केओ नाम नहि लेतहु । विद्वांसो वसुधातले परवचः श्लाघासु वाचंयमाः । सभ मण्डलीमे तोँ 'पर' बनल रहलह । 'स्व' बनबाक चेष्टा करह ।" बहुत बनओलहुँ दिबड़ाक भीड़ । आब कलमकेँ विश्राम देअए चाहैत छी। आब सभ दार-मदार अहाँ सभपर छोड़ए चाहैत छी । हमर

अन्तिम कृति 'आत्मालाप' मैथिली जगत्मे अचर्चित रहि गेल । सैह हाल भेल 'कल्याणीकोश'क । प्रसन्नता एहि बातक अछि जे दुनू बजारमे खपि गेल । गोदाम खाली । स्वस्थ आ सक्रिय रहू जे सुनि-सुनि हमहू आनन्दित होइत रही । पुनश्च नब फ्लैट लेल अछि आ ताहिमे स्थायी रूपेँ आबि गेल छी । नब पता आ नब फोन नम्बर नोट कए लिअ । अहाँक **गोविन्दझा**

गोविन्दझा भने अंगरेजीफूलक चिट्ठी ओ बहिनाक विरोगकेँ सम्पूर्ण उपन्यास मानबाक पक्षमे नहि रहथु, मुदा मध्यकालीन मैथिली साहित्यक अन्वेषी विद्वान डा. शशिनाथझा एहि दुनू कृतिकेँ स्वतन्त्र विधाक उपन्यास कहैत एकर वर्णन विन्यास ओ शिल्पकेँ अद्वितीय कहैत छथि । ओना शशिनाथझा अंगरेजीफूलक चिट्ठीमे लेखक द्वारा लिखित भूमिकापर स्पष्ट शब्दमे अतिरंजनाक आरोप लगबैत छथि । **द्रष्टव्य थिक हुनक ई पत्र-**

दरभंगा / 22 अप्रैल 05

श्रद्धेय श्रीरामदेवबाबू,

अपनेक 'अंगरेजीफूलक चिट्ठी' ओ 'बहिनाक विरोग' एक स्वतन्त्र विधाक उपन्यास थिक । कथा एहि हेतु नहि जे ई आदिसँ अन्त धरि एकसूत्रबद्ध अछि । एतेक रास परिस्थिति ओ समस्याक यथार्थ धरातलकेँ एकत्र समेटल हम आन कोनो पोथीमे नहि देखने छी । जा धरि ई पोथी बेनामी छल ता धरि पाठक बुझैत छल जे ई कोनो नारीक कृति थिक । एहि रूपक चित्रण लेखकक एकान्त-विषयनिष्ठता सूचित करैछ ।

पहिल पोथीक भूमिका- 'सत्यस्यापिहितं मुखम्'-सत्यक उद्घाटन करैत-करैत अतिरञ्जित भए गेल अछि । यद्यपि एकर जानकारी आवश्यक छलैक, तथापि किछु अंश खटकैवला अछि । अपनेक ई कृति थिक से तँ पत्रक छायाचित्र रूप दस्ताबेजेसँ प्रमाणित भए गेल । आब क्यो एहि विषयमे थेथरपनी नहि करताह । आवश्यकता अछि जे ई पोथी महिला समाजक हाथमे पहुँचए । हमरा विश्वास अछि जे जनिक हाथ ई पोथी जएतनि से विनु समाप्त कएने नहि रहतीह । अपनेक **-शशिनाथ**

मैथिलीक कवि तारानदझा तरुण, रामदेवझाक तीनू पत्रात्मक उपन्यास पढ़लाक उपरान्त एहिमे चित्रित नारी मनोविज्ञानक मुक्तकंठसँ प्रशंसा करैत लिखलनि-

मलाढ़ / 30 अप्रैल 07

आदरणीय ओझाजी, सादर नमस्कार ।

अपनेक रचित रामजोड़ी कागतक पाँखिपर, बहिनाक विरोग पढ़ि अंगरेजीफूलक चिट्ठी पढ़बाक लेल उद्यत भेलहुँ, मुदा ताहिसँपूर्व आमुखमे प्रकाशित 'सत्यस्यापिहितं मुखम्' पढ़बाक जिज्ञासाकेँ नहि टारि सकलहुँ आ पृष्ठ 3सँ पृष्ठ 25 धरि आद्यन्त पढ़ि गेलहुँ । हमरा जनैत अंगरेजीफूलक चिट्ठी, बहिनाक विरोग आ रामजोड़ी कागतक पाँखिपरकेर पुनर्प्रकाशनक संग ई जनतब देब निश्चित रूपेँ आवश्यक छल जे सामान्य पाठकक भ्रम निवारणमे सहायक सिद्ध होयत । सोनाकेँ जतबा आगिमे तबाओल जाइत अछि ततबा ओहिमे निखार अबैत अछि । हमरा जनैत अपने सभकेँ बदनाम करबाक षड्यन्त्र सभक पर्दाफास एहि आलेखसँ भऽ सकत से आशा करैत छी । ओना जे हेहर अछि ओ अपन हेहरपनीसँ बाज आओत तकर आशा करब तँ व्यर्थे । ओना रामजोड़ी कागतक पाँखिपर आ बहिनाक विरोगमे नारी मनोविज्ञानक चित्रण पत्रक माध्यमे जाहि रूपेँ प्रस्तुत भेल अछि संगहि मिथिलामे तात्कालिक नारी समाजक स्थिति जे चित्रण कयल गेल अछि से रोचक तँ अछिहे संगहि सत्यपरक सेहो । ओना हम पुनः एकरा पढ़ब अपनेक— **तारानन्दझा 'तरुण'**

रामदेवझा जेहने निविष्ट साहित्यकार छथि तेहने विशिष्ट अनुवादको छथि । राजिन्दरसिंह बेदीक उर्दू उपन्यास **एक चादर मैली सी**क उत्कृष्ट मैथिली अनुवादक हेतु 1993 मे हिनका साहित्य अकादेमी द्वारा अनुवाद पुरस्कार प्रदान कयल गेलनि । **सगाइ** नामसँ मैथिलीमे अनूदित ई उपन्यास पाठककेँ कोनो मौलिक मैथिली कृति जकाँ आस्वाद प्रदान करैत अछि । मैथिलीक प्रख्यात कवि ओ मार्क्सवादी समालोचक कुलानन्दमिश्र भने वैचारिक स्तरपर रामदेवझाक विचारधाराक विपरीत दोसर ध्रुवपर रहथु, मुदा एकटा साहित्यकारक रूपमे जाहि निष्पक्षताक संग ओ अपन पत्रमे **सगाइ**क अनुवादक विशिष्टताकेँ रेखांकित करैत एकर प्रशंसा कयलनि अछि से अवश्ये चौंकबैत अछि । कदाचित् एकटा समीक्षकक रूपमे एहि कृतिक समीक्षा जँ पारम्परिक पद्धतिसँ हुनका करऽ पड़ितनि तँ ई आशंका छल जे ओ अपन वैचारिकताक कारणे किंवा कतिपय बाह्य दबावक कारणे पूर्ण निष्पक्षता नहि देखा सकितथि आ डंडी मारि दितथि ताहि आशंकाकेँ निर्मूल नहि कहल जा सकैछ, किएक तँ कुलानन्दमिश्र 1993मे साहित्य अकादेमीक मैथिलीमे अनुवाद पुरस्कारक निर्णायक मंडलीक एकटा सदस्य रहथि । ओहि वर्ष ई **सगाइ** सेहो पुरस्कारक लेल चयनित पोथीक सूचीमे छल । मुदा कुलानन्दमिश्रक हाथेँ ओहि वर्ष रचनात्मक साहित्यसँ इतर साहित्यिक इतिहास विषयक एकगोट अनूदित पोथीकेँ पुरस्कारक लेल चयनित कयल गेल । एकटा औपन्यासिक कृतिकेँ अवहेलित कऽ कऽ ओकरा बदला इतिहास विषयक पोथीकेँ पुरस्कार देबाक पाछाँ हुनक की विवशता रहल होयतनि से नहि कहल जा सकैछ । मुदा हुनक आत्मा प्रायः हुनक अपनहि निर्णयकेँ

स्वीकार नहि कयलकनि आ तेँ अन्ततः कुलानन्दमिश्र कोनो प्रकारक बाह्य दबावसँ ऊपर उठि अन्तरआत्माक स्वरकेँ अकानैत तत्काल **सगाइ**पर अपन प्रतिक्रिया पत्रक माध्यमे व्यक्त कयलनि जाहिमे निश्चित रूपसँ विशुद्ध समालोचनाक दर्शन होइत अछि । हुनक ई लघु पत्रात्मक समीक्षा निम्न रूपक अछि–

शास्त्रीनगर, पटना/ 25 दिसम्बर 93

माननीय बन्धु, सादर प्रणाम ।

भाइ मोहन भारद्वाजक कृपासँ 'सगाइ'क प्रति पढ़बालेल प्राप्त भेल । पोथी से मनलग्गू जे विनु समाप्त कयने छोड़ल नहि गेल । एतेक प्राणवन्त कथा-वस्तुकेँ मैथिलीक पाठकलेल सुलभ बना अपने निश्चित रूपसँ अत्यधिक यशक काज कयल अछि । हमरा राजिन्दरसिंह बेदीक 'एक चादर मैली सी' मूल रूपमे पढ़बाक सुअवसर बहुत पहिने भेटल छल । ओहि मूल पोथीक किछु बात आ रंग-ढंग आब बिसरि जकाँ गेल छी, तथापि ओकर मूल आत्मा आ भंगिमा अखनो स्मृति-पटलमे बनल अछि । प्रायः कहियो बिसरियो नहि सकब । हमरा लगैत अछि जे एहि उपन्यासक मुख्य पात्रीक 'तेवर' आ आत्मिक दृढ़ताक सङ्ग लागल आन्तरिक लालित्यकेँ मैथिलीमे ओही रूपमे प्रस्तुत करब ककरो लेल सम्भव नहि रहैक । जाहि रूप आ मज्जा सङ्ग 'सगाइ'क रानो हमरा सबकेँ उपलब्ध भेलीह अछि, कम प्रिय नहि लगलीह अछि। हमर अभिनन्दन कृपया स्वीकार कयल जाय । आशा अछि, अपने सर्वथा स्वस्थ आ प्रसन्न छी आ अपन अटूट लेखन-क्रमकेँ जारी रखने छी । कृपा-दृष्टि चाही, कृपाभाजन- **कुलानन्द**

मैथिली अनुसन्धान-समालोचनाक क्षेत्रमे डा.रामदेवझाक नाम प्रमुखतासँ लेल जाइत छनि । मध्यकालीन किर्त्तनिया नाटककार उमापतिक स्थितिकाल, परिचय ओ आश्रयदाता तीनू ग्रियर्सनहिक समयसँ विवादास्पद रहल अछि। मैथिली साहित्यक इतिहासक आद्य लेखक डा. जयकान्तमिश्रक मत सेहो उमापतिकेँ लऽ कऽ भिन्ने प्रकारक रहलनि जकर विस्तृत विवरण ओ अपन इतिहासमे देने छथि। मुदा डा. रामदेवझा उमापतिक वास्तविकताक दिशामे गम्भीर अन्वेषण कयलाक पश्चात एक गोट शोध-निबन्ध 'उमापतिक मैथिलेशक अप्रामाणिकता' लिखलनि जे मिथिला मिहिर (28.12.75)मे प्रकाशित भेल। पुनः एहि कड़ीक दोसर निबन्ध 'उमापतिक आश्रयदाता एवं स्थितिकाल' लिखलनि जे मिथिला मिहिर 16 अक्टूबर 1977क अंकमे प्रकाशित भेल । ई दुनू निबन्ध मैथिली अनुसन्धानक क्षेत्रमे एकटा हलचल उठा देलक, ग्रियर्सनसँ लऽ कऽ जयकान्तमिश्र धरिक मान्यताकेँ खण्डित कऽ देलक । उमापतिपर लिखित उपर्युक्त प्रथम निबन्धक प्रतिक्रियामे डा. जयकान्तमिश्र एकटा दीर्घ पत्र-एकर लेखककेँ लिखि

पठौलथिन जकरा उत्कृष्ट विमर्शक श्रेणीमे राखल जा सकैछ। उमापतिपर हुनक ओहि ऐतिहासिक विमर्शात्मक दीर्घ पत्रक अन्तिम अंश देखल जा सकैछ।

..........हँ, एकटा 'मेओं' एखनो शेष अछि– ओ थिक जे हिन्दूपतिकें 'हरिहरदेव' नाम सेहो छलन्हि वा नहि ? एहि हेतु हमर अहाँसँ विनम्र आग्रह जे एकर अन्वेषण करी तखनहि कोनहु निष्कर्षपर जाइ से उचित। हमरा विश्वास अछि जे बुन्देलखण्डक इतिहासमे वा अन्य ग्रन्थ सभमे ई नाम अवश्य भेटत। अहाँ लिखैत छी– भेटल नहि अछि' से ताकल कहाँ गेल अछि। आ यावत नहियों भेटैत अछि आर 'मैथिलेश' आश्रयदाताक अप्रामाणिकता सिद्ध करैत अछि जे उमापतिक आश्रयदाता गाढ़ाक राजा हिन्दूपति छलाह। हँ, 'मैथिलेश' शब्दक अप्रमाणिक भेलें ई कोनो हिन्दूपतिएक अधीन पारिजातहरण लिखलन्हि से सिद्ध होइछ– एहिसँ हमरा मतक पुष्टिए होइछ। हिन्दूपति विरुद नहि थिक नाम थिक, मुख्य नाम, एहि धारणाकें त्यागिएकें उमापति प्रसङ्ग अन्वेषण करी तँ बेसी उत्तम होएत। अहाँक निबन्धक प्रसंग एतेक लिखब आवश्यक बुझलहुँ। अहाँ छोड़ि हमर बात दोसर बुझनिहार आर अछिए के ? अहाँ हमर हार्दिक स्नेह ओ आशीर्वाद स्वीकार करू–मन गदगद अछि– एक बेर पुनः उमापतिकें चर्चाक केन्द्रबिन्दुमे आनल। पत्रोत्तर दी–

श्रीजयकान्तस्य

तदुपरि 1980मे मैथिली अकादमी, पटनासँ उमापतिपर डा. रामदेवझाक एकटा स्वतन्त्र पोथी प्रकाशित भेलनि। पूर्वमे मिथिलामिहिरमे प्रकाशित निबन्धपर डा. जयकान्तमिश्रक अनुसन्धानी तेवर जेहने विरोधक छलनि, पोथी प्रकाशनक बाद हुनक स्वर तेहने सकारात्मक बनलनि। उमापतिकें लऽ कऽ मैथिली साहित्यमे चलि आबि रहल भ्रमकें जाहि पुष्ट प्रमाणक संग डा. रामदेवझा अपन पोथीमे दूर कयलनि तकरा जयकान्तमिश्र अन्तिम निष्कर्ष मानबा लय विवश भेलाह से हिनक एहि दोसर पत्रसँ जानल जा सकैछ–

1. सर पी.सी. बनर्जी रोड

इलाहाबाद–211002

14 मइ 1980

स्वस्ति ।। कल्याणालय चिरञ्जीवी श्रीरामदेवबाबू शुभोदयेषु शुभाशिषः सन्तु ।। उमापतिपर अहाँक पोथीकें अनेक बेर पढ़लहुँ। एहिमे जतेक नव तथ्य सभ आएल अछि– से सभ हमरा अपन पूर्व मान्यतापर पुनः विचार करबा हेतु विवश कएलक

अछि। उमापति प्रसङ्ग ग्रियर्सनक समयसँ चलैत भ्रान्त धारणाक बहुत अंशमे समाधान करैत अछि अहाँक ई नवीन अन्वेषण। 'उमापति' ग्रन्थमे समस्त विषयकेँ बुझाए प्रामाणिक रूपेँ जेना राखल अछि ताहि हेतु धन्यवादार्ह। मकवानपुरीय नृपवंशावली आर सेनवंशावलीमे विस्तारसँ देल गेल प्रमाणकेँ ताकि जेना प्रमाणित कएलहुँ अछि जे– मकमानीक दोसर नाम मकवानपुर थिक– जतए हिन्दूपति विरुदधारी हरिहरदेव सेनवंशीय राजा छलाह– उमानाथ प्रसिद्ध उमापतिक यथार्थ आश्रयदाता उएह छलाह। पारिजातहरणमे हिनक प्रशंसाक जतेक शब्द कहल गेल अछि आर एकर गीत सभमे जे रानी सभक नाम उद्धृत अछि से सभ ओहि परिचयसँ स्पष्ट भए जाइछ। ई हिन्दूपति विरुदधारी सेनवंशी राजा साहित्य-विधाक संरक्षकहि नहि प्रतापी छलाह आर यवन-सेनापर सेहो विजय कएने छलाह– ई सभ तथ्य जाहि स्पष्टताक संग प्रतिपादित भेल अछि तकरा समक्ष हमर अपन पूर्व मान्यता जे– उमापति बुन्देलखण्डक राजा हिन्दूपतिक आश्रयमे पारिजातहरण नाटक लिखलन्हि ताहिपर पुनर्विचारक अपेक्षा अहाँक एहि पोथीक तथ्य सभकेँ अन्तिम निष्कर्ष मानए पड़त। अहाँक ई नवीन अन्वेषण उमापतिक समय सेहो निर्धारित कएलक अछि– सोड़हम शताब्दीसँ लऽ कऽ सत्रहम शताब्दीक तेसर चरण। एहिसँ एहू प्रश्नक समाधान भए जाइत अछि जे उमापति लोचनक बाद भेलाह तेँ राग-तरंगिणीमे हुनक गीत नहि आएल। अहाँक अन्वेषणसँ इहो प्रमाणित होइछ जे मकमानी राजसभामे मैथिलीक आनो कवि सभकेँ आश्रय छलन्हि– देवनाथ, राय राघव, राय हरिहर आदि। मैथिली साहित्यक इतिहासमे एहि नव अनुसन्धान सभकेँ जोड़ल जाएब आवश्यक भए गेल अछि। अहाँक ग्रन्थपर विस्तारसँ लिखबाक मोन अछि। किछु स्थलपर एखनहुँ हमर सन्देह बनले अछि– ताहिपर कहियो आगाँ चर्च करब-एखन एतबेसँ सन्तोष। अहाँक गम्भीर अन्वेषण दृष्टि आर ई पोथी हमरा एतेक कहबा हेतु विवश कए देलक। हम अहाँकेँ अपन बल बुझैत छी आर अहूँ हमर बल सदति बूझब। पत्रोत्तर दी– **श्रीजयकान्तस्य**

साहित्य अकादेमीसँ, भारतीय साहित्यक निर्माता, शृंखलाक अन्तर्गत हिनक मध्यकालीन नेपालीय नृप नाटककार जगत्प्रकाशमल्लपर विनिबन्ध प्रकाशित छनि। एहि विनिबन्धमे लेखक जतऽ जगत्प्रकाशक साहित्यिक अवदानकेँ विशदताक संग रेखांकित कयने छथि ओतहि एकटा नवीन सिद्धान्तक प्रतिपादन करैत नेपालीय मैथिली साहित्यकेँ 'बहिरंग साहित्य'क नाम देने छथि। प्रख्यात विद्वान पं. गोविन्दझा एहि विनिबन्धक जतऽ भूरिशः प्रशंसा कयलनि ओतहि एहिमे 'बहिरंग साहित्य' सन शब्दक प्रयोगकेँ ओ उचित नहि मानलनि। 'बहिरंग साहित्य' कहब किएक उचित नहि तकर पक्षमे गोविन्दझा जाहि प्रकारक तर्क सभ देने छथि ओ

उत्कृष्ट साहित्यिक विमर्शक वस्तु बनि गेल अछि। पोथीक समीक्षाक संग उद्भूत ई विचार निस्सन्देह पत्रात्मक समीक्षा पद्धतिक विशिष्ट उपलब्धि मानल जायत जे कदाचित् सार्वजनिक समीक्षा पद्धतिसँ सम्भव होइतय की नहि! एतावता एहि प्रसंग गोविन्दझाक उक्त समीक्षात्मक पत्र देखल जा सकैछ–

पटना / 13 फरवरी 1991

स्वस्ति, स्नेहनिलय श्रीरामदेवजी,

मैथिली साहित्यक इतिहासमे एकटा शंका हमरा मनमे बहुत दिनसँ घुरिआइत छल। हालमे अहाँक 'जगत्प्रकाशमल्ल' हमर ओहि शंकाकेँ आओरो जगाए देलनि। ई शंका-समाधान पछाति; पहिने हमर साधुवाद ग्रहण करू–जेहने नयनाभिराम प्रकाशन, तेहने पोछल-पाछल भाषा, तेहने स्पष्ट वर्णन आ तेहने सहज-सुग्राह्य विचार। चन्द्रशेखरपर नव प्रकाश देल अछि। मक्षिका दृष्टिएँ एक-दू बात खटकल। शृङ्गारः शुचिरुज्ज्वलः मे 'शुचि' आ 'उज्ज्वल' शृंगारक पर्याय नहि, किन्तु व्याख्या मात्र थिक, जेना उत्साहवर्धनो वीरःमे उत्साहवर्धन। दोसर प्रवेशगीत केवल नेपालीये नहि, समस्त मध्यकालीन मैथिली नाटकक वैशिष्ट्य थिक। रमापतिक ओ ज्योतिरीश्वरक तनिको नाटकमे अछि, तेँ एकर प्रवर्त्तक जगत्प्रकाश नहि। अस्तु, नातीव खलु कर्त्तव्यं दोष दृष्टि परं मनः।

आब आउ ओहि शंकापर। अहाँ प्राक्कथनक पहिले वाक्यमे जगत्प्रकाशक रचनाकेँ मैथिलीक बहिरंग साहित्य कहल। एहि बहिरंगताक आधार की? नेपाल मिथिलासँ बाहर अछि तेँ नेपालमे लिखल गेल सभ साहित्य बहिरंग? तखन तँ रामभरोस कापड़ि, श्रीधीरेन्द्र, वंशमणि, उमापति, विद्यापति, ज्योतिरीश्वर-बहुतोक रचनाकेँ बहिरंग मानए पड़त। जँ तराइकेँ मैथिलीक क्षेत्र बूझि ओकर साहित्यकेँ अन्तरंग कही, तँ प्रश्न उठैत अछि जे काठमांडू (अर्थात् मल्लकालीन काठमांडू) मैथिलीक क्षेत्र किएक नहि ? मल्ल शासन कालमे नेपाल उपत्यकामे सम्पर्क भाषा की छलैक ? गोरखाली ? ओ तँ हालमे बाहरसँ ओतए आएल, जेना मिथिलामे हिन्दी। नेवारी दसे प्रतिशत लोक जनैत छल तेँ ई सम्पर्क भाषा (सार्वजनीन भाषा) नहि भए सकैत छल। आन्तरिक सम्पर्क तँ किछु-ने-किछु विभिन्न तिब्बत-बर्मी मूलक स्थानीय भाषा सबसँ कएलो जाए सकैत छल किन्तु बाह्य सम्पर्कक काज एहि भाषा सबसँ नहि चलि सकैत छल। एहि स्थितिमे हम एहि निष्कर्षपर पहुँचलहुँ अछि जे राणा शासनसँ पूर्व सम्पूर्ण नेपाल उपत्यकाक सम्पर्क भाषा मैथिलिए छल। राजपरिवारक भाषा सेहो इएह छल। सांस्कृतिक ओ धार्मिक जन-समारोहमे मुख्य भूमिका मैथिलीक रहैत छलैक। सेन वंशक राजमे मैथिली शासनक भाषा छल आ

किरात जातिक विशाल जनसंख्या प्रथम भाषा वा द्वितीय भाषाक रूपमे मैथिली बजैत छल । जखन अमेरिका आ आस्ट्रेलिअन इंगलिश लिटरेचर, आ दार्जिलिंग आदिक नेपाली साहित्य बहिरंग नहि कहल जाइत अछि तखन मल्ल लोकनिक रचनाकेँ बहिरंग कहब समीचीन होएत ? भेट होइत तँ एहि प्रसंग अहाँक संग (आन के एहन अछि ?) सविस्तर विवेचन करितहुँ । पत्रमे एतबे । 'सामाक पौती' (अपन कथासंग्रह) अहाँक बखरा रखने छी। भेट कए हाथमे देब । कुशल जानब ओ लिखब । अपन प्रतिक्रिया सेहो लिखब- **गोविन्दझा**

डा. रामदेवझा द्वारा 'जनार्दनझा जनसीदन' पर लिखित एक गोट और बिनिबन्ध साहित्य अकादेमीसँ प्रकाशित अछि । एहि पोथीमे जनसीदनजीक जीवनवृत्त प्रस्तुत करबाक क्रममे लेखकसँ किछु तथ्यात्मक त्रुटि भऽ गेल छनि जाहि दिस गलतीनामाक लेखक ओ प्रख्यात कथाकार राजमोहनझा अपन एकटा पत्रमे दृष्टि निक्षेप कयलनि । पत्र निम्न रूपक अछि-

पटना / 05 मइ 98

प्रिय रामदेवजी,

जनार्दनझा 'जनसीदन'क अपन प्रति-पहिल प्रति जे स्नेहवश अहाँ हमरा पठौलहुँ से भेटल । अहाँ ओहिमे बाबूजीक लेख आ भुवनजीक लेखमे किछु तथ्यात्मक विसंगति द' कहने छिऐ जे अपना जगह सही अछि । मुदा दूटा तथ्यात्मक त्रुटि अहूँक बिनिबन्धमे रहि गेल अछि जे एकटा तेसर चित्र ठाढ़ क' दैत अछि । प्राय: एक त ई जे 1949मे अहाँ जनसीदनजीक पौत्रक मृत्युक वर्ष कहने छिऐन्ह । 1949मे ककाक अर्थात जनसीदनजीक छोट पुत्रक मृत्यु भेलनि। पौत्रक मृत्यु 1947मे भेल छलनि । दोसर गप्प जे अहाँ लिखने छियनि जे बाबूजीक जन्मक बाद बाबाक एक पुत्री तथा एक पुत्रक जन्म भेलनि । वस्तुतः दू पुत्री तथा एक पुत्रक जन्म भेल रहनि। बाबूजीक बाद हुनक दूटा बहिन भेलथिन। सभसँ छोट बहिन जनिक विवाहक गप्प सुनि 'कनेयाँ माइक ओरिआओन' लिखल जयबाक बात ओ कहने छथिन । ई दूटा बात अहाँक ध्यानपर आनब उचित बुझलहुँ । शेष नीक अछि। अहाँक- **राजमोहन**

उपर्युक्त साहित्यिक विमर्श ओ प्रतिक्रियासँ युक्त किछु नितान्त निजी पत्रकेँ सार्वजनिक करबाक पाछाँ हमर मूल उद्देश्य अछि पत्रात्मक समीक्षा पद्धति ओ ओकर वैशिष्ट्य दिस साहित्य बोद्धा लोकनिक ध्यान आकृष्ट करब आ एहि समीक्षा पद्धतिक दर्पणमे डा. रामदेवझाक साहित्यकार रूपक केहन प्रतिबिम्ब उभरैत

छनि तकर परीक्षण करब । निस्सन्देह ई कहबामे कोनो तारतम्य नहि होइछ जे पारम्परिक समीक्षा पद्धतिक तुलनामे एहि पत्रात्मक समीक्षा पद्धतिमे हिनक रचनात्मक ओ अनुसन्धानात्मक दुहू कोटिक साहित्यक निष्पक्ष मूल्यांकन भेलनि अछि । हिनक कृतिक गुण–अवगुण दुनू पक्षक सूत्रात्मक विवेचन पत्रलेखक लोकनि द्वारा कयल गेलनि अछि । जे हिनक प्रत्यक्ष प्रशंसक छथिन सेहो एहि प्रकारक पत्र लेखनक कालमे स्वयंकेँ व्यक्ति प्रशंसक नहि कृति समीक्षकक रूपमे अपनाकेँ रखलनि अछि तँ जे केओ वैचारिक स्तरपर हिनकासँ मतभेद रखितो रहलाह अछि सेहो पत्रक माध्यमे हिनक कृतिक विवेचना करबा काल स्वयंकेँ एहि संकीर्णतासँ ऊपर राखि अपन लेखनी चलौलनि अछि । हमरा जनतबेँ डा. रामदेवझाक साहित्यकारक वास्तविक स्वरूप पत्रात्मक समीक्षा पद्धतिक एहि दर्पणमे बेसी स्पष्टताक संग प्रतिभासित भेलनि अछि ।

●

प्रतिज्ञा पाण्डवमे अभिनव दिशा-बोध

मैथिली साहित्यमे अपन उपनामक अनुरूप जीवन पर्यन्त अज्ञात बनल रहल बबुआजीझा 'अज्ञात' चर्चाक विषय बनलाह तखन जखन 2001 इ. मे मृत्यूपरान्त हुनक दोसर महाकाव्य **प्रतिज्ञा पाण्डवकेँ** साहित्य अकादेमी द्वारा पुरस्कृत कयल जयबाक घोषणा कयल गेलनि ।

महाभारतक सभापर्वपर आधारित **प्रतिज्ञा पाण्डव** एगारह सर्गक महाकाव्य थिक । एकर वस्तु-कौशल ओ गुण-दोषक निरूपण हेतु आवश्यक अछि जे कोनहुँ प्रकारक पूर्वाग्रहसँ मुक्त भऽ कऽ एकरा पढ़ल जाय, तखने किछु आधिकारिक रूपसँ कहल जाय । प्रथमतः एकरा आद्यन्त पढ़ला उत्तर एकरा सन्दर्भमे कयल गेल एहि अपप्रचारक तुरत निवारण भऽ जाइछ जे प्रतिज्ञा पाण्डव महाभारतक कथांशक स्थूल अनुगायन मात्र नहि थिक । एहि महाकाव्यक शास्त्रीयता ओ कला पक्ष एहि दुहूकेँ छोड़ि मात्र एकर सन्देश किंवा चिन्तन पक्षपर दृष्टिपात कयने एहि निष्कर्षपर पहुँचल जा सकैछ जे ई मानव मूल्यक स्थापन एवं राष्ट्र चिन्तनक एकटा मेनिफेस्टो थिक। महाकाव्यकेँ शास्त्रीय सिद्धान्तक सोङरपरसँ उतारि ओकरा एकटा नवीन सामर्थ्यक संग ठाढ़ करबाक प्रशंसनीय प्रयास थिक प्रतिज्ञा पाण्डव । भारत ओ विश्वक समकालीन भयावह परिस्थितिकेँ महाभारतीय कथाक संग अनुस्यूत करैत जाहि प्रखर वैचारिकताक संग एहि महाकाव्यक रचना कयल गेल अछि ताहिसँ एहि निष्कर्षपर पहुँचबा लेल बाध्य होअऽ पड़ैछ जे रचनाकारकेँ ई क्षमता अपन विराट जीवनानुभव एवं असीमित अध्ययनहिक फलस्वरूप प्राप्त भऽ सकलनि ।

1904 सँ 1996 धरिक अपन बेरानबे वर्षक जीवन कालमे अज्ञातजीकेँ बहुत किछु देखबाक, सुनबाक ओ अनुभव करबाक अवसर प्राप्त होइत रहलनि । दू-दूटा विश्वयुद्ध देखलनि, रूसक बोल्सेविक क्रान्ति देखलनि, भारतक स्वतन्त्रता

आन्दोलन आ भारतकेँ स्वतन्त्र होइत देखलनि । भारतमे लोकतन्त्रक स्थापनासँ लऽ कऽ 1974 मे देशक आपात्काल धरिक कालखण्डक द्रष्टा ओ भोक्ता बनलाह । स्वतन्त्र लोकतान्त्रिक भारतमे बढ़ल भ्रष्टाचार, वंशवाद, राजनीतिक अराजकता, अन्तर्कलह, आदि-आदि कतोक घटना-परिघटनाक साक्षी होइत रहलाह । प्रथम विश्वयुद्धोत्तर कालीन विश्वमे हिटलर, मुसोलिनी ओ तोजोक अधिनायकवाद देखलनि तँ कम्युनिज्मक नामपर रूस ओ चीनक निरंकुशतावादी सत्ताक नग्न नृत्यक घृण्य कथासँ अवगत होइत रहलाह । अमेरिका ओ रूसक बीच चलैत शीत युद्ध आदि सन कतेको घटनाक श्रोता किंवा द्रष्टा बनबाक हिनका अवसर प्राप्त होइत रहलनि । हुनक एहि विराट अनुभवक अवक्षेपण प्रतिज्ञा पाण्डवक पद-पदमे देखबामे अबैत अछि। अपन अनुभव ओ अध्ययनकेँ जाहि कलात्मकताक संग रचनाकार एहिमे नियोजित कयने छथि से कोनहुँ गम्भीर पाठक ओ समीक्षककेँ छगुन्तामे दऽ देबाक लेल पर्याप्त अछि । संगहि इहो जे संस्कृतक पंडित लोकनिक प्रति जे एकटा अपप्रचार कयल जाइत रहलनि अछि जे ओ सब तथाकथित आधुनिक युगबोध ओ विचारधारासँ सर्वथा फराक, सम्पूर्णतः पुरातनपंथी होइत छथि, से कथन पूर्णतः असत्य ओ भ्रामक सिद्ध होइत अछि । प्रतिज्ञा पाण्डव महाकाव्यक कथानक महाभारतक सभापर्वपर आधृत अछि । इहो कथानक अत्यन्त संक्षिप्त अछि । पाण्डवक राजसूय यज्ञसँ प्रारम्भ भऽ कऽ द्यूतक्रीड़ा, द्रौपदी चीरहरण एवं अन्ततः पाण्डव लोकनिक वनवास धरिक कथाकेँ एहिमे प्रस्तुत कयल गेल अछि । मुदा महाभारतक एहि संक्षिप्त कथानककेँ जाहि नवीन व्याख्याक संग नवीन अर्थवत्ता प्रदान करैत ओकरा युगबोधसँ संबलित करैत, व्यापक लोकचिन्तनक परिपाक दैत, आधुनिक कालक राजनीति ओ समाजनीतिक चासनीमे डुबा प्रतिज्ञा पाण्डवक जे स्वरूप ठाढ़ कयल गेल अछि से एकरा सर्वथा मौलिक ओ चिन्तनप्रधान कृति बना देलक अछि ।

एहि महाकाव्यक नायक थिकाह पाण्डव, जे पाँच भाय छथि । मुदा महानायक (Super Hero)छथि श्रीकृष्ण जे राजशास्त्रमे निपुण छथि आ विशृंखलित भारतकेँ एकसूत्रमे आबद्ध कऽ सम्पूर्ण राष्ट्रमे लोकहितकारी गणतान्त्रिक शासन प्रणालीक स्थापनाक अभियानमे लागल छथि । जनताकेँ सीदित कयनिहार स्वेच्छाचारी नृपतन्त्रक उकन्नन कऽ कऽ युधिष्ठिरक नेतृत्वमे भारतमे गणतान्त्रिक संघवादी शासनक स्थापना करब हुनक एकमात्र अभीष्ट छनि ।

आब प्रतिज्ञा पाण्डवक जे आधार कथा महाभारत अछि ताहिमे नृपतन्त्र ओ गणतन्त्र सन कोनो शासन प्रणालीक ने तँ उल्लेख भेटैत अछि आ ने गणतन्त्रक

स्थापनाक लेल चलाओल गेल कोनो अभियानक चर्चे अछि। निश्चित रूपसँ ई रचनाकारक अपन मौलिक उद्‌भावना थिकनि । सम्पूर्ण बीसम शताब्दीमे विश्व एही गणतान्त्रिक व्यवस्थाक सर्वत्र स्थापनाकेँ लऽ कऽ दलमलित होइत रहल । स्वयं भारतमे स्वतन्त्रताक बाद समस्त देशी राज्यक अस्तित्वकेँ समाप्त कऽ कऽ संघवादी गणतन्त्रक स्थापना कयल गेल । रचनाकार अपन ओहि समकालीन अनुभवसँ प्रेरित भऽ कऽ महाभारतक राजसूयारम्भ पर्व, जरासन्धवध पर्व, दिग्विजय पर्वक नवीन व्याख्या कयलनि अछि। इन्द्रप्रस्थमे अपन पृथक राज्य स्थापित कयलाक बाद पाण्डव लोकनि द्वारा जे भारतक चारू दिशामे विजय अभियान चलाओल जयबाक विशद् वर्णन महाभारतमे भेल अछि तकरा प्रतिज्ञा पाण्डवक रचनाकार गणतान्त्रिक शासन व्यवस्थाक स्थापन एवं समस्त भारतकेँ एक सूत्रमे आबद्ध करबाक अभियान कहि एहिमे समसामयिकताक रंग भरलनि अछि। भीम द्वारा मगध नरेश जरासन्धक वधक घटनाक व्याख्या सेहो कवि अपन एही चिन्तनक आलोकमे कयलनि अछि। जेँ की ओ स्वेच्छाचारी नृपतन्त्रक घनघोर समर्थक छल आ पाण्डवक गणतन्त्र स्थापना आन्दोलनक मार्गक बाधक छल तेँ लोकहितमे ओकर शमन करब आवश्यक भऽ गेल छल । पुनः भारत विजय अभियानक पश्चात् श्रीकृष्णक परामर्शसँ पाण्डव लोकनि जे राजसूय यज्ञक आयोजन करैत छथि ताहिमे दुर्योधन सेहो आमन्त्रित रहैत अछि । एहि यज्ञमे समस्त देशक नृपति लोकनि उपस्थित भऽ इन्द्रप्रस्थक नेतृत्व स्वीकार करैत छथि । एहि यज्ञक मुख्य उद्‌गाता श्रीकृष्ण वर्त्तमान परिप्रेक्ष्यमे गणतान्त्रिक व्यवस्थाक औचित्यपर प्रकाश दैत छथि आ जनताकेँ सीदित कयनिहार स्वेच्छाचारी नृपतन्त्रकेँ अविलम्ब समाप्त करबाक निर्देश दैत छथि अन्यथा जनविद्रोहक सामना करबा लय तैयार रहबाक गप्प सेहो कहि राजा लोकनिकेँ चेतबैत छथि । कवि अपन अधुनातन चिन्तनकेँ आओरो विस्तारित करैत शिशुपाल वधक घटनाकेँ सेहो एहिसँ जोड़लनि अछि जे ओ जनमतक विपरीत जाय गणतन्त्रक प्रत्यक्ष रूपसँ विरोध करऽ लागल, तेहनामे विवश भऽ कृष्णकेँ ओकर वध करऽ पड़लनि ।

पाण्डवक राजसूय यज्ञक अवसरपर श्रीकृष्ण द्वारा जे अपन चिन्ता ओ चिन्तन प्रदर्शित कयल कयल गेल अछि से निम्न रूपक अछि–

सभा मध्य दुर्नीति नरेशक कृष्ण देखौलनि
कष्ट कथा जनताक कतय की व्यक्त बुझौलनि।
उत्पीड़न जनकेर उचित नहि आब सुझौलनि
जन क्रान्तिक उद्दाम तरंगक ध्यान देओलनि ।
जन सुखदायक नव्य नीति नृपगण स्वीकारथु
कोन अनर्गल प्रश्न हृदय दय हाथ विचारथु ।

देश भरिक जँ भूप करथि स्वीकृत गणशासन
कय सकैत छथि तखन कोनो केन्द्रक निर्धारण ।

कृष्णक ई उद्घोष निरंकुशतावादी शासन व्यवस्थाक पक्षधर दुर्योधनक पेटक पानि तँ डोलाइये दैत अछि, प्रत्युत् पाण्डव लोकनिक वैभव एवं लोकप्रियता देखि ओ जरि-जरि कऽ सुड्डाह होअऽ लगैत अछि । एही संग पाण्डव लोकनिकेँ ध्वस्त करबाक षड्यन्त्र प्रारम्भ भऽ जाइत अछि ।

रचनाकार महाभारतक कथानकसँ सर्वथा फराक भेल प्रतिज्ञा पाण्डवमे एक नवीन पात्रक उद्भावना कयलनि अछि, ओ थिक नास्तिक चार्वाक मतक अनुयायी कणिकाचार्य । कणिकाचार्य नीति ओ अनीति विषयक निरर्थकता, ईश्वरक अस्तित्वहीनता आदि देखबैत स्वार्थकेँ सर्वोपरि कहैत राजाकेँ आँखि मूनि द्यूत-क्रीड़ाक षड्यन्त्र हेतु अपन सहमति देबाक परामर्श दैत अछि । आब प्रश्न उठैत अछि जे कणिकाचार्य सन सर्वथा कल्पित नास्तिक मतानुयायी पात्रक अवतरण करयबाक पाछाँ रचनाकारक की उद्देश्य भऽ सकैत छनि । एकर उत्तर समकालीन भारतक ओहि व्यवस्थामे ताकल जा सकैछ जे कोना स्वतन्त्रताक पश्चात् एकटा विशेष पंथमे दीक्षित सरकारी सुविधाभोगी बुद्धिजीवी वर्गक उदय भेल जे भारत सन सांस्कृतिक परम्पराबला धर्मप्राण देशक जनताकेँ ओकर संस्कृति ओ परम्परासँ काटि अनैतिक मार्गपर चढ़यबाक षड्यन्त्र सरकारमे पैसि कऽ रचैत रहल । धर्मनिरपेक्षताक नामपर सरकारकेँ गलत-सलत परामर्श दैत ओकरासँ तदनुकूल नीति बनबवैत रहल । आधुनिक भारतक एही सरकारी बुद्धिजीवीक दूषित चरित्र ओ मानसिकता अवक्षेपण भेल अछि कणिकाचार्यमे जे राजा धृतराष्ट्रकेँ अन्याय करबाक परामर्श दऽ विनाशकेँ आमन्त्रित करबाक प्रयास करैत देखल जाइत अछि ।

कणिकाचार्यक प्रसंग-कथामे कवि नास्तिकतावादी दर्शनक अत्यन्त सुन्दर उपस्थापन कयलनि अछि । मुदा तकरा संगहि गान्धारीक मुँहे एकर काटमे आस्तिकताक प्रभावपूर्ण मर्यादा सेहो स्थापित कयलनि अछि । महाकाव्यक चारिम सर्गमे कणिकाचार्यक नास्तिकतावादी तर्क एवं पाँचम सर्गमे गान्धारीक द्वारा आस्तिकतावादक महत्ताक स्थापनामूलक व्याख्यानसँ एहि महाकाव्यमे एकटा रोचक वैचारिकतासँ परिपूर्ण शास्त्रार्थक दृश्य उपस्थित भेल अछि आ भारतीय नारीक सरस्वती स्वरूप साकार भऽ गेल अछि । संगहि रचनाकारक गम्भीर अध्ययन ओ विराट् अनुभवक मणिकाञ्चन संयोग सेहो साकार भऽ उठल अछि ।

आलोच्य महाकाव्यक छठम सर्ग वैचारिकताक दृष्टिसँ अपन उत्कर्षपर पहुँचल देखबामे अछि । व्यास ओ विदुरक बीच वार्त्तालापक ब्याजेँ रचनाकार देशक समकालीन

दुर्दशाक जे चित्र उरेहलनि अछि से मर्मकेँ बेधि दैत अछि । कोशी कातक एकटा अविकसित गाममे रहि कऽ रचल गेल एहि महाकाव्यक चिन्तन पक्षक सूक्ष्मता ओ व्यापकता देखि ई कहऽ पड़ि जाइछ जे बौद्धिकता ओ चिन्तन–सामर्थ्य मात्र अंगरेजी पढ़ल शहरुआ बाबू–भैयाक बपौती नहि थिकनि । संस्कृत शिक्षा प्राप्त, घोर अभावक मध्य संघर्षमय जीवन व्यतीत करैत अज्ञातजी सन व्यक्तित्वक चिन्तना–शक्ति कतेक मौलिक, कतेक उर्वर ओ कतेक व्यापक छलनि तकर प्रत्यक्ष प्रमाण अछि ई महाकाव्य । अतीत कथामे समकालीन देश–दशाकेँ जाहि प्रकारेँ ओ गुम्फित कयलनि अछि से हुनका साहित्यकारक आसनसँ ऊपर उठाय एकटा प्रखर राष्ट्रचिन्तकक पदपर, मानव मूल्यक प्रबल पक्षधरक पदपर एकटा दार्शनिक ऋषि जकाँ स्थापित करैत छनि ।

वर्त्तमानमे भारते नहि सम्पूर्ण विश्व भ्रष्टचारासँ त्रस्त अछि । भविष्य द्रष्टा कवि अपन अतीतक आँखिसँ भ्रष्टाचारक एहि चरम स्थितिकेँ देखि लेने छलाह । सुरसाक मुँह जकाँ बढ़ैत भ्रष्टाचारमे सत्ताक भूमिकाकेँ प्रत्यक्षतः स्वीकारैत कवि कहलनि अछि–

राजा राजपुरुष सभ बाहर नैतिक प्रवचन दै छथि
किन्तु शोषणक काल नीतिसँ हाथ जेना धो लै छथि ।
शासन तन्त्रक हाथ निरंकुश माङ करय उत्कोचक
चोरि कोनो नहि बुझल जाइए वस्तु एखन संकोचक।

एहिना अनियन्त्रित मूल्य वृद्धि लेल सत्ताक नीति ओ व्यापारी वर्गक निरंकुश शोषक प्रवृत्तिकेँ दोषी दैत एकटा कृषक–कवि कृषकक पीड़ाकेँ निम्न प्रकारेँ स्वर देलनि अछि–

अपन वस्तुपर वणिक समाजक अपने जूति चलैए
मुदा किसानक उत्पादनपर शासन मूल्य अँकैए ।
एक अंकपर मूक किसानक जँ अछि अन्न बिकाइत
वणिकक क्रेय वस्तुपर दस बड़ अछि गेँठक चल जाइत ।

जनतामे भ्रष्टाचरणक बढ़ैत प्रवृत्तिक लेल कवि सम्पूर्णतः सत्ताकेँ दोषी मानलनि अछि । नारीक दुर्दशापूर्ण स्थिति, तिलक–दहेजक प्रचार, उन्मुक्त कामाचार, अर्थलोलुपता, जनसंख्या–वृद्धि सन यावन्तो समस्याक चित्रण करैत कवि वर्त्तमान कालकेँ अतीतक संग नियोजित करैत पुनः एकर समाधानो देखौलनि अछि । एहि प्रकारक जखन अराजकता व्याप्त हो, रक्षके जँ भक्षक बनि गेल हो तँ एहि

स्वेच्छाचारी नृपतन्त्रकेँ बदलि कऽ गणतन्त्रक स्थापना कयल जायब समयक माँग अछि । जनता परिवर्त्तनक लेल कछमछा रहल अछि । जँ समय रहैत शासक लोकनि नहि चेतैत छथि तँ परिस्थिति बेसम्हार भऽ जा सकैत छनि । कविक दृष्टिमे व्यवस्थाक सबसँ उपयुक्त ओ लोकहितकारी मार्ग थिक गणतन्त्र । अन्यथा अपन जीवन कालमे अत्याचारी राजतन्त्रक विरोधमे भेल विद्रोहक पश्चात् बहुतो ठाम निरंकुश अधिनायकवादक स्थापना होइत सेहो ओ देखने छलाह । रूसमे जारशाहीक विरुद्ध भेल वोल्शेविक क्रान्तिक पश्चात् स्टालिनवादक क्रूर अध्याय एवं जर्मनीक हिटलरशाही हुनका समक्षहिक घटना छलनि । अपन समकालीन घटना-परिघटनासँ प्रेरित-प्रभावित कवि कृष्णयुगीन भारतमे मजबूत केन्द्रक अधीन गणतान्त्रिक संघ राज्यक स्थापनाक उद्भावना कयने छथि । कृष्णमे पटेलक छविकेँ निरूपित करैत कवि अवश्ये स्वतन्त्रता पश्चात लौहपुरुषक ओहि दिशामे प्रारम्भ कयल गेल अभियानसँ प्रेरित भेलाह अछि ।

कृष्णयुगीन भारतमे गणतन्त्रक आदर्श स्वरूप की होअय, ताहि लेल कवि कृष्णक द्वारिकाक शासन व्यवस्था ओ रीति-विधानकेँ सामने रखलनि अछि । राजा जनताक सेवकक रूपमे जनप्रतिनिधिगणक सहायतासँ राज्य चलबैत अछि । शासक आ शासितक बीच कोनो भेदभाव नहि छैक । ओतऽ केओ दुखी नहि अछि, छोट-पैघ, जाति-पातिक कोनो भेद-भाव नहि छैक । सभक लेल शिक्षा अनिवार्य छैक । सभकेँ समान अधिकार प्राप्त छैक । सभ एकमत भऽ राष्ट्रक उत्थानमे लागल अछि । कृष्णक द्वारिकामे गणतन्त्रक ई राजशाही मॉडलक प्रेरणा कविकेँ इंग्लैंडक गणतन्त्रसँ भेटलनि अछि । राजशाही रहितो ओहिठाम गणतन्त्र अपन सफलताक ध्वजा फहरबैत रहल अछि । मुदा सिद्धान्तक रूपमे गणतन्त्र रहितो स्वतन्त्र भारतमे जे असमानता, भ्रष्टाचार, आपसी वैमनस्य, प्रान्तवाद, वंशवाद जातिवाद, धार्मिक विषमता, तुष्टिकरब आदिक दर्शन कविकेँ होइत रहलनि, अपन ओहि पीड़ा ओ क्षोभकेँ अपन महाकाव्यमे प्रकारान्तरसँ विस्तारसँ व्यक्त कयलनि अछि ।

प्रतिज्ञा पाण्डवमे वर्णित लोकतन्त्रक ई आदर्श स्वरूप 1688 इ.क इंग्लैण्डक गौरवपूर्ण क्रान्तिक पश्चातक व्यवस्थासँ अनुप्राणित प्रतीत होइत अछि जाहिमे राजाक दैवी अधिकारकेँ समाप्त कऽ कऽ संसदकेँ सर्वोच्च स्थान देल गेल छल । 1789 इ. क फ्रांसीसी क्रान्तिसँ निःसृत स्वतन्त्रता, समानता एवं सहभ्रातृत्वक नीतिसँ ओतप्रोत बुझना जाइत अछि कवि द्वारा निरूपित गणतन्त्रक 'द्वारिका मॉडल' । एहि द्वारिका मॉडलकेँ राष्ट्र स्तरपर स्थापित करबाक अभियानमे लागल छथि कृष्ण । देशक समस्त क्षत्रप सभकेँ एक केन्द्रिय शक्तिक अधीन कऽ कऽ भारतक राष्ट्रिय एकीकरणक महान उद्योगमे लागल श्रीकृष्णक छविमे उनैसम शताब्दीमे जर्मनीक

विस्मार्क ओ इटलीक गैरीबाल्डी ओ बीसम शताब्दीक भारतक पटेलक दर्शन होइत अछि । श्रीकृष्ण रक्तहीन क्रान्तिक द्वारा भारतमे परिवर्त्तन चाहैत छथि । मुदा जतऽ अत्यधिक आवश्यकता पड़ि जाइत छनि ततऽ ओ युद्ध आ हिंसाक आश्रय सेहो लैत छथि । तेँ जरासन्ध आ शिशुपाल सन गणतन्त्र विरोधी स्वेच्छाचारी राजा सबकेँ सुरधाम पहुँचा दैत छथि । कृष्णक एहि कृत्यमे पटेल द्वारा हैदराबाद आ जूनागढ़क विरुद्ध कयल गेल बलप्रयोगक दर्शन होइत अछि ।

कृष्णक निर्देशनमे भेल राजसूय यज्ञसँ एकटा राष्ट्रव्यापी सन्देश पसरैत अछि जे दुर्योधन सन अहंकारी-स्वेच्छाचारी भावी शासकक पेटक पानि डोला दैत छैक । अपन भविष्यपर संकट जानि ओ गणतन्त्रक प्रसार ओ राष्ट्रिय एकीकरणक एहि अभियानकेँ बीचेमे ध्वस्त कऽ देबाक षड्यन्त्र रचैत अछि । अपन शक्तिसँ पाण्डव लोकनिकेँ नहि हरा सकबाक अपन सामर्थ्यकेँ जनैत शकुनी और कर्णक सहयोगसँ ओ पाण्डव लोकनिकेँ द्यूत-क्रीड़ा हेतु बजबैत अछि आ छलपूर्वक हरा हुनका लोकनिक समस्त राज्य ओ धन हरि लैत अछि । एहि विजयोन्मादमे ओ लोकनि द्रौपदीक चीरहरण सन कुकृत्य कऽ बैसैत अछि । पाण्डवक संग भेल एहि दुर्घटनासँ राष्ट्रिय एकीकरणक संग गणतन्त्र-प्रसारक अभियानमे गतिरोध उत्पन्न भऽ जाइत छैक । तेहनामे पाँचो पाण्डव लोकनि अपन निजी स्वार्थक कारणे आन्हर बनल हस्तिनापुर ओ ओकर कर्णधार लोकनिक समूल नाश करबाक प्रतिज्ञा लैत छथि ।

वस्तुतः प्रतिज्ञा पाण्डवक रचनाकार वर्त्तमानक आँखिसँ अपन भूत ओ भविष्य दुनूकेँ देखलनि अछि । एकटा अतीतमूलक कथाकेँ नवीन कलेवरमे प्रस्तुत कऽ कऽ ओकरा वर्त्तमानक साँचामे ढालि देलनि अछि । एतबे नहि कवि एहि तथ्यक आकलन कऽ लेलनि जे भविष्यमे एहूसँ बेसी भयानक ओ बीभत्स स्थिति उत्पन्न होयत । प्रतिज्ञा पाण्डवमे व्यवस्थाक विरुद्ध जे हुनक आक्रोश सर्वत्र उभरलनि अछि, तकर अवगाहन निम्न पाँतीसँ कयल जा सकैत अछि-

धन-धरती-संग्रह-सीमाकेर जा नहि निर्णय लेत
केहनो नीति, समान रूपमे सुख-सुविधा की देत ?
जनसंख्या बढ़ि गेल, गेल बढ़ि सभ वस्तुक महगाइ
धन संग्रहपर टूटल अछि तेँ शिखरक लोक कसाइ ।
अपने सुख-सुविधापर केवल, शिखरक केन्द्रित ध्यान
से की करत विकल जनताकेर सुख-शान्तिक ओरियान ?
भूख-पियासक ज्वालामे अछि देशक लोक जरैत
अपन अचल पद लेल लड़ैए नित नव दल बनबैत ।

विगत शताब्दीक नवम दशकमे लिखित प्रतिज्ञा पाण्डवक उपर्युक्त पंक्ति देशक वर्त्तमान स्थितिमे कतेक सटीक बैसैत अछि से कहबाक प्रयोजन नहि । ई कृति केहन सार्वकालिक आ सार्वदेशीय महत्त्वक अछि से स्वतः उह्य थिक । किछु गोटा वर्त्तमान कालमे महाकाव्यक उपयोगितापर प्रश्नचिह्न ठाढ़ करैत छथि । हुनकासँ पूछल जयबाक चाहियनि जे व्यस्तताक एहि घोर अर्थयुगमे साहित्य-लेखनहिक कोन प्रयोजन रहि गेल अछि ? लेखक लोकनि ढाकीक ढाकी लिखि रहलाह अछि, मुदा कतेक गोटा हुनका पढ़ैत छनि ? तथापि जँ लेखक लिखि रहलाह अछि तँ ताही उत्साह ओ विश्वासमे मैथिलीमे अन्यान्य विधाक संग-संग महाकाव्यो लिखा रहल अछि । तखन प्रयोजन ई अछि जे समयक प्रवाहक संग जेना साहित्यक विभिन्न विधा अपनामे परिवर्त्तन अनलक अछि तेना महाकाव्यो अपन स्वरूपमे परिवर्त्तन आनय । ई परिवर्त्तन कोन रूपक भऽ सकैछ जाहिसँ महाकाव्य अपन प्रासंगिकता बनौने रहय तँ तकर अभिनव दिशा-बोधेटा नहि अपितु प्रतिमान प्रस्तुत करैत अछि **प्रतिज्ञा पाण्डव** । परम्परा ओ आधुनिकताकेँ समन्वित करैत एकटा प्राचीन कथाकेँ जाहि कलात्मकता, बौद्धिकता, वैचारिकता ओ चातुर्यताक संग वर्त्तमान कालक हेतु प्रासंगिक बना देल गेल अछि ताहि दृष्टिसँ मैथिलीमे अपना ढंगक ई विशिष्ट प्रयोग थिक ।

●

यात्री काव्यमे विरोधाभास

काव्य थिक हृदयक उद्‌गार । सर्जन-क्षमतासँ युक्त प्रतिभावान कवि कविता रचैत नहि छथि प्रत्युत् ओकर दर्शन करैत छथि । वेदक ऋचाक दर्शन जेना सुदूर अतीत कालमे वैदिक ऋषि लोकनि कयने छलाह, तहिना कवि अपन काव्यक दर्शन करैत छथि । काव्य-दर्शनक स्थिति कोनहुँ कविक लेल हरसट्ठे नहि उत्पन्न होइछ। ई साधनाक चरम स्थिति होइछ जखन काव्य-देवीक संग साक्षात्कारक संग हुनक अंशक रूपमे काव्य-सरिताक प्रस्फुटन ओ अवतरण होइछ । अपन अनुभूतिक चरम वेगक संग जखन कोनो द्रष्टापुरुष, चिन्तनक ओहि परम स्थितिमे प्रवेश करैत छथि तखन हुनक हृदयसँ स्वतः काव्य-सलिलाक निर्मल, निर्दुष्ट, निर्द्वन्द्व धारा फूटि पड़ैत छनि । ओ कण्ठक मार्गसँ जिह्वापर पहुँचि शब्दक आभूषणसँ सुसज्जित भऽ लेखनीक नोंकपर विराजमान होइत छथि तकर बादे जनमानसकेँ हुनक दर्शन करबाक सौभाग्य प्राप्त भऽ पबैत छैक। वाणविद्ध क्रौंचक वेदनासँ चरम शोकक स्थितिमे पहुँचल वाल्मीकिक कण्ठसँ एहने कोनो क्षणमे शोक वा श्लोकक रूपमे कविताक स्वर फूटल रहनि ।

कविताक उत्पत्तिक एहि उपर्युक्त सिद्धान्तक अनुरूप दैवी काव्य-बीजसँ परिपूर्ण कोनो अक्षरसाधक पुरुषहिकेँ काव्यद्रष्टा बनबाक सौभाग्य प्राप्त होइत रहलनि अछि । सेहो सौभाग्य ओ अवसर क्वचिते-कदाचित् कोनो कविकेँ प्राप्त होइत छनि। ओहि स्थितिमे अपन समग्र कलाक संग अवतरित काव्य-गंगा अक्षर-जगतमे चिरकालिक महत्त्वकेँ प्राप्त करैत छथि । वाल्मीकिक रामायण किंवा व्यासक महाभारत आयासपूर्वक लिखल गेल काव्य नहि छल अपितु एकर कवि लोकनि एकर दर्शन कयने छलाह तेँ ई दुनू श्रेण्यकाव्य चिरजीविताकेँ प्राप्त कयने अछि से तहिना जहिना वैदिक युगीन ऋषि याज्ञवल्क्य शुक्ल यजुर्वेदक मन्त्रक दर्शन कयने रहथि ।

काव्य-सलिलाक उत्पत्तिक दोसर स्रोत थिक-मानसपटल । मस्तिष्कमे उत्पन्न कोनो गूढ़ विचार, कोनहुँ मौलिक चिन्तन, कोनो अनूभूति वा कोनहुँ मार्मिक घटनासँ उत्पन्न संवेदना सेहो कविकेँ कविताक रचनाक प्रेरणा दैत अछि । मुदा मस्तिष्कसँ निकलल एहि कोटिक कवितामे ओ अलौकिकता एवं ओ नैसर्गिकता नहि रहैत अछि। मस्तिष्की कविताक जन्म सुविचारित ढंगसँ होइत छैक तेँ एहिपर विभिन्न प्रकारक बद्धमूल वैचारिकताक अवक्षेपण स्वाभाविक अछि। मस्तिष्की-काव्यमे जेँ कि एकर रचनाक उद्देश्य पूर्वहिसँ निश्चित रहैत अछि तेँ एकरा निर्दुष्ट ओ निर्द्वन्द्व होयब सम्भव नहि अछि। अपना समयमे एहि दोसर कोटिक काव्य भने जतेक प्रचार प्राप्त कऽ लैत होअय मुदा एकर चिरजीविता सदैव सन्देहास्पद बनल रहैत छैक । देश, काल, पात्र, परिस्थिति ओ रुचिमे परिवर्त्तनक संगहि एहि दोसर कोटिक मानसी-कविता कालबाह्य भऽ जाइत अछि । मात्र ऐतिहासिक सन्दर्भक रूपमे समालोचकगण यदा-कदा ओकर स्मरण करैत छथि, ओहिमे व्यक्त विचारक व्याख्या करैत ओकर रचना कालक युगीन परिस्थितिक स्मरण करैत छथि ।

मुदा वर्त्तमान समयमे मानसी-कविता सैह काव्य उत्पत्तिक मान्य सिद्धान्तक रूपमे स्थापित भऽ चुकल अछि आ एही धाराक कविता आह-काल्हि मुख्य धाराक कविता मानल जाय लागल अछि। कविताकेँ सामाजिक परिवर्त्तनक अस्त्र बनाओल जायब एवं काव्य-कर्मकेँ अपन राजनीतिक विचारधाराक प्रचारक माध्यम बनाओल जयबाक एहि विषम स्थितिमे हृदयी-कविताक चर्चा मात्र करब परम्परावादीक पाँतीमे बैसा देबाक लेल पर्याप्त अछि। मुदा तेँ कविताक हृदयी उत्पत्तिक सिद्धान्त अमान्य भऽ गेल अछि से बात नहि ।

कविताक उत्पत्तिक उपर्युक्त दुहू सिद्धान्तक सन्दर्भमे वैद्यनाथमिश्र यात्रीक काव्यक अवलोकन कयला उत्तर प्रतीत होइछ जे मूल रूपमे ओ द्रष्टा-कवि छलाह, मुदा सांसारिकता ओ युग परिवर्त्तनक संग उत्पन्न होइत नवीन-नवीन वैचारिकतासँ ओ जेँ कि विलग नहि छलाह तेँ हुनका मानसी किंवा सर्जक-कविक भूमिकाक सेहो निर्वाह करऽ पड़लनि । मुदा कालक्रमे हिनक राजनीतिक प्रतिबद्धता ततेक बेसी प्रबल होइत चल गेलनि जे सर्जक-कविक भूमिका द्रष्टा-कविक तुलनामे बेसी सबल-प्रखर होइत चल गेलनि । एहि दुनू भिन्न-भिन्न स्थितिमे उत्पन्न भेल हुनक काव्यक चरित्रमे तात्त्विक अन्तर एवं विरोधाभास देखना जाइत अछि ।

जेना वाल्मीकिक कण्ठसँ शोकक स्थितिमे श्लोकक जन्म भेल छलनि तहिना यात्रीक कण्ठसँ प्रथम काव्य-स्वर तहिया फूटल छलनि जहिया 1929 इ.मे हुनक साहित्य-गुरु म.म. मुरलीधरझाक निधन भेल छलनि । गुरुक महाप्रयाणसँ

शोकाकुल हुनक एहि शिष्यक प्रथम काव्यमय श्रद्धांजलि हृदयेसँ निःसृत भेल छलनि। प्रायः यात्रीक ई प्रथम हृदयी-काव्य छलनि जकर प्रकाशन ओही वर्ष **मिथिला** मासिकमे भेल छल।

यात्रीक सम्पूर्ण निर्दुष्ट नैसर्गिक कवि रूप हुनक **माँ मिथिले** कवितामे साकार देखल जाइत अछि। ने वाम ने दहिन, विशुद्ध कविक रूपमे ठाढ़ यात्रीक ई स्वरूप काव्य-देवीक समक्ष श्रद्धावनत् होयबाक लेल विवश कऽ दैत अछि। 1931मे लिखित एवं 1949 मे प्रकाशित **चित्रा**मे पहिल कविताक रूपमे संकलित **माँ मिथिले** अपन सम्पूर्ण काव्य-गरिमाक संग अवतरित भेल प्रतीत होइछ जे शास्वत महत्त्वक अछि आ जे स्वतः पवित्र काव्य ऋचाक मर्यादा प्राप्त कऽ लेने अछि। सप्त षड्पदीमे योजित एवं बेयालिस पाँतीमे निबन्धित ई काव्य कोनो सामान्य काव्य रचना नहि प्रत्युत् काव्य-ऋषि यात्रीक दर्शन थिकनि, हुनक काव्य-साधनाक चरम स्थितिक प्रतिफलन थिकनि। माँ मिथिलाक रूपमे काव्य देवी हुनका अपन मातृ छविक दर्शन करबैत छथिन, मातृगौरवक अवबोध करबैत हुनका काव्य-रचनाक विराट-क्षेत्रक अनुभूति करबैत छथिन। अपन विस्मृत गौरवक बेर-बेर स्मरण करबैत ओहने स्वर्णिम अतीतकेँ पुनः साकार करबाक प्रेरणा दैत छथिन। वस्तुतः **माँ मिथिले** यात्रीक आस्थावादी-आशावादी स्वरूप एवं प्रखर सांस्कृतिकचेता काव्य-ऋषिक एकटा अकृत्रिम छवि प्रस्तुत करैत अछि। सुदूर अतीत कालमे विदेह माथवक विदेह आगमनसँ लऽकऽ वर्त्तमान कालक नृप रमेश्वरसिंह तथा गौतम-याज्ञवल्क्यसँ लऽकऽ कवि चन्द्र पर्यन्तक स्मरण करबैत हिनक ई कविता आत्मविस्मृत मैथिल समाजमे गौरवक भाव जगबैत समुन्नत वर्त्तमान, विद्या-वैदुष्यसँ युक्त वर्त्तमान गढ़बाक प्रेरणा दैत अछि। काव्य-द्रष्टा ऋषि यात्री मुनिक शान्तिमय पर्णकुटीमे निरन्तर चलैत साम-गान, यज्ञकुंडसँ निकलैत धुआँ, दार्शनिक-ऋषि लोकनिक शास्त्र चर्चा, उदयनक जयोन्माद, अयाचीक त्याग सन असंख्य-असंख्य गौरव दृश्यक अवलोकन कऽ अभिभूत होइत छथि आ मिथिलाक एकमात्र पूजी ओकर विद्या-वैभव छैक ताहि निष्कर्षपर पहुँचैत छथि-

गौतम अनुमित न्यायक अथमे
याज्ञवल्क्य दर्शित-नय पथमे
ज्ञानी जनकक जीवन रथमे
अंकित तव पद-पद्म
अछि मैथिलीक मौलि मुकुलावलि
ललित जे छविसद्म।

शारदा-यति-जयालापमे
विद्यापति-कविता-कलापमे
नान्यदेव नृपतिक प्रतापमे
देखिय तोर महत्त्व
जहिसँ आनो कहइछ जे अछि
मिथिलामे किछु तत्त्व ।

काव्यदेवीसँ प्राप्त सांस्कृतिक चेतनाक एही वरदानक संग यात्री अपन समग्रताक संग काव्यमंचपर अवतीर्ण भेलाह जकर उद्देश्य एहि मिथिला देशक अवनतिक मूल कारण अविद्याकेँ तिस्कृत कऽ भगायब आ विद्याक पुनर्स्थापना कऽ मैथिल संस्कृतिक गौरव ध्वजा फहरायब छलनि । 1933 मे **मैथिली सन्देशमे** प्रकाशित हुनक एकटा कवितामे एहि महान उद्देश्यक शंखनाद भेल अछि-

पसरय एतय यथोचित अभिनव कला-कुशलता
प्रतियोगिताक रणमे ई प्रान्त अग्रसर हो ।
अन्तिम विनय दयालो ! बस आब एकटा जे
ई पाग विश्व भरिमे सभकेर माथपर हो ।

काव्यदेवी प्रदत्त आस्थाक अश्वपर सवार भेल, सांस्कृतिक चेतनाक दीप लऽकऽ जखन काव्यर्षि यात्री विदा भेलाह तँ कंटकाकीर्ण, उबड़-खाबड़ पथ, सामाजिक विषमताक अजस्र अगम खाधि देखि हुनका जेना स्वयं अपनापर सन्देह होअऽ लगलनि । अपन सांस्कृतिक स्वप्नकेँ साकार होयबामे अनेक विघ्न-बाधाक अनुभव भेलनि । तेहनामे हिनक अन्तसक काव्य-बीज हृदयसँ निकलि हिनक मानसपटलमे जा कऽ विचरण करऽ लगलनि । द्रष्टा कवि चिन्तक बनि बैसलाह आ चिन्तन करऽ लगलाह जे एहि समस्याक निवारणक कोन उपाय निकालल जाय ? कविताकेँ मात्र पवित्र मन्त्रक भूमिका धरि नहि सीमित राखि ओकरा सामाजिक परिवर्त्तनक अस्त्र बनयबाक चिन्तना करैत कवि पुनः काव्यदेवीक आह्वान कयलनि जे ओ हिनक मार्गदर्शन करथिन । काव्यदेवी हिनक मार्गदर्शन की करितथिन ? कवि यात्री तँ अपन मार्गक अनुसन्धान अपनहि कऽ चुकल छलाह हुनकर ओ मार्ग छल राजनीतिक चेतनाक मार्ग । बस अपन एहि निर्णयपर काव्यदेवीसँ स्वीकृतिक मोहर लगयबाक हेतु हुनक आराधना नहि प्रत्युत् हुनका आदेश दऽ बैसलाह । एही ठामसँ यात्रीमे कृत्रिम मस्तिष्की-काव्य परम्परा जन्म होइत छनि । फरवरी 1941 मे लिखित हिनक कविता **कविक स्वप्न** शीर्षक कविताक जन्म हिनक मानसपटलसँ भेलनि जे सर्वथा सुविचारित ओ सुचिन्तित

कविता अछि, हिनक समग्र राजनीतिक चिन्तनक दर्पण थिक ओ कविता। सांस्कृतिक पुनर्स्थापनासँ पहिने राजनीतिक चेतनाकेँ आवश्यक मानैत यात्रीक एकटा राजनीतिक चिन्तकक स्वरूपक एही ठामसँ प्रारम्भ भऽ गेलनि जनिका लेल आब काव्य-रचना साधना नहि रहि सम्पूर्ण रूपसँ साधन भऽ गेलनि। हुनक काव्य-रचनाक मूल उद्देश्य समाजमे व्याप्त विषमताकेँ दूर कऽ सबकेँ एक समान अवसर उपलब्ध करायब भऽ गेलनि। मिथिलाक रूसल विद्या वैभवकेँ पुनः पलटा कऽ लऽ अनबामे विषमता सबसँ पैघ बाधक छल तकर गहन अनुभव करैत यात्रीक चिन्ता एकटा गढ़ल नारा जकाँ काव्य रूपमे व्यक्त भेलनि।

अन्न ने छै, कैंचा ने छै, कौड़ी ने छै
गरीबक नेना कोना पढ़तैक रे ?
उठह कवि तोँ दहक ललकारा कने
गिरि-शिखरपर पथिक-दल चढ़तैक रे !

कवि यात्रीक ई राजनीतिक प्रतिबद्धताजन्य चिन्तन जेना-जेना प्रबल-प्रगाढ़ होइत चल गेलनि तेना-तेना हिनक कविताक स्वर सेहो बदलैत चल गेलनि। 1931 मे **माँ मिथिले!** कविता विशुद्ध रूपसँ हिनक हृदयसँ निःसृत भेल छलनि, मुदा काव्य मनपर पड़ैत आयातित राजनीतिक चिन्तनक लेप क्रमशः ततेक बेसी प्रगाढ़ होइत चल गेलनि जे तकर बादसँ हिनक कविता पूर्णत सुविचारित ओ कृत्रिम होअऽ लगलनि। कवितामे सांस्कृतिक चेतनाक ऊपर राजनीतिक चेतना क्रमशः प्रभावी होइत गेलनि। 15 अगस्त 1947केँ रचित अपन **वन्दना** कवितामे ई नव ढंगसँ तिरहुत-मिथिलाक वन्दना कयलनि। मिथिलाक विद्या-वैदुष्यपर सभक समान अधिकार, भेद-भावसँ मुक्त साम्यवादी समाज व्यवस्थाक परिकल्पना करैत कवि कहि उठलाह-

केओ आब कथी लै मूर्ख रहत ?
केओ आब कथी लै कष्ट सहत ?
केओ किअए होयत भूखैँ तबाह ?
केओ किअए होयत फिकरेँ तबाह ?
नहि पड़ल रहत भेटतैक काज !
सभ करत मौज सभ करत राज !
पढ़ता-गुनता करताह पास
जुगल कामति, छीतन खबास
जे काजुल से भरि पेट खएत
ककरो नहि बड़का धोधि हएत।

सांस्कृतिक चेतनाक सुरम्य वृक्षपर बाँझी जकाँ जनमल हिनक राजनीतिक चेतना जेना यात्रीकेँ दिग्भ्रान्त कऽ देलकनि । तेँ ने अपन अचेतन भावमे कवि भोगवादी संस्कृतिक पैरवी करऽ लगलाह जे- सभ करत मौज, सभ करत राज । 1941मे लिखित अपन हृदयी-कविता **माँ मिथिले !** मे जतऽ ओ अयाचीक त्यागपर गर्व करैत ओकरा मिथिलाक उत्कर्षक हेतु कहलनि-

धीर अयाचिक साग-पातमे पद्यबद्ध शंकरक बातमे ।

ततऽ 1947 मे लिखित अपन मष्तिष्की-कविता **वन्दनामे** अयाचीक साग-पात खायब हुनका कदापि पसिन्न नहि छलनि-

खयता न अयाची आब साग !
ककरो खसतैक किएक पाग ?

एतबे दिनमे कवि यात्री बिसरि गेल छलाह जे अयाचीक ख्याति हुनक अयाचकतेकेँ लऽ कऽ रहलनि अछि । अयाचीक महनीयता हुनक साग-पातमे छनि । जँ अयाची अपन परम्पराकेँ बिसरि भोगवादी बनि जइतथि तँ फेर किएक केओ हुनकर नाम लितनि ? विषयी-भोगी सबसँ तँ ई संसार ओहिना भरल पड़ल अछि । तेहनामे मिथिलामे कोन रूपक सांस्कृतिक उत्थान करबाक उद्देश्य यात्री पोसऽ लागल छलाह से स्वतः उह्य थिक । अपन सांस्कृतिक चेतनाकेँ मूर्त्त करबाक हेतु यात्री राजनीतिक-प्रतिबद्धताक जाहि मार्गक अनुसरण करऽ लगलाह से हुनका जेना प्रथभ्रान्त कऽकऽ राखि देलकनि ।

द्रष्टा-कवि यात्री पहिने जाहि-जाहि विषयकेँ लऽकऽ गौरवक बोध करैत छलाह से मानसी-कविक भूमिकामे अयला उत्तर ओहि सब प्राचीन प्रतीक एवं अपन हृदयी-कविताक विषयकेँ उपहासक दृष्टिसँ देखऽ लगलाह । **माँ मिथिले !** मे जतऽ ओ नृप रमेश्वरक उच्च ज्ञानपर गौरव करैत छथि-

नृप रमेश्वरक उच्च ज्ञानमे
आभा अमल अहाँक
विद्याबल विभवक गौरवमे
अहँ छी थोर कहाँक ?

ततऽ अपन मानसी-कविता **वन्दनामे** नृप रमेश्वरक पुत्र महाराज कामेश्वरसिंह पर कटु व्यंग्यक तीर चलबैत कवि कहैत छथि-

कहबओता अजुका महाराज
केवल कामेश्वरसिंह काल्हि ।
हमरा लोकनि जे खाइत छी
खयताह ओहो से भात-दालि

निश्चित रूपसँ यात्री कवि व्यक्तित्वमे दृष्टिगोचर होइत एहि विरोधाभासी प्रवृत्तिक पाछाँ कारण अछि हुनक घनघोर राजनीतिक प्रतिबद्धता । मात्र विरोध लय विरोध, प्रगतिशील कहयबाक लेल विरोध । वास्तवमे यात्रीजीक आँखिपर से वैचारिक पट्टी बन्हा गेल छलनि जे ओ कामेश्वरसिंहक उदारता, प्रजा पालकता एवं विद्या प्रेमक मूल्यांकन नहि कऽ सकलाह, प्रत्युत् हुनक महराजीक अन्तहिमे मिथिलाक उदय मानि बैसलाह ।

वास्तवमे देखल जाइछ जे यात्रीजी जेना-जेना प्रौढ़ता दिस बढ़ैत गेलाह तेना-तेना हुनक कवि व्यक्तित्व नैसर्गिकतासँ दूर होइत चल गेलनि । हुनक कविता एकटा निश्चित वैचारिक परिधिमे बन्हाइत चल गेलनि । अपन कविकर्मकेँ जेना ओ अपन निजी राग-द्वेषक प्रदर्शन एवं राजनीतिक प्रतिबद्धताक अभिव्यक्तिक माध्यम बना लेलनि । **माँ मिथिले !** मे ओ वैदिक कालीन मिथिलाक संस्कृतिक चित्र उरेहैत गौरवान्वित भेल छलाह -

मुनिक शान्तिमय पर्णकुटीमे
तापसीक अचपल भृकुटीमे
साम श्रवणरत श्रुतिक पुटीमे
छल अहाँक आवास
बिसरि गेल छी से हम
किन्तु न झाँपल अछि इतिहास ।

मुदा जखन 1954मे वैदिक विद्याक संरक्षणार्थ दरभंगामे कामेश्वरसिंह द्वारा मिथिला संस्कृत शोध संस्थानक स्थापना कयल गेल तँ वैचारिक प्रतिबद्धतासँ लाचार कृत्रिम कवि यात्री एकर उपहास करैत **सुग्गा-मैना इंस्टीच्यूट** सन कविता लिखि अपन मोनक भड़ासकेँ निकालनि ।

कविक सांस्कृतिक चेतनाक दीप हुनक प्रचंड राजनीतिक चिन्तनाक अन्हड़क आगाँ टिकि सकबामे असमर्थ भऽ गेल । मानसी-कविताक बटवृक्ष हृदयी-कविताक तन्तुक बेलकेँ छापि देलक । एहि अन्हारमे अनास्था से फराके अपन योग देबऽ लागल छल । मिथिलाक जाहि वैदिक विद्या परम्पराक प्रति कवि पूर्वमे नतशिर

देखल गेलाह, मिथिलाक जाहि जनक, नान्यदेव, रमेश्वरसिंह सन नृपतिक प्रति अपन असीम आस्था प्रदर्शित करैत कवि अघाइत नहि छलाह, पछाति तकरहि नकारैत ओकरा सभक प्रति अपन घोर अनास्थाक प्रदर्शन करऽ लगलाह । अपन **परम सत्य** कवितामे सबकेँ फूसि साबित करैत कवि कहैत छथि–

फूसि श्रुति-स्मृति
फूसि शास्त्र-पुराण
फूसि व्रत-उपवास
फूसि थिक राजा सभक इतिहास ।

एहन बात नहि जे राजनीतिक विचारधारासँ आबद्ध भेलाक बाद कवि यात्रीक काव्य-दर्शन क्षमता सर्वथा समाप्त भऽ गेलनि । जखन-जखन हिनक अन्तश्चेतना हिनक राजनीतिक चेतनाकेँ पछाड़ि बपन प्रबलता देखौलक तखन-तखन यात्री पुनः ओहि अलौकिक काव्य-ध्यानक स्थितिमे जाइत देखल गेलाह । एकर प्रमाण अछि हुनक **गान्धी** कविता । यात्री जाहि वैचारिकतासँ आबद्ध छलाह तकरा गान्धीक संगे कहियो बनाइन नहि रहलैक । मुदा जखन गान्धीक हत्या भेलनि तखन यात्रीक कवि हृदय हुनकर राजनीतिक संकीर्णताक समक्ष बीस साबित भेलनि । अपन सम्पूर्ण निश्छलता, अपन सम्पूर्ण आस्थाक संग यात्री वाल्मीकी जकाँ गान्धीक हेतु अपन सम्पूर्ण कवित्व उझीलि देलनि । मुदा जखने सुचिन्तित राजनीतिक कविक भूमिकामे अयलाह तँ **काङ्रेसी कनवासर** (मिथिला, 18 मइ 1953) सन कविता लिखि –**परम पिता गान्धीकेँ** होलिअयबामे सेहो संकोच नहि कयलनि ।

एतावता यात्री अपन काव्यमे सांस्कृतिक चेता ओ प्रतिबद्ध राजनीतिक चिन्तक एहि दू रूपमे देखबामे अबैत छथि । आरम्भमे काव्य-द्रष्टा यात्री अपन सांस्कृतिक गौरवक पुनर्स्थापना हेतु राजनीतिक चेतनाक मार्गक अवलम्बन कयलनि । मुदा पश्चात हिनक ई चेतना राजनीतिक प्रतिबद्धताक ताहि शिखरपर चल गेल जाहि अतिवादिताक स्थितिमे हिनका अपन स्वसंस्कृतिक समग्र विशेषते मिथ्या प्रतीत होअऽ लगलनि । अपन परम्पराक ओ समस्त मानबिन्दु जाहिपर ओ स्वयं कहियो गौरव करैत छलाह से सब समाजक अवनतिक हेतु बुझाय लगलनि । हिनक काव्य-दर्शन ओ काव्य-चिन्तनक बीचक दूरिये नहि बढ़ैत चल गेल अपितु ई दुनू परस्पर विरोधी बनि बैसल आ तेँ यात्रीक समग्र कविताकेँ देखला उत्तर हिनक कवि व्यक्तित्वमे एकटा बड़का विरोधाभास परिलक्षित होइत अछि । एहि विरोधाभासमे हिनक दुनू कोटिक कविताकेँ बेरा कऽ देखल जा सकैछ आ ताहिसँ स्पष्ट भऽ जाइछ जे सांस्कृतिक चिन्तनयुक्त हुनक कविता हृदयी-कविता थिकनि जकर दर्शन

ओ काव्यर्षिक रूपमे कयने छथि । जाहि कविताक ओ दर्शन कयने छथि से निश्चित रूपसँ शास्वत मूल्यक अछि जकरा कालक कोनोटा प्रवाह क्षति नहि पहुँचा सकतैक, ओकर सन्दर्भ ओ अर्थबोधकेँ कखनो विशिष्ट व्याख्याक मुँहतक्की नहि रहतैक, ओ कहियो बासि नहि होयत । मुदा प्रहारात्मक ओ उपहास मूलक हुनक कविता मस्तिष्की-काव्य थिकनि जकर लेखन ओ आयास पूर्वक एकटा प्रतिबद्ध राजनीतिक चिन्तकक रूपमे कयने छथि । एहि कोटिक कवितामे समसामयिकता बेसी अछि जे समय बितलाक संग क्रमशः अपन उपयोगिताकेँ समाप्त कयने जा रहल अछि । हिनक एहि दोसर कोटिक कवितामे वर्णित विषय, ओकर सन्दर्भ एवं ओहिमे निहित व्यंग्यक अवगाहन करबाक हेतु इतिहासक पन्ना उनटाबऽ पड़तैक । निश्चित रूपसँ कहल जा सकैछ जे यात्रीक कवि व्यक्तित्वक आकलन एही दू पाटक मध्य कयल जयबाक चाही । मुदा आलोचक लोकनि हिनक अनास्थावादी-नकारात्मक राजनीतिक कविक स्वरूपकेँ बेसी महत्त्व दैत रहलाह अछि । हिनक आस्थावादी सांस्कृतिक चेता कविक स्वरूप अनालोचिते रहल अछि । तेँ आइ आवश्यकता अछि जे यात्रीकेँ चिरजीविता प्रदान करबाक हेतु हुनक सांस्कृतिक चेतना सम्पन्न हृदयी-कविताकेँ सेहो प्रमुखताक संग विश्लेषित-विवेचित कयल जाय ।

●

मधुपक साहित्य साधनाक विशद् परिचायिका

मैथिली भाषा-साहित्यमे डा. भीमनाथझा एक एहन व्यक्तित्व छथि जनिका लेल फराकसँ कोनो परिचय देबाक प्रयोजन नहि अछि । निविष्ट कवि, माँजल गद्यकार ओ मिथिला मिहिरक सहयोगीक रूपमे ई अपन विशिष्ट परिचिति बहुत पहिनहि बना चुकल छलाह । एही क्रममे निरन्तर स्वयंकेँ उच्च शिक्षासँ संबलित करैत ई मैथिलीमे स्नातकोत्तर कयलनि, पुनः पी-एच.डी. डिग्री प्राप्त कयलनि आ सफलताक शिखर दिस बढ़ैत ल.ना. मिथिला विश्वविद्यालयमे मैथिलीक प्राध्यापक पदपर नियुक्त भेलाह । मैथिलीक सिद्धहस्त साहित्यकार ओ मान्य विद्वान डा. झाकेँ 1982मे, काशीकान्तमिश्र 'मधुप'क कृतिक समालोचनात्मक अध्ययनपर ल.ना.मि. विष्ठवविद्यालय, दरभंगासँ पी-एच.डी. उपाधि प्राप्त भेल छलनि । ओही शोध-प्रबन्धक परिवर्त्तित-परिवर्द्धित रूप **कविचूड़ामणिक काव्य-साधना** नामसँ 1989मे मैथिली अकादमी, पटनासँ प्रकाशित भेल ।

यद्यपि आलोच्य पोथी 'कविचूड़ामणिक काव्य-साधना'क लेखकीयमे लेखक कहैत छथि जे- ई कृति हुनक शोध-प्रबन्ध नहि थिकनि, मुदा एकर आधार ओ अवश्य रहलनि अछि । एहि उक्तिक पाछाँ लेखकक गूढ़ यथार्थ ई छनि जे ओ मात्र डिग्री लेबाक हेतु जेना-तेना शोध-प्रबन्धक लेखन कयने छलाह । मुदा प्रकाशनक समय एहिपर अपन प्रगतिवादी चिन्ताधाराक लेप चढ़ाय एकरा नव स्वरूप देबाक प्रयास कयल गेल अछि से एहि पोथीक पद-पदसँ प्रतिध्वनित होइत अछि । एहिमे कुल नओ गोट अध्याय अछि । प्रथम अध्याय जीवन-वृत्त ओ व्यक्तित्वमे संक्षेपमे मधुपजीक जीवनी प्रस्तुत कयल गेल अछि । एहि प्रथम अध्यायमे सबसँ पहिने एकर लेखक अपन निष्कर्ष प्रस्तुत करैत रससिद्ध कवि मधुपकेँ एकमात्र करुण रसक खुट्टामे खुटेसैत, अपन पूर्वाग्रहक परिचय दैत कहि देलनि अछि जे

आधुनिक कालमे एकमात्र यात्री एहन युगान्तरकारी कवि भेलाह जे अपन रचनासँ साहित्य युगधाराकेँ बदलि देलनि। हिनक तुलनामे मधुप किंवा सुमन सन महाकवि अपन साहित्यसँ बेसी अपन सम्मोहक व्यक्तित्वक कारणे जानल गेलाह।' लेखकक ई उक्ति आरम्भरिमे मधुपकेँ द्वेम प्रमाणित करबाक प्रयास थिक। समालोचना-गवेषणाक क्षेत्रमे एहि प्रकारक प्रवृत्तिकेँ कदापि उचित नहि कहल जा सकैछ। कारण जे ई कहि कऽ लेखक स्वयं अपन रुग्ण मानसिकताक परिचय दऽ देलनि अछि। मधुपक मैथिलीमे कतेक ओ कोन रूपक अवदान रहलनि अछि से कहबाक प्रयोजन नहि। ओहि तुलनामे यात्री मैथिलीकेँ कतेक दऽ सकलथिन सेहो आब **यात्री समग्रक** प्रकाशनक बाद अज्ञात नहि रहि गेल अछि। वस्तुतः एहि प्रकारक अपदार्थ बाजि कऽ लेखक स्वयं अपन शोध-निष्ठापर प्रश्नचिह्न ठाढ़ कऽ लेलनि अछि।

पोथीक आरम्भमे मधुपजीक प्रति अपन अवधारणाक परिचय देलाक बाद गवेषक विभिन्न उपशीर्षकक अन्तर्गत मधुपक जीवनवृत्तकेँ प्रस्तुत कयलनि अछि। 'पूर्वज' उपशीर्षकक अन्तर्गत मधुपक पितृभूमि कोइलखक वर्णन करैत गवेषक मधुपक पिता द्वारा कयल गेल बहुविवाहक सविस्तर वर्णन करैत पाँजि-पाटिबला भलमानुस लोकनिकेँ बेस चौताड़लनि अछि। एहिसँ आगू मधुपक जन्म, बाल्यावस्था, काव्य-स्फुरण, अध्ययन, विवाह, सन्तति, आजीविका, निधन, उपनाम, उपाधि, पुरस्कार ओ सम्मान, व्यक्तित्व, परवर्त्ती पीढ़ीपर प्रभाव आदि उपशीर्षकक आयोजन कऽकऽ गवेषक मधुपक सम्बन्धमे यथासाध्य सूचना देबाक प्रयास कयलनि अछि। एहि हेतु सहजतासँ जतबे सूचना उपलब्ध भऽ सकलनि अछि ततबेक प्रयोग कयलनि अछि। तथापि एहि अध्यायक अवलोकनसँ मधुपक समग्र जीवनयात्राक संक्षेपमे परिचय भेटि जाइत अछि। मधुपमे काव्य-प्रतिभा जन्मजात छलनि, अल्पेवयसमे ई तुकबन्दी करऽ लागल छलाह। मधुप अपन प्रेरणापुञ्जमे एहि प्रसंगकेँ विस्तारसँ लिखनहुँ छथि। मुदा मधुपक काव्य-प्रेमीक मोनमे ई जिज्ञासा रहिये जाइत छनि जे मधुपक पहिल रचना कहिया आ कतऽ प्रकाशित भेलनि ? एहि जिज्ञासाक समाधान एहि पोथीमे नहि भऽ सकल अछि। जँ लेखक गवेषणाक विहित मार्गक अवलम्बन कयने रहितथि तँ ओ कहि सकितथि, जे 1930मे काशीसँ प्रकाशित **मैथिली सन्देश** नामक काव्य संग्रहमे काशीकान्तमिश्र, कोइलख, नामसँ हिनक दू गोट राष्ट्रवादी कविता प्रकाशित भेल छलनि। तदपरि मधुप उपनामक संग मिथिलामिहिर (7 अप्रैल 1931)मे ई देखल जाइत छथि।

पोथीक दोसर अध्यायक शीर्षक अछि 'समकालीन काव्यधारा ओ मधुप'। एहि अध्यायमे गवेषक मधुपक काव्य-मर्मकेँ उद्घाटित करबाक हेतु हुनक समकालीन

सामाजिक-साहित्यिक स्थितिक विश्लेषण करबाक प्रयास कयलनि अछि । एहि अध्यायमे 'तत्कालीन सामाजिक व्यवस्था' उपशीर्षकक अन्तर्गत गवेषक मधुपक समकालीन मिथिलाक दुर्दशापूर्ण चित्र उरेहलनि अछि । सन्दर्भ स्रोतक अभावमे पोथीक ई प्रसंग व्यास गद्दीसँ देल गेल प्रवचन भऽकऽ रहि गेल अछि । तेहिना लेखकक ई कहब जे स्वतन्त्रता आन्दोलनक समयमे मिथिला दोसरे दुनियाँमे निमग्न छल, बड़ पैघ गलतबयानी थिक । पोथीक एहि अध्यायमे 'तत्कालीन साहित्यिक स्थिति' शीर्षकक अन्तर्गत गवेषक समकालीन साहित्यिक वातावरण, लेखक वर्ग, तत्कालीन काव्यधारा आदिपर विस्तारसँ चर्चा करैत विभिन्न विद्वानक मतकेँ विन्यस्त कयलनि अछि। गवेषक मैथिली कविताकेँ ठोस धरातलपर ठाढ़ करबाक श्रेय सीतारामझाकेँ देने छथि आ यात्रीजीक सम्बन्धमे हिनक मान्यता छनि जे ओ कविताकेँ धरतीपर आनि देलनि, आम जनताक संघर्षमे झोंकि देलनि, यात्री अपन कविताकेँ तरुआरि बना लेलनि । अस्तु, एहिसँ आगू 'मधुप ओ हिनक समकालीन कवि' उपशीर्षकक अन्तर्गत मधुपक समकालीन दस गोट कवि क्रमशः यात्री, सुमन, ईशनाथ, भुवन, मोहन, किरण, आरसी, तन्त्रनाथ, जीवनाथ, आदिक संग हिनक तुलना भेलनि अछि । मुदा एहि तुलनात्मक विवेचनमे लेखकक सम्पूर्ण प्रयास एकमात्र यात्रीकेँ युगचेता कवि प्रमाणित करब छनि ओ तेँ अपन समस्त शक्ति एकरे पाछाँ झोंकि देलनि अछि ।

आलोच्य पोथीक तेसर अध्यायमे मधुपक कृतिक सूची प्रस्तुत करैत ओकरा वर्गीकृत कयल गेल अछि । गवेषकक सूचनाक अनुसार मधुपजीक अपन जीवनकालमे हुनक कुल एकैस गोट काव्य-कृति प्रकाशित भेलनि आ आठ गोट पाण्डुलिपि अप्रकाशित रहलनि । एकरा संगहि हिनक समस्त प्रकाशित-अप्रकाशित उनतीस गोट कृतिकेँ विभिन्न विधानुसार वर्गीकृत कयल गेल अछि ।

पोथीक चारिम अध्यायमे मधुपक गीतकाव्यपर विचार कयल गेल अछि । मैथिलीमे गीतकाव्यक परम्परा सबसँ बेसी समृद्ध आ दीर्घ रहल अछि । एहि परम्पराक सशक्त अभिनव कड़ीक रूपमे मधुपक ख्याति छनि । विद्यापतिक बाद प्रायः मधुपे एहन दोसर गीतकार भेलाह जे जनसामान्यसँ लऽ कऽ पंडितवर्ग पर्यन्त द्वारा समादृत भेलाह । आलोच्य पोथीमे आधुनिक मैथिली गीत परम्परामे मधुपक स्थान निरूपित करैत गवेषक मधुपक गीतसंग्रह **अपूर्व रसगुल्ला, टटका जिलेबी, पचमेर, गीतमंजरी, चौँकि-चुप्पे, विदागीत, वटसावित्री, बोलबम, विनयाञ्जलि, दुलहा रे नङटे नाचय** एवं **गंगागीतामृत** आदिक संक्षेपमे विवरण प्रस्तुत कयलनि अछि । एहि विवरणसँ मधुपक गीत-काव्यक सम्बन्धमे पाठककेँ सामान्य सूचना

अवश्ये भेटि जाइत छनि। मुदा मधुपक गीत-काव्यक विश्लेषण तेना भऽ कऽ नहि भेल जाहिसँ हुनक गीतक भावपक्ष अर्थात् सामाजिक-सांस्कृतिक चिन्तन, गीतक माध्यमे अभिव्यक्ति भेल हुनक दर्शन आदि उजागर होइतय । मधुप कोनो वीतरागी सन्त नहि छलाह जे अपन परिवेश, समाज ओ समकालीन घटना-परिघटनासँ असम्पृक्त भेल भगवत्‌भजनमे लीन रहैत छलाह । ओ विशुद्ध रूपसँ सांसारिक प्राणी छलाह जे प्रत्येक समकालीन हलचलक श्रोता, द्रष्टा ओ भोक्ता छलाह । हुनक गीतमे समकालीन समाज ओ ओकर प्रवृत्ति कोना आ कतऽ-कतऽ झलकल अछि, सामाजिक परिवर्त्तन-प्रक्रियामे कवि कोन प्रकारेँ उत्प्रेरकक काज कयलनि अछि, नवीन पीढ़ीमे उत्साहक संचार कयनिहार कवि कोन परिस्थितिमे जा कऽ अपनहि दारुण दुखक वेदनासँ कानऽ लगलाह अछि एहि प्रकारक गम्भीर तथ्य दिस एहि पोथीमे दृष्टिपात नहि कयल गेल अछि । गवेषककेँ जँ कतहु एकर अवसरो भेटलनि अछि तँ ओ प्रयत्नपूर्वक काते-कात निकलि गेलाह अछि किंवा हुनक गतिवादी स्वरहुक नकारात्मक व्याख्या कऽ कऽ मधुपक महत्त्वकेँ नकारबाक प्रयास कयलनि अछि ।

आलोच्य पोथीक पाँचम अध्यायमे मधुपक मुक्तक काव्यपर विचार कयल गेल अछि । गवेषक मधुप-रचित मुक्तक काव्यसंग्रह **झांकार, शतदल, ताण्डव, गंगातरंगावली, मधुप-सप्तशती, परिचय-शतक**क अतिरिक्त किछु असंकलित मुक्तकपर विचार कयलनि अछि । गवेषकक दृष्टिमे गीतकार मधुपक तुलनामे मुक्तककार मधुप बेसी सफल छथि। हिनक मुक्तक काव्यमे विषयक विविधता छनि, ओहनो-ओहनो अस्पृश्य ओ उपेक्षित वस्तु तथा विषयकेँ कवि अपन काव्यक विषय बनौलनि अछि जे एहिसँ पूर्वक साहित्यमे स्थान नहि पओने छल । मधुपक एहि उदार काव्यदृष्टिक परिणामस्वरूप मैथिली कविताक परिधि व्यापक भेल । मुदा समाजक समकालीन दशा-दिशाक सूक्ष्मताक संग अवगाहन करैत कवि मधुपक जे जनसरोकारी स्वरूप हुनक मुक्तककाव्यमे मुखरित भेलनि अछि तकरा गवेषक स्पष्टताक संग उभारबामे जानि-बूझि कऽ कोताही कयलनि अछि । से एहि दुआरे जे मधुपक क्रान्तिकारी छविक उजागर भेने यात्रीक काव्य-व्यक्तित्व मन्द पड़ि जयबाक खतरा छल ।

मैथिलीक निविष्ट कथाकाव्यकारक रूपमे मधुपक ख्याति छनि । आलोच्य पोथीक छठम अध्यायमे मधुपक कथाकाव्यक विश्लेषण भेल अछि । मधुपक समस्त बारह गोट कथाकाव्य **द्वादशी**मे संकलित छनि । एहि कथाकाव्यक पात्र सभ मिथिलाक समाजक ओहि अन्तिम पंक्तिक लोक अछि जे नाना प्रकारक सामाजिक

शोषण–उत्पीड़नक शिकार होइत रहल अछि । मधुप समाजक ओहि उपेक्षित समुदायकेँ अपन रचनाक पात्र बनाय ओकर पीड़ाकेँ ओही रूपमे रखलनि अछि जाहि स्थितिमे ओ अपन भूमिपर जीबि रहल अछि । द्वादशीक अधिकांश कथाकाव्यमे ऊपरसँ भने अजस्र करुणाक लेप चढ़ल बुझाइत हो, मुदा ओकर अन्तरमे निहित छैक ओहन आगि जे पाठककेँ विमर्शक हेतु प्रेरित करैत वैचारिक क्रान्तिक पृष्ठभूमि तैयार करैत अछि । मुदा गवेषकक अपन मान्यता छनि जे–हिनक कथाकाव्य ओ प्रभाव नहि छोड़ैत अछि जाहिसँ पाठक ओहि अत्याचारक विरुद्ध फड़फड़ा उठय, ओकर अन्त करबा लेल फाँड़ बान्हि कऽ ताल ठोकय, शोषक वर्गकेँ चुनौती देअय।' वस्तुतः गवेषकक एहि निजी अभिमतसँ कथमपि सहमत नहि भेल जा सकैछ । साहित्य समाजक दर्पण थिक । ओहिमे समाजक ओहने प्रतिच्छवि बनबाक चाही जाहि रूपमे ओ ओकर भूमिपर घटित भऽ रहल होइक । साहित्यकार जँ ओहिसँ आगाँ बढ़ि ओहिमे किछु अपना दिससँ जोड़ैत अछि तँ ओहन साहित्य कदापि यथार्थवादी नहि मानल जायत, अपितु समाजकेँ अपना हिसाबसँ हाँकि कऽ लऽ चलबाक प्रयासमे साहित्यमे बलात् ठूसल गेल निजी विचारधारा ओ समाधानक उपायक कारणे ओ साहित्य, साहित्य नहि भऽ नारा भऽ जाइत अछि । एतावता एहू अध्यायमे गवेषक अपन अपरिपक्व समालोचकीय मान्यताक प्रदर्शन कऽ कऽ रहि गेलाह अछि ।

मधुप मिथिलाक निरक्षर समुदायसँ लऽ कऽ प्रबुद्ध पंडितवर्गक हेतु रचना कयलनि । हुनक **राधाविरह** महाकाव्य वस्तुतः पंडितहि वर्गकेँ ध्यानमे राखि कऽ लिखल गेल अछि जकर पद–पदमे हुनकर पांडित्य प्रदर्शित भेलनि अछि । ई महाकाव्य इहो देखा देलक जे मैथिली एकटा क्लासिकी–भाषा सेहो थिक जाहिमे गम्भीरतम साहित्य–सर्जनक सेहो असीम क्षमता छैक । 1969मे प्रकाशित राधाविरहकेँ मधुपक दीर्घ काव्यजीवनक विराट अनुभव ओ हुनक असीमित ज्ञान ओ अध्ययनक समवाय कहल जयबाक चाही । एही महाकाव्यपर हुनका 1970मे साहित्य अकादेमी पुरस्कार प्रदान कयल गेलनि । आलोच्य पोथीक सातम अध्याय 'प्रबन्धकाव्य'मे मुख्यरूपसँ मधुपक राधाविरहपर विचार भेल अछि । पोथीमे गवेषक महाकाव्यक लक्षणक सम्बन्धमे प्राच्य आचार्य लोकनिक प्रचलित सिद्धान्तक आलोकमे राधाविरहक मूल्यांकन कयने छथि । महाकाव्यक पात्र पौराणिक कथानकसँ गृहीत रहैत अछि । मुदा ओकर उपस्थापन ओ विविध वर्णनक क्रममे कवि द्वारा जे युगीन सन्दर्भक गुम्फन कयल जाइछ से बेसी महत्त्वपूर्ण होइछ । राधाविरहमे सेहो एहि प्रकारक युगीन वर्णनक अभाव नहि अछि जाहिमेसँ बानगीक रूपमे गवेषक द्वारा किछु टुकड़ी सब उद्धृत कयल गेल अछि । मधुपजीक दोसर प्रबन्धात्मक काव्य जे ता धरि

अप्रकाशिते छलनि ताहूपर आलोच्य पोथीमे संक्षेपमे विचार भेल अछि जे मधुपप्रेमी पाठकक लेल बेस उपादेय अछि ।

उपर्युक्त दुहू प्रबन्धकाव्यसँ इतर मधुपक एकटा तेसर प्रबन्धकाव्य **विद्यापतिक** सम्बन्धमे अनेक ठाम सुनल जाइछ, मुदा आलोच्य पोथीमे एहि महाकाव्यक कतहु चर्चो नहि भेल अछि जे आश्चर्यित करैत अछि । एहि पोथीक लेखनमे मधुपक जाहि संस्मरणात्मक काव्य **प्रेरणापुञ्जसँ** प्रचुर सूचना ग्रहण कयल गेल अछि ताहूमे कवि द्वारा **विद्यापति** नामक महाकाव्यक लेखनक सूचना देल गेल अछि, प्रत्युत उक्त महाकाव्यक किछु अंशहुकेँ एहिमे उद्धृत कयल गेल अछि । तथापि गवेषक एहि सूचनाकेँ किए अनसुन कऽ देलनि अछि, तकर औचित्य नहि बुझना जाइछ। वास्तवमे भीमनाथझाक ई पोथी हुनक टेबुल वर्क थिकनि । सुलभतासँ रैकमे जे पोथी भेटि गेलनि ततबहिपर केन्द्रित रहि गेलाह अछि । जँ गम्भीरतासँ मधुपपर काज कयने हितथि तँ हुनका देखबामे अबितनि मिथिला-दर्शन (दिसम्बर, जनवरी, 1959) एवं मिथिलामिहिर (30 अक्टूबर 1960)मे **प्रकाशित मधुपजीक** विद्यापति महाकाव्यक कतिपय दुर्लभ अंश सभ ।

आलोच्य पोथीक आठम अध्यायमे मधुपक 'विविध काव्य'पर विचार कयल गेल अछि । मधुपक जीवनानुभवमूलक काव्य **प्रेरणापुञ्ज**, प्रशस्तिमूलक काव्य **कोबरगीतक** संग छिट्फुट प्रकाशित ओ अप्रकाशित रानी चन्द्रावतीक जीवन-चरित, शोककाव्य ओ हुनका द्वारा संस्कृतसँ मैथिलीमे अनूदित किछु काव्य-कृतिक प्रसंगमे सूचनात्मक विवरण प्रस्तुत कयल गेल अछि ।

'उपसंहार' शीर्षकक अन्तर्गत पोथीक नवम अध्यायमे मधुपक पत्र-साहित्यपर विचार कयल गेल अछि । मधुपक पत्रहु पद्यहिमे रहैत छलनि । हुनक पत्रहुकेँ साहित्य मानि ओकरा विवेचित करबाक एहि प्रयासकेँ अवश्ये प्रशंसनीय कहल जायत । मुदा मधुपक पत्र-साहित्यपर जँ कने व्यापकताक संग विवेचना होइतय तँ ई प्रयास औरो उत्तम कहल जैतय । मधुप द्वारा स्वयं गवेषककेँ लिखल गेल तैस गोट पत्रक उल्लेख कयल जायब आ ओहिमेसँ पाँच गोट पत्रकेँ पोथीक परिशिष्टमे राखब तेहने सन बुझाइछ जेना गवेषक स्वयं अपन गवेषणाक हिस्सा बनबालय व्याकुल होथि । शोध-प्रक्रियामे एहि प्रकारक आत्म प्रचारकेँ अनुमति नहि प्राप्त छैक ।

आलोच्य पोथीमे प्रतिपादित विषयक अतिरिक्त एहि पोथीक भाषा ओ लेखन-शैलीपर सेहो दुटप्पी करब आवश्यक । ध्यातव्य अछि जे गवेषक मैथिलीक प्राध्यापक होयबासँ पूर्व एकटा कवि रहल छथि । मैथिलीमे हिनक प्रवेशे एकटा

कविक रूपमे भेल छनि । अपन काव्यकलाक कारणहि ई मिथिला मिहिर सन प्रतिष्ठित पत्रिकासँ सम्बद्ध कयल गेलाह । मिहिरक हेतु गद्यलेखन करितहुँ हुनकापर हुनक कवि व्यक्तित्व सदिखन हावी रहलनि । तेँ हिनक गद्यहुमे सर्वत्र काव्यमयता दृष्टिगोचर होइछ । आलोच्य पोथीमे सेहो हिनक पद्यगन्धी गद्यक दर्शन होइछ । यद्यपि शोध-प्रबन्धमे एहि प्रकारक भाषा-प्रयोगकेँ दोखाबह मानल गेलैक अछि तथापि ई पोथी ओहि कोटिक पाठककेँ अवश्ये बेसी रुचतनि जे गम्भीरताक भयसँ शोध-समालोचनाक पोथी छुबितहुँ नहि छथि । गवेषकक तरल-सरल शैली, शब्दक छटाक संग अपन विचारक घनघटा प्रस्तुत करबाक विशेषताक कारणे पोथी कतहु गम्भीरता ओ दुर्बोधक ज्वरसँ आक्रान्त नहि भेल अछि । एहि अर्थमे आलोच्य पोथीकेँ ललित शोध-प्रबन्ध कहल जा सकैछ जकर पंक्ति-पंक्तिसँ ई प्रतिध्वनित होइछ जे कोनो रससिद्ध कविपर कोनो कविहृदय लेखकक लेखनी चललनि अछि ।

अन्तमे आलोच्य पोथीमे गवेषकक विषय-प्रतिपादन-पद्धतिपर सेहो संक्षेपमे विचार करब अपेक्षित होयत । गवेषक लगभग सम्पूर्ण मधुप-साहित्यकेँ पढ़लनि अवश्य, मुदा गुनलनि नहि । तेँ मधुप सन मानवतावादी कविक समुचित विश्लेषण कऽ सकबामे ई चूकि गेलाह अछि । तकर दूटा कारण अछि । पहिल तँ भीमनाथझा मैथिलीक कवि-साहित्यकार पहिने छथि छात्र बादमे । मैथिलीसँ सम्पृक्तताक कारणे ई अपन सुविधानुसार मैथिलीक विश्वविद्यालयीय डिग्री प्राप्त करैत गेलाह । तेँ हिनकामे प्रोफेसनल स्टुडेंटक जे 'जील' ओ 'मिशन' होइत अछि से कहियो नहि आबि सकलनि । अपन सुविधानुसारे ई मधुप-साहित्यकेँ अपन पी-एच.डी.क विषय बनौलनि जे कोनहुँना डाक्टरेटक डिग्री भेटि जाइनि । एहि गवेषण-कर्मक उद्देश्य मधुप-साहित्य कल्याण नहि प्रत्युत गवेषकक अपन कल्याण छलनि । तेहनामे गवेषकसँ उच्च कोटिक गवेषणा-समालोचना कऽ सकबाक अपेक्षे व्यर्थ अछि । दोसर कारण ई अछि जे गवेषक भीमनाथझा एकटा विशेष धाराक साहित्यकार रहलाह अछि । ओहि धाराक प्रति हिनक अतिशय अनुराग कतहुसँ नुकायल नहि अछि । ई धारा एक मात्र यात्रीयेटाकेँ युग प्रवर्त्तक मानैत अछि । एहि धारामे दीक्षित कोनो व्यक्तिकेँ यात्रीसँ इतर कोनहुँ साहित्यकारक वैशिष्ट्यकेँ विश्लेषित करबाक किंवा यात्रीसँ उच्च स्थान साहित्यमे देबाक अनुमति नहि छैक। अपन एहि बाध्यताक कारण गवेषक भीमनाथझा द्वारा मधुप साहित्यकेँ अपन शोधक विषय बनौलाक बादो अपन वादगत प्रतिबद्धताक कारणे आरम्भहिसँ अपन शोध-ग्रन्थमे मधुपक साहित्यक उत्कृष्टता, ओहिमे व्यक्त दार्शनिकता ओ युगचेतनाकेँ सर्वत्र नकारैत यात्रीक जयगान करैत रहि गेलाह अछि । तेँ अपन पोथीमे गवेषक

समालोचनाक जाहि पद्धतिक अनुसरण कयलनि अछि से मान्य सब पद्धतिसँ भिन्न प्रकारक अछि जकरा **शल्य सारथ्य** पद्धति कहब अनुपयुक्त नहि होयत । गवेषक प्रगतिवादी धाराक संग अपन प्रतिबद्धताक कारणे मधुपक वीणापर यात्री-राग अलापैत रहि गेलाह अछि । तथापि एहि प्रकारक किछु गुण-दोषक बादहु **कविचूड़ामणिक काव्यसाधनाक** अपना महत्त्व अछि । मधुप ओ हुनक साहित्यक बाह्य पक्षकेँ स्थूल रूपमे बुझबाक हेतु ई पोथी प्रचुर सामग्री उपलब्ध करबैत अछि । **परिचायिकाक** लेखक भीमनाथझा पूर्वमे अपन ओहि पोथीमे मधुपक सम्बन्धमे जे किछु संक्षेपमे वा सूत्रात्मक रूपमे कहने छथि ओकरे आधार बनाय अपन गवेषणात्मक कृति 'कविचूड़ामणिक काव्यसाधना'मे विशद्‌ताक संग उपस्थापित कयलनि अछि । एहि दृष्टिएँ आलोच्य पोथीकेँ मधुपक साहित्य-साधनाक विशद् परिचायिकाक अभिधान देल जाय तँ से कोनो अनुचित नहि होयत ।





डा. शंकरदेवझा

डा. शंकरदेवझा आधुनिक मैथिली भाषा ओ साहित्यक युवा पीढ़ीक एकटा प्रखर-मुखर हस्ताक्षर थिकाह । समकालीन मैथिली लेखनमे डा. झाक परिचिति एकटा दृष्टि सम्पन्न कवि ओ कथाकार, सधल आलोचक एवं सशक्त गवेषकक रूपमे स्थापित छनि । हिनक **अमरजीक परिचय-संसार ओ पत्राचार** (पत्र-साहित्य, 2001), **सन्धि-समास** (कथा संग्रह, 2008), **व्यंग्यसम्राट प्रो. हरिमोहनझा** (जीवनी, 2008), **स जीवति गुणा यस्य** (जीवन-रेखांकन, 2011), **छाहक डड़ीर** (अमिताभ घोषक अंग्रेजी उपन्यास, 'द शैडो लाइन्स'क मैथिली अनुवाद, 2013), **कवीश्वर-स्मरणिका** (सम्पादन, 2008), **सुरेन्द्रझासुमन रचना सञ्चयन** (संग-सम्पादन, 2012) **सन्त लक्ष्मीनाथ मैथिली-पद-सञ्चय** (सम्पादन, 2011) आदि अनेक कृति सब प्रकाशित छनि । हिनक सात गोट बीछल मैथिली कथाक संस्कृत अनुवाद **सप्तपदी** (2011) नामसँ प्रकाशित छनि । मिथिलाक इतिहास ओ संस्कृतिक विशेषज्ञक रूपमे ख्यात डा. झाक शोध-ग्रन्थ **अठारहवीं शताब्दी की मिथिला का इतिहास** (2015) इतिहास-अध्ययनक क्षेत्रमे अपन विशिष्ट स्थान बनौलक अछि ।

एही कड़ीमे हिनक नव्यतम कृति थिकनि **प्ररोचना** (2015) जाहिमे चर्वित चर्वणक परम्परासँ भिन्न नव तथ्य ओ नव विश्लेषणसँ युक्त आधुनिक मैथिलीक विशेष विधा, प्रकृति, प्रयोग, कृति ओ प्रकृतिपर आधारित आठ गोट विशिष्ट आलोचनात्मक निबन्ध संकलित अछि ।

